

भिक्षु जश रसायण

१
जयाचार्य

तेरार्पथ का राजस्थानी वाङ्मय : ग्रन्थ १

जीवन दर्शन

भिकखु जश रसायण

जयाचार्य

प्रवाचक :
आचार्य तुलसी

प्रधान सम्पादक :
युवाचार्य महाप्रज्ञ

© जैन विश्व भारती

प्रकाशक :

जैन विश्व भारती
लाडनूँ (राजस्थान)

संस्करण : १९९४

मूल्य : ७५ रुपये

मुद्रक :

जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि.
जयपुर

तेरापंथ प्राणवान् संघ है। आचार्य भिक्षु ने इसका प्रवर्तन वि.सं. १८१७ आषाढी पूर्णिमा को केलवा में किया था। उस घड़ी और उस पल का कोई ऐसा योग था कि उस दिन से तेरापंथ गति करता गया। साधुओं की संख्या कभी घटी, कभी बढ़ी, पर इसकी मूलभूत भित्ति सुदृढ़ रही। परम्परा में होने वाले आचार्य इसको गतिशील बनाते रहे, इसकी अनुशासना को प्रायोगिक करते हुए साधना का अवसर देते रहे। उसी प्रकार साधु-साध्वियों ने इसे सींचा, पल्लवित, पुष्पित और फलित किया। आज भी यह शत-शाखी वृक्ष कल्पतरु के रूप में अनेक मुमुक्षुओं की इच्छा-पूर्ति का साधन बना हुआ है। जयाचार्य जीवनी-लेखन की कला में सिद्ध-हस्त थे। उन्होंने आचार्य भिक्षु और ऋषिराय का जीवन-वृत्त लिखा। “भिक्षु जश रसायण” उनकी अमर कृति है। इस ग्रन्थ में उन्होंने आचार्य भिक्षु का ऐसा सजीव वर्णन किया है कि पाठक को आचार्य भिक्षु के साक्षात्कार की-सी अनुभूति होने लग जाती है। आचार्य भिक्षु और जयाचार्य दोनों एकात्म थे।

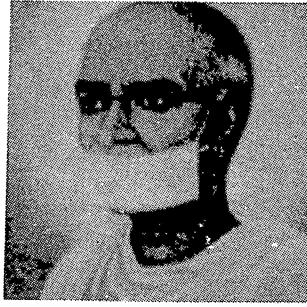
भिवखु जश रसायण

जयाचार्य

प्रवाचक :
आचार्य तुलसी

प्रधान संपादक :
युवाचार्य महाप्रज्ञ

सम्पादक :
मुनि मधुकर
मुनि सुखलाल



प्रज्ञापुरुष जयाचार्य

छोटा कद, छरहरा बदन, छोटे-छोटे हाथ-पांव, श्यामवर्ण, दीप्त ललाट, ओजस्वी चेहरा - यह था जयाचार्य का बाहरी व्यक्तित्व ।

अप्रकंप संकल्प, सुदृढ़ निश्चय, प्रज्ञा के आलोक से आलोकित अंतःकरण, महामनस्वी, कृतज्ञता की प्रतिमूर्ति, इष्ट के प्रति सर्वात्मना समर्पित, स्वयं अनुशासित, अनुशासन के सजग प्रहरी, संघ व्यवस्था में निपुण, प्रबल तर्कबल और मनोबल से सम्पन्न, सरस्वती के वरदपुत्र, ध्यान के सूक्ष्म रहस्यों के मर्मज्ञ - यह था उनका आंतरिक व्यक्तित्व ।

तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक, आचार्य भिक्षु के वे अनन्य भक्त और उनके कुशल भाष्यकार थे। उनकी ग्रहण-शक्ति और मेधा बहुत प्रबल थी। उन्होंने तेरापंथ की व्यवस्थाओं में परिवर्तन किया और धर्मसंघ को नया रूप देकर उसे दीर्घायु बना दिया ।

उन्होंने राजस्थानी भाषा में साढ़े तीन लाख श्लोक प्रमाण साहित्य लिखा। साहित्य की अनेक विधाओं में उनकी लेखनी चली। उन्होंने भगवती जैसे महान् आगम ग्रंथ का राजस्थानी भाषा में पद्यमय अनुवाद प्रस्तुत किया। उसमें ५०१ गीतिका हैं। उसका ग्रंथ-मान है - साठ हजार पद्य प्रमाण।

- जन्म - १८६० रोयट (पाली मारवाड़)
- दीक्षा - १८६९ जयपुर
- युवाचार्य पद - १८९४ नाथद्वारा
- आचार्य पद - १९०८ बीदासर
- स्वर्गवास - १९३८ जयपुर

अनुक्रम

	पृष्ठ
प्रकाशकीय	ix
पुरोवाक्	xi-xii
प्रस्तावना	xiii-xlv
भिक्षु जश रसायण का विषय - विवेचन	
प्रथम खंड	
सिद्ध साधुओं को आद्य नमस्कार	३
ग्रन्थ रचना-प्रतिज्ञा	३
गुणी गुण-गान से तीर्थकर पद का बन्ध	३
महावीर के ज्ञानी-शिष्यों का विवरण	३
नंदीवर्धन-विक्रम काल गणना का संकेत	३
जन्म भूमि परिचय	३-४
जन्म-कल्याणक	४
परिवार-परिचय	४
गुरु की खोज	५
वैराग्य, साधना के आदि चरण	५
पत्नी वियोग	५
दीक्षा का निश्चय	५
स्वामी रुघनाथजी का दीपांबाई को प्रबोध	५
दीक्षा कल्याणक	५
शास्त्र-स्वाध्याय	६
चालू आचार-विचार के प्रति संदेह	६
राजनगर के श्रावकों का विद्रोह	६-७
राजनगर चातुर्मास और श्रावकों को आश्वासन	७
ज्वर-प्रकोप और आचार-विचार शुद्धि का संकल्प	७, ८
शास्त्रों का गहन अध्ययन	९

सही समझ की स्वीकृति	९
मार्ग सुविधा के लिए राजनगर से दो दिलों में प्रस्थान	९
मुनि वीरभाणजी को रहस्य नहीं खोलने की हिदायत	१०
मुनि वीरभाणजी का स्वामी रुघनाथजी के पास	
पहले पहुंचना और रहस्योद्घाटन	१०-११
गुरु दर्शन और अप्रसन्नता का सामना	१२
शंका-समाधान का असफल प्रयत्न	१३-१४
अभिनिष्क्रमण	१५
तेज आंधी और श्मशान भूमि में पहला प्रवास	१५
छत्री पर स्वामी रुघनाथजी का आगमन, आग्रह और धमकी	१५-१७
बडलू चर्चा	१७
स्वामी जयमलजी से विचार-विमर्श	१८
मुनि किशनोजी-भारमलजी प्रसंग	१८-२०
तेरापंथ नामकरण	२१-२४
क्रान्ति के आदि सहयोगी संतों का परिचय	२५-२७
विरोध का वातूल	२८
अनुपम साहस और आचार महिमा	२८-२९
संघर्ष पूर्ण पहले पांच वर्ष	३०
निराशा और एकान्त तपस्या	३०
मुनि थिरपालजी और फतेहचंद जी का धर्म प्रचार का अनुनय	३१-३२
साध्वी-दीक्षा	३३
आचार्य भिक्षु और मुनि भारीमालजी के आत्मीय सम्बन्धों की झांकी	३३
सुपात्र दान विमर्श	३६-३९
निर्जरा और पुण्य विमर्श	४०-४१
अनुकम्पा विमर्श	४२-४५

द्वितीय खंड

उत्पत्तिया बुद्धि के स्वामी आचार्य भिक्षु	४६
भिक्षु दृष्टांत और विनीत-अविनीत चौपी के दृष्टांत	४६-१४०
दृष्टांतों की संकल्पना	१४१-१४५

तृतीय खंड

असिआउसा को नमस्कार	१४७
आचार्य भिक्षु के शासन काल के मुनियों का वर्णन	१४७-१७३
आचार्य भिक्षु के शासनकाल की साध्वियों का वर्णन	१७४-१८४

चतुर्थ खंड

गौतम और सुधर्म को नमस्कार	१८५
आचार्य भिक्षु का प्रमुख विहार-क्षेत्र	१८५
आचार्य भिक्षु के प्रमुख श्रावक	१८५
आचार्य भिक्षु की वृद्धावस्था की सक्रियता का मार्मिक चित्रण	१८५
सोप्त में हुकमचंद आच्छा का सिरियारी	
अंतिम चतुर्मास का अनुरोध और स्वीकृति	१८६
सिरियारी वर्णन और आगमन	१८६
सिरियारी चतुर्मास के सहयोगी संतों का उल्लेख	१८६-१८७
अंतिम अस्वस्थता	१८८
चरम कल्याणक आभास	१८८
सहयोगी संतों के प्रति कृतज्ञता के उद्गार	१८८-१८९
भावपूर्ण सामूहिक शिक्षा	१९०
सार्थक जीवन जीने का उल्लास	१९३
बाल मुने श्री रायचंद जी को शिक्षा	१९३
युवाचार्य श्री भारमलजी द्वारा कृतज्ञता ज्ञापन	१९५
आचार्य भिक्षु द्वारा युवाचार्य का भविष्य-कथन	१९५
मुनि श्री खेतसीजी को प्रत्युत्तर	१९६
अनुपम अंतिम आलोचना	१९७
समस्त जेवों से भावपूर्ण खमतखामणा	१९८
साधु-साध्वियों, श्रावक-श्राविकाओं से खमतखामणा	१९८
टालोकरों से भी खमतखामणा	१९८
संवत्सरी का उपवास और पारणा	२००
युवाचार्य श्री भारमलजी एवं मुनिश्री खेतसीजी के हाथसे अंतिम आहार	२००
आजीवन अनशन ग्रहण	२०१

अनशन की हलचल और वैराग्य मय वातावरण	२०२
अवधि-ज्ञान का आभास	२०४
संस्तुति-गान	२०५
स्थित मुद्रा में महाप्रयाण	२०५
सात प्रहर का अनशन	२०५
इधर विमान की तैयारी पूर्ण उधर महाप्रयाण	२०५
तेरहखंडी विमान की संरचना	२०६
चरम कल्याणक महोत्सव	२०६
महामानव	२०७-२०८
तैयालीस वर्षों के चातुर्मास का विहार-विवरण	२०९
साढा अड़तीस हजार पद्य-परिमाण साहित्य की संरचना	२०९
भक्ति के अनमोल बोल	२१२
प्रशस्ति पद	२१२
ग्रन्थ रचना का आन्तरिक आह्लाद	२१२
भिक्षु जश रसायण के रचना-स्रोत	२१२
अनजाने प्रमाद का मिथ्या दुष्कृतम्	२१२
लघु भिक्षु जश रसायण	२१५
भिक्षु-चरित-मुनि हेमराज कृत	२४३
भिक्षु-चरित-मुनि वेणीराम कृत	२७५
परिशिष्ट	३०५
१ नामानुक्रम	३०७-३१५
२ पारिभाषिक शब्द	३१६-३२२
३ सूक्तियां/लोकोक्तियां	३२३-३२५
४ प्रयुक्त धुनें (देसियां)	३२६-३२९

अर्ह

प्रकाशकीय

“भिक्षु जश रसायन” जयाचार्यवर की अमरकृति है। जहां एक ओर भिक्षु स्वामीजी का प्रमाणिक जीवनवृत्त प्रस्तुत किया है, वहीं अपने आराध्य के तत्त्वदर्शन को सम्यगरूपेण व्याख्यायित भी किया है। जयाचार्य का जीवन बहुआयामी था। उन्होंने अपने जीवनकाल में बहुविध साहित्य का सृजन किया। उनके द्वारा रचित लगभग साढ़े तीन लाख पद्य प्रमाण साहित्य उपलब्ध हैं। राजस्थानी में किसी एक व्यक्ति द्वारा इतना साहित्य रचा गया हो यह अन्वेषण का विषय है। जयाचार्य स्वामीजी के भाष्यकार थे। स्वामी जी के समय के अनेक स्थविर मुनि जयाचार्य के शासनकाल में वर्तमान थे। अपने शिक्षा गुरु मुनि हेमराज प्रभृति संतों द्वारा प्रत्यक्षदर्शी होने के कारण स्वामी जी से सम्बन्धित पुष्ट व प्रमाणिक जानकारी जयाचार्य को मिल सकी, यह इस ग्रंथ को प्रमाणिक व महत्वपूर्ण साबित करती है। जगह-जगह पर भिक्षु दृष्टान्तों को उपस्थित कर तत्त्व का विवेचन, उस समय की धारणाओं, मान्यताओं एवं रूढ़ियों पर प्रकाश डालता है। बहुत सारे ऐतिहासिक तथ्यों को भी उजागर किया गया है।

श्रद्धावनत है परमाराध्य आचार्य श्री तुलसी के प्रति जिनकी सतत् प्रेरणा व मार्गदर्शन में श्रद्धेय संघ परामर्शक मुनि श्री मधुकरजी व मुनि श्री सुखलालजी के अथक श्रम से सम्यग सम्पादन का कार्य सम्पन्न हो सका। हम मुनि द्वय के प्रति आभार ज्ञापित करते हैं।

ग्रन्थ सर्वजन योग्य, सहज, सरल होने के कारण सुधी पाठकों को स्वाध्याय में सुगमता रहेगी-ऐसा हमारा मानना है। अध्येता इस ग्रन्थ-रत्न का अध्ययन कर अनेक तत्व-रत्नों को संजो पायेंगे - ऐसा हमारा विश्वास है।

“भिक्षु चेतना वर्ष” के बहुविध कार्यक्रमों के अन्तर्गत तेरापंथ राजस्थानी वाङ्मय की शृंखला में इस ग्रन्थ का प्रकाशन कर जैन विश्व भारती धन्यता का अनुभव करती है।

जैन विश्व भारती

लाडनूँ

अश्विन शुक्ला-१३

दिनांक २८ अक्टूबर, १९९३

झूमरमल बैंगानी

मंत्री

पुरोवाक्

मैं आठ-नौ वर्ष का था। तब मैंने अपनी संसार पक्षीया मां से चौबीसी ओर आराधना के गीत सुने। वे मुझे बहुत प्रिय लगे। मुझे नहीं पता था -- गीतकार कौन हैं और इसका भी पता नहीं था-- किस भाषा में लिखे हुए हैं। ग्रंथ का ऐतिहासिक और काव्यात्मक विश्लेषण हमारी बुद्धि का कार्य है किंतु अच्छा लगना रचनाकार की शब्द-रचना में सन्निहित आस्था और रचना शिल्प का प्रभाव है। अब मैं जानता हूँ--चौबीसी के रचनाकार हैं जयाचार्य और उसकी भाषा है-मारवाड़ी या राजस्थानी।

काव्य, लेख, निबंध, और किसी ग्रंथ के लिए भाषा का भी बहुत मूल्य है। राजस्थानी में अभिव्यक्ति की विशिष्ट क्षमता है। उसका मूल स्रोत है प्राकृत। उसमें जो सहज मिठास है, उसका कारण है प्राकृत का वह सिद्ध वाक्य-- सुहमुहोच्चारण-उच्चारण में मुख को कष्ट न हो इसलिए शब्द में परिवर्तन करना हो तो किया जा सकता है। इस उच्चारण की कोमलता ने शब्दों को तराशा है और उस तराश ने उनमें एक उज्ज्वल आभा पैदा की है।

आचार्य भिक्षु जोधपुर राज्य के कांठा प्रदेश में जनमे। उनकी बोली और भाषा में ठेठ मारवाड़ी शब्दों की एक लंबी शृंखला है। उन्होंने मेवाड़, हाड़ौती, थळी आदि अनेक प्रदेशों में विहार किया फिर भी उनकी रचनाओं में मारवाड़ी के पुराने शब्दों का एक भण्डार है। उन्होंने गद्य में लिखा और पद्य भी लिखे। कुल मिलाकर अड़तीस हजार श्लोक मान लिखा। अनेक विषय, अनेक रागिनियां, अनेक प्रयोग उनके सहज कवि अथवा रचनाकार होने के स्वयंभू साक्ष्य हैं। उनकी सृजनात्मक और रचनात्मक चेतना ने तेरापंथ धर्मसंघ में सृजनात्मक और रचनात्मक शक्ति को जन्म दिया। परंपरा उत्तरोत्तर विकसित होती गई।

जयाचार्य राजस्थानी के सुप्रसिद्ध रचनाकार हैं। आचार्य भिक्षु के चतुर्थ आसन पर विराजमान होकर उन्होंने आचार्य भिक्षु की परम्परा को यशस्वी और गतिशील बनाया। राजस्थानी को उनका अवदान इतिहास प्रसिद्ध हैं। भगवती सूत्र

का पद्यात्मक भाष्य उनकी रचनाधर्मिता का मुखर प्रमाण है। उस विशालकाय ग्रंथ में जैन-दर्शन, तत्त्व चिन्तन के हजारों-हजारों शब्दों ने राजस्थानी शब्द कोश को समृद्ध किया है।

‘उपदेश-रत्न-कथा-कोश’, कथा साहित्य का गगनचुंबी शिखर है। व्याकरण, तत्त्व विद्या, भक्ति, आराधना, न्याय आदि अनेक विधाओं में उन्होंने राजस्थानी को गौरवपूर्ण भूमिका पर प्रतिष्ठित किया है।

आचार्य भिक्षु के नवम आसन के अधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी ने अपने कवित्व और वक्तृत्व से राजस्थानी की विपुल श्री वृद्धि की है। अपने पूज्य गुरुदेव की स्मृति में लिखा हुआ पद्यमय जीवन वृत्त ‘संस्कृत, प्राकृत और राजस्थानी का त्रिवेणी संगम है। उसमें प्राचीनता और आधुनिकता का संगम ही नहीं, सात्मीकरण भी है। महाकाव्य की शैली में लिखा वह जीवन वृत्त राजस्थानी साहित्य का चूड़ामणी है। उसका नाम है कालूयशोविलास। अन्य अनेक रचनाएं हैं और प्रति वर्ष निर्माण की सूची प्रवर्द्धमान है। यह कोई प्राकृतिक घटना या सहज संयोग है कि आचार्य भिक्षु, जयाचार्य और आचार्य तुलसी--तीनों की जन्म-भूमि मारवाड़ है और इनका मारवाड़ी अथवा राजस्थानी को समृद्ध करने में अपूर्व योग है।

आचार्य भिक्षु की परंपरा में अनेक साधुओं तथा श्रावकों ने भी राजस्थानी वाङ्मय के विस्तार और विकास में अपना योग दिया है। मुनि हेमराजजी, मुनि वेणीरामजी, मुनि जीवोजी, मुनि सोहनलालजी, जैसे अनेक प्रतिभा-सम्पन्न राजस्थानी के लेखक और कवि हुए हैं।

भिक्षु चेतना-वर्ष में आचार्यश्री की सन्निधि में एक चिंतन चला और ‘तेरापंथ का राजस्थानी वाङ्मय’ की योजना बन गई। उसका प्रथम ग्रंथ पाठकों के हाथों में पहुंच रहा है- आचार्य भिक्षु का जीवन-वृत्त। जीवनवृत्त की नई शैली के आविष्कर्ता जयाचार्य की रचना धर्मिता का अनुत्तर उदाहरण है। इसमें जीवन, दर्शन, प्रज्ञा, प्रयोग और परिणाम-सब मुखर हैं पर सबमें सामंजस्यपूर्ण मौन का निदर्शन है। इसके संपादन में मुनि मधुकरजी और मुनि सुखलालजी ने बहुत निष्ठापूर्ण श्रम किया है। आचार्यश्री इस श्रम के केवल साक्षी नहीं हैं, आपका निरीक्षण और परीक्षण भी सतत इसके साथ चला है। फलतः संपादन का सौंदर्य स्वाभाविक है।

युवाचार्य महाप्रज्ञ

प्रस्तावना

‘भिक्षु जश रसायण’ तेरापंथ प्रणेता आचार्य भिक्षु का चरित-काव्य है, पर जयाचार्य ने इसकी संरचना इतनी कुशलता से की है कि यह इतिहास, साहित्य, दर्शन, अध्यात्म तथा मनोविज्ञान का एक अमूल्य ग्रंथ बन गया है।
तेरापंथ में इतिहास लेखन

मैक्समूलर ने ठीक ही कहा है--“जो जाति अपने अतीत पर अपने साहित्य और इतिहास पर गर्व अनुभव नहीं कर सकती, वह अपने राष्ट्रीय चरित्र का मुख्य आधार खो देती है।” इस दृष्टि से देखा जाए तो तेरापंथ एक भाग्यशाली संघ रहा है। निश्चय ही हर तेरापंथी को अपने अतीत पर गौरव की अनुभूति होती है। तेरापंथ धर्मसंघ का इतिहास जितना सुरक्षित-संरक्षित रहा है, उतना शायद हजारों वर्षों से प्रवहमान अनेक धर्मसंघों का नहीं रहा। वास्तव में वर्तमान उतना महत्त्वपूर्ण नहीं लगता जितना वह होता है। कौन सी घटना कब महत्त्वपूर्ण बन जाती है, इसका कोई गणित नहीं हो सकता। घटना अपने आप में घटना होती है। समय उस पर मूल्यों का आरोपण करता है। हमारे पूर्वजों ने घटनाओं के महत्त्व का आकलन किया और उन्हें लिपिबद्ध करने की ऐतिहासिक दूरदर्शिता दिखाई, यह महत्त्वपूर्ण बात है।

इस दृष्टि से चतुर्थाचार्य श्रीमद् जयाचार्य का अपना विशेष महत्त्व है। तेरापंथ का इतिहास प्रारंभ से ही घटनाबहुल रहा है। पर यदि जयाचार्य ने ख्यात के रूप में इसके प्रामाणिक संकलन की शुरुआत न करवाई होती तो न केवल अतीत ही गुमनामी के अंधेरे में खो जाता, अपितु आगे भी यह दृष्टि इतनी स्पष्ट बनती या नहीं, कहा नहीं जा सकता। बहुत सारे पश्चिमी विद्वानों का अभिमत है कि भारत में इतिहास को इतिहास-दृष्टि से लिखने की परंपरा नहीं रही है। तेरापंथ का इतिहास इस माने में एक अपवाद है।

यथार्थ दृष्टि

भारतीय इतिहास-दृष्टि के बारे में यह भी कहा जाता है कि यहां यशोगान का दरबारी राग ही प्रमुख रहा है। यहां शुक्ल पक्ष को जितना उजागर किया

जाता है, उतना कृष्ण पक्ष पर प्रकाश नहीं डाला जाता। पर तेरापंथ का इतिहास इस आरोप से मुक्त है। आचार्य भिक्षु ने स्वयं अपने हाथ से अपने में निकाले जाने वाले आरोपों की सूची बनाकर विरोध-पक्ष को एक समीक्षा-मूल्य प्रदान कर दिया। हो सकता है उस समय कुछ लोगों को यह बात अच्छी नहीं लगी हो। भला, अपने आरोपों को और वे भी निराधार आरोपों को चुन-चुन कर इकट्ठा करना कौन सी बुद्धिमानी की बात हो सकती थी, पर आज लगता है वह दृष्टि कितनी प्रखर थी। आचार्य भिक्षु एक दूरदर्शी महापुरुष थे। उन्होंने जिस दूरदर्शिता से एक नई विधा को जन्म दिया, उसका आज एक ऐतिहासिक महत्त्व बन गया है। आज जब हम इस विधा का विश्लेषण करते हैं तो अनेक महत्त्वपूर्ण बातें सामने आती हैं। इसी से तेरापंथ में यह परम्परा बन गई है कि घटनाओं को गुणानुवाद के रूप में न लेकर यथार्थ के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास रहता है।

जयाचार्य और इतिहास तत्त्व

इतिहास लेखन की दृष्टि से जयाचार्य का कृतित्व विशिष्ट है। यद्यपि आचार्य भिक्षु ने अत्यंत कुशलता से अपने साहित्य में अपने आपको प्रतिबिम्बित कर दिया था, पर जयाचार्य ने इतिहास-तत्त्व को जितनी सूक्ष्मता से समझा-पकड़ा उतना बहुत कम लोग समझ-पकड़ पाते हैं। उन्होंने ही मुनिश्री हेमराजजी से इतिहास की बहुत सारी बातें जानी। तेरापंथ इतिहास में मुनिश्री हेमराजजी का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे न केवल आचार्य भिक्षु के प्रत्यक्ष द्रष्टा शिष्य थे, अपितु छाया की तरह उनके अन्तेवास में रहे। वे एक प्रबुद्ध और मनस्वी संत थे। उनके सामने जो कुछ भी घटा उसे उन्होंने अत्यंत जीवंतता से देखा-जाना। भिक्षु दृष्टांत उनकी स्मृति का ही कमाल था। इससे यह भी पता चलता है कि आचार्य भिक्षु कितने महान् व्यक्ति थे। उनके जीवन में, पल-पल में अनेक महत्त्वपूर्ण प्रसंग आए होंगे। यदि मुनिश्री हेमराजजी जैसे और भी संत होते तो न जाने हमें आज कितने और प्रसंग जानने को मिलते।

इतिहास लेखन की दृष्टि से तेरापंथ संघ में मुनिश्री कालूजी का भी बहुत बड़ा महत्त्व रहा है। उन्होंने ही पिछले इतिहास का संकलन कर ख्यात की विधिवत् शुरुआत की। यह उनकी ही प्रतिभा एवं परिश्रम का परिणाम है कि उनसे पूर्व के एक शती के हर संत-सती की प्रामाणिक जानकारी आज हमें ख्यात में उपलब्ध हो जाती है। पर इस लेखन का मुख्य श्रेय तो जयाचार्य को

ही जाता है। उनकी प्रेरणा से ही भिक्खु दृष्टांत का संकलन हुआ और उनकी प्रेरणा से ही ख्यात का संकलन शुरू हुआ। भिक्खु दृष्टांत के संकलन के पीछे तो भिक्खु जश रसायण की ही प्रेरणा रही है। उन्हें आचार्य भिक्षु के जीवन-चरित में देने के लिए ही जयाचार्य ने उनका संकलन किया था। सचमुच इतिहास की सुरक्षा करते-करते जयाचार्य स्वयं ही एक इतिहास पुरुष बन गए। उन्होंने भिक्खु जश रसायण के मिश्र न केवल एक जीवन-चरित ही प्रदान किया अपितु इतिहास के बहुत सारे तथ्य भी हमें सौंप दिए।

विषय वस्तु

जैसा कि मैथिलीशरण गुप्त ने राम के बारे में कहा है --

“राम! तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है,
कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।”

आचार्य भिक्षु का जीवन इतना रसमय था कि वह अपने आप में एक काव्य है। जयाचार्य ने भिक्खु जस रसायण में उसे इस तरह अभिव्यक्त किया है कि उसकी काव्यमयता और भी अधिक मुखर हो गई है।

रचना विभाजन

भिक्खु जश रसायण को चार खंडों में बांट कर भी जयाचार्य ने काव्योचित कौशल का परिचय दिया है। सामान्यतः जीवन चरितों में चरितनायक की विशेषताओं के गीत गा दिए जाते हैं, या उसे तिथियों-मितियों का कलेंडर बना दिया जाता है, पर जयाचार्य ने इस चरित्र को एक नया रचना-विभाजन दिया है। प्रथम खंड में जहां आचार्य भिक्षु का रेखाचित्र सा खींचा गया है वहां दूसरे खंड में उनके विचार-दर्शन को अभिव्यक्त किया गया है। तीसरे खंड में भिक्षु-दृष्टांत के मनोरम विस्तार को समेटा गया है तो चौथे खण्ड में उनकी शिष्य-सम्पदा का परिचय दिया गया है। कुल मिलाकर इसे एक सरस शब्द-चित्र कहा जा सकता है। जयाचार्य की साहित्य-साधना बहुत प्रलम्ब है। उन्होंने साढ़े तीन लाख पद्य-परिमाण साहित्य की रचना कर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। उनका साहित्य गद्य में भी है, पद्य में भी है। उसके आख्यानत्मक, विवरणात्मक आदि अनेक भेद-प्रभेद हैं। उनका साहित्यिक कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व एक अलग ही विवेचना का विषय है। प्रस्तुत प्रसंग में हमारी सारी चर्चा भिक्खु जस रसायण पर केन्द्रित है।

आचार्य भिक्षु एक अमाप्य महापुरुष थे। उनका जीवन बहु आयामी था।

इतनी विधाओं को एक साथ जी लेना कोई मामूली बात नहीं है। जयाचार्य ने इस दृष्टि से उनके जीवन चरित को अपनी लेखनी की नोक पर उठाकर अपनी विशिष्ट परख एवं रचनाधर्मिता का परिचय दिया है। सचमुच में जयाचार्य ने आचार्य भिक्षु और अपने बीच के एक शती के फासले को पाटने में अपनी सार्थक भूमिका का परिचय दिया है।

काव्य - मीमांसा

हिन्दी और राजस्थानी का मूल प्राकृत-अपभ्रंश है। इसलिए इन दोनों भाषाओं की प्रकृति में गहरा साम्य है। बल्कि मूल में तो इन दोनों को अलग कर पाना भी कठिन है। पृथ्वीराज रासो आदि जिन कुछ रचनाओं को हिन्दी के आदि ग्रंथ माने जाते हैं, वे वास्तव में राजस्थानी भाषा की ही रचनाएं हैं। राजस्थानी की गद्य-परम्परा भी बहुत पुरानी है। असमी को छोड़कर उत्तर भारत में सबसे पुराना गद्य साहित्य राजस्थानी का ही माना जाता है। इस तरह राजस्थानी न केवल बहुत पुरानी भाषा है अपितु इसका साहित्य भी बहुत विपुल है। जैन-साहित्यकारों का इस समृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

हिन्दी कविता का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। इस काल-धारा में इस भाषा में कविताओं के कई दौर आये। १००० से १३५० ई. के प्रारंभिक काल में वीरता, शृंगार, धर्म आदि विभिन्न भावों को आधार बनाकर काव्य लिखे गये। इस काल खंड की कविता-धारा को कोई एक संज्ञा दे पाना संभव नहीं है। बाद में १३५० से १६५० तक जो रचनाएं लिखी गईं वे भक्ति-परक थीं। इस युग में धर्म को लोकधर्म का रूप दिया गया और इसे भक्ति काल कहा गया। भक्ति काल के बाद १६५० से १८५० तक के काल में राजा-महाराजाओं को बहलाने वाला दरबारी काव्य लिखा गया। इस काल की विषयवस्तु शृंगार प्रधान थी, नखशिख वर्णन की रीति को निभाने की प्रतिबद्धता के कारण इसे रीति काव्य कहा गया। इसके बाद आधुनिक चेतना और जीवन मूल्यों से युक्त आधुनिक काव्य की शुरुआत हुई।

जयाचार्य और राजस्थानी साहित्य

जयाचार्य का रचनाकाल आधुनिक युग का प्रारंभ काल कहा जा सकता है। जयाचार्य ऐसे समय में सामने आते हैं जब राजस्थानी में रचनाधर्मिता प्रायः सुषुप्त अवस्था में थी। विदेशी दासता के एक लंबे गलियारे से गुजर कर भारतीय-चेतना कुंठित सी हो रही थी। पूरा भारतीय समाज राज्य-व्यवस्था के छोटे-छोटे

टुकड़ों में बंटकर एक-दूसरे के विरोध में खड़ा हो गया था। धार्मिक दृष्टि से भी साहित्य में एक काष्ठ मौन सा छाया हुआ था। जयाचार्य ने उस मौन को तोड़ कर एक उद्दिष्टि तथा अनुत्तर जागरण का संदेश अपने साहित्य में दिया। इस अर्थ में राजस्थानी साहित्य के खालीपन को भरने में जयाचार्य एक कड़ी के रूप में सामने आते हैं। उनके समय में भक्ति की धारा भी जरा मन्द पड़ने लगी थी। साधारणतया ईश्वर के प्रति प्रेम की अनुभूति-अभिव्यक्ति को भक्ति का आधार-तत्त्व माना जाता है। लेकिन संपूर्ण भक्ति काव्य एक जैसा नहीं है। जो भक्त-कवि ईश्वर को सगुण-साकार मानते थे, वे सगुणी भक्त कहलाये। सूर, तुलसी आदि ऐसे ही भक्त-कवि हुए हैं। जो लोग ईश्वर को निर्गुण-निराकार मानते थे तथा अवतारवाद में विश्वास नहीं करते थे, निर्गुणमार्गी भक्त कहलाए। इनमें भी जिन्होंने धार्मिक रूढ़ियों और पाखंड पर चोट की उन्हें ज्ञानमार्गी कहा गया। कबीर ऐसे ही ज्ञानमार्गी कवि हुए थे। जिन कवियों ने लौकिक प्रेम कथाओं के माध्यम से ईश्वर के प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति की उन्हें प्रेममार्गी कहा गया। जायसी को इसी धारा के अन्तर्गत माना जाता है।

अध्यात्म और साहित्य

जयाचार्य एक अध्यात्म पुरुष थे, अतः इनके साहित्य का प्रेरक भाव अध्यात्म ही रहा। ललित साहित्य को ही साहित्य मानने वाले लोग आध्यात्मिक रचनाओं को साहित्य नहीं मानते पर जयाचार्य का साहित्य आध्यात्मिक होने के साथ-साथ इतना रसपूर्ण है कि उसे किसी भी तरह साहित्य की चारदीवारी से बाहर नहीं किया जा सकता। इस माने में उनका साहित्य राजस्थानी भाषा को ग्राम्य भाषा या आध्यात्मिक अनुभूति के संवहन में अक्षम भाषा कहने वाले लोगों के लिए एक सटीक उत्तर है। जयाचार्य को अध्यात्म के राजस्थानी भाषा में अवतरण के कीर्तिस्तंभ कहने में भी कोई अत्युक्ति नहीं लगती।

अध्यात्म एक शाश्वत सत्य है। वही साहित्य कालजयी बन सकता है जो अध्यात्म से भावित हो। महावीर, बुद्ध और कृष्ण यदि आज जीवित हैं तो इसीलिए कि उनका साहित्य अध्यात्मपूरित है। बहुत बार साहित्य भी राजनीति की निन्दा-स्तुति में उलझ जाता है। पर राजनीति तो एक क्षेत्र-काल की उपयोगिता है। वह अपने वर्तमान में भी सार्वभौम नहीं बन सकती। एक जमाना था जब प्रगतिवाद के नाम पर साम्यवाद के बहुत गुण गाये जाते थे। जिस तरह प्रगतिवाद ने राजाओं की यशोगाथा को बुद्धि का दिवालियापन बताया था, उसी

तरह हो सकता है कभी प्रगतिवाद भी अप्रतिष्ठ बन जाये। पर महावीर, बुद्ध और कृष्ण कभी अप्रासंगिक नहीं बन सकते।

साहित्य की एक प्रेरणा मानवीय-संवेदना भी है। वह भी उसे अमर बनाती है। पर मानवीय संवेदना अध्यात्म का ही एक पक्ष है। अध्यात्म मानव से अग्रे बढ़ कर प्राणी मात्र के प्रति संवेदना का विस्तार है। इसलिए वह अधिक आगे गया है। आचार्य भिक्षु तथा जयाचार्य ने अपने साहित्य में मानवीय-संवेदना को भी स्थान दिया है, पर उनका पूरा दर्शन छोटे से छोटे प्राणी के प्रति संवेदना व्यक्त करने में ही अपनी सार्थकता अनुभव करता है। इसलिए उनका साहित्य भी ज्यादा असरदार है।

राजस्थानी भाषा की प्रतिनिधि कृति

यद्यपि जयाचार्य राजस्थान के मारवाड़ प्रदेश (जोधपुर) से आते हैं तथा उनकी भाषा में मारवाड़ की आंचलिकता की सुरभि आती है, फिर भी एक यायावर संत होने के नाते उन्होंने पूरे राजस्थान को अपने कदमों से नापा था। इसीलिए उनकी राजस्थानी भाषा में सभी आंचलिकताओं का सहज स्पर्श है। भिक्षु जश रसायण को उसके उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इस अर्थ में इसे राजस्थानी भाषा की प्रतिनिधि कृति कहने में भी कोई संकोच नहीं होता।

भाषायी अध्ययन

भाषायी दृष्टि से प्रसंग-प्रसंग पर लोकोक्तियों-मुहावरों का प्रयोग कर इस कृति में चार चांद लगा दिए गए हैं। यद्यपि ऐसे प्रयोगों की संख्या कर पाना मुश्किल है पर फिर भी ऊंठ री खोड ऊंठ नै पोपां बाईरो राज (४१/१०८), तीनां घरां बधामणा (६/१६), फकीर वालो दुप्पट्टो (६/१४), नव तुम्बा तेरह नेगदार, (४१/१०८) काण न राखै कोय : (६/९), गलां ताई कल गयो (६ दू. ९) आदि अनेक प्रयोगों को उदाहरण के रूप में गिनाया जा सकता है।

राजस्थानी भाषा में बात कहने का अपना एक विशेष लहजा है। थोड़े में बहुत कह देना, इस भाषा की अपनी विशेषता है। इस दृष्टि से इस भाषा में कुछ ऐसे समस्त-पदों का प्रयोग किया जाता है जो मनुष्य की लम्बी अनुभूति से उपजे हुए होते हैं। प्रस्तुत कृति भी ऐसे अनेक शब्द-संकेतों से आकीर्ण है। धर्म रा धोरी, ठाला बादल (४१/१०४), बुगल ध्यानी (४५ दू. ८), माता बांजणी (१२/२), छोरी रो घाट (२६/४), छांदो, कुडी (१९/१३), नीला कांटा (३६/

३), वाय रै बंग (३४/२४), रस कूपिका (३४/३२) आदि कुछ ऐसे ही प्रयोग हैं।

राजस्थानी भाषा में शब्दों को घड़ने की एक बहुत ही सहज प्रक्रिया है। बहुत सामान्य आदमी भी अपनी भावाभिव्यक्ति के लिए बोलचाल की भाषा में एक शब्द-प्रतिमा गढ़ लेते हैं। धीरे-धीरे उसे अन्य लोगों का भी अभिषेक प्राप्त हो जाता है और उस प्रतिमा की सार्वजनिक पूजा-प्रतिष्ठा हो जाती है। इससे भाषा तो समृद्ध होती ही है, पर थोड़े शब्दों में गहरा भाव भी सिमट जाता है।

नई शब्द-संरचना

शब्द संरचना में धातु और प्रत्यय दो मुख्य घटक होते हैं। राजस्थानी में भी इनका महत्त्व है। पर इस भाषा में शब्द-संरचना इतनी निर्बंध होती है कि बहुत बार उसे व्याकरण के नियमों में बांध पाना कठिन हो जाता है। जयाचार्य ने भी भिक्खु जस रसायण में ऐसे अनेक नये शब्दों को घड़ा है। भिक्षु दृष्टान्तों के प्रसंग में एक जगह वे लिखते हैं --

“बंधी छोड लोकां में बाजै” (२९/९)

यहां बंधी छोड़ का एक विशेष अर्थ है। बंधी छोड़ अर्थात् बंधे हुए को छुड़ाने वाला, मुक्त करने वाला। इस शब्द में बंध और छोड़ दो धातुओं का प्रयोग हुआ है। बंधी अर्थात् बन्दी, कैदी छोड़ अर्थात् छोड़ने वाला। इसे जब जिन्नंत का रूप दिया जाता है तो इसका अर्थ छुड़ाने वाला हो जाता है। यह एक नई शब्द संरचना है।

इसी तरह वे एक अन्य शब्द ‘विषटालो’ (२१/१३) का प्रयोग करते हैं। विषटालो अर्थात् विष को टालने वाला-वैर का विसर्जन करने वाला। इस प्रकार भिक्खु जस रसायण में ऐसी अनेक शब्द संज्ञाओं को प्रतिष्ठित किया गया है।

परम्पराओं के संकेत

जयाचार्य इस काव्य में उस समय की अनेक परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों का भी संकेत करते हैं। आजकल सार्वजनिक सूचना के लिए ‘नोटिस’ Notice शब्द का प्रयोग किया जाता है जयाचार्य इसके स्थान पर --

‘चिट्ठी बांध लोकां नै चेतायो’ (२१/१२)

कहकर चिट्ठी बांध कर लोगों को चेताने की, खबरदार करने की बात कहते हैं। पुराने जमाने में जब भी कोई सार्वजनिक सूचना करनी होती थी तो उसे एक चिट्ठी अर्थात् कागज पर लिखकर शहर के दरवाजे पर लगा दिया जाता था।

प्रस्तुत प्रसंग में “चिट्ठी बांध लोकां नै चैतायो” से उसी परम्परा का संकेत किया गया है।

आजकल हम जिसे T.A., D.A. कहते हैं राजस्थानी में उसे ‘खरची’ (२३/१०) शब्द से अभिहित किया गया है।

इसी तरह ‘कोथली’ (४० दू. ८) इस एक शब्द में एक पूरी परम्परा का संकेत है। विवाह-शादी के प्रसंग से जब लोग इकट्ठे होते थे उन्हें विदा करते समय बची हुई मिठाई की एक ‘कोथली’ थैली देने की परम्परा थी। वह पूरी परम्परा ‘कोथली’ इस एक शब्द में बंद है।

इस तरह अनेकों संकेतों से यह पूरा ग्रंथ भरा पड़ा है।

गीत-काव्य

किसी भी रचना में भावावेग, कल्पना और लालित्य हो तो उसे कविता कहा जा सकता है। जयाचार्य के काव्य में ये तीनों विशेषताएं समाविष्ट हैं।

मुख्य रूप से यह चरित काव्य गीत-विधा में लिखा गया है। जयाचार्य ने लोकगीतों की धुनों को अपनी रचना का आधार बनाया। वे खुद संगीत-रसिक थे। रात में जब कभी ढोली या महिलाएं गीत गातीं और उनकी धुन उन्हें अच्छी लगती तो उसे ग्रहण कर लेते और प्रातः उसी में गीत की रचना कर देते। उनके इस शौक में मोतीजी स्वामी की अच्छी भागीदारी रहती थी। राजस्थानी संगीत की अपनी एक पुष्ट परम्परा रही है। जयाचार्य ने भिक्खु जस रसायण में उस परम्परा की रक्षा की है। भिक्खु जस रसायण में कुल ६३ गीतिकाएं हैं। उनकी धुनों का परिशिष्ट भी साथ में दिया जा रहा है। ये सब राजस्थानी की अपनी विशेष धरोहर हैं। इनका संगीत-तत्त्व एक अलग विवेचना विषय है। यह जयाचार्य के संगीत-प्रेम का ही परिणाम है कि आज भी हजारों-हजार लोग तन्मय होकर उनकी रचनाओं का सस्वर गायन करते हैं।

छंद-विचार

इस कृति में राजस्थानी के काव्य-प्राण दोहे-सोरठों का भी भरपूर उपयोग हुआ है। मनोहर छंद तथा लावणी का भी उपयोग किया गया है।

जयाचार्य का कवि-व्यक्तित्व बड़ा ही अनुपम था। उन्होंने न केवल विपुल साहित्य ही लिखा है अपितु छंद और अलंकार की दृष्टि से भी वह बहुत महत्वपूर्ण है। वे न केवल आशु रचना ही करते थे, अपितु उनका भाव पक्ष और कला-पक्ष दोनों ही अत्यंत ऊर्जस्वल थे। वैसे पूरा भिक्षु जस रसायण ही

रसप्लावित है। कुछ पदों का शब्द-शिल्प, अनुप्रास-बोध यहां प्रस्तुत किया जा रहा है।

जय सुजशकारण, दुख विडारण, सुमगधारण स्वामजी,
शुद्ध सुमति सारण, कुमति वारण, जगत तारण कामजी (ढा. 1४ कलश १)

इस दृष्टि से भिक्खु जस रसायण का अंतिम पद्य भी पठनीय है--

मतिवन्त संत महन्त महामुनि तन्त भिक्खु ऋख तणा,

गुण सघन गाया, परम पाया, हद सुहाया हिय घणा।

तज तन्त्र-मन्त्र-सुतन्त्र लौकिक, भज ए मन्त्र मनोहरू,

सुख सद्म पद्म सुकरण 'जय-जश'-नमो-भिक्खु मुनिवर।

(ढा. ६३ कलश १)

कविता का विषय क्या हो, वह छन्दोबद्ध हो या छन्द मुक्त हो, उसकी भाषा बोलचाल से नजदीक हो या उलझी हुई अलंकारिक हो इन सारे प्रश्नों का उत्तर सापेक्ष है। इन पर दो टूक निर्णय दे पाना आसान नहीं है। वस्तुतः कविता का विषय-वस्तु और रचना-विधान अपने युग के प्रतीक होते हैं। उन्हें भिन्न-भिन्न समय के कवियों के रचनाकर्म से ही समझा जा सकता है।

लोक कला

जयाचार्य का भाषा-माध्यम पूर्ण रूप से राजस्थानी है। उस पर कहीं-कहीं प्राकृत तथा गुजराती का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। भिक्षु जस रसायण जहां साहित्यिक कृति है वहां यह राजस्थान के लोक जीवन से भी जुड़ी हुई है। असल में तो लोक-काव्य में साहित्य की श्रेष्ठतम उपलब्धियां ही सन्निहित होती हैं, पर वे उपलब्धियां लोक जीवन में इस तरह रच-पच जाती हैं कि आदमी के मस्तिष्क पर बोझ नहीं बनती अपितु उसे एक सहजानन्द की अनुभूति प्रदान कराती है।

लोक भाषा के शब्दों का अखूट खजाना हम भिक्खु जस रसायण में पाते हैं जिसे पाद-टिप्पणों में देखा जा सकता है।

विविध-आयाम

भिक्खु जस रसायण एक बहुरंगी चरित्र-काव्य है। इसमें एक ओर जहां कोमल-कांत पदावली है, वहां दूसरी ओर कठोर तत्त्व-ज्ञान की छाया भी है। एक ओर उच्च आचार के प्रतिबिम्ब उभरे हैं तो दूसरी ओर मृदु-मंद हास्य की फुहार भी है। एक ओर तर्क की व्यूह-रचना है तो दूसरी ओर दृष्टान्तों के मनोरम

चित्र भी अभिलिखित हुए हैं। पर इसमें कोई संदेह नहीं है कि इसकी आधार भूमि जैनागम है। इसके चरित नायक आचार्य भिक्षु भगवान् महावीर के प्रति पूर्ण समर्पित थे। आचार्य भिक्षु और जिन-वचन एक दूसरे के पर्याय थे। उनकी सारी धर्मक्रान्ति का आधार ही जैन आचार-विचार की प्रतिष्ठा था। आचार्य भिक्षु ने उसके बलाबल की परीक्षा कर शास्त्र-समस्त आचार-विचार का रूप सामने रखा। जयाचार्य लिखते हैं--

विविध समय रस बाचतां, वारू कियो विचार।

अरिहंत वचन आलोचतां, ए असल नहीं अणगार (२/२)

आगम रहंस अनुपम-लही, स्वाम भिक्षु सार।

शुद्ध श्रद्धा शोधी सही, बलि आचार-विचार (२/१)

आचार्य भिक्षु की धर्मक्रान्ति का यही मूल मंत्र है।

‘स्वामी श्रद्धा दिखाई जिण वयण स्युं’

जहां भी उन्हें जिन वचन की विराधना दिखाई दी उसे सुधारने में अपने आपको झौंक दिया। जयाचार्य ने भिक्खु जश रसायण में आचार्य भिक्षु की आचार तथा विचार दोनों की क्रांति पर प्रभूत प्रकाश डाला है। शिथिलाचार पर वे जोरदार प्रहार इन शब्दों में करते हैं -

ज्यूं भेख पहिरै रोटी कारणै, तेहने कहो चोखो चारित्र पाल।

ते कठिण चारित्र पालै किणे विधै, दुकर कह्यो है दीन दयाल।(३६/१४)

सांगधारी फूटी नावा सारिखा, आप डूबै औरां ने डवोय।

पत्थर नावा जिम कहा पाखंडी, जे तीन सौ तेसठ जोय। (३६/१७)

कहीं-कहीं शिथिलाचार पर किया गया प्रहार कुछ कटु भी हो गया है, पर यह प्रहार किसी व्यक्ति पर नहीं होकर शिथिलाचारिता की मनोवृत्ति पर है।

विचार की विषमता को मिटाने के लिए भी भिक्खु जश रसायण में बहुत कुछ लिखा गया है। इस संदर्भ में जहां भी आगमों के प्रमाण आये हैं वहां हर प्रसंग पर उन्होंने ढेर सारे प्रमाण संकलित कर लिए हैं। उदाहरण के लिए हम सुपात्रदान के प्रसंग को लें। आचार्य भिक्षु की इस विषय में पूर्व सम्प्रदायों से मत-भिन्नता थी। जयाचार्य ने उस मतभिन्नता को दर्शाने के लिए इस प्रसंग पर आगमों के २१ संदर्भ प्रस्तुत कर दिए। उनकी सूची इस प्रकार है--

१ भगवती श. ८ उ. ६ सू. २४७

३ सुयगडांग श्र. १ अ. ११ गा. २०

२ निशीथ उ. १५ सू. ७६

४ भगवती श. ७ उ. १ सू. ४-५

५ दशवैकालिक अ. ३ गा. ६	१४ स्थानांग स्था. ९ सू. २५
६ उववाई सू. १६१	१५ आचारांग श्रु. १ अ. ४
७ सूत्रकृतांग श्रु. २ अ. २ सू. ७१	१६ आचारांग श्रु. १ अ. ६ उ. २ सू. ४८
८ उत्तराध्ययन अ. १४ गा. १२	१७ आचारांग श्रु. १ अ. ४ उ. सू. ४५
९ सुयगडांग श्रु. २ अ. ६ गा. ४४	१८ आचारांग श्रु. १ अ. ५ उ. ६ सू. १०७-१०९
१० उपासक दसा/१ अ. ७ सू. ५१	१९ आचारांग श्रु १ अ. २ उ. सू. १६६
११ सुयगडांग श्रु. २ अ. ५ गा. ३२	२० आचारांग श्रु. १ अ. ४
१२ विपाक श्रु. १ सू. ४२	२१ आवश्यक अ.४
१३ स्थानांग स्था. १० सू. ९	(ढा. १२ दू. ३ से ढाल गाथा १६ तक)

यह तो केवल सुपात्र-दान का एक प्रसंग है। इसी तरह अनुकम्पा, पुण्य, कालवाद, इन्द्रियवाद, पर्यायवाद आदि अनेकानेक प्रसंग हैं, जिन पर आचार्य भिक्षु ने पूर्व धारणा से हट कर नई स्थापनाएं की थीं, जयाचार्य ने उन सारे प्रसंगों के न केवल सैद्धान्तिक प्रमाण की एकत्र किए हैं, अपितु अपेक्षित विवेचन भी किया है। संक्षेप में उन पर तार्किक-बौद्धिक सटीक सूचन भी दिए हैं, जो पाठक को आचार्य भिक्षु के पूरे विचार-दर्शन से अवगत कराते हैं।

आगमिक आधार

आचार्य भिक्षु को अपनी हर स्थापना को सुसंगत करने के लिए पूरे आगमों के एक-एक संदर्भ का प्रायोज्य अभिप्रेत खोजना पड़ा था। जयाचार्य ने लिखा है

दोय-दोय बार सूत्रां भणी, वांच्यां धर अति प्यार

सूत्र विविध निर्णय करी, गाढ़ी मन में धार (३ दू. ५)

आचार्य भिक्षु के कथन को उद्धृत करते हुए कहते हैं --

मैं सूत्र बाचै निर्णय कियो रे, संक नहीं तिलमात। (५/३)

अपने प्रति तथा आगमों के प्रति अचल विश्वास ही उनके आचार-विचार का मूलाधार था। वे कहते हैं-मैंने दो-दो बार सारे सूत्रों का स्वाध्याय कर अपने विचार-दर्शन का निर्धारण किया है।

धर्म जिनेश्वर भाखियो, गुरु जाणो निर्गंध

साची सरधा हो जाणो तंत सार, पावै तिणसूं पार (४/२)

जिन आगम जोय प्रमाण किया।

इस प्रकार आचार्य भिक्षु की आगम निष्ठा को भिक्षु जश रसायण में बहुत ही दृढ़ता से स्थापित किया गया है। जयाचार्य ने कहा है --

भारी बुद्धि भिक्षु तणी, निर्मल मेल्या न्याय।

अरिहंत आज्ञा थापनै, श्रद्धा दी ओलखाय॥
 मरणधार शुद्ध मग लियो, कमिय न राखी काय।
 स्वामी सूत्र-न्याय संभलायनै, व्रत-अव्रत दीधी बतलाय (९ दू. १)
 थिर नीव आज्ञा भिक्खु थापनै, वारु जिन-वचन थाप्या विशाल।

बौद्धिकता का उपयोग

आचार्य भिक्षु की आगमों पर अपार श्रद्धा थी। साथ ही साथ उनकी बौद्धिक क्षमता भी प्रबल थी। इसीलिए वे आगम-सत्त्यों की स्पष्टता के लिए युक्ति-तर्क का भी सहारा लेते थे।

कुछ लोग केवल सूत्र-निश्चित ज्ञान को ही प्रमाण मानते हैं। उनके अनुसार आगमों के अतिरिक्त अन्य हेतु-दृष्टान्तों का कोई मूल्य नहीं होता। जयाचार्य ने उनके पक्ष को प्रस्तुत करते हुए कहा है--

सूत्र कही जे सहु, निर्मल सूत्र नेश्राय।

बुद्धि स्यूं मिलती बात वर, सहु असूत्र नेश्राय (१५ दू. ४)

आचार्य भिक्षु की आगम साक्ष्य से तत्त्व-निरूपण शैली की चर्चा करते हुए वे आगे कहते हैं--

सूत्र साख श्रद्धा सखर, स्वाम दिखाई सार।

सूत्र तणी नेश्राय सुद्ध, आगम अर्थ उदार (१५ दू. ५)

पर नंदी सूत्र का साक्ष्य देते हुए वे मनुष्य की बौद्धिक क्षमता का समादर करते हुए बताते हैं--

चार बुद्धि स्यूं चिंतवी, दिये विविध दृष्टंत।

असूत्र नेश्राय ओलखो, वर नंदी विरतंत (१७ दू. ६)

इसीलिए

उत्पत्तिया बुद्धि स्यूं अख्या, मिलता न्याय मुणंद।

केशी ने परे शुद्ध कथ्या, दृष्टांत अति दीपंत (१७ दू. १०)

सखरो भिक्षु स्वाम नो, महामोटो मतिज्ञान।

साचा न्यायज सोधिया, दृष्टांत देई प्रधान (१७ दू. ९)

अनेकांत दृष्टि

विचार महत्त्वपूर्ण होता है, पर उससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण है विचारक। विचार तो ज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से उपलब्ध होता है, पर उसमें जो सम्यक्त्व आता है वह मोहमुक्त विचार के संस्पर्श से ही आता है। इसी आधार

पर उपयोग के भेदों के अन्तर्गत ज्ञान और अज्ञान का विभाजन किया गया है। जो बोध सम्यक्त्वी के पास होता है, सत्य है और जो ज्ञान मिथ्यात्वी के पास होता है वह अज्ञान है, मिथ्या है। ज्ञान तो एक ही है पर पात्र के भेद से वह सम्यक् और मिथ्या बन जाता है।

आचार्य भिक्षु के पास जो विचार था, ऐसा नहीं है कि वह और किसी के पास नहीं रहा होगा। पर उनकी नीर-क्षीर मनीषा ने उसे इतना प्रबल बना दिया कि उसके पीछे एक सम्प्रदाय ही खड़ा हो गया। आचार्य भिक्षु की दृष्टि एकांत-ग्राहिणी नहीं थी। उन्होंने अहिंसा की प्रेरणा को लौकिक और पारलौकिक बता कर उसे अनेकांतमयी बना दिया था। जब भी दृष्टि को ऐकान्तिक आग्रह पकड़ लेता है तो वह मिथ्या बन जाती है।

सामान्य आदमी समस्याओं के दैहिक रूप से ही परिचित रहता है। उसके हिसाब से देह की रक्षा ही महत्त्वपूर्ण है। आचार्य भिक्षु उसे आत्मा के साथ भी जोड़ते हैं। कोई बकरा कसाई द्वारा मरने से बच गया इसे कोई भी समझ सकता है, पर कसाई की आत्मा पाप से बचे इस सूक्ष्म दर्शन को समझने वाले व्यक्ति विरले ही होते हैं। यहीं आकर सत्य साध्य-साधन की एकरूपता का प्रतिपादक बन जाता है। सचमुच इस दृष्टि से तत्त्व की ओलख को भिक्षु जस रसायण में बहुत कुशलता से प्रगट किया गया है।

सामान्य आदमी की दृष्टि लोकाभिमुख ही रहती है। एक सीमा तक वह बुरी भी नहीं है। वह लोक-व्यवस्था की प्रतिष्ठापक चेतना है। आचार्य भिक्षु ने उसका अपलाप नहीं किया। पर उनकी दृष्टि में अध्यात्म को केवल इहलोक की सीमा तक परिसीमित नहीं किया जा सकता। वह लौकिक से आगे पारलौकिक भी है। इसलिए उसे समझना आसान नहीं है। भिक्षु जस रसायण के दूसरे खंड में उसे बहुत यौक्तिक तरीके से समझाया गया है। भिक्षु दृष्टांतों ने उसे विचार की ऊंचाई तक पहुंचाने के लिए सुगम पगधियों का कार्य किया है।

विचार-संगति

आचार्य भिक्षु का विचार-बल इतना समृद्ध था कि उसकी किसी से तुलना करना कठिन है। उन्होंने अपने विचार को शुरू से लेकर आखिर तक जैसी सुसंगतता प्रदान की है, वैसी बहुत कम लोग कर पाते हैं। बल्कि उनकी धर्मक्रान्ति का मूलाधार ही सुसंगत विचार की स्वीकृति था। उन्होंने देखा कि जैन धर्म के

सभी संप्रदायों में आचार और विचार के पौर्वापर्य का निर्वाह नहीं हो रहा है। उनका एक सिरा उत्तराभिमुख है तो दूसरा सिरा पूर्वाभिमुख या दक्षिणाभिमुख है। इस विसंगति को मिटाने के लिए ही उन्होंने धर्मक्रांति की थी। इस काल में उन्हें अपने पूरे विचार-दर्शन को एक नई एकसूत्रता प्रदान करनी पड़ी। यदि हम उनके अहिंसा-दर्शन पर विचार करें तो स्पष्ट आभासित होगा कि उन्होंने जैनागमों का कितना सूक्ष्म अवगाहन किया था। ऐसा नहीं है कि उनके समसामयिक धर्म-सम्प्रदायों में चिंतन की क्षमता नहीं थी। उनके पास भी विचार की एक पुष्ट परम्परा थी। पर यह भी सही है कि उस समय की चिंतन-क्षमता परम्परा से आवृत हो गई थी। तात्कालिक परिस्थितियों का प्रभाव ही ऐसा था कि वे अपनी विचार-विसंगति को समझ नहीं पा रहे थे। आचार्य भिक्षु ने उसे समझा और अहिंसा को संयम के साथ जोड़ा। यों संयम जैन धर्म की मौलिक स्वीकृति रही है, पर वह जीवन के व्यवहार-पक्ष के साथ इतनी सघनता से जुड़ गया कि अहिंसा के विचार में भी विसंगति आ गई।

उदाहरण के तौर पर बड़े जीवों की रक्षा के लिए छोटे जीवों की हिंसा को भी अहिंसा समझा जाने लगा था। आचार्य भिक्षु ने उसका विरोध किया। उनका मानना था कि अहिंसा अपने आप में पूर्ण है। उसमें छोटे-बड़े या कम-ज्यादा का विभाजन नहीं हो सकता। बड़े से बड़े जीव की रक्षा के लिए भी छोटे से छोटे जीव को बलि का बकरा नहीं बनाया जा सकता। भिक्षु जस रसायण के दूसरे खंड में अहिंसा की इस सूक्ष्मता को बड़ी बारीकी से उकेरा गया है।

ऐतिह्य-दृष्टि

यद्यपि भिक्षु जस रसायण एक संत का चरित-काव्य है। पर प्रासंगिक ऐतिह्य तथ्यों की दृष्टि से इसमें यत्र-तत्र मेवाड़-मारवाड़ की तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों का भी थोड़ा चित्रण हुआ है। उस समय के राजा-महाराजाओं तथा व्यापारिक तथा सामाजिक स्थितियों के संकेत भी इसमें मिलते हैं। सिरियारी के प्रसंग में वे थोड़े में अत्यंत कुशलता से कहते हैं --

शहर सिरियारी हो शोभे कांठा नी कोर,
दोलो मगरो कोट ज्यूं दीपतो।
जन बहु वस्ती हो, महाजना री जोर,
जूना-जूना केइ पुर भणी जीपतो।
निर्भय नगरी हो ऋद्धि-समृद्धि निहोर,

ज्यां धर्म-ध्यान घणो तप-जाप नो।

राज करै हो दौलतसिंह राठौर,

कुम्पावत कहियै करडी छाप नो। ५३/९-१०''

पर, मुख्यतः इसका उच्छ्वास अध्यात्म-वासित है। आचार्य भिक्षु के जीवन के पौर-पौर में अध्यात्म-रस आप्लावित था। उनकी साधना का यात्रा-पथ जैन आगमों के दिव्य प्रकाश से आलोकित था। यद्यपि जैन-मुनि की चर्या अत्यंत कठोर है। सामान्य आदमी उस ओर मुंह ही नहीं कर सकता, पर आचार्य भिक्षु ने ऐसा रसमय जीवन जीया था कि उसमें आम आदमी को भी आकर्षण अनुभव होता है। उन्होंने अपने मधुरिम-व्यवहार से मुनित्व को भी मृदु-मुखर बना दिया। जयाचार्य ने बिलकुल सही लिखा है--

“भिक्षु जस रस अमृत भारी, शिव सम्पति सुख सहचारी।” (६/१)

भिक्षु दृष्टांतः अनुभव निर्झर

भिक्षु दृष्टांत उसका सबल साक्ष्य है। यह अनुभव का ऐसा सरित्-प्रवाह है जिसे पढ़ते-पढ़ते पाठक को लगता है जैसे साधना के सितार पर मौन का संगीत गाया जा रहा है। नपी-तुली निर्वद्य भाषा में उन्होंने इतने पैने और करारे व्यंग्य-वाण चलाये हैं कि सामान्य समझ का आदमी भी सिर हिलाए बिना नहीं रह सकता। आचार्य भिक्षु के उन अनुभव प्रसंगों को संकलित कर जयाचार्य ने अध्यात्म-साहित्य में आल्हाद की एक नई कलम लगाई है। भिक्षु दृष्टांत के सारे प्रसंग मुनिश्री हेमराजजी की स्मृति के अद्भुत चमत्कार हैं। इनसे आचार्य भिक्षु की सम्पूर्ण जीवन शैली पर नया प्रकाश पड़ता है। मुनिश्री हेमराजजी अनुभवों के उस विशाल सरोवर से केवल घट भर स्मृति जल उलींच सके हैं। यदि आचार्य भिक्षु के जीवन के अन्य अगणित जीवन-प्रसंगों को भी संकलित किया जा सकता तो सरस्वती के भंडार की वह अपूर्व निधि होती।

अनुवाद कौशल

जयाचार्य ने भिक्षु दृष्टांतों को भिक्षु जश रसायण में संजोकर चरित काव्यों की परम्परा में एक नया बोध-बीज बोया है। इससे पहले ऐसा प्रयोग हुआ या नहीं यह एक अन्वेषण का विषय है। भिक्षु दृष्टांत की शब्द-संयोजना, साहित्यिक-शिल्प, अनुभव-प्रौढ़ता, अध्यात्मानुबंधता तथा उक्ति-वैचित्र्य आदि विशेषताएं एक स्वतंत्र पुस्तक-लेखन का विषय है। पर यह कह देना अनुचित नहीं होगा कि भिक्षु दृष्टांत का इस चरित काव्य में जैसा उपयोग हुआ है वह जयाचार्य के कवित्व का एक स्वर्णिम पृष्ठ है।

जयाचार्य ने भिक्खु दृष्टांत के गद्य को भिक्खु जस रसायण के पद्य में उतारने में भी अपनी अनुपम कवि-मेधा का परिचय दिया है। साधारणतया गद्य को पद्य में ढालना बड़ा दुरूह कार्य है। मूल लेखन उतना जटिल नहीं होता जितना उसका छायांकन होता है। पर जयाचार्य ने यह पद्यानुवाद इतना मूल स्पर्शी, बल्कि हूबहू किया है, जिसे देखकर आश्चर्य होता है। उदाहरण के लिए हम बानगी के रूप एक दृष्टांत को ले सकते हैं। तुलनात्मक समीक्षा के लिए हम गद्य-पद्य दोनों को साथ-साथ प्रस्तुत कर रहे हैं।

गद्य	पद्य
कोयलारी तो राब	कोयला री तो राब अति काली
कालाबासण में रांधी	काला बासण में रांधी कराली
अमावस नी रात्री	अमावस नी रात्री
आंधा जीमण वाला	आंधा जीमण वाला
आंधा परुसण वाला	परुसण वाला आंधा पयाला
जीमता जाय ने खुंखारो करे	जीमता बोलै खुंखारा करता
कहै-खबरदार!	कहै--खबरदार होय जीमजो सोय
काला-कंखो टालज्यो	रखे आय जायला कालो कोय
काई टालै?	मूढ इतरो नहीं जाणै समेलो
सर्व कालो ही कालो भेलो हुवो	कालो हिज कालो हुवो भेलो
ज्युं सरधा आचार रो ठिकाणो नहीं	ज्युं सरधा-आचार रो नहीं ठिकाण
ते साध-श्रावक किम हुवै?	सगलो मिलियो सरखो घाण
	साध-श्रावक पण रो अंश नहीं सारो
	(३४/७ से १०)

यह एक प्रतीक अनुवाद है। इससे गद्य और पद्य में कितनी समता है बल्कि कितनी एकरूपता है यह सहज जाना जा सकता है। भिक्खु जस रसायण का दूसरा खंड इसी अगुरु-गंध से सुवासित है। इस खंड में आचार्य भिक्षु की जिन स्वोपज्ञ कहानियों का उल्लेख हुआ है, वे भी अद्भुत हैं। न केवल उनका भाव पक्ष ही अत्यंत महत्त्वपूर्ण है अपितु कला-पक्ष भी चित्ताकर्षक है।
बौद्धिकता से ऊपर

भिक्खु दृष्टांत केवल बौद्धिक व्यायाम का ग्रंथ नहीं है। दृष्टांतों के माध्यम से आचार्य ने दुर्गम से दुर्गम तथ्य को सुगम बनाकर अबोध व्यक्तियों के लिए

भी महान् अवदान दिया है। इसीलिए जयाचार्य ने भी भिक्षु जस रसायण में इसका जी भर कर उपयोग किया है। एक ओर उन्होंने आचार्य भिक्षु के दर्शन-पक्ष को बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित किया है वहां दूसरी ओर साहित्य के कोमलकांत पक्ष को भी बड़ी सफलता से उजागर किया। भिक्षु दृष्टांत आचार्य भिक्षु की साधना के कठोर पार्वतीय-प्रदेश में कल-कल निनाद करता हुआ एक पवित्र अनुभव-निर्झर है। जयाचार्य ने साधना की कठोरता को तराश कर एक मनोरम वास्तु-शिल्प को जन्म दिया है। यही कारण है इसमें गहन शास्त्र चर्चा के तनावपूर्ण क्षणों में भी मनोविनोद की फुहारें उछलती हुई प्रतीत होती हैं।

जैन आगम और परम्परा के संदर्भों को आचार्य भिक्षु ने जो नया अर्थबोध प्रदान किया है, उसमें भिक्षु दृष्टांत का अपना विशेष महत्त्व है। आगमों के सत्य को जन-भोग्य बनाने की दृष्टि से भी वे बड़े कीमती हैं। इसीलिए भिक्षु जस रसायण में उन्हें विस्तार से चर्चित किया गया है। इस खंड का उपसंहार करते हुए जयाचार्य ने लिखा है --

दृष्टंत वारू अधिक चारू, स्वाम नां ज सुहांमणा,
भव उदधि तारण जग उधारण, ऋष भिक्षु रलियामणा।
सुख वृद्धि सम्पति दमन दम्पति, भरम भंजन अति भलौ,
हृद बुध हिमागर सुमति सागर, नमो भिक्षु गुणनिलौ

(ढा. ४२ कलश १)

वर्णन शैली

वर्णन शैली की दृष्टि से भिक्षु जस रसायण का चतुर्थ खंड अपनी अलग ही विशेषता रखता है। इस खंड का वर्ण्य-विषय आचार्य भिक्षु का चरम कल्याण है। इसका प्रारंभ ही उनकी निर्वाण स्थली सिरियारी के प्रसंग से होता है। कैसे वे सिरियारी आये, कैसे चातुर्मास प्रारंभ किया, कैसे लोगों को प्रबोध देते, कैसे भिक्षा के लिए जाते आदि आदि विषयों का बड़ा ही विस्तृत एवं हृदयग्राही वर्णन है। अन्त में कैसे उनका शरीर निर्बल होता है और वे देहासक्ति से ऊपर उठकर आत्मस्थ हो जाते हैं-आदि विषयों का सटीक विवेचन है। आखिरी दिनों का वर्णन तो जैसे घंटे घंटे का रोजनामचा लिखा गया है। चरित्र-चित्रण की दृष्टि से यह वर्णन बड़ा ही सजीव एवं भावपूर्ण है। आचार्य भिक्षु के प्रति जयाचार्य का हृदय अत्यंत भक्ति-भावित है पर वह यथार्थ-बोध से इतना अनुविद्ध है कि स्तुति-गान सा नहीं लगता।

वार्धक्य के तट पर

आचार्य भिक्षु के वार्धक्य की ओर संकेत करते हुए वे लिखते हैं कि--

पांचूँ इन्द्रयां परवरी, न पडी कांइ हीण
वृद्धपणै पिण पूजनी, शीघ्र चाल शुभ चीन।
थाणै कठैई ना थप्या, उद्यमी अधिक अपार
चारू चरचा करण चित्त, पूज तणै अति प्यार
उठै गोचरी आप नित, अतिशयकारी ऐन
पूज्य सुमुद्रा देखनै, चित में पामै चैन ५३/८-२-३
सावण मासे स्वामजी, पूनम लगै पिछाण
सखर गोचरी शहर में, आप करी अगवाण (५४/दू. १)
आवसग अर्थ अनोपम, लिख-लिखने अवलोय
शिष्य ने आप सिखावता, जशधारी मुनि सोय (५४ दू. २)

इस तरह उनके सुखद एवं सकर्मक वार्धक्य का बड़ा ही सुबोध्य विवेचन हुआ है।

शिक्षा पद

अपने अंतिम दिनों में उन्होंने श्रमण-श्रमणियों को जो शिक्षा प्रदान की है वह साधना एवं संगठन दोनों ही दृष्टियों से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

बले स्वामी सीख दे सारो जी, सहु सुणता भणी
आराधजो आचारोजी, मत चूको अणी ५६/९
शिष-शिषणी पर सोयोजी उपकरण ऊपरे
मूर्छा म कीजे कोयोजी, प्रमाद ने परहरो
पुद्गल ममत प्रसंगोजी, तन-मन सूं तजी
संजम सरवर सुचंगोजी, भल-भावे भली ५६/१२, १३

आचार्य भिक्षु ने स्वयं जीवन भर शुद्ध साधना मार्ग का अवलम्बन किया था। इसी से उन्हें अपनी जीवन की सार्थकता का बोध हो सका। अपने शिष्यों को उसी ओर संकेत करते हुए उन्होंने उपरोक्त अमूल्य शिक्षा वचन कहे थे।

परम्परा प्रबोध

उन्होंने जीवन भर अनुशासन की एक बेशकीमती नजीर सबके सामने प्रस्तुत की। अंतिम समय में भी उनका अनुशास्ता कहता है --

नीत चरण पालण री, भल ऋष भारमालो रे
 शंक म राखज्यो, शुद्ध साधु नी चालो रे ५५/६
 शुद्ध समण सेवज्यो, अणाचार्यां सूं दूरा रे
 सीख दोनूं धर्यां, हुवै मुगति हजूरा रे ५५/७
 सहु साध-साधवी, वर हेत विशेषो रे
 रूडो राखज्यो, धरणूं नहीं द्वेषो रे ५५/१७
 वलि जिलो न बांधणो, गुरु आण सुगामी रे
 सीख सही, दी भिक्खू स्वामी रे ५५/१८

वे ज्यों-त्यों पंथ बढ़ाने की बात नहीं कहते हैं। दीक्षा देने के विषय में उनका स्पष्ट अभिमत इस प्रकार प्रकट होता है-

देख-देखने, दीख्या सुध दीज्यो

बलि जिण-तिण भणी, गण में म मुंडीज्यो ५५/२१

इसी क्रम में वे विचार की एक रूपता को भी विस्मृत नहीं करते हैं। श्रद्धा, आचार, कल्प या सूत्र के विषय में मत-भिन्नता होने पर वे गुरु तथा बुद्धिमान साधुओं पर विश्वास करने की हित-शिक्षा देते हुए कहते हैं--

श्रद्धा-आचार रो, कल्प सूत्र नों बोलो रे

गुरु बुद्धिवंत री, राखो प्रतीत अमोलो रे ५५/२२

यदि कोई बात समझ में न आये तो उसका उत्तर देते हुए वे कहते हैं --

कोई बोल न बेसे, केवलियां ने भलावी रे

ताण कीजो मती, मन नै समझावी रे ५५/२३

संगठन में दरार डालने के लिए यदि एक दो तीन आदि सदस्य गण से बाहर हो जाये तो उनसे सावधान रहने की याद दिलाते हुए वे कहते हैं --

एक-दो-तीन आदि, निकले गण बारो रे

साध मजाणज्यो, शुद्ध सीख श्रीकारो रे

इक आज्ञा में रहिज्यो, ए रीत परंपर रे

लिखत आगै कियो, सहु धरजो खराखर रे ५५/२५-२६

शासन प्रवर्तावण, सीख दीधी स्वामी रे

और कारण नहीं, मत अंतरजांमी रे (५५/२८)

उनके इन शिक्षापदों के संदर्भ में भगवान् महावीर की याद कराते हुए जयाचार्य कहते हैं :

वीरजी मोख विराजता, वारू कियो बखाण
 सोलह पहर रे आसरे, सीख दीधी सुविहाण
 इण दुःषम आरा मझै, स्वाम भीखण जी सार

प्रत्यक्ष श्री जिननी परे, आखी सीख उदार ५५/२-३

आखिरी क्षण

आचार्य भिक्षु ने अपने जीवन के अंतिम क्षणों में अत्यंत जागरूकता से जो बहुमूल्य बातें कहीं उन्हें भिक्षु जश रसायण में बड़े करीने से सजाया गया है। जीवन के आखिरी क्षणों में भी उनके मन में कोई निराशा नहीं थी। वे अत्यंत हर्ष से कहते हैं :

परभव निकट पिछाणों, दीसै मुझ तणु

मुझ भय मूल म जाणों, हर्ष हीये घणों ५६/२

एक ओर उनका परिनिर्वाण क्षण निकट आ रहा था दूसरी ओर वे कहते हैं "मुझ भय मूल म जाणों" मुझे इसका जरा भी भय नहीं है, सचमुच एक विलक्षण बात है। अपने जीवन के प्रति वे पूर्ण रूप से आश्वस्त हैं। उनके तृप्ति के उद्गारों को जयाचार्य ने इन छंदों में बांधा है :

घणा जीवां रे घट माह्यो जी, सम्यक्त रूपीयो

महै बीज अमोलक बाह्योजी, मग ओलखावियो

देशव्रत दीपायोजी, लाभ अधिक लियो

साधपणों सुखदायोजी, बहुजन ने दियो

महै जोड़ां करी सूत्र-न्यायोजी, शुद्ध जाणे सही

म्हारै मन रे मांह्यो जी, उणायत ना रही। ५६/३,४,५

आचार्य भिक्षु की यह बात बड़ी कीमती है कि मेरे मन में कोई कमी नहीं खटकती, बल्कि मैं अपने जीवन से पूर्णरूप से संतुष्ट हूं।

जयाचार्य ने आचार्य भिक्षु की मृत्यु को जैसे एक महोत्सव के रूप में चित्रित किया है। अपनी इस महायात्रा की वे बड़ी तन्मयता से तैयारी करते हैं। जयाचार्य कहते हैं—

स्वाम भिक्खू तिण अवसरे, आयु नेडो आयो जाण

करे आलोवण किण विधे, सखर रीत सुविहाण ५८/१

आत्मालोचन का बड़ा-लम्बा और विराट् वर्णन है। उन्होंने न केवल समुच्चय रूप से त्रस-स्थावर जीवों से खमत खामणा किया है अपितु अपने एक-एक

शिष्य-शिष्याओं से अत्यंत मुक्त-भाव से खमत-खामणा किया है। श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी वे कहते हैं :

श्रावक ने बले श्राविका, केइ कठिण प्रकति रा कहाय

कठिण वचन कह्यो हुवै, खांत करी ने खमाय ५८/१५

गण से अलग हो जाने वाले बल्कि अपना विरोध करने वालों के लिए भी वे सरल भाव से कहते हैं :

केइ गण बारै निकल्या, साध-साधवी सोय

करड़ो काठो कह्यो हुवै, ज्यांसू खमत खामण जोय

चन्द्रभाणजी थली मझे, तिलोकचन्द जी ताम

कहिजै खमत-खामणा मांहरा, त्यांसू पडियो बौहलौ काम ५८/१६-१७

इस तरह एक-एक व्यक्ति को याद कर जब वे खमत-खामणा करते हैं तो जयाचार्य की यह उक्ति बड़ी सार्थक लगती हैं :

एहवी आलोवण कानां सुण्या, आवै अधिक वैराग

करै त्यारो कहिवो किसूं, त्यारै माथै मोटा भाग ५८/२२

अप्रमत्त दृष्टि

मुनि रायचन्द जी ने जब उनसे कहा --गुरुदेव! अब तो आपके पुद्गल क्षीण पड़ने लगे हैं तो वे तत्काल एकदम जागरूक हो जाते हैं

भिक्षु बोलावै भारीमाल नै, बले खेतसी जी ने विचारो

याद करता ही संत दोनूं ही, झट आय ऊभा है तिवारो

नमोथुणो कियौ अरिहंत सिद्धा ने, तीखे वचन तामो

बहु नर नारी सुणता ने देखता, संधारो पचख्यो भिक्षु स्वामो (४९/१२१३)
सत्जुगी मुनिश्री खेतसीजी ने कहा-गुरुदेव! आपने जैसी उत्कट साधना की है उससे लगता है कि आप दिव्य सुखों को प्राप्त होंगे। आचार्य भिक्षु ने उत्तर दिया-

सुख स्वर्गादिक ना सहू, पुद्गल रूप पिछांण

पामला सुख पोचा घणा, ज्यांनै जाणूं जहर समान

बार अनंती भोगव्या, अधिका सुख अहमंद

तो पिण नहीं हुवो तृप्तो, तिण कारण ए सुख फंद (४७/८)

स्वर्ग सुखों को पौद्गलिक तथा पामला (खाज को खुजलाने का सुख) बताते हुए वे उन्हें भव-भ्रमण का हेतु बताकर, उनसे विरक्त से हो जाते हैं। वे इसी उन्नत भावना पर सवार होकर संधारे में भी एक आत्मतृप्ति का अनुभव करते

हैं। ऐसा अनुमान किया जाता है इसीलिए अंतिम क्षणों में उन्हें अतीन्द्रिय ज्ञान की उपलब्धि हो गई थी। बिना किसी सूचना के कुछ साधु-साधवियों के आगमन की चर्चा कर उन्होंने सबको चमत्कृत कर दिया। भिक्खु जस रसायण में इस सारे वर्णन को बड़ी विशदता से चित्रित किया गया है। छोटे से कथ्य को भी कहीं-कहीं तो क्षण-क्षण में बांध दिया है और अंत में इस दीप के निर्वाण की झांकी जयाचार्य इन शब्दों में दिखाते हैं :

बैठा कर साधु लारै बैठा, गुण स्वामी रा गावै
 बहु नर-नारी दर्शन देखी, मन में हरष थावै
 आयो आउखो अणचिंतवियो बैठा-बैठा जाण
 सुखे समाधे बाह्य दीसत, चट दे छोड्या प्राणं ६१/१२,१३

अनुपम आभा-वल्लय

दुनियां के सभी महापुरुषों ने अपने-अपने तरीके से सत्य का साक्षात्कार किया है। पर सत्य को साक्षात् कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। उससे परम्परित करने के लिए व्यवस्थाओं को तथाकार बनाना भी जरूरी है। इस दृष्टि से भगवान् महावीर ने काफी सतर्कता बरती है। उन्होंने जैन-परम्परा को जैसा मनोवैज्ञानिक व्यवस्था-तंत्र दिया था, वैसा अन्य लोग नहीं दे पाये। पर कालक्रम से जब उसमें कुछ दरारें पड़ने लगीं तो आचार्य भिक्षु ने उस पर नये सिरे से विचार कर कुछ नये कदम उठाये।

संघ कभी चलाने से नहीं चलता वह तो तब चलता है जब उसके नीचे आचार और विचार का पुष्ट धरातल होता है, तपस्या का पृष्ठबल होता है। संघ प्रणेता भी कभी बनाये नहीं जाते। वे तो अपने आप खड़े होते हैं। उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसी विरल विशेषताएं होती हैं जिनसे लोग अपने आप आकर्षित होते हैं। आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व में भी कुछ ऐसा ही चुम्बक तत्त्व था कि लोग उनसे अपने आप आकर्षित होते थे। भिक्खु जस रसायण के तीसरे और चौथे खंड में उनके आभामंडल की ज्योतिकिरणें फूट-फूट कर बाहर बिखर रही हैं। जयाचार्य कहते हैं --

संत भीखणजी मोटका, मोटा गुण भरपूर
 भव जीवां तुमे भजो, पोहा उंगते सूर
 बले गुण गाऊं भिक्खु तणा, सांभलजो सहुकोय
 मोटा गुण महाव्रत नां, कहूं सूत्र साहमो जोय ४/२-३

जयाचार्य के लिए भिक्षु जश रसायण की रचना एक साधना थी। उन्होंने सूत्र-साक्ष्य से कहा है -- गुणवंत ना गुण गावतां, उत्कृष्ट रसायण आय पद तीर्थकर पामियै, कह्यो सुज्ञाता माय १/२ निश्चय ही उन्होंने आचार्य भिक्षु की गुण-गंगा में अभिस्नात कर अपने आपको पुनीत-पावन बनाया था।

भक्त कवि

जयाचार्य एक अध्यात्म पुरुष थे। अपनी चरम स्थिति में अध्यात्म अकर्म है, पर उस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए आदमी को कर्म की राह से होकर गुजरना पड़ता है। इस अर्थ में अकर्म से भावित कर्म भी अध्यात्म है। भक्ति अध्यात्म-कर्म का महत्त्वपूर्ण पहलू है। इसीलिए भक्ति को योग कहा गया है। जयाचार्य का कर्म भक्तियोग से भावित था। यों जयाचार्य एक विविधमुखी साहित्य स्रष्टा थे। उनकी रचनाधर्मिता के अनेक मार्ग हैं, पर उनके भक्तरूप की अपनी एक विशेष छवि है। उनके साहित्य में भक्ति से भावित काफी कृतियां हैं। तीर्थकरों से लेकर सामान्य साधु-साध्वियों के गुणोत्कर्ष को चित्रित करने में उन्होंने अपनी मुक्त मानसिकता का परिचय कराया है। पर आचार्य भिक्षु तो उनकी आस्था के प्रगाढ़ केन्द्र थे। इस दृष्टि से भिक्षु जश रसायण को सबल साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। यों किसी का जीवन-चरित लिखना उसके प्रति भक्ति के प्रकर्ष का ही द्योतक होता है, पर भिक्षु जश रसायण में भक्ति के जैसे बिम्ब उभरे हैं, वे अत्यंत मोहक हैं। भिक्षु जश रसायण में केवल भक्ति प्रणाम ही हों ऐसा भी नहीं है, पर इस पूरी रचना का केन्द्र-तत्त्व भक्ति ही है। जयाचार्य अत्यंत भावुक होकर आचार्य भिक्षु के साथ अपना तादात्म्य स्थापित करते हैं। वे कहते हैं --

याद आवै भिक्षु दिन-रैन, तन-मन विकसावै मुझ नैन (१/३०)

आचार्य भिक्षु की स्मृति मुझे दिन-रात होती रहती है उनकी स्मृति मात्र से मेरे तन-मन-नयन विकसित हो जाते हैं।

उनकी संस्तुति में वे लिखते हैं --

स्वप्ने सूरत स्वामी, देखत ही सुख होय

प्रत्यक्ष नो कहिवो किसूं शरण आपनी मोय (२६/५)

आचार्य भिक्षु के स्मरण मात्र से आदमी मुक्ति सुखों को प्राप्त कर लेता है। जयाचार्य कहते हैं --

“त्यारी आसता राखो तहतीक, तिणसूं होवे मोक्ष नजीक”
 शूरा सिंह तणी परे, सुरगिर जेम सधीर
 अंगंज ओजागर अति घणा, विडद निभारण वीर (८/१६)
 भिक्खु स्वाम भारी-जगत् उद्धारक जशधारी
 अतिशयधारी ओपता, शासण शिरमणि मौड
 आचारज इण काल में, अवर ने एहनी जोड़ (८/१८)
 आचार्य भिक्षु का नाम ही उनके लिए मंत्र के समान था। वे कहते हैं--

मंत्राक्षर जिम समरण मोटो, परख्यो म्हा तन-मन
 इहभव, परभव में हितकारी, भिक्खु तणो भजन
 “निशदिन मनडो मांहरो, जप रह्यो आपरो जाप”
 “भरत खेतर में दीपक भिक्खु, दीया समान दीपाया”
 “जहाज तुल्य भिक्षु जशधारी, प्रत्यक्ष ही पेखायो”
 “सुर-गिर साम्प्रत आप सधीर मोने मिलिया अमोलक हीर”
 “स्वाम भिक्खु तणै प्रसादं, पामी समकित चरण समाध”
 “धिन-धिन भिक्खु स्वाम, सार्या घणा जणांरा काम”
 “स्वाम गुणां नो पोरसो रे, स्वाम सासण सिणगार”
 “नमो नमो भिक्खु ऋख निरमल, मोक्ष तणा दातार”
 स्मरण स्वाम तणो सुध साध्यां, शिव-सुख पामै सार

जयाचार्य ने अनेकानेक विधाओं में आचार्य भिक्षु को अपने भक्ति प्रणाम निवेदित किए हैं। यहां हम केवल भिक्खु जश रसायण के संदर्भ में ही चर्चा कर रहे हैं। ऐसा लगता है जैसे इस जीवन-काव्य के पौर-पौर में भिक्षु का नाम बोल रहा है। पूरा भिक्खु जश रसायण ही इसका प्रमाण है, पर इस दृष्टि से तीसरे खंड की बावीस गाथाओं की ४३वीं ढाल अत्यंत महत्त्वपूर्ण है आचार्य भिक्षु को आदिनाथ की उपमा देते हुए प्रथम गाथा में वे लिखते हैं --

इण दुषम आरे कर्म कटियाजी
 प्रगटिया आदि जिणंद ज्यू
 ए इचर्य अधिक आवंत”

“आदि जिणंद तणी परे ओलखायो आचार”
 जनम-जनम किम बिसरै तुझ गुण अनघ अपार
 स्यूं उपमा तुमनै कहूंसार अजिण जिणा सरिसा उदार

भिक्षु जश रसायण की रचना कर वे आनंद मग्न होकर रहते हैं
हूंस घणा दिन स्यूं मुझ हुंती, आज फली मन आश

भिक्षु जश रसायण नामे, ग्रंथ रच्यो सुविशाल॥ (६३/४४)

आचार्य भिक्षु के प्रति उनकी भक्ति इतनी अगाध थी कि वैसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं। आचार्य भिक्षु उनकी साहित्य साधना के बहुत बड़े प्रेरणास्रोत रहे हैं। नया सम्प्रदाय खड़ा करना कोई मामूली बात नहीं है। जब आदमी में अनेक प्रकार की विशेषताएं होती हैं, तभी उसके आस-पास योग्य व्यक्तियों का आभा मंडल बनता है। भिक्षु जश रसायण का पूरा तीसरा खंड आचार्य भिक्षु के इसी आभामंडल का विशद विवेचन है।

जयाचार्य आचार्य भिक्षु के प्रति इतने समर्पित थे कि वे तेरापंथ में दूसरे भिक्षु ही कहलाते हैं। वे एक प्रकार से आचार्य भिक्षु के सफल भाष्यकार हैं। भिक्षु जश रसायण में उनकी श्रद्धा के सान्द्र स्वर स्थान-स्थान पर मुखर हुए हैं। आचार्य भिक्षु को समझने और समझाने में जयाचार्य ने जितना प्रयास किया है वह उल्लेखनीय है। उन्होंने न केवल सिद्धान्त सारों के रूप में ही आचार्य भिक्षु के विचारों के आगम-स्रोतों को ढूंढ कर तुलनात्मक अध्ययन की दिशा में एक प्रगत कदम उठाया अपितु अपनी अन्य कृतियों में भी वे आचार्य भिक्षु के विचारों का सफल भाष्य करते हैं।

चरित्र-चित्रण

चारित्र-चित्रण की दृष्टि से भिक्षु जश रसायण एक अद्भुत चरित काव्य है। इसमें आचार्य भिक्षु के चरित्र को जिस प्रकर्ष भाव से उत्कीर्ण किया गया है वह तो है ही, पर प्रसंग-प्रसंग पर अन्य चरित्र-चित्रों का रंगकर्म भी अत्यंत चित्ताकर्षक है। भिक्षु जश रसायण का तीसरा खंड इस सत्य का साक्षात् साक्ष्य है। आचार्य भिक्षु अपने शिष्यों के साथ इतने एकात्म/एकरस थे कि उनमें द्वैत जैसा कुछ लगता ही नहीं। बल्कि उनमें परस्पर पूरकता का अहसास होता है। इसीलिए जयाचार्य ने उनके समय के एक-एक साधु-साध्वी के जीवन चरित को भिक्षु जश रसायण में समेट लिया। इससे इतिहास की तो सुरक्षा हुई ही है, अणु भी विराट् के साथ जुड़ कर अमर हो गया।

अपने पात्रों के चरित्र को सजीवता से प्रस्तुत करने की कला जयाचार्य ने जैन-आगम ग्रंथों तथा आचार्य भिक्षु से ग्रहण की है। उदाहरण के लिए हम विनीत अविनीत के चरित्र-चित्रण को देखें। इस संदर्भ में वे पूरा एक प्रत्यक्ष

गीत लिख देते हैं। यद्यपि इस वर्णन में आचार्य भिक्षु की वर्णन शैली को पहचानने में बहुत कठिनाई नहीं होगी, परन्तु उस अपार साहित्य ग्रंथ में से बूंद-बूंद को ढूँढकर एक सरित्-प्रवाह बहा देना जयाचार्य का अपना एक कमाल है। आचार्य भिक्षु का संदर्भ देकर वे कहते हैं--

स्वाम भिक्षु बुद्धि सागरु, निर्मल मेल्या न्याय
 सुविनीत सुण हर्षे सही, अविनीत ने न सुहाय
 अविनीत साधु ऊपरै, दीधो स्वाम दृष्टन्त
 एक साहूकार नीं स्त्री, पाणी काजै गई घर खंत
 तो माथै पाणी स्यूं भर्यो पोता रे घर आवतां पेख
 मार्ग में तिणरी बाहिली मिली, बातां करवा लागी विशेष
 एक घड़ी ताई तो उभा थकां, हिल-मिल बातां करी हर्षाय
 पछै घर आवी निज पिउ भणी, तिण हेलो पाड्यो ताय
 तुर्त घड़ो उतारो मुझ सिर तणु, जो किंचित बेला थी भरतार
 बेहडो उतार्यो निज बेरनों, तो क्रोध में आवी अपार
 कहै म्हारै माथै तो बेहडो उदक नो, सो हुं भारां मुई घणी सोय
 थानै तो मूल सूझै नहीं, जिणसूं बेला इतरी लगाई जोय
 संसार तणै लेखै सही, नार इसडी अविनीत
 रस्तै एक घडी बेहडो छतां, पोते बातां करी धर प्रीत
 किंचित जेज पिउ करी, तडका-भडका करवा लागी तांम
 इसडी अजोग ते स्त्री, अवनीत जग कहै आंम
 अवनीत साधु एहवो, गोचरियादिक माहि
 किण ही बाइ-भाई स्यूं बातां करै, एक घडी ताई उभा ताहि
 अथवा दर्शन देवा कोई भणी, झट चलाई नै परहो जाय
 तिहां उभां घणी वेलां लगै, बातां करै बणाय
 बडा थोड़ो ई काम भळावियां, करतां कठमठाठ करै जेह
 तथा पाणी राख्यो ते लेवा मेलियां, टाला टोलो कर देवै तेह
 अथवा जातो दोहरो हुवै, बलै देवै मुंह बिगाड
 गुरु सीख दियै चूक थी पड्यो, तो करै उलटो फुंकार
 अवनीत साधु नै दीधी उपमा, अवनीत स्त्री नी भिक्षु आम
 इम सांभल उत्तमां नरां, थिर चित्त सुविनय थाप (४१/१ से १३)

विनीत अविनीत की प्रकृति-चित्रण के प्रलम्ब प्रसंग का यह एक लघु अंश है। इससे यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि जयाचार्य की चरित्र-चित्रण की क्षमता कितनी बेजोड़ थी। इससे आचार्य भिक्षु और जयाचार्य की रचनाधर्मिता में एक आश्चर्यकारी साम्य के भी दर्शन होते हैं।

तेरापंथ और भिक्खु जश रसायण

तेरापंथ धर्मसंघ के लिए आचार्य भिक्षु एक ऐसे प्रेरणा-स्रोत हैं कि उन्हें पढ़ना हर तेरापंथी के लिए अनिवार्य है। इस दृष्टि से भिक्खु जश रसायण का पठन-पाठन निरंतर होते रहना स्वाभाविक है। पर इस वर्ष को जब भिक्षु चेतना वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है तो आचार्य भिक्षु को पढ़ना-पढ़ाना और भी आवश्यक हो गया। यों आचार्य भिक्षु को पढ़ने के लिए आज अनेक पुस्तकें उपलब्ध हैं, पर मूल स्रोत के रूप में खोजा जाये तो भिक्खु जश रसायण का नाम पहला आता है। इसलिए इस ग्रंथ का महत्त्व और भी अधिक बढ़ जाता है।

आचार्यश्री तुलसी एवं युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ ने इस वर्ष जिन पांच ग्रंथों के स्वाध्याय का विशेष निर्देश दिया है, उसमें भिक्खु जश रसायण भी एक है। इसलिए यह आवश्यक था कि इस ग्रंथ का सुसम्पादन किया जाये। गुरुदेव का निर्देश रहा कि यह काम हम करें। हमारा यह सौभाग्य था कि हमें यह अवसर प्रदान किया गया। अतः हमने तत्काल कार्य शुरू कर दिया।

पांडुलिपि एवं मुद्रित प्रति

भिक्खु जश रसायण की अनेक प्रतियां-पांडुलिपियां संघ के भंडार में उपलब्ध हैं। जयाचार्य ने इसकी रचना १९०८ में की थी। उन्होंने इसे स्वयं अपने हाथ से लिखा, वह पांडुलिपि भी संघीय भंडार में उपलब्ध है। इसकी सर्वाधिक प्राचीन मुद्रित प्रति वर्धमान ग्रंथागार जैन विश्व भारती से उपलब्ध हुई। वह सं. १९४३ में राज भक्त प्रिंटिंग प्रेस बम्बई में छपी हुई है। प्रकाशक का नाम खेतसी जीवराज लिखा हुआ है। प्राप्ति स्थान भीमजी सामजी नु नवो मारो, बीजे दादरे बताया गया है, सहयोगियों की भी एक लम्बी लिस्ट छपी है। वास्तव में ये लोग कौन थे यह एक खोज का विषय है। उस समय विचार-प्रचार की ऐसी दृष्टि

ही दुर्लभ थी। यद्यपि यह मुद्रित प्रति काफी पुरानी है, पर इसमें लिपिगत अशुद्धियों की भी भरमार है। टाईटल पेज पर ही, 'श्री भिक्खु जश रसायण' की जगह "भीखु जे जस र्णायण" लिखा गया है। अन्दर भी अशुद्धियाँ भरी पड़ी हैं। फिर भी यह आश्चर्य की बात है कि उस प्रति के मुद्रण-प्रकाशन में लोंकाशाह तथा मंदिरमार्गी लोगों-संस्थानों का भी सहयोग रहा है। सद्विचार के प्रकाशन में सहभागिता का इसे एक रचनात्मक उदाहरण कहा जा सकता है।

उसके बाद भीनासर, गंगाशहर के कुछ श्रावकों की ओर से भी इसका मुद्रण हुआ। फिर तेरापंथ द्विशताब्दी के अवसर पर "आचार्य चरितावली" तथा जयाचार्य निर्वाण शताब्दी के अवसर पर "तेरापंथ के तीन आचार्य" पुस्तक में भी इसका प्रकाशन हुआ है। उस का सम्पादन कई प्रतियों को मिलाकर किया गया था। पर हमने मूल पाठ के रूप में स्वयं जयाचार्य द्वारा रचना काल में लिखित मूल प्रति को ही स्वीकार किया है। 'तेरापंथ के तीन आचार्य' पुस्तक को (क) प्रति के रूप में मानकर आवश्यक पाठ संशोधन किया है, जिसका संकेत पाद टिप्पण में किया गया है।

पाठ-संशोधन, पाठ-भेद

पाठ संशोधन एक कठिन काम है। क्योंकि समय-समय पर लिपिगत भेद होना अस्वाभाविक नहीं है। कभी-कभी एक ही शब्द के अनेक रूप भी सामने आ जाते हैं। कभी-कभी यह रूप-भेद प्रादेशिक आंचलिकताओं के कारण होता है तो कभी कभी छंदोबद्धता के कारण भी हो जाता है। काव्य शास्त्र की मान्यता रही है कि "अपि मासं मसं कुर्यात् छंदोभंगं न कारयेत्" भले ही मास शब्द की जगह मस शब्द का प्रयोग करलो पर छंदोभंग मत करो। जयाचार्य ने भी कई जगह इस काव्य-रूढि का पालन किया है। इसीलिए भिक्खु जश रसायण में कुछ लिपि-भेद तथा भाषा-भेद भी दिखाई देता है। इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं --

चतुर	-	चुतर, चुत्र	परणांम	-	प्रणाम
पर्व	-	प्रब	इचरज	-	इचर्य
परिग्रह	-	प्रग्रहो, प्रग्रहो	परचो	-	प्रचो

परभव	-	प्रभव	सुख	-	सुष
चित्र	-	चित, चत्र	समझणा	-	समजणा
छेहलो	-	चेहलो	आचार्य	-	आचारज
श्रीकार	-	सरीकार	चाय	-	चाहि
प्रणमै	-	परणमै	ताय	-	ताहि
मुगत	-	मुक्त			
तिसिया	-	तसिया			
चरण	-	चर्ण			

भिक्षु जश रसायण पर प्राकृत-अपभ्रंश का तो भरपूर प्रभाव है ही, पर उर्दू जैसी विदेशी भाषा का भी प्रभाव है। कहीं-कहीं उर्दू को अपने रूप में ढालने का भी प्रयत्न किया गया है। उदाहरण के लिए जवाब के स्थान पर जाब का प्रयोग किया गया है। कभी-कभी ऐसे प्रयोग को अशुद्ध मान लिया जाता है, पर वास्तव में यह अशुद्धि नहीं है अपितु राजस्थानी भाषा की उच्चारण मृदुता का एक उदाहरण है।

आभार

उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखकर ही पाठ संशोधन किया गया है। इसके साथ-साथ चार परिशिष्ट भी प्रस्तुत ग्रंथ में दिये जा रहे हैं। आशा है इससे इस ग्रंथ रत्न का अवगाहन करने में पाठकों को विशेष सुविधा रहेगी।

नई प्रेरणा : नया चिंतन

अपनी अनगिन व्यस्तताओं के बीच भी परमाराध्य युगप्रधान आचार्यश्री तुलसी ने हमारा जितना मार्ग-दर्शन किया बल्कि स्वयं जितना समय और श्रम दिया, वह अवर्णनीय है। आचार्यश्री ने स्वयं एक-एक अक्षर को अपनी नजर से निकाला तथा रागिनियों की पद-संयोजना का अवधानपूर्वक निरीक्षण किया। यदि ऐसा नहीं होता तो कुछ चिंतनीय बिंदु रह ही जाते। आचार्यश्री की यह सजगता बहुत बड़ी प्रेरणा देती है। हम उनकी इस अयाचित कृपा के लिए श्रद्धा से आनत हैं। उनकी सूझ बूझ ही इस सारे प्रयास की आधार शिला है।

साहित्य के संदर्भ में आचार्यश्री का चिंतन सतत चलता ही रहता है। आपके मन में यह भी विचार आया कि जब हमारा राजस्थानी भाषा का इतना विपुल

तथा मौलिक साहित्य है तो क्यों नहीं सारे ही साहित्य का नये आधुनिक वैज्ञानिक ढंग से सम्पादन किया जाए। इस चिंतन ने एक नई दिशा प्रदान की और 'तेरापंथ का राजस्थानी वाङ्मय' के नाम से पूरी ग्रंथमाला की योजना प्रस्फुरित हुई। इस ग्रंथमाला का पहला विभाग 'जीवन दर्शन' से सम्बन्धित है तथा 'जीवन दर्शन' के अन्तर्गत 'भिक्षु जश रसायण' एक शिरमौर ग्रंथ है अतः स्वतः ही "तेरापंथ" का राजस्थानी वाङ्मय में इसे प्रथम स्थान प्राप्त हो गया।

लघु भिक्षु जश रसायण

भिक्षु जश रसायण की तरह ही जयाचार्य ने एक 'लघु भिक्षु जश रसायण' की भी रचना की है। 'लघु भिक्षु जश रसायण' मूल 'भिक्षु जश रसायण' के बाद की रचना है। भिक्षु जश रसायण की रचना सं. १९०८ में हुई तथा लघु भिक्षु जश रसायण की रचना सं. १९२३ में हुई। दोनों में १५ वर्षों का अन्तराल है। सम्भवतः भिक्षु जश रसायण के विस्तार में न जाने वालों के लिए ही जयाचार्य ने लघु भिक्षु जश रसायण की रचना की है। यह उनके आचार्य भिक्षु के प्रति श्रद्धोत्कर्ष का ही परिणाम है। विषय वस्तु एक होने के कारण दोनों का वर्ण्य एक ही है पर दोनों की रचना सर्वथा भिन्न है।

लघु भिक्षु जश रसायण में सबसे पहले जम्बू स्वामी से लेकर देवर्धिंगणी तक की पूरी आचार्य परम्परा का स्मरण किया गया है। तत्पश्चात् भगवान महावीर की परम्परा पर भस्मग्रह तथा धूमकेतु का उल्लेख करते हुए उसे लूँकासाह, आचार्य भिक्षु तथा मुनिश्री हेमराजजी तक जोड़ा गया है। पीठिका के रूप में काल-गणना का यह उद्गंकन शोध की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

पांच ढालों-दोहों के इस जीवन-चरित्र में आचार्य भिक्षु पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला गया है। भिक्षु जश रसायण की तरह ही लघु भिक्षु जश रसायण का रचना कौशल भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। संक्षेप में सबकुछ कह देना ही इसकी विशेषता है। इसीलिए लघु भिक्षु जश रसायण को भी भिक्षु जश रसायण के साथ जोड़ दिया गया।

भिक्षु-चरित (१) मुनि- हेमराजजी

आचार्य भिक्षु एक महान साधक पुरुष थे। उनकी साधना ने अनेकानेक लोगों को बहुत गहराई से प्रभावित किया था। यही कारण है आचार्य भिक्षु को

जितना स्तुति अभिषेक प्राप्त हुआ उतना शायद बहुत कम आचार्यों को प्राप्त होता है। जयाचार्य ने तो 'भिक्षु जश रसायण' के रूप में पूरा काव्य उनपर लिखा ही है, इससे पूर्व मुनि हेमराजजी एवं मुनि वेणीरामजी ने भी "भिक्षु चरित" नाम से दो स्वतंत्र चरित्र-काव्य लिखे हैं पर प्रत्यक्षानुभूति तथा भिक्षु जश रसायण के लिए सामग्री-स्रोत होने के कारण इनका महत्त्व भी असंदिग्ध है।

दोनों भिक्षु चरितों की अपनी कुछ विशेषताएं हैं तो चरित-नायक होने के कारण कुछ समानताएं भी हैं। विशेषताएं जहां उनके रचना-कौशल को अभिव्यक्त करती हैं वहां समानताएं संवादिता के पुष्ट प्रमाण हैं। दृश्य एक होने के बावजूद भी द्रष्टा की अपनी आंखें अलग-अलग होती हैं। मुनिश्री हेमराजजी आचार्य भिक्षु के बुद्धि-कौशल से अत्यंत प्रभावित थे अतः उनकी रचना में आचार्य भिक्षु के बुद्धि चातुर्य के चित्र बड़ी अभिरामता से उभरे हैं।

इसमें कोई शक नहीं कि आचार्य भिक्षु साधना के अभ्रंकष शिखर थे पर उनकी बौद्धिक क्षमता भी अपूर्व थी। इसीलिए मुनिश्री हेमराजजी उत्पत्तिया बुद्धि के हवाले से अपनी रचना में उसी विशेषता को बार-बार उजागर करते हैं।

नौ ढालों और दोहों के इस चरित का पौर-पौर भक्ति रस से पूर्णतः संभृत है। आचार्य भिक्षु लोकरुचि के एक पारखी संगीतज्ञ थे अतः उनका शिष्य वर्ग भी उससे प्रभावित हो, यह स्वाभाविक था। यही कारण है कि दोनों ही भिक्षु-चरित गेय विद्या में लिखे गए हैं।

इन जीवन-चरितों में राजस्थानी की उच्चारण-मृदुता के भी स्थान-स्थान पर दर्शन होते हैं। प्रकृति के स्थान पर 'परकत' मेरु के स्थान 'मेर', ऋषि के स्थान पर 'रिष' (ख) आदि प्रयोग इसके स्पष्ट उदाहरण हैं।

राजस्थानी की भाषा-परम्परा को भी इन चरितों में बड़े अच्छे रूप में प्रतिबिम्बित किया गया है। आचार्य भिक्षु के मां-बाप को दीपांदे और बल्लूशा के सम्बोधन से अभिहित करना उसी परम्परा का एक महत्त्वपूर्ण संकेत है।

इस तरह की अनेक दृष्टियों से यह लघु जीवन चरित अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

भिक्षु-चरित (२) मुनि वेणीरामजी

मुनिश्री वेणीरामजी का १३ ढालों-दोहों का भिक्षु-चरित भी आचार्य

भिक्षु को एक अत्यंत सशक्त भक्ति प्रणाम है। पूरे काव्य में आचार्य भिक्षु के आगम-पुरुष को एक शलाका-पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। बल्कि इसकी चौथी ढाल को भिक्षु जश रसायण में ज्यों की त्यों उद्धृत कर जयाचार्य ने एक प्रकार से इसके महत्त्व को और भी अधिक बढ़ा दिया है। वास्तव में ही मुनिश्री वैणीरामजी का कवि-कर्म अत्यंत प्राञ्जल है।

यों तो इतिहास जीवन-चरितों का संवाहक तत्त्व होता है, अतः उनमें प्रमुख व्यक्तियों का उल्लेख अवश्यंभावी है। मुनिश्री ने घटनाओं के साथ जुड़े हुए जीवणजी आछा (९/११) जेतोजी (१०/६) गुलोजी लूणिया (१०/१०) जैसे अल्प परिचित व्यक्तियों का नामोल्लेख कर इस जीवन-चरित की व्यापकता एवं सूक्ष्मग्राहिता को अतिशय प्रामाणिक बना दिया है। यह एक ऐसी विरल विशेषता है जिसका मूल्य इतिहास का विद्यार्थी ही समझ सकता है।

राजस्थान के प्राकृतिक परिवेश को आंकने का भी मुनिश्री का अपना एक अद्भुत अंदाज है। छठी ढाल की पांचवी गाथा में 'चौथज आई चांदणी' का प्रयोग इस दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। राजस्थानी जीवन में रात को चांदणी कहने के पीछे यहां की प्राकृतिक सुषमा की जो अभिव्यक्ति है, उसे वही व्यक्ति व्यक्त कर सकता है जो उसे भोगा हुआ होता है। निश्चय ही पूरा काव्य इस तरह की महत्त्वपूर्ण संवेदनाओं से भरा पड़ा है।

मुनिश्री वेणीरामजी एक मेवाड़ी संत थे, अतः उनकी भाषा में मेवाड़ी मृदुता को बहुत स्पष्टता से अनुभव किया जा सकता है। विशेष को 'वसेख' (१/६) कूट को 'कूर' (६/६) गुरु को 'गुर' (२/२) वचन को 'बेण' (११/६) कृपा को 'किरपा' (१२/८) मरुधर को 'मुरधर' (२/२) आदि शब्द प्रयोग मेवाड़ी भाषा का उच्चारण-मृदुता के बहुत बड़े साक्ष्य हैं। यों तो पूरी राजस्थानी भाषा की उच्चारण ही अत्यंत मृदु है, पर मेवाड़ी भाषा की मृदुता का अपना एक अलग ही मिठास है। मुनिश्री वैणीरामजी उसे अभिव्यक्त करने में अत्यंत सफल रहे हैं।

इन सारी विशेषताओं के कारण इन दोनों भिक्षु-चरितों को भी प्रस्तुत संग्रह में शामिल कर लिया गया है।

आभार

इस महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रन्थ-रत्न के सम्पादन के साथ जुड़ना हमारे लिए एक परम सौभाग्य की बात है। इसके लिए आचार्यश्री एवं युवाचार्यश्री की कृपा ही सबसे महत्त्वपूर्ण कारण है। उनके प्रति जितना भी आभार ज्ञापित किया जाय वह थोड़ा ही है।

मुनि श्रेयांसकुमार जी, मुनि मृत्युंजयकुमार जी, मुनि चैतन्य कुमार जी आदि का भी हमें समय-समय पर सहयोग प्राप्त हुआ और हम 'भिक्षु चेतना वर्ष' में अपने आद्य आचार्य के चरणों में अपनी श्रद्धा समर्पित कर सके, यह हमारे लिए अत्यंत प्रसन्नता की बात है।

बीदासर

मर्यादा महोत्सव

२०४९

मुनि मधुकर

मुनि सुखलाल

१

भिक्षु जश रसायण

(जयाचार्य द्वारा रचित आचार्यश्री भिक्षु का जीवन चरित्र)

प्रथम खंड

दूहा

१. सिद्ध साधु प्रणमी सखर, आंणी अधिक उलास।
सुखदायक आखूं^१ सरस, वारू 'भिक्षु-विलास'॥
२. गुणवंत नां गुण गावतां, उत्कृष्ट रसांण^२ आय।
पद तीर्थकर पामीयै, कह्यौ सुज्ञाता^३ माय॥
३. सासण वीर तणै समण, कह्या अधिक अधिकाय।
गुण बुद्धि तप अरु ज्ञान करि, चउदश सहंस सुहाय॥
४. सर्वज्ञ जिन मुनि सत्त सय, अवधि तेर सय आण।
मनपर्जव सय पंच मुनि, चिउं सय वादी पिछांण॥
५. पूरवधर त्रिण सय पवर, वैक्र सत्त सय वाध।
समणी सहंस छतीस सुध, चउदश सय निरुपाध॥
६. सुधर्म जंबू तलक^४ सिव, अन्य मुनि अमर-विमाण।
हिवडां पंचम काळ मै, भिक्षू प्रगट्या भांण॥
७. चतुर्थ आरा नां मुनि, नयणां देख्या नांय।
धिन-धिन भिक्षू चरण - धर, प्रत्यख दर्शण पाय॥
८. किहां उपनां, जनम्यां किहां, परभव पद किहां पाय।
किया चौमासा किण विधै, सांभळजो सुखदाय॥
९. चिउं सय सत्तर वर्ष लगै, नंदीवर्धन निहाळ।
तां पीछै विक्रम तणौ, सांप्रत संवत् संभाळ॥

ढाळ : १

(नाटक भरतादिक तणां रे)

१. सकल द्वीप सिरोमणूं रे लाल, जम्बूद्वीप सुतंत।
'अष्टमी चंद'-कळा इसौरे' लाल, भरतखेत्र सुलकंत^५॥
भव जीवां रे! रूडौ^६ लागै भीखू ऋषराय,
भव जीवां रे! रूडौ लागै स्वाम सुखदाय ॥ध्रुवपद॥

१. कहता हूं।

२. रसायण (क)।

३. णायाधम्मकहाओ-श्रुतस्कंध

१ अ. ८ सूत्र १८।

४. तका।

५. अर्थ चन्द्राकार।

६. भलकंत (क)।

७. अच्छा।

२. बतीस सहंस देशां मझै रे लाल,
कांठै^३ नगर कंटाळीयौ^३ रे लाल,
३. साह बलूजी तिहां बसै रे लाल,
जाति संकलेचा^४ जाणजो रे लाल,
४. दीपांदे तसुं भारज्या रे लाल,
उदरे भिक्खू ऊपना रे लाल,
५. मृगपति महा महिमानिलौ रे लाल,
सफल सुपन सुखदायकौ रे लाल,
६. जशधारी सुत जनमीयौ^५ रे लाल,
संवत सतरैसे तयांसियै रे लाल,
७. आषाढ़ सुदि^६ पख ओपतौ रे लाल,
'सर्वसिद्धा' त्रयोदशी रे लाल,
८. दसां मांहिलौ दीपतो रे लाल,
पायो चउथौ परवरौ रे लाल,
९. जनम-किल्याण थयां पछै रे लाल,
उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे लाल,
१०. सुन्दर इक^७ परण्या सही रे लाल,
भीक्खू नै परभव तणी रे लाल,
११. केता दिन गछवास्यां कनै रे लाल,
पाछै पोत्याबंध^८ कनै रे लाल,

'नरधाम मरुधर देश'^१।
कमधज^२ राज करेश॥ भवजीवां रे।
ओसवंस अवसंत।
बड़े-साजन^३ सुप्रसंस॥ भवजीवां रे।
सरल भद्र सुखकार।
देख्यौ सुपन उदार॥ भवजीवां रे।
पुनवंत^४ सुत सुपसाय।
देखी हरखी माय॥ भवजीवां रे।
अनुक्रम अवसर आय।
पंचांग लेखै ताय॥ भवजीवां रे।
तेरस तिथ जणाय।
कहै जगत मै^५ वाय॥ भवजीवां रे।
नक्षत्र मूल^६ निहाळ।
जनम थयौ तिण काळ॥ भवजीवां रे।
बालभाव मूकाय।
विविध मेलवै न्याय॥ भवजीवां रे।
सुखदाई सुविनीत।
चिंता अधिकी चीत^७॥ भवजीवां रे।
जाता कुळ-गुरु जाण।
सुणवा लागा बखाण॥ भवजीवां रे।

१. झाड़ी बंको झाबुओ, वचन बंको कुशलेश।
नारी बंकी पूगल तणी, नर बंको मरुधर देश॥

(एक प्रचलित उक्ति)

२. अरावलि पर्वत की उपत्यका के कुछ क्षेत्रों का समूह--(मारवाड़ जंक्सन, सोजत रोड से कोट तक, सिरियारी, जोजावर, खिंवाड़ा से सिंवास तक का प्रदेश) 'कांठा कहलाता है।

३. कांठा में 'कंटाळियो' आडवाण में बाली।
गोढवाल में घाणेराव, मारवाड़ में पाली॥

(एक प्रचलित उक्ति)

४. राठौडवंशीय क्षत्रिय।

५. सकलेचा (क)।

६. वीसा (ओसवाल) बड़े साजन तथा दसा (ओसवाल) ल्होड़ा साजन कहलाते हैं।

७. पुन्यवंत (क)।

८. जनमियो (क)।

९. सुदी (क)।

१०. में (क)।

११. मूल (क)।

१२. सुन्दरी/धर्मपत्नी-सुगनीबाई।

१३. चित्त में।

१४. एक संप्रदाय।

१२. पछै धार्या रुघनाथजी रे लाल,
 तेहि वडां^१ संजम सरधै नही रे लाल,
 १३. काळ कितौक बीतां पछै रे लाल,
 भीक्खू नै तसुं भारज्या रे लाल,
 १४. लेवां संजम त्यां लगै रे लाल,
 अभिग्रह एहवौ आदर्यौ रे लाल,
 १५. तठा पछै त्रिया तणौ रे लाल,
 वर सगपण मिलता बहु रे लाल,
 १६. दिख्या^२ नै त्यारी थया रे लाल,
 रुघनाथजी नै इम कहौ रे लाल,
 १७. तब बोल्या रुघनाथजी रे लाल,
 सीह^३ तणी परि^४ गूंजसी रे लाल,
 १८. अनुमति मा आपी तदा रे लाल,
 भीक्खू दिया जननी भणी रे लाल,
 १९. दिख्या-महोच्छव दीपता^५ रे लाल,
 द्रव्ये चारित धारीयौ रे लाल,
 २०. संवत अठारै आठै^६ समै रे लाल,
 द्रव्य गुरु धार्या रुघनाथजी रे लाल,
 २१. प्रथम ढाळ प्रगटपणै रे लाल,
 वलि द्रव्य-दिक्षा वरणवी रे लाल,

छोड़्या पोत्याबंधा
 न सरधै सामायक संध॥ भवजीवां रे।
 सील आदरियौ सार।
 चारित्र नीं चित धार॥ भवजीवां रे।
 एकांतर अवधार।
 विरक्तपणै सुविचार॥ भवजीवां रे।
 पड़ीयौ तांम विजोग।
 भीक्खु न बंछ्या भोग॥ भवजीवां रे।
 अनुमति न दियै माया।
 म्है सीह सुपन देखाय॥ भवजीवां रे।
 सांभळ बाई वाय।
 ए सुपनौ छै चवदां^७ माया॥ भवजीवां रे।
 'सहंस रोकड़^८ उनमान।
 चारित लेवा ध्यान॥ भवजीवां रे।
 बगड़ी सैहर वखाण।
 भावे चरण म जाण॥ भवजीवां रे।
 घर छोड़्यौ विष जाण।
 पिण नाई धर्म नीं छांण॥ भवजीवां रे।
 कहौ भीक्खू नौं जन्म किल्याण।
 वारुआगै वखांण॥ भवजीवां रे।

१. इस काल में।

२. दीक्षा (क)।

३. सिंह (क)।

४. पर (क)।

५. चौदह स्वप्न -- १ ऐरावत हाथी २ धोरी

वृषभ ३ शार्दूल सिंह ४ लक्ष्मी ५ युगल पुष्पमाला

६ पूर्ण चन्द्रमा ७ सूर्य ८ इन्द्र ध्वज ९ पूर्ण

कलश १० पद्म सरोवर ११ क्षीर सागर

१२ देव विमान १३ रत्न राशि १४ निर्धूम

अग्नि।

६. एक हजार नगद रुपये।

७. दीपतो (क)।

८. मृगसर कृष्णा १२।

दूहा

१. अल्प दिवस रै आंतरै, सीख्या सूत्र-सिद्धंत।
तीव्र बुद्धि भीक्खू तणी, सुखदाई सोभंत॥
२. विविध समय-रस वांचतां, वारू कियौ विचार।
अरिहंत वचन आलोचतां, ए असल नहीं अणगार॥
३. यां थापीता थानक आदर्या, आधाकर्मी अजोग।
मोल लिया माहै रहै, नित्यपिंड लियै निरोग॥
४. पडिलेह्यां विण रहै पड़्या, पोथ्यां रा 'गंज' पेख।
विण आज्ञा दिक्षा दियै, विवेक-विकळ विसेख॥
५. उपधि-वस्त्र-पात्र अधिक, मर्यादा उपरंत।
दोष थापै जाण-जाणनै, तिण सूं अ नहि संत॥
६. सरधा पिण साची नहीं, असल नहीं आचार।
इण विध करै आलोचना, पिण द्रव्य-गुरु सूं अति प्यार॥
७. पूछ्यां जाब पूरौ न दै, काळ कितौ इम थाय।
पीत द्रव्य-गुरु सूं परम, ते करै सोभ सवाय॥
८. पूछै बात आचार नीं, जाणै वैरागी जेह।
तिण सूं पूछै बलि-बली, पिण नहीं और संदेह॥
९. पट-धारक भीक्खू प्रगट, हद आपस मैं हेत।
इतलै कुण विरतंत हुआ, सुणजो^३ सहू सचेत॥

ढाळ : २

(प्रभवो मन मैं चिंतवै)

१. इह अवसर मेवाड़ मैं, राजनगर सुजाण।
राजसमुद्र पासै वस्यौ, अधिका त्यां आइठाण^३॥
२. त्यां वस्ती घणीं महाजना तणीं, जाण^४ सूत्रां नां जेह।
वंदना छोड़ी निज गुरु भणी, दिल मैं पड़ियौ संदेह॥
३. मुरधर मैं रुघनाथजी, सांभळी सहू बात।
भीक्खू नैं तिहां भेजीया, संका मेटण साख्यात॥

१. ढेरा।

२. सुणज्यो (क) ।

३. अधिष्ठान/चिन्ह।

४. ज्ञाता/जानकार ।

४. बुद्धिवंत विण भ्रम नां मिटै,
जाय संका मेटौ जेहनी^१,
५. टोकरजी हरनाथजी,
भीक्खू-शिष भारीमालजी,
६. अै साथ लेई भीक्खू आवीया,
संवत अठारै पनरै समै,
७. चूंप^२ धरी चरचा करी,
ते कहै बात भीक्खू भणी,
८. आधाकर्मी थानक आदर्या,
उपधि-वस्त्र-पात्र अधिक ही,
९. जाणं किवाड़ जड़ौ^३ सदा,
म्हे वंदणा करा किण रीत सूं,
१०. द्रव्य-गुरु-नौ वैण राखवा,
अकल चतराइ^४ करी तदा,
११. कळा विविध 'केलवी' करी',
ते कहै संक मिटी नहिं,
१२. आप वैरागी बुद्धिवंत छौ,
तिण कारण वंदणा करां,
१३. इम कहिनै वंदणा करी,
भीक्खू रै असाता वेदनी,
१४. अधिक ताव अति आकरौ,
उत्तम नर नैं ते अवसरै,
१५. अधम पुरष दुख ऊपनां,
समचित वेदन नां सहै,
१६. तीव्र ताप नीं वेदना,
तिण अवसर मैं आवीया,
- तिण सूं थे बुद्धिवांन।
इम कहि मेल्या ते स्थान॥
वीरभाणजी साथा
दिक्षा दी निज हाथा॥
राजनगर मझार।
चौमासौ गुणकार॥
भायां थी तिण वार।
आप देखौ आचार॥
मोल लिया प्रसीधी।
आ पिण थे थाप कीधी॥
इत्यादिक अवलोक।
थे तौ थाप्या दोख॥
भीक्खू बुद्धि नां भंडार।
दीया जाब तिवार॥
त्यांनै पगां लगाया।
पिण निसुणौ मुझ वाया॥
आप री परतीत।
आप जगत मैं वदीत^५॥
इह अवसर माय।
उदय आवी अथाय॥
'सीओ'^६ दोहरौ सैहणौ।
रूड़ै चित्त रैहणौ॥
करै हाय-तराय।
पापे पिंड भराय॥
भीक्खू नैं अधिकाय।
एहवा अध्यवसाय॥

१. तेहनी (क)।

२. उमंग/चाव।

३. चूलिए की कपाटों की अपेक्षा से।

४. चतुराई (क)।

५. रच करा।

६. विदित/विख्यात।

७. शीत लग कर आने वाला विषम ज्वर--
मलेरिया।

१७. म्हैं साचा नै तो झूठा कीया,	श्री	जिन	वचन	उठाय।
आउ आवै इह अवसरै,	तौ	माठी	गति	पाय॥
१८. द्रव्य-गुरु काम आवै कदी,	तौ	हिव	बात	विचारूं।
कारण मिटीयां निरपक्ष सुं,	साचौ	मारग	धारूं।	
१९. जेम सिद्धंत मैं जिन कह्यौ,	चूंप	धरी	तिम	चालूं॥
काण ^१ न राखूं केहनीं,	झट	जिन	मारग	झालूं॥
२०. एहवौ अभिग्रह आदर्यौ,	भीक्खू	ताव		मझार।
उत्तम पुरष नै आवै घणो,	भय	परभव	नौं	अपार॥
२१. दूजी ढाळे आवीया	राजनगर			सुरीत।
आंख अभ्यंतर ऊघड़ी,	निरमळ	धारी		नीत॥

दूहा

१. तुरत ताव तब ऊतर्यौ, विध सूं कियौ विचार।
हिव साचौ मत आदरी, करुं आतम तणौ उधार॥
२. रखे^१ झूठ लागैला मो भणी, तौ करणी पकी पिछांण।
इम चिंतव^२ सिद्धंत नै, वाच्या^३ अधिक सुजाण॥
३. जो साचां नैं झूठा कहूं, तौ परभव रै माय।
जीभ पामणी^४ दोहिली, विविधपणै दुख पाय॥
४. पख राखी द्रव्य गुरू भणी, जो कहूं साचा सोय॥
तौ पिण परभव नै विषै, काम कठिण अति होय॥
५. औ दूधारौ खांडौ अछै, एहवी मन मैं धार।
दोय-दोय वार सूत्रां भणी, वाच्या धर अति प्यार॥
६. सूत्र विविध निरणय करी, गाढ़ी मन मैं धार।
समंकत^५ चारित बिहुं नहीं, एहवौ कीयौ^६ विचार॥
७. भायां नै भीक्खू कहै^७, थे तौ साचा सोय।
म्हे झूठा गुरु सूं मिली, शुद्ध मग लेसां जोय॥
८. भाया सुण हरख्या घणां, बोल्या एहवी वाय।
अब म्हारी संका मिटी, दिल मैं रही न काय॥
९. प्रतीत आप तणी हुंती, जिसी म्हारा मन माय।
तिसी दिखाड़ी तुरत ही, इम कहि हरखत थाय॥

ढाळ : ३

(राणी भाखै सुण रे सूझा!)

१. राजनगर थी कीयौ विहार, चौमासो उतरीयां सार।
आवै मुरधर देश मझार रे॥ मन प्यारा,
भीक्खू जश रसायण सुणिजै॥ ध्रुवपदा॥
२. साधां नै सहू बात सुणाई, सरधा-किरिया ओळखाई।
ते पिण^८ हरख्या मन माही रे॥ मन प्यारा,

१. 'ऐसा न हो कि'।

२. चिंतवी (क)।

३. वांच्या (क)।

४. प्राप्त होनी।

५. सम्यक्त (क)।

६. किया (क)।

७. कह्यौ (क)।

८. पिण सुण। (क)।

३. टोकरजी हरनाथजी ताय, भारीमाल घणा सुखदाय।
समझी लागा पूज रै पाय रे॥ मन प्यारा,
४. वीरभांणजी पिण तिणवार, आदर्या भीक्खू वयण उदारा।
आवै सोजत सैहर मझार रे॥ मन प्यारा,
५. विचै गांम नांहा जांणी सोय, दोय साथ कीया अवलोय।
सीख इण पर दीधी जोय रे॥ मन प्यारा,
६. वीरभांणजी नै कहै वाय, जो थे पहिला जाओ गुरु पाय।
तो या बात म करजो काय^४ रे॥ मन प्यारा,
७. पहिला बात सुण्यां भिड़काय, मनखंच हुवै मन माय।
तौ पछै समजाया दोहरा जाय रे॥ मन प्यारा,
८. नेम^५ तौ ते आपां रा गुरु है, मन खंच्या समजणा दुकर है।
'बीभड़िया'^३ पछै^३ काम न सरहै रे॥ मन प्यारा,
९. कळा-विनय करी हूं कैहसूं^४, दिल श्रद्धा बेसाणी देसूं।
युक्ति सूं समजाई लेसूं रे॥ मन प्यारा,
१०. स्वांमी एम त्यां नै समजाया, वीरभाणजी आगूंच आया।
रुघनाथजी सोजत पाया रे॥ मन प्यारा,
११. कर जोड़ी नै वंदना कीधी, पूछै द्रव्य-गुरु प्रसीधी।
भाया री संका मेट दीधी रे॥ मन प्यारा,
१२. वीरभांणजी बोल्या वायो- भाया तौ साचा^५ भेदज पायो।
मन संक हुवै तौ मिटायो रे॥ मन प्यारा,
१३. आधाकर्मी थानक असुद्ध आहार, विण कारण नित्यपिंड वार।
आंपें भोगवां ए अणाचार रे॥ मन प्यारा,
१४. वस्त्र-पातर अधिका सेवां, विण आगन्या दिख्या देवां।
विवेक-विकल भणी मूंड लेवां रे॥ मन प्यारा,
१५. दिन-रात्रि मैं जड़ां किवाड़, इत्यादि बहु दोष विचार।
त्यांरी थाप आंपां रै धार रै॥ मन प्यारा,
१६. भाया तौ कहै साची साख्यात, तिण मैं झूठ नहीं तिलमात।
द्रव्य-गुरु निसुणी ए बात रे॥ मन प्यारा,

१. कांय (क)।

२. प्रथम।

३. बिखरने के बाद। बिगड़िया (क)।

४. कहस्यूं (क)।

५. साचो (क)।

१७. द्रव्य-गुरु कहै यूं कांइ बोलै, वीरभांणजी पाछौ झखोलै॥
 कूड़ौ^१ तो भीक्खू पास अतोलै रे॥ मन प्यारा,
 १८. म्हारै कनै तो वानगी^२ तास, कूड़ौ-रास भीखनजी पास।
 इम सांभळ हुआ उदास रे॥ मन प्यारा,
 १९. वीरभांण रै नहीं समाही, तिण सूं आगूंच बात जणाई।
 हिंवै आया भीक्खू ऋषराई रे॥ मन प्यारा,
 २०. तंत ढाळ कही ए तीजी, वीरभांण नीं बात कहीजी
 ऋष भीक्खू नीं बात रहीजी॥ मन प्यारा,

१. साचो (क) ढेर (पिटारा)।

२. नमूना।

दूहा

१. हिव भीक्खू द्रव्य-गुरु भणी वंदै बे कर जोड़।
माथै हाथ दियौ नहीं, 'चसमा' देख्या और॥'
२. जब भीक्खू मन जांणीयौ, आगूंच आखी बात।
पहिली मनडौ फिर गयौ, तौ पूछूं साख्यात॥
३. कर जोड़ी नै इम कहै, यूं क्यूं स्वामीनाथ?
चित उदास तिण कारणै, माथै न दियौ हाथ॥
४. द्रव्य-गुरु भाखै ताहरै, संक पड़ी सुविचार।
तिण सूं कर शिर नां दीयौ, मन पिण फाटौ धार॥
५. वलि थारै नै माहरै, भेळौ नहीं आहार।
वचन सुणी भीक्खू कहै, संक मेटौ इह वार॥
६. वलि भीक्खू मन चिंतवै, म्हांमैं यांमैं जाण।
संजम समगत को नहीं, पिण हिवडां न करणी तांण॥
७. प्राछित लेई एहनै, द्यूं प्रतीत उपजाय।
पछै खप करनै समजायनै, आणूं मारग ठाय॥
८. हम चिंतव द्रव्य-गुरु भणी, बोलै एहवी वाय।
संक जाणौ तौ मुझ भणी, प्राछित दौ सुखदाय॥
९. इम प्रतीत उपजायनै, भेळौ कीयौ आहार।
हिव समजावै किण विधै, ते सुणजो विस्तार॥

ढाळः४

(हिव राणी नै हो समझावै पंडिता धाय)

१. हिव द्रव्य-गुरु नै हो समझावै भीक्खू स्वाम, निसुणौ बात अमाम।
सूत्र वयण दिल सरदहौ॥
२. अरि अघ हणिवै हो देव कहा अरिहंत, गुरु जांणौ निर्ग्रथा।
धर्म जिणेस्वर भाखीयौ॥
३. सांची सरधा हो ए जांणौ तंत सार, पांमै तिण सूं पार।
आज्ञा बारै धर्म को नहीं॥

१. आंखें बदली हुई लगी।

४. यां तीनू मैं हो भेळ म जाणौ लिगार, अन्तर आंख उघाड़।
सूत्र सीख सरधौ सही॥
५. और वस्तु मैं हो भेळ पड़ै जो आय, तौ रूढ़ी पिण बिगड़ाय।
तौ पुण्य-पाप भेळा किम हुवै?
- ६ असुभ जोगां सूं हो बंधे पाप एकंत, सुभ सूं पुन्य बंधंत।
पुण पाप भेळा किसा जोग सूं?
- ७ एके करणी हो बंधै पुन्य के पाप, तिण मैं मिश्र म थाप।
करणी तीजी जिन नां कही॥
- ८ भीक्खू भाखै हो द्रव्य-गुरु नै अवलोय, जिन वच सांहमौ जोय।
ग्रही टेक नै परहरौ॥
- ९ सुध सरधा हो हाथ न आई श्रीकार, असल नहीं आचार।
थाप दीसै घणा दोष री॥
- १० जो थे मानौ हो सूतर नीं बात, तौ थेइज म्हांरा नाथ।
नहीं तर ठीक लागै नहीं॥
- ११ म्हैं घर छोड्या हो आतम तारण काम, और नहीं परिणाम।
तिण सूं बार-बार कहूं आपनै॥
- १२ आप मानौ हो स्वामी सूत्रां नीं बात, छोड़ देवौ पखपात।
इक दिन परभव जावणौ॥
- १३ पूजा-प्रसंसा हो लही अनंती वार, दुर्लभ श्रद्धा श्रीकार।
निरणय करौ आप एहनौं॥
- १४ विविध विनय सूं हो आख्या वयण उदार, मान्या नहीं लिगार।
क्रोध करी उलटा पड़्या॥
- १५ भीक्खू भारी हो स्वामी बुधि नां भंडार, मन सूं कीयौ विचार।
ए हिवड़ां न दीसै समजता॥
- १६ धीरै-धीरै हो समजावसूं धर पेम, आप विचारी एम।
तिण सूं आहार-पाणी तोड़्यौ नहीं॥
- १७ भीक्खू भाखै हो भेळौ करां चौमास, चरचा करसां विमास।
साच-झूठ निरणय करां॥
- १८ साची सरधा हो आदरसां सुखदाय, झूठी देसां छिटकाय।
तब बोल्या रुघनाथजी॥

- १९ म्हांरा साधां नै हो तूं लेवै फटाय, जो चौमासो भेळो थाय।
 भीक्खू कहै राखौ जटबाज^१ नै॥
- २० ते चरचा मै हो समझै नहीं लिगार, करौ चौमासौ श्रीकार।
 दुलभ सामग्री ए लही॥
- २१ इणविध कीधा हो भीक्खू अनेक उपाय, तौ पिण नाया ठाय।
 कर्म घणां तिण कारणै॥
- २२ वले^२ मिलीया हो भीक्खू दूजी वार, बगड़ी सैहर मझार।
 आय द्रव्य-गुरु नै इम कहै॥
- २३ स्वामी भूला हो सुद्ध श्रद्धा-आचार, मन मै करौ विचार।
 विविध प्रकारै समजावीया॥
- २४ पिण नहीं मानी द्रव्य-गुरु बात लिगार, जाण लीयौ तिण वार।
 एतौ न दीसै समझता॥
- २५ निज आतम नौ हो हिव हूं करूं निस्तार, एहवी^३ मन मै धार।
 आहार-पांणी तोड़ नीसरया॥
- २६ चौथी ढाळे हो आख्यौ चरचा सरूप, आछी रीत अनूप।
 आगलि बात सुंहांमणी॥

१. अनपढ़ ।

२ बलि (क)।

३. एहवो (क)।

दूहा

- १ थानक बारै नीसर्या, तड़कै आहारज तोड़।
जब द्रव्य-गुरु मन जांणीयौ, बात हुई अति जोर॥
- २ रहिवा जागां नां मिलै, तौ फिर थानक आया।
सेवग फिरीयौ सैहर में, जागा^१ म दीजो काय॥
- ३ जो रहिवा भीखू भणी, जागा दीधी जांण।
सर्व साथ सुणजो सही, संघ तणी छै आंण॥
- ४ कड़ली^२ कुबुधज केलवी, आसी पाछा एम।
जब भीखू मन जाणीयौ, करिवौ विचार केम॥
- ५ पुर मैं जागा नां दियै, जो फिर थानक जाय।
तौ पाछौ फंद मैं पडूं, दुखे नीसरणौ थाय॥
- ६ एहवी करे विचारणा, विहार कियौ तिण वार।
सूरवीर सीह नीं परै, न डर्या मूल लिगार॥
- ७ आया बगड़ी बारणै, वावळ^३ अधिक विसेख।
वाजी तब पग थांभीया, भीखू परम विवेक॥
- ८ जैतसींगजी री जिहां, छत्र्यां अधिक उदार।
देखीनै आया जिहां, बैठा छत्र्यां मझार॥
- ९ पुर माहै जाण्यौ प्रगट, सुणीयौ द्रव्य-गुरु सोय।
आया छत्र्यां नै विषै, साथै बौहळ^४ लोय॥

ढाळ : ५

(राम पूछै सुग्रीव नै रे)

- १ बगड़ी री छत्र्यां मझै रे, बहु लोक बोलै इम वाय।
टोळौ छोड़ी मत नींकळौ रे, धीर्य^५ धरौ मान माय॥
चतुर नर भीखू बुद्धि नां भंडार॥
- २ रुघनाथजी इसड़ी कहै रे, थे मानौ भीखणजी वात।
अबारूं आरौ पांचमों रे, नहि निभौला साख्यात॥ चतुर नर.

१. जगह।

२. भयंकर।

३. आंधी।

४. बहुत।

५. धीरज/धैर्य (क)।

- ३ भीक्खू वलता^१ भाखै भलौ रे, म्हे किम मानां तुझ बात।
 म्हे सूत्र बाचै निरणौ कियौ रे, संक नहीं तिलमात॥ चतुर नर.
- ४ तीरथ श्री जिणवर तणौ रे, छेहड़ा ताई विचार।
 श्री जिण आणा सिर धरी रे, सुद्ध पाळसूं संजम भार॥ चतुर नर.
- ५ ए वचन सुणी द्रव्य-गुरु भणी रे, तूटी आस तिवार।
 मोह आयौ तिण अवसरै रे, चिंता हुई अपार॥ चतुर नर.
- ६ 'सांमजी-ऋष'^२ नौ साध थौ रे, उदैभांण कहै एम।
 टोळा तणा धणी बाजनै रे, आंसूपच^३ करौ केम। चतुर नर.
- ७ किणरौ एक जावै तरै रे, आवै फिकर अपार।
 म्हारा पांच जावै सही रे, गण मैं पड़ै बघार^४॥ चतुर नर.
- ८ मोह देखी द्रव्य-गुरु तणै रे, दृढ़ चित भीक्खू धार।
 म्हे घर छोड्यौ तिण दिने रे, मुझ माता रोई अपार॥ चतुर नर.
- ९ भागळां भेलौ हूं रहूं रे, तौ परभव मैं पेख।
 विविधपणै रोवणौ पड़ै रे, पामै दुख विसेख॥ चतुर नर.
- १० कठिण छाती इण विध करी रे, वारू ज्ञान विचार।
 सेंठा रह्या तिण अवसरै रे, उत्तम जीव उदार॥ चतुर नर.
- ११ द्वेष सूं तुरत नर नां डिगै रे, राग दै तुरत चलाय।
 द्रव्य-गुरु मोह आण्यौ सही रे, पिण कारी न लागी काय॥ चतुर नर.
- १२ फेर बोल्या रुघनाथजी रे, जासी कितियक दूर।
 'आगै थारौ'^५ नै पूठै^६ माहरौ रे, लोक लगावसूं पूर॥ चतुर नर.
- १३ परीसह खमण री मुझ मन मझै रे, भीक्खू भाखै विसाल।
 इम तौ डरायो नहीं डरूं रे, जीवणौ कितौयक काळ॥ चतुर नर.
- १४ विहार कियौ बगड़ी थकी रे, द्रव्य-गुरु लारै देख।
 चरचा करी वडलू मझै रे, सांभळजो सुविसेख॥ चतुर नर.

१. वापस।

२. स्थानकवासी एक टोळे के आचार्य।

३. अश्रुपात।

४. भेद।

५. आगो थारो (क)।

६. पूठो (क)।

- १५ रुघनाथजी इसड़ी कहै रे, सांभळ भीक्खू बात।
 पूरौ साधपणौ नहीं पळै रे, 'दुखम-काळ' साख्यात॥ चतुर नर.
 १६ भीक्खू कहै इम भाखीयौ रे, सूत्र आचारांग^१ माय।
 ढीला भागळ इस भाखसी रे, हिवड़ा^२ सुद्ध न चलाय॥ चतुर नर.
 १७ बल संघेण हीणा घणां रे, पंचम काळ प्रभाव।
 पूरौ आचार पळै नहीं रे, नहि उत्सर्ग प्रस्ताव॥ चतुर नर.
 १८ आगूंच जिनजी भाखीयौ रे, इम कहिसी भेषधार।
 ए जाब सुणी रुघनाथजी रे, 'कष्ट हुआ'^३ तिण वार॥ चतुर नर.
 १९ गुरु-चेला रे हुई घणी रे, चरचा माहोमाय।
 संखेप^४ मात्र कहीं इहां रे, पूरी केम कहाय॥ चतुर नर.
 २० द्रव्य-गुरु कहै भीक्खू भणी रे, दोय घड़ी सुभ ध्यान।
 चोखौ चारित पाळीयां रे, पांमैं केवळग्यांन॥ चतुर नर.
 २१ भीक्खू कहै इण विध लहै रे, बेघड़ी केवळग्यांन।
 तौ दोय घड़ी तांइ रहूं रे, सास^५ रूंधी धरूं ध्यान॥ चतुर नर.
 २२ प्रभव, सिजंभव आदि दे रे, बे घड़ी पाळ्यौ कै नाहि?
 केवळ त्यांनै न ऊपनौ रे, सोच विचारौ मन माहि॥ चतुर नर.
 २३ चवद सहंस शिष वीर नै रे, सात सौ केवली सोय।
 तेर सहंस नै तीन सौ, छद्मस्थ रहिया जोय॥ चतुर नर.
 २४ त्यांनै केवळ नहीं ऊपनौ रे, त्यां बे घड़ी पाळ्यौ कै नांय?
 थारै लेखै त्यां पिण नहीं पाळीयौ रे, बे घड़ी चरण सुहाय॥ चतुर नर.
 २५ बार बरस तैरै पखै रे, वीर रहा छद्मस्थ।
 थारै लेखै त्यां पिण नहीं पाळीयो रे, दोय घड़ी चारित॥ चतुर नर.
 २६ इत्यादिक हुइ घणी रे, चरचा माहोमाय।
 समजाया समजै नहीं रे, कीया अनेक उपाय॥ चतुर नर.
 २७ पवर ढाळ कही पंचमी रे, चरचा विविध प्रकार।
 हिव भीक्खू किण रीत सूं रे, करै आतम नौ उद्धार॥ चतुर नर.
 चतुर नर सांभळौ भीक्खू विलास॥

१. आचारांग प्रथम श्रुतस्कंध अध्ययन ६
 उद्देशा ४ सूत्र ८१ (विस्तृत वर्णन देखें बड़ा
 टब्बा में)।

२. इस समय।
 ३. निरुत्तर हो गए।
 ४. संक्षेप (क)।
 ५. श्वास (क)।

दूहा

- १ द्रव्य-गुरु तौ समज्या नहीं, खप बहु कीधी ताहि।
जैमलजी काका गुरु, आया त्यारै पाहि^१॥
- २ भद्र सरल प्रकृति भली परै, जैमलजी नीं जांण।
भीक्खू तास भली परै, समजावै सुविहांण॥
- ३ जैमलजी रै युक्ति^२ सूं, दी सरधा बैसार।
भीक्खू रै साथै भला, ते पिण होय^३ गया त्यार॥
- ४ बात सुणी रुघनाथजी, भांग्या तसुं परिणाम।
'फकीरवालौ दुपटौ हुसी^४', नहिं हुवै थारो नाम॥
- ५ बुद्धिवंत साधु-साधवी, लेसी त्यां नै लार।
लाडै-कोडै घर छोड़िया, और हुसी निराधार॥
- ६ थानै रोसी सहु जणा, थे म विचारौ बात?
थारै बहु परिवार छै, घणां तणां थे नाथ॥
- ७ थारा साधां रा जोग सूं, हुसी भीक्खू रौ कांम।
टोळौ भीक्खू रौ बाजसी, थारौ न हुवै नाम॥
- ८ इत्यादिक वचनां करी, पाड़्या तसुं परिणाम।
तब जैमलजी बोलीया, सुणौ भीखणजी आंम॥
- ९ गळ्या जितौ हूं कळगयौ^५, थे सुध पाळौ सोय।
'पिंडतां रै जाणी^६ वतैं', इम बोल्या अवलोय॥

ढाळ : ६

(सुण सुण रे! सीख सयाणा)

- १ शिष भीक्खू नां महा सुखकारी, भारीमाल सरल भद्र भारी।
त्यारौ तात किशनौजी तास, बिहुं घर छोड्यौ भीक्खू पास॥
सुण-सुण रे! सीख सयाणा, रूडो भीक्खू जश रसांणा।
भीक्खू जश रस अमृत भारी, सिव संपति सुख सहचारी॥

१. पास।

२. जुगत (क)।

३. हो (क)।

४. भि. दू.-फुटकर संस्मरण-पृ. २७६।

५. आकंठ मग्न हो गया।

६. पंडितों से क्या छिपा है।

- २ आसरे दशमै वस आया, भारीमाल सरल सुखदाया।
 भेषधार्यां माहै ^१ छतां सोय, सुत तात भिक्खू शिष होय॥ सुण-सुण रे!
- ३ त्यांरै चेला तणी छै रीत, तिण सूं शिष किया धर पीत।
 त्यां मै रह्या आसरे वस च्यार, पछै निसरिया भीक्खू लार॥ सुण-सुण रे!
- ४ किशनांजीरी प्रकृत करडी जाणी, भारीमाल भणी वदै वाणी।
 संजम लायक नहीं तुज^२ तात, तूं तो उत्तम जीव विख्यात॥ सुण-सुण रे!
- ५ आंपां नवी दिख्या लेसां सोय, लागु^३ हुंता दीसै बहु लोय।
 आहार-पांणी वचनादिक ताय, किशनांजी नै दुकर इधकाय॥ सुण-सुण रे!
- ६ तुज मन मुज पास रहवा रो, कै निज जनक कनै जायवा रो?
 इम पूछ्यौ भीक्खू धर पेम, भारीमाल उत्तर दीयै एम॥ सुण-सुण रे!
- ७ म्हारै तात थकी कांई कांम, हूं तौ आप कनै रहैसूं तांम।
 संजम पाळसूं रूडी रीत, मोनै आप तणी परतीत॥ सुण-सुण रे!
- ८ किशनांजी नै भीक्खू कहै तांम, थां सूं मूळ नहीं म्हारै कांम।
 चारित पाळणौ दुकरकार, तिण सूं थानै न लेवां लार॥ सुण-सुण रे!
- ९ किशनौजी कहै मुजने^४ न लेवो, तो म्हारौ पुत्र मोनै सूप दैवौ।
 सुत नै राखसूं मुज साथ, इणने ले जावा न देवूं विख्यात॥ सुण-सुण रे!
- १० भीक्खू कहै -पुत्र ए थारौ, आवै तौ न हीं वरजां लिगारो।
 जब आयौ भारीमाल पास, और जागा लेइ गयौ तास॥ सुण-सुण रे!
- ११ भारीमाल पिता नै भाखै, किशनांजी री कांण नहीं राखै।
 थारा हाथ तणौ^५ अनपांण, म्हारै जावजीव पचखांण॥ सुण-सुण रे!
- १२ भारीमाल अभिग्र^६ कीयौ भारी, दिन दोय निसरीया^७ तिवारी।
 रह्या सुरगिर^८ जेम सधीरा, हळुकर्मी अमोलक हीरा॥ सुण-सुण रे!
- १३ तब बाप थाकौ तिण वार, भीक्खू नै आंण सूप्या उदार।
 थासूं ईज राजी छै एह, महां सूं तौ नहीं मूळ सनेह॥ सुण-सुण रे!

१. माहि (क)।

२. तुझ।

३. लागू (क)। छेड़छाड़ करने वाले।

४. मौनै (क)।

५. तणुं (क)।

६. अभिग्रह (प्रतिज्ञा) (क)।

७. निसर्या (क)।

८. मेरु पर्वत।

- १४ इणनै आहार-पांणी आंण दीजै, रूढ़ा जत्न^१ करी राखीजै।
 म्हारी पिण गति कायक^२ कीजै, किण ही ठिकानै मोनै मेलीजै॥ सुण-सुण रे!
- १५ थे नहीं लीयो संजम भारो, जितरै करो ठिकाणौ म्हारौ।
 भीक्खू सूंप्यौ जैमलजी नै आंण, जैमलजी हरख्या अति जांण॥ सुण-सुण रे!
- १६ जैमलजी बोल्या तिवारी^३ देखौ भीखणजी री बुद्धि भारी।
 सूंप्या किश्नोजी म्हानै सोय, तीनां घरां बधांवणा होय॥ सुण-सुण रे!
- १७ किश्नौ हरख्यौ ठिकाणै हूं आयौ, म्है पिण हरख्या चेलौ इक पायौ।
 भीक्खू हरख्या टलीयौ ओगालो^४, तीनां घरां वधांवणा न्हालौ॥ सुण-सुण रे!
- १८ भारीमाल रौ संकट टलीयौ, मन बछंत कारज फलीयौ।
 छठी ढाळे भारीमाल भारी, रह्या अडिग अचल गुणधारी॥ सुण-सुण रे!

१. जतन (क)।
 २. काइक (क)।
 ३. तिणवारी (क)।

४. मवेशी द्वारा चरने के बाद इधर-उधर बिखरा हुआ घास-फूस।

दूहा

- १ हिव भीक्खू भारीमालजी, संत आदि दे तेरा
मनसोबौ^१ मोटौ कियौ, चारित लेणौ फेर॥
- २ सैहर जोधाणां मैं सही, तेरै श्रावक ताहि।
सामायक-पोसा करी, बैठा बाजार माहि॥
- ३ 'फतैचंद सिंगी'^२ प्रकट, दीवांण पद दीपंत।
चौहटै देख्या चालतां, प्रत्यख तब पूछंत॥
- ४ सामायक-पोसा सखर, कीधा चौहटे केम?^३
थानक मैं क्यूं नां किया? उत्तर आपै^३, एम॥
- ५ तज थानक मन थिर कियौ, मुझ गुरु महिमावंत।
भीक्खू ऋष भारी घणां, परहर दियौ कुपंथ॥
- ६ कहै दीवांण किम नींसर्या, वलि श्रावक बोलंत।
बात घणी थिरता हुवै, जब सुणजो धर खंत^४॥
- ७ दीवांण कहै थिरता अबहि, वर्णवौ सगळी बात।
श्रावक तब आखै सकल, विवरासुध^५ विख्यात॥
- ८ आधाकर्मी आदि दे, दूर किया सहु दोष।
सिंघी सुण हरख्यौ सही, पायौ परम संतोष॥
- ९ साधु नौ ओहीज सुद्ध, मारग मोटौ मांण।
प्रशंसै सिंघी प्रगट, वारू करै वखांण॥

ढाळ : ७

(सुविधि भजिये शिर नामी हो)

- १ फतेचंद दीवांण ते, वलि पूछा करै वारू हो।
श्रावक थे केता सही, धार्यौ धर्म उदारू हो?
सिव धारण सारू हो॥

भीक्खू जश सांभळौ वारू हो॥

१. मानसिक संकल्प।

२. दीवानजी का नाम 'फतेमल्लजी' होना चाहिए। जोधपुर में समानान्त नाम देने की पद्धति प्रचलित रही है। उनके वंशधरों का कथन है कि वे 'मल्लोत' (मल्लान्त) ही

थे। --तेरापंथ इतिहास पृष्ठ ७३

३. आपौ (क)।

४. शान्ति पूर्वक।

५. विवरण सहित

- २ श्रावक कहै-तेरै अछां, आत्म तारण हारू हो।
सिंघी वलि पूछै सही, संत किता सुखकारू हो?
नीका सिव नेतारू हो॥ भीक्खू ...
- ३ श्रावक कहै-तेरै सही, साधु सखर श्रधालू हो।
भीक्खू समण-सिरोमणी, वर माग विसालू हो।
साधण सिव पट सालू हो॥ भीक्खू ...
- ४ सिंघी कहै - आछौ मिल्यौ, वर योग विचारू हो।
श्रावक पिण तेरै सही, तेर संत तंत सारू हो।
भीक्खू बुद्धि नां भंडारू हो॥ भीक्खू ...
- ५ सिंघी मुख प्रशंसा सुणी, सेवग ऊभौ सुधारू हो।
ततखिण तिण जोड़्यौ तुकौ तेरापंथ औ तारू हो।
विस्तर्यो नाम वारू हो॥ भीक्खू ...

दूहा सेवग-कृत

साध-साध रो गिलौ करै, ते तौ आप-आप रौ मंत।
सुण जो रे सैहर रा लोकां! औ तेरापंथी तंत।

ढाळ

(सुविधि भजिये शिर नामी हो)

- ६ लोक कहै तेरापंथी, भीक्खू संवली^१ भावै हो।
हे प्रभु! औ तेरौ पंथ है, और दाय न आवै हो।
मन भर्म मिटावै हो,
सोही तेरापंथ पावै हो॥

१. विशिष्ट वेप/बहुमूल्य वस्त्र

२. अनुकूल रूप में।

- ७ पंच महाव्रत पाळता, सुद्ध सुमति सुहावै हो।
तीन गुप्त तीखी तरै, भल आतम भावै हो॥
चित्त सूं तेर ऐ चाहवै हो,
सोही तेरापंथ^१ पावै हो।
- ८ पंथ अनैरा मैं रह्यो, तिण सूं भमण भमावै हो।
प्रभु! अब आयो तेरा पंथ में, तेरी आज्ञा सुहावै हो।
तेह थी शिव पद आवै हो॥
सोही तेरापथ पावै हो
- ९ तेरौ वचन आगै करी, चारू धर्म चलावै हो।
तेहज छै तेरापंथी थिर कीरत थावै हो।
भीखू समचित भावै हो॥
सो ही तेरापंथ पावे हो॥
- १० हिंसा झूठ अदत^२ हरै, मिथुन परिग्र^३ मिटावै हो।
तीन करण तीन जोग सूं, त्याग करी तन तावै हो।
वारू व्रत वसावै हो॥
सो ही तेरापंथ पावे हो॥

-
१. गुण विण भेष कूं मूल न मानत, जीव अजीव का कीया निवेरा।
पुन्य पाप कूं भिन भिन जाणत, आसव कर्मा कूं लैत उरेरा।
आवता कर्मा नैं संवर रोकत, निर्जरा कर्मा कूं दैत विखेरा।
बंध तौ जीव कूं बंधीया राखत, सासता सुख तौ मोख मैं डेरा।
इसी घाट प्रकाश कीया, भव जीव का मेट्या मिथ्यांत अंधेरा।
निर्मल ज्ञान उद्योत किया, औ तौ है पंथ प्रभु तेरा ही तेरा॥१॥

तीन सौ तेसठ पाखंड जगत मैं, श्री जिन धर्म सूं सर्व अनेरा।
द्रव्यलिंगी कई साध कहावत, त्यां पिण पकड्या त्यांराइज केडा।
ताहि कूं दूर तजै ते संत, विध सूं उपदेश दीया रूडेरा।
जिन आगम जोय प्रमाण कीया, जब पाखंड पंथ मैं पडिया विखेरा।
व्रत अव्रत दांन दया वतावत, सावज्ज निरवद करत निवेरा।
जिन आगन्या माहै धर्म वतावत, ऐ तौ है पंथ प्रभु तेरा ही तेरा॥२॥

-आचार्य भिक्षु

२. चौर्य।

३. परिग्रह (क)।

- ११ इरजा भाषा एषणा, रूढ़ी रीत रखावै हो।
 आयाणभंडनिखेवणा, परठण जैणा^१ करावै हो।
 सखरी सुमति सुहावै हो॥
 सो ही तेरापंथ पावे हो॥
- १२ असुध मन नहीं आदरै, वच सावज वस ल्यावै हो।
 'पाडुई'^२ काया परहरै, तीन गुप्त तंत ल्यावै हो।
 थिरता पद चित थावै हो॥
 सो ही तेरापंथ पावे हो॥
- १३ सखर ढाळ आ सातमीं, गुण भीक्खू नां गावै हो।
 नाम तेरापंथ निरमळौ, अर्थ अनूपम आवै हो।
 सखरौ सुजस सुणावै हो॥
 सो ही तेरापंथ पावे हो॥

१. जयणा।

२. अशुभा।

दूहा

- १ भारी बुध भीखू तणी, निरमळ मेल्या न्याया।
अरिहंत आज्ञा थापनै, सरधा दी ओळखाय॥
- २ चरचा कर त्यारी हुआ, तेर जणा तिण वार।
नाम कहूं हिव तेहना, भीखू गण-सिणगार॥
- ३ धिरपालजी^(१) फतेहचंदजी^(२), बड़ा तात सुत बेह^१।
भीखू^(३) आचारज^(२) भला, ज्ञान कला गुण गेह॥
- ४ टोकरजी^(४) हरनाथजी^(५), भारीमाल^(६) सुविनीत।
सरलभद्र सुखदायका, परम पूज सूं पीत॥
- ५ वीरभांणजी सातमौ^(७), लिखमीचंदजी^(८) लार।
बखतराम^(९) नै गुलाबजी^(१०), दूजौ भारमल^(११) धार॥
- ६ रूपचन्द^(१२) नै पेमजी^(१३), ए तेरा रां नाम।
नवी दीक्षा लेवा तणा, तेरां रा परिणाम॥
- ७ रुघनाथजी रा पांच छै, छ जैमलजी रा जोय।
दोय अन्य टोळा तणा, ए तेरैई होय॥
- ८ चरचा केयक बोल री, करी माहोमा तास।
केइक अल्पज चरचीया, ऊपर आयौ चौमास॥
- ९ चउमासा सगळां भणी, भीखू दिया भळाय^२।
आषाढ सुद पूनम दिनै, संजम लीजो ताय॥

ढाळ : ८

(सिंहल नृप कहै चंद नै)

- १ भीखू मुख सूं इम भणै, मुणिंद मोरा! चउमासो उतर्यां जाण हो
सरधा आचार 'मींद्यां^३ पछै', मुणिंद मोरा! भेलो कर सां आहारपाण हो॥

सखर गुणां कर सोभतो ऋष भीखू गुणनिलो,
मुणिंद मोरा अधिक उजागर आप हो॥ ध्रुवपद॥

१. दोनों।

२. आचार्य (मू.)।

३. किसको कहां करना है, आदेश दे दिया।

४. जांच पड़ताल करने के बाद।

- २ जो सरधा आचार मिली नहीं,
इम पैहला समजाविया,
३ समत^१ अठारै सतरै समै,
आसाढ सुदि पूनम दिनै,
४ अरिहंत नी लेइ आगन्या,
सिद्ध साखे करी स्वामजी,
५ हरनाथजी^२ हाजर हूंता,
परम भगता भारीमालजी,
६ सतरौतरै कैलवा मझे,
देवळ अंधारी ओरी तिहां,
७ हिंवै चउमासौ उतर्यो,
बखतराम नै गुलाबजी,
८ 'नव तत'^३ मैं तरक उपजी,
जो सिद्धा में वसत^४ पावै नहीं,
९ थिरपालजी फतेचंदजी,
टोकरजी हरनाथजी,
१० रूडै चित भेळा रह्या,
जावजीव लग जाणजो,
११ सात जणा भेळा नां रह्या,
कोयक पाछै न्यारौ थयौ,
१२ वर्स किता वीरभांणजी,
अविनय औगुण आकरौ,
मुणिंद मोरा ! तो भेळो न करां आहार हो।
मुणिंद मोरा ! आया देश मेवाड़ हो॥ सखर.
मुणिंद मोरा ! पंचांग लेखै पिछांण हो।
मुणिंद मोरा ! कैलवै दिख्या-कल्याण हो॥ सखर.
मुणिंद मोरा ! पचख्या पाप अठार हो।
मुणिंद मोरा ! लीधौ संजम भार हो॥ सखर.
मुणिंद मोरा ! टोकरजी भीखू पास हो।
मुणिंद मोरा ! पूरो ज्यारो विसवास हो॥ सखर.
मुणिंद मोरा ! प्रथम चोमासौ पेख हो।
मुणिंद मोरा ! कष्ट सह्यौ सुविसेख हो॥ सखर.
मुणिंद मोरा ! भेळा हुआ सहु आंण हो।
मुणिंद मोरा ! काळवादी हुआ जांण हो॥ सखर.
मुणिंद मोरा ! एक जीव आठ अजीव हो।
मुणिंद मोरा ! सरदै^५ काल सदीव हो॥ सखर.
मुणिंद मोरा ! भीखू ऋष जगभाण हो।
मुणिंद मोरा ! भारीमाल बहु जाण हो॥ सखर.
मुणिंद मोरा ! वर षट संत वदीत हो।
मुणिंद मोरा ! परम माहोमाहि पीत हो॥ सखर.
मुणिंद मोरा ! केयक धुर ही थी न्यार हो।
मुणिंद मोरा ! थेट न पौहता पार हो॥ सखर.
मुणिंद मोरा ! रह्या भीकखू रै हजूर हो।
मुणिंद मोरा ! तिण सूं निखेध नै कीयौ दूर हो॥ सखर.

१. संवत (क)।

२. उक्त गाथा में उल्लिखित नामों के अनुसार कैलवा चातुर्मासमें स्वामीजी आदि चार साधु थे, परंतु ख्यात में ५ का उल्लेख मिलता है। ऐसा संभव भी है। पांचवें वीरभांणजी हो सकते हैं, क्योंकि वह पहले राजनगर चातुर्मास में तथा वि. सं. १८१७ में सुधरी में अलग हुए तब स्वामीजी के साथ थे।

३. तत्व (क)।

४. वस्तु।

५. सरदै (क)।

- १३ पछै सरधा पिण फिर गई, मुणिंद मोरा ! वीरभाण री विसेख हो।
 इन्द्रियां सावज्ज सरधनै, मुणिंद मोरा ! बले दरव भाव जीव एक हो॥ सखर.
 १४ अनेक बोल ऊंधा पड़्या, मुणिंद मोरा ! विगड़ी अविनय थी बात हो।
 वर्ष बतीसै गण बारै कियौ, मुणिंद मोरा ! पछै मैणां नै मुंड्या साख्यात हो॥ सखर.
 १५ पट रह्या तेरां माहिला, मुणिंद मोरा ! सात हुआ इम दूर हो।
 पिण पुन्य प्रबल भीक्खू तणा, मुणिंद मोरा ! दिन-दिन चढतै नूर^४ हो॥ सखर.
 १६ सूरा सिंघ तणी परै, मुणिंद मोरा ! सुरगिर जैमै सधीर हो।
 अगंज^२ ओजागर^३ अति घणां, मुणिंद मोरा ! विडद निभावण वीर हो॥ सखर.
 १७ टोळो छोड़ी नै नीसर्या, मुणिंद मोरा ! त्यांरी पिण नहीं तमाय^५
 ग्रंथ^४ हजारं जोड़नै, मुणिंद मोरा ! सरधा दीधी ओळखाय हो॥ सखर.
 १८ अतिसय धारी ओपता, मुणिंद मोरा ! सासण सिरमणि मोड़ हो।
 आचार्य इण काळ मै, मुणिंद मोरा ! अवर^४ न एहनीं जोड़ हो॥ सखर.
 १९ सावज्ज निरवद सोधनै, मुणिंद मोरा ! दान-दया ओळखाय हो।
 व्रत-अव्रत वर वारता, मुणिंद मोरा ! भिन-भिन भेद बताय हो॥ सखर.
 २० उत्पत्तिया बुद्धि आपरी, मुणिंद मोरा ! आछी अधिक अनूप हो।
 द्रष्टंत विविधज दीपता, मुणिंद मोरा ! चित चरचा अति चूप हो॥ सखर.
 २१ ढाळ भली ए आठमीं, मुणिंद मोरा ! भीक्खू गुण रा भंडार हो।
 उमंग करी चरण आदर्यौ, मुणिंद मोरा ! समण-सिरोमणि सार हो॥ सखर.

१. रूप/तेज या चमक।

२. अजेय।

३. उद्योतकर।

४. खिन्नता।

५. पद्य

दूहा

- १ स्वाम मारग साचौ लीयौ, करवा जनम किल्यांण।
कुगुरु कुबुधि अति केलवी, जन भरमाया जांण॥
- २ भागळ भेषधार्यां तणें, ऊपनौ द्वेष अत्यंत।
लोकां भणी लगावीया, विविध वचन विलपंत॥
- ३ कोई संग यांरौ कीजौ मती, लाग जावैला लाळ।
निन्हव छै ऐ नीकल्या, कोइ कहै जमाली गोसाळ॥
- ४ यां देव गुरां नै उथापीया, दान-दया नै उथाप।
जीव वचावै तेह मै, ए कहै अठारै पाप॥
- ५ भगू भिडकाया पुत्रां भणी, साधां मै चूक बताय।
ज्यूं भीक्खू सूं भिडकावीया, औहीज मिलियौ न्याय॥
- ६ जिहां-जिहां भीक्खू विचरता, आगूंच जोवै बाट।
कह्यौ कनै जायजो मती, थोड़ा मै हुय जाय थाट॥
- ७ केइ तौ प्रश्न पूछवा, केयक देखण काज।
कुगुरां रा भरमावीया, ऊंधा बोलता नाणै लाजा॥
- ८ उपसर्ग अनेक दे रह्या, वदै वचन विकराल।
पिण क्षमा भीक्खू तणी, वारू अधिक विसाल॥
- ९ अधिक नींत आचार नीं, अधिक सुमति उपयोग।
अधिक गुप्त^१ गुण आगला, जशधारी सुभजोग॥

ढाळ : ९

(रिट्ट नेम स्वामी तू जगनाथ अंतरयामी)

भीक्खू स्वाम भारी, जगत उधारक जश धारी॥ ध्रुवपद॥

- १ भारी रे खिम्या गुण भीक्खू नौ भाळ, निरलोभी मुनि निर्मळ ढाळ॥ भीक्खू स्वाम.
- २ कपट रहित सुद्ध सरल कहाय, निरहंकार रूड़ी नरमाय॥ भीक्खू स्वाम.
- ३ लाघव कर्म उपधि वर लाज, सत्य वचन स्वामी सुख साज॥ भीक्खू स्वाम.
- ४ वारू रे भीक्खू नौ संजम वाह वाह, लीधौ मनुष्य जनम नों लाह॥ भीक्खू स्वाम.

१. गुप्ति।

५ वारू रे भीकखू नौं तप तहतीक^१,
 ६ वारू रे दान मुनि नैं दे आंण,
 ७ घोर ब्रह्म भीकखू नौं सार,
 ८ इय्या धुन भीकखू मुनिराज,
 ९ भाषा सुमति भीकखू नौं भाल,
 १० एषणा अधिक अनोपम सार,
 ११ वस्त्रादि लैतां जैणा विसेख,
 १२ पंचमी सुमति भीकखू नौं पिछांण,
 १३ मन वच काय गुप्त गुणवंत,
 १४ अष्ट संपदा गुण अधिकार,
 १५ आचार्य नां गुण सुछतीस,
 १६ पांच महाव्रत निर्मळ पाळंत,
 १७ वस करै इन्द्री पंच विचार,
 १८ आचार पंच भीकखू नां अमोल,
 १९ उत्पत्तिया बुद्धि भीकखू नौं उदार,
 २० अन्यमति स्वमति सुण वच सार,
 २१ वारू रे भीकखू थारा दृष्टंत
 २२ वारू रे भीकखू तुझ बुद्धि नां जाब,
 २३ वारू रे भीकखू वीर्य आचार,
 २४ वारू रे भीकखू तुझ नीत वैराग
 २५ वारू रे भीकखू तूं गिरवौ गंभीर,
 २६ वारू रे भीकखू तुझ मुद्रा ऐन,
 २७ सांवळी सूरत दीर्घ देह सुविसाल,
 २८ जीव घणां तिरणां इण काळ,
 २९ त्यां जीवां रै तिरण रै साज,
 ३० याद आवै भीकखू दिन रैण,
 ३१ 'मरणौ तेवर'^२ तैं धार्यौ सुद्ध माग,
 ३२ अनघ अथग गुण भीकखू मझार,
 ३३ नवमीं ढाळ भीकखू ऋष न्हाळ,

१. यथार्थ

२. आश्चर्यकारी

रूडै चित मुनि महा रमणीक॥ भीकखू स्वाम.
 नित्य प्रति गोचरी करत प्रधान॥ भीकखू स्वाम.
 संग रहित त्रिहुं जोग श्रीकार॥ भीकखू स्वाम.
 जाणक चाल रह्यौ गजराज॥ भीकखू स्वाम.
 निरवद निमल सुधा सम न्हाळ॥ भीकखू स्वाम.
 देखणहारौ पांमैं चिमत्कार॥ भीकखू स्वाम.
 मेलतां अति उपयोग संपेख॥ भीकखू स्वाम.
 सावचेत भीकखू सुविहांण॥ भीकखू स्वाम.
 सत दत सील दया निर्ग्रंथ॥ भीकखू स्वाम.
 आचार्य भीकखू अणगार॥ भीकखू स्वाम.
 भीकखू मैं सोभै निश दीस॥ भीकखू स्वाम.
 च्यार कषाय भीकखू टालंत॥ भीकखू स्वाम.
 पंच सुमति, त्रिण गुप्त उदार॥ भीकखू स्वाम.
 बाड़ सहित ब्रह्म अधिक अतोला॥ भीकखू स्वाम.
 ततखिण जाब दियै तंतसार॥ भीकखू स्वाम.
 चित माहे पांमैं चिमत्कार॥ भीकखू स्वाम.
 अचर्यकारी^३ अधिक अत्यंत॥ भीकखू स्वाम.
 पूछतां उत्तर देवै सताब॥ भीकखू स्वाम.
 तैं कियौ उद्यम अधिक उदार॥ भीकखू स्वाम.
 तूं प्रगट्यौ बहु जन नै भाग॥ भीकखू स्वाम.
 तूं गुणदधि कुंण पांमैं तीर? भीकखू स्वाम.
 पेखत पांमैं चित मैं चैन॥ भीकखू स्वाम.
 लाल नयण गजहस्ती नौं चाल॥ भीकखू स्वाम.
 आगूंच देख्या दीनदयाल॥ भीकखू स्वाम.
 तूं प्रगट्यौ मोटौ मुनिराज॥ भीकखू स्वाम.
 तन मन विकसावै मुझ नैण॥ भीकखू स्वाम.
 भर्म भंजण मुनि तूं महाभाग॥ भीकखू स्वाम.
 म्हैं संखेप कह्या सुविचार॥ भीकखू स्वाम.
 महिमागर मोटा गुणमाळ॥ भीकखू स्वाम.

३. मृत्यु को आमंत्रित कर।

दूहा

- १ भारी गुण भीक्खू तणां, कहा कठा लग जाय।
मरण धार सुध मग लियौ, कुमीय न राखी काय॥

सोरठा

- २ पंच वर्ष पहिछांण रे, (नित्य) अन्न पिण पूरो ना मिल्यौ।
बहुल पणै वच जाण रे, घी चोपर तौ ज्यांहि रह्यौ॥

दूहा

- ३ परम दुलभ सरधा प्रगट, आखी श्री जिन आप।
तीजै उत्तराधेन^१ तत^२, थिर भीक्खू चित थापा॥
- ४ बहुलकर्मी जीव बहु, ऊपजीया इण आर।
दिल मै वेसणी दोहिली, सरधा महासुखकार॥
- ५ परमपुरी धुर पगथीयौ, श्री जिन-सरधा सार।
सुध सरधा^३ समगत सही, भीक्खू कीयौ विचार॥
- ६ धर्म तणा धेपी घणां, लागू बौहळा लोग।
समझाया समझै नहीं, अधिका मूढ अजोग॥
- ७ जब भीक्खू मन जांणीयौ, कर तप करुं किल्यांण।
मग नहि दीसै चालतौ, अति घन लोक अजांण॥
- ८ घर छोड़ी मुझ गण मझै, संजम कुंण लै सोय?
श्रावक नै वलि श्राविका, हुंता न दीसै कोय॥
- ९ एहवी करे^४ आलोचना, एकंतर अवधार।
आतापन वलि आदरी, संतां साथै सार॥
- १० चौविहार उपवास चित, उपधि ग्रही सहु संत।
आतापन लै वन मझै, तप कर तन तावंत^५॥

१. उत्तराध्ययन-अ. ३ गा. १।

२. तत्त्वा।

३. सरध्यां (क)।

४. कृत्वा (करके)।

५. तपा रहे हैं।

ढाळ : १०

(पूजजी पधारो हो नगरी सेविया)

- १ थिरपालजी स्वामी फतैचंदजी, संत दोनूं सुखकार हो। महामुनि!
तात-सुतन' दोनूं तपसी भला, सरल भद्र सुविचार हो। महामुनि!
थे भलां नै अवतरीया हो भीक्खू भरतखेत मैं॥
- २ टोळा मैं छतां बड़ा स्वाम भीक्खू थकी, त्यां नै बड़ा राख्या भीक्खू स्वाम हो। महामुनि!
यांनै छोटा करनै हूं बड़ो होवूं, इण मैं स्यूं परमारथ ताम हो? महामुनि! थे भलां.
- ३ करै एकांतर भीक्खू ऋष भला, लेवै आतापन लाभ हो । महामुनि!
व्रत अव्रत लोकां नै बतावता, जन हरखै सुण जाव हो। महामुनि! थे भलां.
- ४ सरल भद्र केइ लागा समझवा, वारू केयक बुद्धिवान हो । महामुनि!
ओळखणा आइ सरधा आचार नीं, पायौ धर्म प्रधान हो। महामुनि! थे भलां.
- ५ थिरपालजी फतेचंदजी इम कहै, स्वाम भीक्खू नैं सोय हो। महामुनि!
क्यूं तन तोड़ौ थे तपसा करी, समझता दीसै बहु लोय हो॥ महामुनि! थे भलां.
- ६ थे बुद्धिवांन थारी थिर बुद्धि भली, उत्पत्तिया अधिकाय हो। महामुनि!
समजावौ बहु जीव सैणां भणी, निर्मळ बतावौ न्याय हो॥ महामुनि! थे भलां.
- ७ तपसा करां म्हे आत्मतारणी, अधिक पौहच नहीं और हो। महामुनि!
आप तरौ थे तारौ अवर नैं जाझौ बुद्धि नौं जोर हो॥ महामुनि! थे भलां.
- ८ संत बड़ां रौ वचन भीक्खू सुणी, धार्यौ धर चित धीर हो। महामुनि!
न्याय विशेष बतावता निरमळा, हरख्यौ हियड़ौ हीर हो॥ थे भलां.
- ९ दान-दया हद न्याय दीपावता, ओळखावता आचार हो। महामुनि!
जिन वच करी प्रभु-माग जमावता, समज्या बहु नर-नार हो॥ महामुनि! थे भलां.
- १० प्रगट मेवाड़ मैं पूज पधारीया, जुक्त आचार नीं जोड़ हो। महामुनि!
अनुकंपा दया दांन रै ऊपरै, जोड़ां करी धर कोड़ हो॥ महामुनि! थे भलां.

- ११ अति उपगार करी पूज आवीया, मुरधर देश मझार हो। महामुनि!
 सखर पणै वर जोड़ां सुणावता, इम करता उपगार हो॥ महामुनि! थे भलां.
- १२ 'व्रत अव्रत नै मांड^१ बतावता,' सखरी रीत सुचंग हो। महामुनि!
 श्री जिण आज्ञा मै धर्म सरधावता, सुण जन पांमैं उमंग हो॥ महामुनि! थे भलां.
- १३ जशधारी भीक्खू नौं जगत मै, वाध्यौ जश विख्यात हो। महामुनि!
 प्रबल बुद्धि गुण पुन्यनौं पोरसौ^२, स्वाम भीक्खू साख्यात हो॥ महामुनि! थे भलां.
- १४ शिष भारीमाल भीक्खू पै^३ सोभता, सरल बड़ा सुविनीत हो। महामुनि!
 भद्र प्रकृति बुद्धि पुन्य गुणे भला, परम पूज सूं पीत हो॥ महामुनि! थे भलां.
- १५ दसमीं ढाळे पूज दयाल नौं, जाझी कीरत जाण हो। महामुनि!
 देश-प्रदेश माहै जश दीपतौ, विस्तरियौ सुविहाण^४ हो। महामुनि! थे भलां.

१. धर्म और अधर्म को ऊपर लिखकर नये ढंग से समझाते थे। वह इस प्रकार है--

धर्म-	अधर्म-
व्रत में	अव्रत में
त्याग में	भोग में
दया में	हिंसा में
आज्ञा में	आज्ञा बाहर
हृदयपरिवर्तन में	बल प्रयोग
	या प्रलोभन में

२. मंत्र शक्ति से साधित स्वर्ण पुरुष, जिसके किसी अंग को काटकर सोना प्राप्त करने पर भी पुनः वैसा का वैसा हो जाता है।

३. पासा।

४. प्रभात के प्रकाश की तरह।

दूहा

- १ साधु श्रावक-श्राविका, सखर भला सुविनीत।
समणी न हुइ स्वाम रै, वर्स किता इम बीत॥
- २ किणहिक भीक्खू नैं कह्यौ, तीर्थ थारै तीन।
साध श्रावक नैं श्राविका, समणी नहीं सुचीन॥
- ३ तिण कारण छै तांहरै, मोदक मोटौ मांण।
समणी विण खांडौ सही, प्रत्यख देख पिछाण॥
- ४ भीक्खू ऋष भाखै इसौ, लाडू खांडौ लेख।
पिण चौगुणी^१ तणौ पवर, स्वाद अनूप संपेख॥
- ५ आछी बुद्धि उत्पात सूं, उत्तर दीयौ अनूप।
दिन केतै हुइ दीपती, समणी तीन सदूप॥
- ६ तीन बायां त्यारी हुइ, संजम लेवा साथ।
भीक्खू ऋष भाखै भली, सुंदर शीख साख्यात॥
- ७ संजम लेवौ साथ त्रिण, पिण तीनां मैं पेखा।
वियोग एक तणौ हुवां, स्यूं करिवौ सुविशेष?
- ८ सलेखणा करणी सही, त्यां दोयां नैं तांम।
करार पकौ इम करी, संजम दीधौ स्वाम॥
- ९ कुसलांजी मटु कही, तीजी अजबू ताय।
इक साधै अदरावियौ साधपणौ सुखदाय॥

ढाळ : ११

(स्वामी रायचंद राजा)

गजब गुण ज्ञान करी गाजै रे, गजब गुण ज्ञान करी गाजै।
गुर भीक्खू पै अजब छटा, हद भारीमाल छाजै ॥ ध्रुवपद ॥

- १ सरल भद्र भल समण सिरोमणि, ऋष रूढ़ा राजै।
चरण करण धर समर्या चित्त सूं, भरम करम भाजै॥ गजब गुण.
- २ खांत दांत चित शांति खरा, 'लज उभय थकी लाजै'^{१२}।
परम विनीत प्रीत हद पूरण, सिव रमणी साजै॥ गजब गुण.

१. जिसमें चार गुणी चीनी डाली जाय।

२. लज्जा (लौकिक और आध्यात्मिक)।

- ३ जोड़ी गोयम-वीर जिसी, वर शिष वारू बाजै।
कार्य भुळायां बेकर जोड़ी, करत मुगति काजै॥ गजब गुण.
४ परम पीत पुज सूं जळ-पय सी, 'पद भव दधि पाजै'^१
कठिन वचन गुर शीख कहै तौ, समचित मुनि साजै॥ गजब गुण.
५ उत्तराधेन छतीस अधेन, ऊभां छतां अधिकारी।
वार अनेक गुण्या विध सूं, धुर गुरु आज्ञा धारी॥

गजब गुण ज्ञान गरब गारी रे, गजब.....

गुरु भीक्खू पै अजब छटा, हद भारीमाल भारी॥

- ६ भारीमाल नै भीक्खू भाखै, सांभळ सुखकारी।
काढै खूंचणो ^२ ग्रहस्थ कोई, तेलौ डंड त्यारी॥ गजब गुण.
७ भारीमाल भाखै भीक्खू नै- साचौ कहै सारी।
तब तौ तेलौ तंत खरौ, पिण धेष जगत धारी॥ गजब गुण.
८ झूठौ नाम लियै कोई जन, लागू अति लारी।
स्यूं करिवौ ते स्वाम प्रकासौ, आज्ञा अधिकारी? गजब गुण.
९ भीक्खू कहै - जो साचौ भाखै, तौ तेलौ त्यारी॥
अणहुंतौई आळ ^३ दियै तो, संचित संभारी। गजब गुण.
१० पूर्व संचित पाप उदय नौं, तेला त्रंत सारी।
स्वामी नौ वच सरध कीयौ, कर जोड़ी अंगीकारी॥ गजब गुण.
११ भारीमाल सुविनीत इसा भड़^४, सुगुणा सुखकारी।
पुन्य प्रबल थी भीक्खू पाया, ममत मानं मारी॥ गजब गुण.
१२ घोर घटा घन गर्जारिव सी, वांण सुधा उवारी॥
भिन-भिन भेद भली पर भाखत, दाखत दमितारी^५॥ गजब गुण.
१३ हद वचनामृत सुण जन हरखत, निरखत नर-नारी।
नयणानंदन कुमति निकंदन, पद सूरत प्यारी॥ गजब गुण.
१४ हिय निरमळ हरनाथ मुनि, टोकरजी तंत सारी।
परम विनीत भारमलजी, भल संत साताकारी। गजब गुण.

१. पैर भव-समुद्र के किनारे पर है।

२. बिना गलती दोष बताना।

३. दोषारोपण।

४. भट/सैनिक।

५. न्योछावर।

६. आंतरिक शत्रुओं को जीतने वाले।

१५ घर छोड़ी बहु थया मुनी, घन ज्ञान गरब गारी।
 समणी पिण बहु थई सयाणी, स्वाम सरण सारी॥ गजब गुण.
 १६ दिन-दिन भीक्खू नौ मग दीपत, सासण सिणगारी।
 पंचम काळ स्वाम परगटीयौ^१, हूं तसुं बलिहारी॥ गजब गुण.
 १७ एकादशमी ढाळ अनोपम, वारू विस्तारी।
 कठा तिलक भीक्खू गुण कहियै पांमत किम पारी॥ गजब गुण.

१. परगटियो (क)।

दूहा

- १ आगम रहिस अनूप लहि, स्वामी भीक्खू सार।
सुद्ध सरधा सोधी सही, वलि आचार-विचार॥
- २ दान सुपातर^१ दाखीयौ, संत मुनि नैं सार।
असंजती नैं आपीयां, एकंत पाप असार^२॥
- ३ 'भगवती अष्टमैं शतक भल', षष्ठमुदेशै^३ आप।
असंजती नैं आहार दै, प्रभु कह्यौ एकंत पाप॥
- ४ दै ग्रहस्थ नैं दान ते, अनुमोदै अणगार।
'नसीत पनरमैं निरख लौ, डंड चउमासी'^४ धार॥
- ५ सावज्ज दान प्रसंसीयां, हिंस्या रो वांछणहार॥
'सूयगडाअंग'^५ सूत्र मैं, आख्यौ मुनि आचार।
- ६ श्रावक सामायक मझै, अधिकरण अति जांण॥
'भगवति सप्तम शतक भल', प्रथम उदेश'^६ पिछांण॥
- ७ व्यावच गृही नीं वरणवी, अणाचार मैं आंम।
'दशवैकालिक' देखलौ, तीजै अधेन'^७ तांम॥
- ८ श्रावक नों खाणौ सर्व, अब्रत मैं अधिकार।
वर्णन 'उवाइ वीसमें'^८, वलि 'सूयगडांग'^९ विचार॥
- ९ इत्यादिक जिनवर अखी'^९, सोधी भीक्खू स्वाम।
वलि संक्षेपे वर्णवूं, सूत्र साख सुख ठाम॥

१. सुपात्रे (क)।

२. प्रथम संस्करण में 'अठार' मुद्रित हो गया है वह गलत है। मूल प्रति में 'असार' है।

३. भगवती शतक ८ उद्देशक ६ सूत्र २४७।

४. निशीथ उद्देशक १५ सूत्र ७६।

५. सूत्रकृतांग. श्रु. १ अध्ययन ११ गा. २०।

६. भगवती. श. ७ उ. १ सूत्र ४,५

७. दशवैकालिक. अ. ३ गा. ६।

८. उववाई. सूत्र १६१।

९. सूत्रकृतांग. श्रुत. २ अध्ययन २ सूत्र ७१।

१०. कही।

ढाळ : १२

(पूज नै नमै रै सोभौ गुण करै)

- १ पुत्र भगू नै^१ परवरौ, उत्तराधेन^२ उमंग। सुंग्यानी रे!
विप्र जीमायां तमतमा, चवदमै झयण^३ सुचंग । सुग्यांनी रे!
सरधा दुलभ^४ देवां कही ॥ ध्रुवपद ॥
- २ आद्रमुनी इम आखीयौ^५, 'सूगडांग छठै^६ संभाळ। सुज्ञानी रे!
ब्राह्मण बे सहंस जीमावीयां, नरय तणा फळ न्हाळ। सुज्ञानी रे! सरधा
- ३ आनंद श्रावक लियौ अभिग्रहौ, 'सातमैं अंग^७ श्रीकार। सुज्ञानी रे!
अन्यतीर्थी नै आपूं नहीं, असणादिक चारूं आहार। सुज्ञानी रे! सरधा
- ४ प्रत्यख गोसाळा नै आपीया, सकडाल सेज्या संधारा। सुज्ञानी रे!
'उपासग सातमैं^८ आखीयौ, नहीं धर्म तप लिगार। सुज्ञानी रे! सरधा
- ५ दैतौ लैतौ वर्तमान देखने, मून कहीं तिण काळ। सुज्ञानी रे!
'पंचमधेन^९ मैं परवरौ, सूयगडांग^{१०} संभाळ। सुज्ञानी रे! सरधा
- ६ दुखी मृगालोढौ^{११} देख नै, प्रभु नै गोतम पूछंत। सुज्ञानी रे!
किं दच्चा-दान किसौ दीयौ 'विपाक^{१२} सूत्र मैं विरतंत। सुज्ञानी रे! सरधा
- ७ भाव-शस्त्र अवरत भाखीयौ, 'ठाणांग दसमैं ठाण^{१३}। सुज्ञानी रे!
कोई अवरत सेवायां धर्म कहै, जिण मारग रा अजाण। सुज्ञानी रे! सरधा
- ८ नव प्रकारै पुन नीपजै, नवमा 'ठाणा^{१४} मैं निहाल। सुज्ञानी रे!
समचै नवूंई कह्या सही, समचै मन वचन संभाळ। सुज्ञानी रे! सरधा
- ९ करणी धर्म अधर्म नीं कही, जूजूइ^{१५} दोनूं सुजांण। सुज्ञानी रे!
'आचारंग चौथा अधेन^{१६} मैं, तीजी मिश्र री करणी म तांण। सुज्ञानी रे! सरधा

१. भगु नौं (क)।

२. उत्तराध्ययन. अ. १४ गा. १२

३. अञ्जयण (क)।

४. दुर्लभ (क)।

५. आखियौ (क)।

६. सूत्रकृतांग. श्रुत. २ अ. ६ गा. ४४।

७. उपासक दशा. अ. १ सूत्र ४५।

८. उपासक दशा अ. ७ सूत्र ५१।

९. पंचम अध्ययन (क)

१०. सूत्रकृतांग श्रुत. २ अ. ५ गा. ३२।

११. मृगालोढौ (क)।

१२. विपाक. श्रुत. १ सूत्र ४२।

१३. स्थानांग. स्था. १० सूत्र ९।

१४. स्थानांग. ९ स्था. सूत्र २५।

१५. अलग-अलग

१६. आचारांग श्रुत. १ अ. ४।

- १० आज्ञा माहै धर्म आखीयौ,
 'उत्कृष्टी चरचा आचारंग मैं',
 ११ जिन आज्ञा तणां अजांण नै,
 'आचाराग चौथा अध्येन मैं',
 १२ उद्यम करै आज्ञा विना,
 सुगुरु कहै बै बोल होयजो^१ मती,
 १३ आज्ञा लोपी छांदै चालै आपरै,
 'आचारंग दूजा अधेन मैं',
 १४ प्रमादी द्रव्य-लिंगी पासथा^२,
 'आचारंग चौथा अधेन'^३ मैं,
 १५ साधां छोड्यौ उन्मारग सर्वथा,
 'आवसग चौथा अधेन'^४ मैं,
 १६ च्यार मंगल उत्तम सरणां चिहुं,
 एहीज उत्तम सरणौ पिण एहनौ,
 १७ इत्यादिक बोल अनेक छै,
 स्वाम भीक्खू सोध-सोध नै,
 १८ पाखंडीया प्रभु पंथ उथापीयौ,
 भीक्खू आगम न्याय सोधी भला,
 १९ सावज्ज दांन मैं धर्म सरधाय नै,
 स्वामी सूतर^५ न्याय संभाळ नै,
 २० धर्म आगन्या बाहिर धार नै,
 थिर नीव आज्ञा भीक्खू थापनै,

बोलवौ युक्तौ^१ न बार^२। सुज्ञानी रे!
 छठा अधेन रै दूजै^३ विचारा॥ सुज्ञानी रे! सरधा
 समगत दुलभ सुजांण। सुज्ञानी रे!
 चौथे उद्देशे^४ पिछांण॥ सुज्ञानी रे! सरधा
 आज्ञा मै आळस आय। सुज्ञानी रे!
 'आचारंग पंचम रै छटा^५ माया॥ सुज्ञानी रे! सरधा
 ज्ञान रहित गुण हीण। सुज्ञानी रे!
 छठे उद्देशे^६ सुचीन॥ सुज्ञानी रे! सरधा
 वीर कहुआ आज्ञा बार अवधारा। सुज्ञानी रे!
 पिण धर्म न कहौ आज्ञा वारा॥ सुज्ञानी रे! सरधा
 आदर्यौ मारग उदार। सुज्ञानी रे!
 साधां छोड्यौ ते अधिक असार॥ सुज्ञानी रे! सरधा
 केवली परूष्यौ धर्म मंगलीक। सुज्ञानी रे!
 तत^७ 'आवसग'^८ में तहतीक॥ सुज्ञानी रे! सरधा
 आगम मैं अधिकाया। सुज्ञानी रे!
 आछी रीत दीया^९ ओळखाय॥ सुज्ञानी रे! सरधा
 ओलव्या^{१०} जिन वचन अमोल। सुज्ञानी रे!
 प्रगट कीधी पाखंड्यां री पोला॥ सुज्ञानी रे! सरधा
 मतिहीण न्हाखै फंद माया। सुज्ञानी रे!
 व्रत-अव्रत दीधी बताय॥ सुज्ञानी रे! सरधा
 भेषधार्यां मांड्यौ भर्म^{११} जाला। सुज्ञानी रे!
 वारु जिन वच थाप्या विसाला॥ सुज्ञानी रे! सरधा

१. उचित।

२. बाहर।

३. आचारांग. श्रुत. १ अ. ६ उ. २ सूत्र ४८।

४. आचारांग. श्रुत. १ अ. ४ उ. ४ सूत्र ४५।

५. होज्यो (क)

६. आचारांग. श्रुत. १ अ. ५ उ. ६ सू. १०७-१०९।

७. आचारांग. श्रुत. १ अ. २ उ. ६ सूत्र १६६

८. पासत्था (क)।

९. आचारांग. श्रुत. १ अ. ४।

१०. आवश्यक. अध्ययन ४।

११. तंत (क)

१२. आवश्यक. अध्ययन ४।

१३. दिया (क)।

१४. मिश्रित कर दिया।

१५. सूत्र (क)।

१६. भ्रम (क)।

- २१ आज्ञा^१ बारै धर्म पाखंड्यां आदर्यौ, वर भीक्खू पूछ्यौ इम वाय। सुज्ञानी रे !
 ओ आज्ञा बारै धर्म किण परूपीयो, इण रो मोनै नाम बताय ? सुज्ञानी रे ! सरधा
 २२ विकल कहै म्हारी माता बांझणी, दियौ तिण रो दृष्टंत। सुज्ञानी रे !
 वेस्या नां पुत्र तणौ वली, खरा न्याय मेल्या धर खंत॥ सुज्ञानी रे ! सरधा.
 २३ इत्यादिक आगन्या ऊपरै, स्वामी न्याय मेल्या सुखदाय। सुज्ञानी रे !
 भाख्या भिन-भिन भेद भली परै, कसर न राखी काय॥ सुज्ञानी रे ! सरधा.
 २४ वारू ढाळ कही वारमी, साखां दान आज्ञा ऊपर सार। सुज्ञानी रे !
 वलि सरधा तणी कहुं वारता, तिण मै सूत्र साख तंत सार॥ सुज्ञानी रे ! सरधा.

१. तुलनात्मक दृष्टि से देखें-जिन आज्ञा
 री चौपी ढाळ २।

दूहा

- १ पुन री करणी परवड़ी, श्री जिन आगम संध।
भीक्खू तास भली परै, परगट करी प्रबंध॥
- २ निर्जरा री करणी निमल, जिन आज्ञा मैं जाण।
ते सुभ जोग निरवद त्यां, पुन्य बंध पहिछांण॥
- ३ विरूड^१ आज्ञा बारली, सावज्ज करणी सोय।
पाप बंध तेहथी प्रकट, जिण थी पुन म सोय॥
- ४ सुद्ध बहिरावै साध नै, कही निर्जरा एकंत।
भगवती अष्टम शतक भल, छठे उदेश^२ सुचिंत॥
- ५ सुभ लांबौ आउ सखर, तसुं बंध तीन प्रकार।
हिंस्या झूठ सेवै नहीं, संत भणी दै सार॥
- ६ वहिरावै वंदणा करी, आहार मनोज्ञ उदार।
'भगवती पंचम शतक भल' छठे उदेश^३ विचार॥
- ७ वंदणा नां फळ वर्णव्या, नींच गोत खय न्हास^४।
ऊंच गोत नौ बंध इम, 'उत्तराधेन'^५ उजास॥
- ८ व्यावच कीधां बंध वलि, तीर्थकर पुन तांम।
गुणतीसम ज्ञानी कह्यौ 'उत्तराध्ययने' आंम^६॥
- ९ इत्यादिक आज्ञा तिहां, पुन नौ बंध पिछांण।
समय सोध भीक्खू सखर, आखी ऊजम आंण॥

ढाळ : १३

(पुन्य नीपजै सुभ जोग सू रे लाल)

- १ दाखी व्यावच दश प्रकार नीरे लाल, 'ठाणांग दशमै ठांण'^१ हो। भविकजन !
प्रगत दसोइ साध पिछांणजो रे लाल, जिण सू पुन बंध निर्जरा जांण हो ।
स्वामी सरधा दिखाई श्री जिन वयण सू रे लाल॥ ध्रुवपद ॥

१. बुरी

२. भगवती. शतक ८ उ. ६ सूत्र २४५।

३. भगवती. शतक ५ उ. ६ सूत्र १२७।

४. नाश।

५. उत्तराध्ययन. अ. २९ सूत्र १०।

६. उत्तराध्ययन. अ. २९ सूत्र ४३।

७. स्थानांग स्था. १० सूत्र १७।

- २ कालोदाई पूछ्यौ कर जोड़नै रे लाल
पाप स्थानक अठारै परहर्यां रे लाल,
- ३ सेवै पाप स्थानक अठारै सही रे लाल,
सातमै शतक संभाळजो रे लाल,
- ४ कर्कश^१ वेदनी पिण इम हिज कही रे लाल,
सेव्यां अर्ककश भरत नौं परै रे लाल,
- ५ 'आख्यौ ज्ञाता रे आठमा अधेन^२ मैं रे लाल'
वीसोइ निरवद वर्णव्या रे लाल,
- ६ 'सूत्र विपाक^३ मैं सुवाहु तणी रे लाल,
किं दच्चा-इण दान दीयौ किसौ रे लाल,
- ७ अणुकंपा सर्व जीवां री आंणीयां रे लाल,
साता वेदनी तिण रै बंधै सही रे लाल,
- ८ करणी आठ कर्मबंध नौं कहीं रे लाल,
तिण मैं निरवद करणी पुन तणी रे लाल,
- ९ जैणा^४ सूं साधु आहार करै जिहां रे लाल,
'दशवैकालिक चौथे^५ देखलो रे लाल,
- १० 'साधु री गोचरी असावज सही रे लाल,
अधेन पंचमें आखियौ, रे लाल,
- ११ सात कर्म ढीला पाड़ै सही रे लाल,
'पहिले शतक भगोती नवमें^६ पेखलो रे लाल,
- १२ इत्यादिक बहु बोल अनेक छै रे लाल,
तिण सूं निर्जरा हुवै पुनबंध तिहां रे लाल,
- १३ सावज्ज करणी आज्ञा बारै सहू^७ रे लाल,
भीक्खू आगम न्याय सोधी भला रे लाल,
- १४ तंत ढाळ कही ए तेरमी रे लाल,
भीक्खू ओलखाइ भांत-भांत सूं रे लाल,

भगोती^१ मैं भाख्यौ भगवंत हो। भविकजन!
किल्याणकारी कर्म बंधत हो॥ भविकजन! स्वामी.
बंधै पापकर्म विकराल हो। भविकजन!
दाख्यौ दसमें उदेशे दयाल^२ हो॥ भविकजन! स्वामी.
अठारै पाप सेव्यां असराल हो। भविकजन!
भगवती सातमा रै छठै भाल हो॥ भविकजन! स्वामी.
वीस बोलां तीर्थकर पुन बंधाय हो। भविकजन!
श्री जिन आज्ञा मैं सोभाय हो॥ भविकजन! स्वामी.
पूछा करी गोतम प्रभु पास। हो भविकजन!
वारू निरवद करणी विमासा॥ हो भविकजन! स्वामी.
प्राणी नै दुख नहीं उपजाय। हो भविकजन!
'शतक सातमैं भगोती^३ सुहाय॥ हो भविकजन! स्वामी.
'भगवती आठमारै नवमैं भेद^४॥ हो भविकजन!
सावज पाप री करणी संवेद॥ हो भविकजन! स्वामी.
पाप न बंधै पिछांण। हो भविकजन!
इहां पिण जिण आगत्या अगवांण॥ हो भविकजन! स्वामी.
दशवैकालिक देख। हो भविकजन!
बाणुंमी गाथा^५ विसेखा॥ हो भविकजन! स्वामी.
सुद्ध आहार करंतां साध॥ हो भविकजन!
एहवा श्री जिन वचन आराध॥ हो भविकजन! स्वामी.
श्री जिन आज्ञा मैं सोय। हो भविकजन!
स्वामी ओळखाया सूत्र जोया॥ हो भविकजन! स्वामी.
प्रगट थाप्यौ पाखंड्यां पुन। हो भविकजन!
ज्यां री सरधा दिखाई जवून^६॥ हो भविकजन! स्वामी.
निरवद करणी पुन री निरदोख। हो भविकजन!
मिले तिण सूं अविचल मोख॥ हो भविकजन! स्वामी.

१. भगवती. श. ७ सूत्र २२३ से २२६।

२. भगवती. श. ७ सूत्र १०७ से ११२।

३. भगवती. श. ७ सूत्र १०७ से ११२।

४. ज्ञाता. श्रुत. १ अ. सूत्र १८।

५. विपाक श्रुत. २ अ. १ सूत्र १५।

६. भगवती. श. ७ उ. ६ सूत्र ११३ से ११६।

७. भगवती. श. ८ उ. ९ सूत्र ४१९ से ४३३

८. जयणा (क)। ९. दशवै. अ. ४ गा. ८।

१०. दशवै. अ. ५ गा. ९२।

११. भगवती. श. १ उ. ९ सूत्र ४३८।

१२. सही (क)। १३. बुरी/गलत।

दूहा

- १ सूतर मैं समचै कही, अनुकंपा अधिकार।
भीक्खू तास भली परै सोध लियो तंत सार।
- २ जीव असंजति जेहनौ, जीवण बांछै जांण।
सावज्ज अनुकंपा सही, मोह राग महि मांण॥
- ३ मरणौ वांछ्यां द्वेष महि, जीवण राग जिवार।
पाप अठारां में प्रगट, भ्रमण करावै भार॥
- ४ मोह-राग अनुकंप मैं, आज्ञा न दियै आप।
इह कारण सावज्ज अछै, प्रगट राग है पाप॥
- ५ तिरणौ वांछै ते सही, श्री जिन आज्ञा सार।
पाप टळावै पारकौ, ते निरवद इकतार॥
- ६ निरवद कुरणा^१ निरमळी, सावज्ज अधिक असार।
विविध सूत्र निरणो सखर, स्वाम कियौ तंत सार॥
- ७ प्राछित आवै ते प्रगट, अरिहंत आज्ञा बार।
अनुकंपा सावज्ज अछै, वारू हीयै^२ विचार॥
- ८ गाय^३ भैंस आक थोड नौं, ऐ च्यारुंड दूध।
ज्यूं अनुकंपा जाणजो, मन मैं राखे सूध॥
- ९ आक दूध पीधां छतां, जुदा हुवै जीव काय।
ज्यूं सावज्ज अनुकंपा कीयां, पाप कर्म बंधाय॥

ढाल : १४

(दया धर्म श्री जिनजी नी वाणी)

- १ अनुकंपा तस जीव री आंणी, बांधै छोड़ै साधू तिण वारो जी।
छोड़तां नैं अनुमोद्यां चौमासी, 'नसीत बारमैं'^४ निरधारो जी॥
स्वाम भीक्खू निरणौ कियौ सूतर सूं ॥ ध्रुवपद ॥

१. करुणा (क)।

२. हियै (क)।

३. अनुकंपा री चौपाई-ढा. १ दुहा २, ३।

४. निशीथ उ. १२ सूत्र १।

- २ वाघ सिंह हिंसक जीव विलोकी, मार न कहै मतिवंतो जी।
 'मत मार' नहि कहै राग आंणी मुनि, 'सूगडांग' इकवीस' मैं संतो जी॥ स्वाम.
- ३ वीर असंजम जीतब वरज्यौ, 'दसमें सूगडाअंग'^{१२} दयालो जी।
 'दसमें ठाणै'^{१३} वले 'आचारंग' मैं, वारू वचन अनेक विसालो जी॥ स्वाम.
- ४ 'उत्तराधेन बावीस मैं अधेने'^{१४}, नेम पाछा फिरिया जीव न्हालो जी।
 इतला जीव हणै मुझ अर्थे, वारू फळ परभव न विसालो जी॥ स्वाम.
- ५ मिथला नगरी बळती जाण नमि मुनि, सांहमौ न जोयौ सोयोजी।
 'उत्तराधेन रै नवमें अधेने'^{१५}, कुरणा सावज्ज नांणी कोयोजी॥ स्वाम.
- ६ मनुष तिर्यंच देव माहोमाहि, विग्रह देखी विसेखो जी।
 जीत हार वांछणी वरजी जिन, 'दसवैकालिक सातमें'^{१६} देखो जी॥ स्वाम.
- ७ वायरौ विरखा सीत तावड़ौ, कळह^{१७} उपद्रव^{१८} रहित सुकाळो^{१९} जी।
 बोल सातुंइ वांछणा वरज्या, 'दसमैकालिक सातमें'^{२०} दयालो जी॥ स्वाम.
- ८ 'दूजे आचारंग अधेन दूसरे, प्रथम उद्देशै'^{२१} सुपंथो जी।
 माहोमा ग्रहस्थ लड़ता देखी नैं मुनि, मार, मत मार न कहै महंतो जी॥ स्वाम.
- ९ तीन आत्म-रिष'^{२२} तीजा ठाणां रै तीजै'^{२३}, देणौ उपदेश हिंसक देखी जी।
 न समझै तौ मून राखणी निरमळ, वले एकंत जाणौ विसेखी जी॥ स्वाम.
- १० 'उत्तराधेन इकवीसमें अधेने'^{२४}, तसकर नैं मारतौ देखी ताह्यौ जी।
 समुद्रपाल लियौ वर संजम, मोह कुरणा नांणी मन माह्यौ जी॥ स्वाम.
- ११ समचै अनुकंपा कही ते सांभळौ, लखण आग्या थकी 'मौढ लीजै'^{२५} जी।
 प्रभु आज्ञा देवै तेतो निरवद प्रतख, आज्ञा नहीं ते सावद्य ओळखीजै जी॥ स्वाम.
- १२ अनुकंपा सुलसा री आणी, सुर हरणगमेषी सोयो जी।
 पुत्र देवकी रा मेल्या प्रत्यख, 'अंतगड मैं अवलोयो'^{२६} जी॥ स्वाम.

१. सूत्रकृतांग श्रुत. २ अ. ५ गा. ३०

२. सूत्रकृतांग श्रु. १ अ. १०।

३. ठाणं ठा. १० सूत्र २३।

४. उत्तराध्ययन अ. २२ गा. १९।

५. उत्तराध्ययन. अ. ९ गा. १२ से १६।

६. दशवैकालिक. अ. ७ गा. ५०।

७. कलह रहित (क्षेमं)।

८. उपद्रव रहित (शिवं)।

९. सुभिक्ष (धायं)।

१०. दशवैकालिक. अ. ७ गा. ५१।

११. आचारंग अ. २ उ. १ सूत्र २२।

१२. आत्म-रक्षक।

१३. स्थानांग. स्था. ३ उ. ३ सूत्र ३४८।

१४. उत्तराध्ययन. अ. २१ गा. ८ से ५०।

१५. पहचान लें।

१६. अंतगड वर्ग. ३ सूत्र ३६ से ४१।

- १३ ईट उपाड़ मूकी कृष्ण आवत, अनुकंपा पुरुष नीं आंणी जी।
 'अंतगड दशा'^१ मैं पाठ अनोपम, जिण आगन्या नहीं जांणी जी॥ स्वाम.
- १४ 'उत्तराधन बारमें अधेने'^२, अनुकंपा हरकेसी नी आंणी जी।
 छात्रां नै ऊंधा पाड़्या जख छळकर, प्रत्यख सावज पिछांणी जी॥ स्वाम.
- १५ रेणादेवी री कुरणा कर जिणऋष, सांहमौ जोयौ साख्यातो जी।
 'नवमै अधेन ज्ञाता'^३ माहै न्हाळौ, अनर्थ दुख उतपातो जी॥ स्वाम.
- १६ कोई कहै कलुण रस छै कुरणा, अणुकंपा नहीं आखी जी।
 अनुकंपा कुरणा दया अनुक्रोस ए, कलुण रस नां नाम अमर साखी॥ स्वाम.
- १७ 'करी नेम जीवां' री अनुकंपा, अनुक्रोस^४ पाठ आछो जी।
 तिण अनुक्रोस रो अर्थ-कुरणा टीका मैं, सावज निरवद कलुण रस साचो जी॥ स्वाम.
- १८ समक्त^५ विण मेघ गज-भव सांप्रत, अनुकंपा सुसला री आणी जी।
 'प्रति^६-संसार'^७ मनुष आयु प्रगट, प्रथम अधेन ज्ञाता^८ मैं पिछाणी जी॥ स्वाम.
- १९ निज गर्भ री अनुकंपा निमतै, रूड़ौ भोगव्यो धारणी रांणी जी।
 'प्रथम अधेन ज्ञाता' माहै^९ प्रतख, जिहां जिण आगन्या किम जांणी जी॥ स्वाम.
- २० अभयकुमार नीं कर अनुकंपा, दोहलौ पूर्यौ धारणी रौ देवौ जी।
 ए पिण 'ज्ञाता रै प्रथम अधेने'^{१०}, सांप्रत सावज जांणौ स्वयमेवो जी॥ स्वाम.
- २१ शीतल तेजू लेस्या मैहली स्वामी, अनुकंपा गोसाला री आंणी जी।
 'सूत्र भगवती पनरमें शतके'^{११}, वृत्ति माहै सराग वखांणी जी॥ स्वाम.
- २२ 'पण्णवणा सूत्ररै छतीसमें पद'^{१२}, लब्धि तेजू फोड़्यां क्रिया लागै जी।
 तिणरा दोय भेद उष्ण शीतल तेजू छै, शीतल तेजू फोड़ी वीर सागै जी॥ स्वाम.
- २३ कही साधु री हरस छेद्यां वैद नै क्रिया, नहीं साधु रै क्रिया निहाळी जी।
 पिण धर्मातराय साधू रै पाडी वैद, 'भगवती सोळमा रै तीजै'^{१३} भाळी जी॥ स्वाम.

१. अंतगड वर्ग. ३ सूत्र ९६, ९७।
 २. उत्तराध्ययन. अ. १२ गा. २४।
 ३. ज्ञाता. श्रुत. १ अ. ९ सूत्र ४१।
 ४. उत्तराध्ययन अ. २२ गा. १८।
 ५. सम्यक्त (क)।
 ६. प्रत (क)।
 ७. परित्त संसार।

८. ज्ञाता श्रुत. १ अ. १ सूत्र १८२।
 ९. ज्ञाता श्रुत. १ अ. १ सूत्र ७२।
 १०. ज्ञाता श्रुत. १ अ. १ सूत्र ५९।
 ११. भगवती शतक १५ सूत्र ६५।
 १२. पन्नवणा पद ३६।
 १३. भगवती शतक १६ सूत्र ४९।

- २४ इत्यादिक बोल अनेकअख्या छै, समचै सूतर माहै सोयो जी।
जिन आगन्या नहीं ते सावज्ज जाणौ, आज्ञा ते निरवद अवलोयो जी॥ स्वाम।
- २५ नेम समुद्रपाल गज नै नमि ऋष, आत्म-रिष अवधारो जी।
निरवद आज्ञा माहै छै निरमळ, सावज्ज भ्रमण संसारो जी॥ स्वाम।
- २६ स्वाम भीक्खू इम सूतर सोधी, अनुकंपा ओळखाई जी।
विविध हेतू^१ न्याय युक्ति^२ बताया, कुमीय न राखी कांई जी॥ स्वाम।
- २७ भेषधारी भर्म पाड़ै भौळां रै, दया मोह राग नैं दिखाई जी।
सिद्धंत रा जोर सूं भीक्खू स्वामी, असल सरधा ओळखाई जी॥ स्वाम।
- २८ चवदमीं ढाळ सुणी जन चातुर, अनुकंपा निरवद आदरजो जी।
रूढ़ी आसता भीक्खू नीं राखी, पाखंड मत परहरजो जी॥ स्वाम।
- २९ दान दया सूत्र साख दिखाई, खंड प्रथम धर खंतो जी।
सूत्र नेश्राय ए ग्यांन स्वाम नौं, मतिग्यांन नौं भेद सुतंतो जी॥ स्वाम।

कलश

- १ जय सुजश कारण दुख विदारण, सुभग धारण स्वामजी।
सुद्ध सुमति सारण कुमति वारण, जगत तारण कांम जी॥
प्राकम^३ मृगपति सखर धर चित, ग्यांन नेत्रे ऋष गुनी।
जिन मग्ग केतु हद सुहेतू, नमो भीक्खू महामुनि॥

इति श्री भिक्खु जश रसायणे प्रथमः खण्डः॥

१. हेतु (क)।

२. जुगति (क)।

३. प्राक्रम (क)।

खण्ड द्वितीय

सोरठा

१ प्रथम खंड पहिछांण, रचीयो रूडी रीत सूं।
खंड दूजै गुण खानं, दृष्टंत कहूं दयाल ना॥

दूहा

२ आख्यौ दांन दया असल, जिम भाख्यौ जिनराज।
बुद्धि उत्पत्तिया महाबली, साध्यौ सिव पथ साज॥
३ मतिग्यांन महिमानिलौ, दोय भेद तसुं देख।
सूत्र नेश्राय सिद्धंत छै, सूत्र बिना संपेख॥
४ सूत्रे कहीज बात सहु, निमल सूत्र-नेश्राय।
बुद्धि सूं मिलती बात वर, सहु असूत्र-नेश्राय॥
५ सूत्र साख सरधा सखर, स्वाम दिखाई सार।
सूत्र तणी नेश्राय सुद्ध, आगम अर्थ उदार॥
६ च्यार बुद्धि सूं चिंतवी, दियै विविध दृष्टंत।
असूत्र-नेश्राय ओळखौ, वर नंदी^१ विरतंत॥
७ हिव-असूत्र नेश्राय हद, दिया स्वाम दृष्टंत।
मतिज्ञान महा निरमळौ, स्वाम तणों सोभंत॥
८ केवळ ऊतरतौ कह्यौ, मतिग्यांन महाराज।
पज्जवां लेख पिछांणजो, सूत्र भगवती साज॥
९ सखरो भीक्खू स्वाम नों, महा मोटो मतिग्यांन।
साचा न्यायज सोधीया, दृष्टंत देइ प्रधान॥
१० उत्पत्तिया बुद्धि सूं अख्या, मिलता न्याय मुनिंद।
केसी नी पर सुद्ध कथ्या^२, दृष्टंत अति दीपंद॥

१. नंदी सूत्र ३८।

२. कथा (क)।

ढाळ : १५

(जंबू कह्यौ मान लै रे जाया! मत लै संजम भार)

- १ पाखंडीयां सावज्ज परूपीयौ, त्यांनै' भीक्खू पूछ्यौ तिण वार।
सावज्ज मैं पुन्य सरधीयौ, इक सांभळौ हेतु' उदार॥
स्वामी बुद्धि सागरू, वारू मेल्या न्याय विशाल।
अधिक गुण आगरू, भल उत्पत्तिया बुद्धि भाल॥ध्रुवपद॥
- २ पांच सीरी^१ वायौ खेत परवरौजी, चणां तणो चित धार।
नाज पांच सौ मण चणा नीपना, तब मतौ कियौ तिण वार॥ स्वामी.
- ३ घर माहै तौ धन आपां रै घणौ, करां दांन धर्म कहिवाय।
एक जणै सौ मण चणा आपीया, बहु भिख्यार्यां नै बोलाय॥ स्वामी.
- ४ दीया सौ मण चणा रा दूसरै, सेकाय भूंगरा सोय।
त्यार गूघरी तीजै करायनै, जीमाया भिखार्यां नै जोय॥ स्वामी.
- ५ चौथे रोठ्यां सौ मण चणां तणीजी, 'कढी पाखती कराय'^४।
भिख्यारी रांकादिक भणीजी, जुक्ति सूं दीया जीमाय॥ स्वामी.
- ६ सौ मण चणा पांच मैं बोसिराविया, तिण रै हाथ लगावा रा त्याग।
कहौ धर्म पुन घणौ केह नैं, सखरो उत्तर देवौ 'धर राग'^५॥ स्वामी.
- ७ भगवंत री आज्ञा किण भणी, कुंण आगन्या बार कहात?
इम सुण उत्तर आयौ नहीं, ऐसी भीक्खू नीं बुद्धि उत्पात॥ स्वामी.
- ८ दांन ऊपर दिष्टं^६ दूसरौ, स्वांम भीक्खू दियौ सुखदाय।
हळुकर्मी सांभळ हरखै घणा, भारीकर्मा रै द्वेष भराय॥ स्वामी.
- ९ भिख्या मांगतौ डोकरी भम रह्यौ, अभ्यागत दुखियौ एक।
धर्मात्मा भूखा नै धान दौ, विरुआ बोलै वचन विसेख॥ स्वामी.
- १० एक जणै अनुकंपा आणने जी, सेर चणा दिया सोय।
गुणग्राम भिख्यारी करै घणां, आसीस देवै अवलोय॥ स्वामी.
- ११ आगे जाई इम बोलीयौ जी, सेर चणा दिया सेठ एक।
पिण दांत नहीं कोई पीस दो, वारू छै कोई धर्मी विसेख? स्वामी.

१. भि. दृ. ४४।

२. भागीदार।

३. उसके साथ कढी बनाकर।

४. सताय (मू.)

५. भि. दृ. ४५।

- १२ एक बाई अनुकंपा आंणने जी, पीस दिया केहत पांण।
 वले आगे जाई इम बोलीयौ जी, छै कोई धर्मी पिछांण? स्वामी.
- १३ एक सेठ चणा सेर आपीया, पीस दिया दूजी पुनवान।
 आटो फाकणी आवै नहीं, जिण सूं रोटी कर दौ धर्म जाना॥ स्वामी.
- १४ अनुकंपा तीजी आणने, सेर चून्^१ रा फाफड़ा सोय।
 सिंधु^२ घाल कर दीधा सही, जीमी तृप्त होय गयौ जोय॥ स्वामी.
- १५ तृषा लागी तिण अवसरै, वले आगे जाई बोल्ह्यो वान।
 सेर चणां दीया इक सेठ जी, पीस दिया दूजी पुनवान॥ स्वामी.
- १६ झट रोट्यां कर तीजी जीमावीयौ, अति लागी है तृपा अथाय।
 है धर्मात्मा एहवौ, प्रांण जाता नै पांणी पाय? स्वामी.
- १७ चौथी बाई अनुकंपा चित धरी, पायौ त्रस सहित काचौ पांण।
 कहौ धर्म घणौ हुवौ केहनै, पाछै कह्या च्यारुंइ पिछांण? स्वामी.
- १८ आज्ञा बारला दांन रै ऊपरै, दियौ स्वाम भीक्खू दृष्टंत।
 प्रत्यख कारण पाप नां जी, किण विध पुन कहंत॥ स्वामी.
- १९ हलुकर्मी सांभळ हरखै हीये, भारीकर्मा सुणे भिड़ैकंत।
 सूतर-न्याय साचा सही, धारै उत्तम पुरुष धर खंत^३॥ स्वामी.
- २० पवर ढाळ कही पनरमी, स्वामी थापी है सरधा सार।
 उत्पत्तिया बुद्धि ओपती वलि आगलि बहु विस्तार॥ स्वामी.

१. वेसन/चने का आटा।

२. लवण। सिंधो (क)।

३. शांतिपूर्वक।

दूहा

- १ जाब सुणी बुद्धिवांन जन, चित्त पांमै चिमत्कार।
सांभळ केयक समजीया, पाम्यां हर्ष अपार॥
- २ केयक वलि इण पर कहै- थे दांन दया दी उथाप।
सरधा किहांई ना सुणी, प्रतख सरधौ पाप॥
- ३ भीक्खू वलता इम भणै^१, पजूसणां मैं पेख।
आखा^२ आटौ आदि दै, आपै नहीं असेख॥
- ४ पर्व दिवस पज्जुसणा, धर्म तणा दिन धार।
अधिक धर्म तिहां आदरै, पाप तणौ परिहार॥
- ५ दान अनेरा नै दीयां, जाणै धर्म जिवार।
कीधौ बंध किण कारणै, चिंत सूं करौ विचार॥
- ६ एह बात है आगली, परंपरा पहिछांण।
कहौ ए थाप करी किणै, वारू करौ विनांण॥
- ७ हूं तौ हिवड़ाइज हुआ, जद तो नहीं थो जांण।
जाब दीयौ अति जुगत सूं, सुण हरख्या सुविहांण॥
- ८ सूत्र-न्याय सुद्ध-परंपरा, सखर मिलावै स्वाम।
जग पूर्वधारी जिसा, औजागर अभिरांम॥
- ९ अपर दान रै ऊपरे, दीधा बलि दृष्टांत।
विविध न्याय वर वारता, सांभळजो चित्त शांत॥

ढाल : १६

(पर नारी रो संग न कीजै)

- १ सैहर^१ खेरवै पधार्या स्वामी, ओटौ स्याळ प्रश्न पूछ्यौ एम।
श्रावक कसाइ गिणौ थे सरीखा, कहै खोटी सरधा इसड़ी धारां म्हे केम?
स्वाम भीक्खू रा दृष्टंत सुणजो ॥ध्रुवपद॥
- २ स्वाम कहै-किम गिणां सरीसा? जब ते कहै-श्रावक नै दीयां पाप जांणौ।
कसाइ नै दीयां पिण पाप कहौ छो, प्रतख दोनूं सरीखा इण न्याय पिछांणो॥ स्वाम.

१. भि. द. १५

२. धाना

३. भि. द. २९

- ३ स्वाम कहै-इम नहीं सरीखा, श्रावक कसाइ बे जूआ संपेख।
ओटौ कहै--दोनू थया सरीखा, दोयां नै दीयां पाप कहौ ते लेख॥ स्वाम.
- ४ पूज कहै-थारी माता नै पायो, सचित पाणी री लोटी भर सोय।
कहौ तिण मैं थारे नीपनों कांइ? ओटो कहै-पाप छै अवलोय॥ स्वाम.
- ५ पुनरपि स्वाम ओटा नै पूछ्यौ, पांणी लोटी भर वेस्या नै पायौ।
धर्म थयो कै पाप हुवौ थानै? ओटो कहै-तिण मैं पिण पाप थायौ॥ स्वाम.
- ६ पूज कहै-दोयां मैं पाप थाप्यौ, थारी माता नैं वेस्या सरीखी थारै न्यायो।
जो माता वेस्या नैं न गिणौ सरीखी तौ, श्रावक कसाई सरीखा न थायो॥ स्वाम.
- ७ अति कष्ट थयां लोक कहै-ओटोजी, माता नै वेस्या सरीखी मांनी।
चित मांहै चिमत्कार लहै चातुर, अणहुंता अवगुण धारै अग्यांनी॥ स्वाम.
- ८ संमत^१ अठारै पैताळीसै सांमी, प्रगट चौमासौ कियौ पीपार।
जनक हस्तु कस्तु नौ जगु गांधी, वारू चरचा सूं सरधा चित धार॥ स्वाम.
- ९ भेषधारी तिण नैं लागा भिड़कावा, खोटी सरधा भीखनजी री खार।
एक गृहस्थ श्रावक नैं बासती^२ आपी, पाप कहै तिण माहि अपार॥ स्वाम.
- १० वलेकिण हीगृहस्थरी बासती चोर लेग्यौ, तिण रौ पिण गृहस्थ नै पाप बतावै।
श्रावक नै चोर गिणै इम सरीखो, जब जगू स्वामीजी नै पूछ्यौ प्रस्तावै॥ स्वाम.
- ११ पूज कह्यौ उणांनैज पूछणौ, चदर थारी एक ले ग्यौ चोर।
एक चदर थे श्रावक नैं आपी, जद थानै डंड किण रौ आवै जोर? स्वाम.
- १२ तसकर चदर लेइ गयो तिण रौ, प्राछित मूल न सरधै संपेख।
श्रावक नै दीधां रो प्राछित सरधै, जद तौ देणौज खोटै टैहर्यौ ज्यारै लेख॥ स्वाम.
- १३ जाब सुणी समज्यौ, जगू गांधी, ऐसी स्वामीजी री बुद्धि उत्पात।
सिद्धंत री सरधा नै थापण साची, न्याय विविध मेलव्या स्वामीनाथ॥ स्वाम.
- १४ सोळमी ढाळ मैं भीक्खू स्वामी री, ओळखाई बुद्धि सरधा उदार।
श्री जिन आगन्या धारी सिर पर, सरधा दिखाय दीधी तंत सार॥ स्वाम.

१. भि. दृ. १६।

२. हाथ से बुनी खादी, जिसे प्राचीन भाषा में 'दो ष्टी' कहा जाता था।

दूहा

- १ सरधै सावज दांन में, पुन्य मिश्र एकंत।
पूछ्यां कहै मुझ मून है, केइ इसड़ौ कपट करंत॥
- २ पूछ्यां न कहै पाधरो^१, पुन्य मिश्र पख एका।
आख्यौ हेतू^२ ओपतौ, वारू स्वाम विसेख॥
- ३ किण ही पुरुष पूछा करी, नार भणी पिउ नांम।
थारै धणी रो नांम कुंण, स्यूं पेमौ है तांम?
- ४ कहै-पेमौ क्यांनै हुवै, वळि पूछ्यौ तिण वार।
नाथू नाम है तेहनौ, कंत तणो अवधार?
- ५ कहै-नाथू क्यांनै हुवै, वळि पूछ्यौ सुविसेख।
पाथू है नांम तेहनौ, तुझ पीतम संपेख?
- ६ कहै-पाथू क्यांनै हुवै, इम बहु नाम विचार।
सागे नांम आया थकां, रहै अबोली नार॥
- ७ सेणौ^३ जब जाणै सही, इण रा पिउ रौ नांम।
एहिज छै तिण कारणै, मून रही इण ठांम॥
- ८ ज्यूं सावज दान में पाप है, कहै-क्यांनै ह्वै^४ पाप?
मिश्र पूछ्यां पिण इम कहै-- क्यांनै ह्वै मिश्र थाप?
- ९ पुन पुछ्यां सूं मून रहै, न करै तास निषेह^५।
सेणौ जब जाणै सही, इण रै सरधा एह॥

ढाळ : १७

(प्रभवौ मन में चिंतवै)

- १ पूज भीखनजी पधारीया, वर इक गांम विमास।
साध अमरसिंगजी तणा, पूज आया त्यां पास॥
- २ प्रश्र^६ भीक्खू सांम पूछीयो, अनुकंपा मन आंण।
मरता नै मूंळा दिया, जिण मैं स्युं हुआ जांण?

१. सीधा।

२. भि. दृ. ६२।

३. समझदार।

४. हुवै (क)।

५. निषेधा।

६. भि. दृ. ११०।

३	'तामस' आंणी' ते कहै,	प्रश्न	इसौ	पूछंत।
	जे मिथ्याती जांणीयै,	भीक्खू	वलि	भाखंत॥
४	पूछण वाळै पूछीयौ,	समकति	होवै	सोय।
	अथवा मिथ्याती मानवी,	जे	पिण	पूछै जोय॥
५	उत्तर आपै एहनों,	जो	मिथ्याती	होय जाय।
	उत्तर तौ आपौ मती,	नहि	तौ आखौ	न्याय?
६	तब ते बोल्या तड़क नै	मूळां	माहै	पाप।
	पूज कहै पुन पाप बिहुं,	केवळ	पाप	किलाप?
७	दैण वाळा नै दाखीयै,	पुन्य	पाप	पिछांण?
	जाब न देवै जाणनै,	वलि	भीक्खू	कहै वांण॥
८	केइ मूळा खवाया मिश्र कहै,	इम	पूछ्यां	कहै आंम।
	मिश्र कहै ते पापी सही,	तब	स्वामी	कहै तांम॥
९	केइ मूळा खवायां पाप कहै,	वलि	ते	बोल्या वांण।
	पाप कहै सो पापीया,	झूठा	एकंत	जांण॥
१०	फिर स्वामी पूछा करी,	मूळा	खवायां	मांण।
	केयक पुन कहै सही,	जब	ते	बोल्या जांण॥
११	पुन कहै सोई पापीया,	सुणनै	स्वाम	विचारै।
	सरधा पुन री दीसै सही,	बात	तीनोई	बारै॥
१२	वलि मन भीक्खू विचारीयौ,	कहिण	वाला नै	कह्यौ पापी।
	पिण सरधणहारा पुरुष नीं,	थिर	पूछा करूं	थापी॥
१३	पूज इम चिंतव पूछीयौ,	अनुकंपा		आंण।
	मूळा देवै ते मनुष नैं,	पुन	केई सरधै	पिछांण॥
१४	स्वाम तणी पूछा सांभळी,	वलि	बोल्या ते	वांण।
	मन आसी जूं सरधसी,	जब	स्वामी लियौ	जांण॥
१५	इम चिंतव स्वामी ऊचरै,	मूळा	खवायां	मांण।
	प्रगट पुन्य परूपौ नहीं,	पिण	सरधा पुन री	पिछांण॥
१६	इत्यादिक जाब अनेक सूं,	कष्ट	कीया	अधिकाय।
	आया ठिकाणैं आपणैं,	स्वामी	महा	सुखदाय॥
१७	मोटी मति महाराज नीं,	वारूं	बुद्धि सूं	विचार।
	जाब लियौ अति जुगत सूं,	ऊपर	सूं	अवधार॥
१८	सखर ढाळ कही सतरमीं,	आगै	बहु	अधिकार।
	स्वाम दृष्टंत सुणी करी,	चतुर	लहै	चिमत्कार॥

१. गर्म होकर

दुहा

- १ भीखनजी स्वामी भणी, किणहिक पूछा^१ कीध।
दांन असंजति नैं दीयां, पाप कहौ प्रसिध॥
- २ कडुआ फळ किण कारणैं, निर्मळ बतावो न्याय?
कहै भीखू-किण सेठ रैं, नवली^२ कड़ी बंधाय॥
- ३ ते नवली रुपीया तणी, तसकर देखी तांम।
सेठ तणै लारै हुवौ, रुपीया लेवण कांम॥
- ४ पूठै तसकर पेखनै, साहुकार न्हासंत^३।
लारै तसकर दौड़तौ, इतलै 'पग' अखुडंत^४॥
- ५ पग आखुर हेठौ पड़्यौ, चित विलखांगौ चोर।
इतलै किणहिक मानवी, अमल खवायौ जोर॥
- ६ अमल खवाय पायौ उदक, सेठौ कीधौ सूर।
दुसमण ते तिण सेठ नौं, साहज^५ दीयौ भरपूर॥
- ७ अमल खवायौ ते पुरुष, वैरी सेठ नौं वाध।
साहज दीयौ वैरी भणी, अरि थी हुवै उपाध॥
- ८ ज्यूं छ काय ना हिंसक भणी, जै नर पोषै जांण।
ते वैरी षट काय नौं, प्रतख हीयै पिछांण॥
- ९ हणणहार षट काय नौं, तसुं पोखे कियौ सूर।
तिण कारण जीवां तणौ, वैरी ते भरपूर॥

ढाल : १८

(सीता दीयै रैं ओळंभड़ा)

- १ सावज्ज दांन सरधायवा, दीयौ भीखू दृष्टंत^१।
खेत वायौ इक करसणी, पाकौ खेत अत्यंत॥
- तंत दृष्टंत भीखू तणा॥ ध्रुवपद ॥

१. भि. दृ. १३८।

२. नोली।

३. भागने लगा।

४. ठोकर लग जाती है।

५. अखडंत (क)।

६. साझ (क)।

७. भि. दृ. १३९।

- २ इतलै धणी रै वाळौ^१ हुवौ, दूखणी आयौ देख।
किणहिक ओषध दे करी, सांतरौ कीयौ सेख॥
- ३ ताजौ हुआँ तिण अवसरै खेत काट्यौ धर खंत।
साहज दैण वाळा नैं सही, लागौ पाप एकंत॥
- ४ कहै पाप हुवै खेत काटीयां, तो काटण वाळा नैं सोया।
साहज देईनैं साजौ कीयौ, जिण नै पिण पाप जोय॥
- ५ तिमहिज और पापी तणैं, साता कीधी विसेख।
तिण माहै धर्म किहां थकी, दिल माहै देख॥
- ६ केयक^२ भेषधारी कहै- धन दीधां धर्म।
वले कहै-ममता ऊतरी, भोळां रै पाड़ै भर्म॥
- ७ पूज भीक्खू तिण ऊपरै, निरमळ मेल्या न्याय^३।
भर्म लोकां रौ भांजवा, स्वामी महा सुखदाय॥
- ८ किणही मनुष्य रै खेती हुंती, वीस वीगा विचार।
दस वीगा ब्राह्मण नैं दीया, धर्म अर्थे धार॥
- ९ वीस हळां री खेती विषै, दस हळ खेती दीध।
ए पिण ममता ऊतरी, तिण रै लेखै प्रसीध॥
- १० कह्यौ परिग्रह नव प्रकार नौं, दौपद चौपद देख।
पांच दास्यां दीधी पर भणी, पंच गायां संपेख॥
- ११ ए पिण ममता ऊतरी, तिण रै लेखै तहतीक।
धर्म कहै रुपीया दीयां, तौ इण मैं पण धर्म ठीक॥
- १२ दास्यां खेती गायां दीयां, पुन रो अंस म पेख।
इमहिज रुपीया आपीया, धर्म पुन्य म देख॥
- १३ पाप अठारां मैं पंचमौ, परिग्रह महा विकराल।
सेव्यां सेवायां पाप छै, भगवती^४ मैं संभाळ॥

१. नारू नाम का रोग और उसका कीड़ा।

२. कैकेइक (क)।

३. भि. दू. २२१।

४. भगवई. १/३८४

- १४ सावज्ज साता करै सही, इण सूं पाप एकंत।
 जिण आज्ञा बाहिर जाणजो, सूगडांग^१ सोभंत॥
- १५ भीक्खू स्वाम भली परै, ओळखाया ऐन।
 हळुकर्मी हरख्या घणां, चित मैं पाया चैन॥
- १६ आखी ढाळ अठारमीं, वारू स्वामी नां बोल।
 बोल साराई सुहांमणां, आछा नै अमोल॥

१. सूयगडाअंग (क), सूयगडो. १।३।६६,
 ६७।

दूहा

- १ किणही^१ भीक्खू नै कह्यौ^२- असंजती अवलोय।
तिण नै दांन देवा तणा, त्याग करावौ मोय॥
- २ भीक्खू स्वामी इम भणै- सरध्या मुज वच सोय।
प्रतीतीया रुचिया पवर, जिण सूं त्याग सुजोय॥
- ३ कै म्हांनै भांडण भणी, करै इसा पचखांण?
इम कहि कष्ट कियौ अतहि^३, सखर स्वाम बुद्धिवांन॥
- ४ किणहिक भीक्खू नै कह्यौ^४- टोळावाळा ताहि।
प्रत्यख पुन्य परुपै नहीं, सावज दांन रै माहि॥
- ५ स्वाम कहै-काइ असतरी, जल लोट्यौ भर जांण।
म्हारै हाटै सूपजो, कही किणी नै वांण॥
- ६ नाम पिउ नौ नां लीयौ, पिण सूंप्यौ कर सांन^५।
इम सांनी कर पुन कहै, पुन री श्रद्धा पिछांण॥
- ७ किणहिक स्वामी नै कह्यौ^६, पडिमाधारी पेख।
दांन निर्दोषण तसुं दीयां, स्यूं फळ कहौ विसेख?
- ८ स्वाम कहै-लै सूझतौ, पडिमाधार पिछांण।
तसुं फळ होवै ते सही, दैण वाला नै जांण॥
- ९ लैण वाला नै पाप कहै, पाप लगायौ दातार।
तिण नै^७ पुन्य किहां थकी, स्वाम जाब श्रीकार॥

ढाल : १९

(वीर सुणौ मोरी वीनती)

- १ काचौ पांणी पायां माहै पुन्य कहै, स्वामी दीधौ हौ तेहनै दृष्टंत।
कोइ खाई^८ लुंटावै पारकी, सावज्ज थारै लेखे हो इण मैं पुन एकंत।
तंत दृष्टंत भीक्खू तणां ॥ध्रुवपद॥

१. किणहिक (क)।

२. भि. दृ. ११८।

३. अति ही (क)।

४. भि. दृ. ६१।

५. संकेत।

६. भि. दृ. २०७।

७. मैं (क)।

८. किले के चारो ओर रक्षार्थ खोदी हुई
नहर के रूप में पानी से भरी खाई।

- २ खाई लुंटाया जो पाप है, पांणी पायां हो किम होसी पुन्य?
 दोनूं बरोबर देखलौ, दोनूं हो कण रहित है सुन्य॥ तंत.
 ३ 'अव्रती' नैं' अन्न-धन दीयां, भेषधारी हो थापै धर्म नैं पुन।
 स्वाम भीक्खू दीयौ सोभतौ, हद हेतु हो सुणजो तन-मन॥ तंत.
 ४ लाय मां सूं काढै दूजी लाय मैं, धन न्हाख्यां हो काम न आवै ते धार।
 आप कनैं धन अव्रत मैं हुंतौ, अव्रती नैं हो दीयो अव्रत मझार॥ तंत.
 ५ लाय लागां गृहस्थ रौ घर जळै, बळतौ देखी हो किणहि धन काढ्यौ बार।
 ले न्हांख्यौ दूजी लाय मैं, ततखिण आयौ हो सेठ पास तिवार॥ तंत.
 ६ अहो सेठजी तुझ घर आग थी, सखरी वस्तु हो धन काढ्यौ म्हेँ सार।
 सेठ सुणी हरख्यौ सही, ते धन किहां छै हो आपौ वस्तु उदार॥ तंत.
 ७ ओ कहै-न्हांख्यौ दूजी आग मैं, सेठ जाण्यौ हो पूरौ मूंहर्ख^६ सोय।
 लाय मां स्यूं काढी न्हांख्यौ लाय मैं, काम न आवै हो तिण लेखै कोय॥ तंत.
 ८ अव्रत रूप लाय हुंती आपरै, अव्रती नैं हो दीधौ और नैं धन।
 लाय लगाई और रै, प्रत्यख देखौ हो तिण मैं किम हुवै पुन? तंत.
 ९ श्रावक रै त्याग ते तौ व्रत सही, अव्रत जाणौ हो बाकी रह्यौ आगार।
 अव्रत सेवावै और री, तिण माहै हो धर्म नही लिगार॥ तंत.
 १० अव्रत-व्रत न ओळखै, भेषधारी हो करै भेळ-संभेळ।
 दृष्टं^६ स्वाम दीयौ इसौ, घी तंबाखू हो भेळ्यां कदेय न मेळ॥ तंत.
 ११ ओषध^६ जीभ आंख्यां तणौ, आंहमौ-सांहमौ हो घाल्यां दोनूं विलाय।
 ज्यूं अव्रत मैं धर्म सरधीयां, पाप वरत मैं हो सस्थ्यां दुरगति जाय॥ तंत.
 १२ सोरीगर^६ रा घर मैं सोर^६ वासदी^६, न्यारा राख्यां हो घर विणसै नाय।
 ज्यूं व्रत अव्रत फळ जूजूआ, जन जाण्यां हो समगत न जळाय॥ तंत.
 १३ प्रगट पसारी रै पारखा, न्यारा राखै हो मिश्री सोमल^६ न्हाळ।
 ज्यूं धर्म-अधर्म खातौ जूजूऔ, सैंठी समगत हो सुद्ध सरध्यां संभाळ॥ तंत.

१. अव्रत में (क)।

२. काढ़ (क.)।

३. मूरख (क)।

४. विरत इवरत की चौपाई ढा. ४ गा. ६, ७।

५. विरत इवरत की चौपाई ढा. ४ गा.

९, १०।

६. बारूद बनाने या बेचने वाला।

७. बारूद। ८. अग्नि।

९. एक प्रकार का क्षार, जो मिश्री जैसा ही लगता है।

- १४ कोई कहै-‘गृहस्थ रो छांदौ’^१अछै,
भीक्खू कह्यौ-छांदा^२ मैं तो धूळ है,
१५ खांड घृत सुद्ध मिल्यां,
ज्यूं चित^३ वित^४ पात्र^५ तीनूं जुड्यां,
१६ घृत खांड बिहुं सुद्ध घणा,
ज्यूं चित वित दोनूं चौखा मिल्या,
१७ घृत मैदो चौखा घणां,
ज्यूं चित पात्र दोनूं सुद्ध जुड्या,
१८ खांड मैदो चौखा खरा,
ज्यूं वित पात्र दोनूं सुद्ध जुड्या,
१९ घृत री ठौर गोमूत है,
लाद मैदा री जायगा,
२० ज्यूं दैनवालौई असूझतौ,
अव्रत माहि लेवाळ अंगीकरी,
२१ चित वित पात्र चोखा मिल्यां,
एक अधूरौ तीनां मझै,
२२ दृष्टंत ऐसा भीक्खू दीया,
यां विण इसडी कुण कथै,
२३ पंचम आरै परगट्या,
हूं पिण हिवडां ऊपनौं,
२४ आखी ढाळ उगणीसमी,
याद आयां हो हीयौ हूलसै,
- दान देवै हो गृहस्थ नैं देख।
घृत तौ छै कूड़ी^३ मैं संपेख॥ तंत.
सखरा कहियै हो लाडू सरस, सवाद।
अति फळ लहियै हो भव जल तिरियै अगाध॥ तंत.
मैदा री जागा हो लाद^५ है माय॥
पात्र जागां हो असाधू नैं वहिराय। तंत.
खांड जागा हो माहै घाली धूळ॥
वित जागा हो असूझतो विस तूल^७॥ तंत.
वित जागा हो माहै घाल्यौ गोमूत।
चित जागा हो दैन वाळौ कपूत॥ तंत.
खांड ठामै हो घाली धूळ महाखार।
आवी मिलिया हो तीनूं अधिक असार॥ तंत.
वस्तु दीधी हो असूझती जबून्य।
प्रत्यख पेखौ हो इण मैं किम हुवै पुन्य? तंत.
कर्म निर्जरा हो पुन्य बंध कहिवाय।
थिर चित देखौ हो तिण मैं पुन्य न थाय॥ तंत.
स्वामी मेल्या हो सूत्र नैं न्याय संध।
पूर्वधारी हो जैसा भीक्खू प्रबंध॥ तंत.
आप औजागर^९ हो आप सूं अनुराग।
साची सरधा हो पांमी ए मुझ भाग॥ तंत.
चित उमग्यौ हो भीक्खू आया चीत^{१०}।
गुण गावत हो हूऔ जनम पवीत॥ तंत.

१. गृहस्थ का चालू व्यवहार।
२. स्वामी जी ने इसको दूसरे अर्थ में लेते हुए कहा-छांदा में तो धूल होती है। इसका अर्थ है--घी के कुप्पी पर ढक्कन के रूप में दी जाने वाली दांट। कपड़े में मिट्टी/धूल डालकर उस पर लेप लगा दिया जाता है। जिससे घी बाहर नहीं आता।

३. घी रखने का बर्तन
४. देने वाला।
५. वस्तु।
६. लेने वाला।
७. लीद- हाथी, घोड़े, गधे आदि की।
८. तुल्य।
९. उद्योतकार।
१०. स्मृति में।

दूहा

- १ सखरौ मारग सोध नै, दीयौ स्वाम उपदेश।
कुबुद्धी, कुकळा केळवी, पूछै प्रश्न असेस॥
- २ थानैं असाध सरधनै, दीधौ म्हैं तुझ दान।
तिण रौ मुझ नैं स्यूं हुवौ? इम पूछ्यौ किण जान॥
- ३ भीक्खू कहै^१--मिश्री भली, किण खाधी विष जान।
मन सुख पावै के मरै, उत्तर एह पिछाण॥
- ४ ज्यूं थे असाध जाणनै, दियौ सूझतौ दान।
अजाणपणौ घट थांहरै, पात्र उत्तम फळ जान॥
- ५ इत्यादिक बहु आखीया, दान ऊपर दृष्टंत।
किंचित मातर म्हैं कथ्या, वधतौ जाणी ग्रंथ॥
- ६ विविध दया ऊपर वली, हेतु महा हितकार।
आक थोर^२ रा दूध सम, सावज दया असार॥
- ७ अनुकंपा इहलोक री, जीवणु^३ वांछै जाण।
मोह राग माहै तिका, तिण मै धर्म म तांण॥
- ८ जे आंरभ सहित जीवणौ, असंजति रो अंभा।
जिण वांछ्यौ ए जीवणौ, तिण वांछ्यौ आंरभ॥
- ९ सूत्रे श्री जिन वरजीयौ, असंजम जीतव आस।
भीक्खू स्वाम भली परै, मेल्या न्याय विमास॥

ढाळ : २०

(नगर सोरीपुर राजवी रे)

- १ केइ पाखंडी इम कहै रे, लाय बुझावै लोय।
अल्प पाप बहु निर्जरा रे, दंभ करि थापै दोय।
दंभ करी दोय थापै वेसर्मो^४, तेउ जीव मुआं ते पाप कर्मो।
आगला जीव बच्चा तिण रौ धर्मो, भौळां तणैं मन पाड़ै भर्मो।
जी सहू कोई जी हो॥

१. भि.-दृ.-९२।

२. थोहर (क)।

३. जीवणो (क)।

४. बेशर्मी (क)।

- २ उत्तर भीक्खू आपीयौ रे, सांभळजो चित ल्यायो।
 हळुकर्मी सुण हरखीयै रे, भारीकर्मी भिड़कायो।
 भारीकर्मा भिड़कै लहै तापो, तेउ जीव मुआं रौ कहै पापो।
 और वच्या तिण रौ धर्म थापो, कर रह्या मूरख कूड़ किलापो।
 तिण री सरधा रौ लेखौ सुणआपो, नाहर मार्यां एकलौ नहीं पापो
 जी सहू कोई जी हो॥
- ३ नाहर हिल्यौ एक आकरौ रे, करै मनुषां रो खेंगाळो^१।
 गायं भैस्यां अजा बाकरा रे, सांवर रोझ सीयालो।
 सांवर रोझ सियाल पिछांणौ, प्रत्यख लूंट रह्यौ पर प्राणौ।
 जीव घणां रो करै घमसांणो, पंकप्रभा उत्कृष्ट पयांणो॥
 जी सहू कोई जी हो॥
- ४ किण ही विचार इसौ कियौ रे, ए तौ है मंस^३ आहारी।
 ए जीवीयां जीव मारै घणां रे, एहवा अध्यवसाय धारी।
 एहवा अध्यवसाय सूं सीह मारी, उणरी सरधा रै लेखै विचारी।
 नाहर रौ पाप हुआ निरधारी, और वच्यां रौ धर्म हुवौ भारी।
 जी सहू कोई जी हो॥
- ५ बीजौ दृष्टंत भीक्खू दीयौ रे, छै एक पापी कसाई।
 पांच-पांच सौ भैंसा नैं मारतौ, कुरणा न आंणें काई।
 मन माहै कुरणा न आंणें काई, किण हि विचार कियौ मन माही।
 एहनै मार्यां बहु जीव बचाई, एम विमासी^४ नैं मार्यौ कसाई।
 घणां जीवां नैं वचावण ताई, जी सहू कोई जी हो॥
- ६ लाय बुझायां मिश्र कहै रे, तिण री श्रद्धा रै लेखौ।
 कसाई नैं मार्यां पिण मिश्र छै, पोता नीं सरधा पेखौ।
 पोता नीं सरधा पेखौ निज नैणों, पाप कसाइ नौं ए सत्य वैणौ।
 जीव घणां वच्यां रौ धर्म लैणों, पोता री सरधा लेखै कहि देणौ।
 कसाई नैं मार्यां एकंत पाप न कैहणो,
 जी सहू कोई जी हो॥

१. संहारा।

२. सांभर (क)।

३. मांस (क)।

४. विचारी (क)।

- ७ तीजो दृष्टंत स्वामी दीयौ रे, उरपर^१ एक अजोगो।
 घणां उंदरां नां गटका करै रे, मनुष पौहचावै परलोगो।
 मनुष मार परलोग पौहचावै, घणां पंख्यां नां अंडा पिण खावै।
 सर्प घणां जीवां नैं संतावै, उत्कृष्ट 'धूमप्रभा'^२ लग जावै।
 जी सहू कोई जी हो॥
- ८ किण ही विचार इसौ कियौ रे, सर्प घणां नैं संतावै।
 एक सर्प मार्यां थकां रे, जीव घणां सुख पावै।
 जीव घणां सुख पावै सुजांणी, अनुकंपा बहु जीवां री आंणी।
 सर्प मार बचाया बहु प्रांणी, लाय बुझायां कहै मिश्र वांणी।
 तिण रै लेखै इण मैं पिण मिश्र पिछांणी,
 जी सहू कोई जी हो॥
- ९ चौथो दृष्टंत स्वामी दीयौ रे, कोइ पुरुष नौं एहवौ आचारो।
 बाप मूंआं पहिली कह्यौ रे, काळ करतां तिणवारो।
 काळ करतां सुत कही थी वांणो, सुखे तुम्हारा नीसरजो प्रांणो।
 थां लारै अटव्यादिक बालसूं जांणौ, घणां गांम नगर बाल करसूं घमसाणौ।
 जी सहू कोई जी हो॥
- १० मनुष ढांढा घणां मारसूं रे, बाप नै एहवौ सुणायौ।
 पिता पौहतौ परलोक में रे, पछै करवा लागौ सहू ताह्यौ।
 करवा लागौ जीवां रौ घमसांणो, किणहिक मन मैं विचार्यौ जांणौ।
 एक मार्यां सूं वचै बहु प्राणो, इम चिंतव ते पुरुष नैं मार्यौ अचांणौ।
 जी सहू कोई जी हो॥
- ११ लाय बुझायां मिश्र कहै रे, तिण रै लेखै ए पिण मिश्र होयो।
 एक मार्यौ पाप तेहनों रे, बहु वचीयां तिण रौ धर्म जोयो।
 वचीयां रौ धर्म त्यारै लेखै वाजै, अल्प पाप बहु पुन्य फळ राजै।
 एक मार्यौ घणां राखण काजै, इण मैं पिण मिश्र कैहता कांय लाजै।
 जी सहू कोई जी हो॥

- १२ पूज कह्यौ वलि पांचमौ रे, दृष्टंत अधिक उदारो।
कोइ तुरकादिक आकरौ रे, साथ सेन्या ले अपारो।
सेन्य लेइ देश ऊपर आयौ, गांव नगर कतल करवा नैं ध्यायो।
मनुष्य तिर्यच मारण ऊंम्हायौ, सेन्य अधिकारी नां हुकम थी थायो।
जी सहू कोई जी हो॥
- १३ किण हि विचार इसौ कीयौ रे, करसी घणां जीवारो संघारो।
सेन्य अधिकारी नैं मारीयां रे, सर्व जीव वचै इण वारो।
जीव वचै कतल नहीं हुवै ताह्यौ, इम जाण अधिकारी नैं पर भव पौहचायो।
मार्यौ ते पाप, वच्यौ पुन थायो, तिणरै लेखै इण मै पिण मिश्र कहिवायो॥
जी सहू कोई जी हो॥
- १४ वचीया रौ धर्म बताय नैं रे, कहै लाय बुझायां धर्म।
जीव अग्रि रा जीवीयां रे, तिण सूं घणा मरै ते अधर्म।
अग्रि जीव्यां घणां मरै ते पापो, इण विध कर रह्या कूड़ किलापो।
अग्रि जीव हणीयां मिश्र थापो, तेहनों न्याय सुणौ चुपचापो।
तिण रै लेखै गायां मार्यां केवळ न पापो, जी सहू कोई जी हो॥
- १५ गायां भेस्यां आदि जीवसी रे, ते पिण घणी छ काय हणंतो।
'मनुषादिक पवन छत्तीस छै' रे, मछादिक जलचर जंतो।
जंतु मच्छादिक जलचर जांणी, ते पिण हणै छ काय नां प्राणी।
अग्रि जीव नैं हण्यां मिश्र मांणी, तिणरै लेखै ए सर्व हण्यां मिश्र जांणी।
जी सहू कोई जी हो॥
- १६ संसार माहै तौ साधु बिना रे, सर्व हिंस्या रा त्याग न दीसै।
पण्णवणा पद बीसमें रे, भाख्यो श्री जगदीसै।
श्री जगदीस भाखी इम रेसो^१, प्राणातिपात वेरमण सु असेसो।
मनुष्य विना और रै न कहेसो, बुद्धिवंत जोय विचारजो रेसो।
जी सहू कोई जी हो॥

१. विशिष्ट जाति, वर्ग या समूह, जो संख्या में छत्तीस माने जाते हैं। ३६ कोम (पवन) के नाम देखें-राजस्थानी शब्दकोश तृतीय खंड जिल्द पृ. २४१०।

२. रहस्या।

- १७ साधु बिना संसारी सहू रे, हिंसक जीव कहायो।
 त्यां सगळां नैं मारीयां रे, एकलौ पाप न थायो।
 किण ही नैं मार्यां न एकलौ पापो, जिण नैं मार्यौ तिण रो महातापो।
 और वच्चा तिण रौ पुन्य मिलापो, साधु नैं मार्यां रौ एकंत पापो।
 खोटी सरधा रा लेखा री ए थापो,
 जी सहू कोई जी हो॥
- १८ लाय बुझायां मिश्र कहै रे, तिण री सरधा रै न्यायो।
 हिंसक नैं मारण तणा रे, त्याग करावणा नहि ताह्यो।
 त्याग करावै छै किण न्यायो, हिंसक बच्चा घणां जीव हणायो।
 हिंसक मार्यां मिश्र धर्म थायो, ऊंधी सरधा रौ तो औहीज न्यायो
 जी सहू कोई जी हो॥
- १९ दृष्टंत स्वाम भीक्खू दीया रे, सूत्र न्याय तंत सारी।
 जीव वच्चां धर्म थापनै रे, भूल गया भेषधारी।
 भूल गया भर्म मैं भेषधारी, मोह-राग माहै दया विचारी।
 भीक्खू ओळख तसु कियौ परिहारी, तिरणों वांछै निज पर नों तिवारी।
 तिण माहै धर्म कह्यौ तंत सारी,
 जी सहू कोई जी हो॥
- २० वीसवीं ढाळ विषै कह्या रे, दया ऊपर दृष्टंतो।
 सूत्र सिद्धंत रा जोर सूं, न्याय मिलाया तंतो।
 स्वाम भीक्खू सुद्ध न्याय मिलाया, दान दया रूढ़ी रीत दिखाया।
 हळुकर्मी सुण-सुण हरषाया, भारी कर्मा रै तौ मन नहि भाया।
 जी सहू कोई जी हो॥

दूहा

- १ पाली^१ सैहर पधारीया, पूज भवोदधि पाज।
एक जणौं तिहां आवीयौ, चरचा करवा काज॥
- २ ऊंधो बोलंतौ कहै, दुष्ट श्रावक तुझ देख।
पासी कोई रा गळ हंती, काढ़ै नहीं संपेख॥
- ३ थारा म्हांरा मत करौ, सांमी भाखै सोय।
समचै बात करौ सही, न्याय हियै अवलोय॥
- ४ पासी ली किण रूख थी, देख्यौ जावत दोय।
काढ़ै नहीं ते कैहवौ, काढ़ै तै कैहवौ होय?
- ५ ते कहै पासी काढ़ लै, उत्तम पुरुष ते तंत।
जाणहार सिव-स्वर्ग नों, दयावंत दीपंत॥
- ६ नहीं काढ़ै ते नरक रौ, जाणहार दोभाग^२।
भीक्खू कहै-तूं, तुझ गुरु, जाता दोनूं माग॥
- ७ कुण पासी काढ़ै कहौ कहै-हूं काढ़ूं तिहां जाय।
मुझ गुरु तौ काढ़ै नहीं, मुनि नैं कल्पै नांय॥
- ८ स्वाम कहै-सिव स्वर्ग ना, जाणहार तूं पेख।
तुझ गुरु नरक-निगोद नां, जाणहार तुझ लेख॥
- ९ सुणनै कष्ट हुऔ घणौ, जाब देण असमथ^३।
ऐसी बुद्धि स्वामी तणी, उर में अधिक उपत्त^४॥

ढाळ : २१

(पर नारी रो संग न कीजै)

- १ सावज्ज उपगार संसार तणा छै, तिण मैं म जाणजो तंतो।
पूज भीक्खू ओळखायवा परगट, दीयो इसौ दृष्टंतो^५॥
स्वाम भीक्खू रा दृष्टंत सुणजो ॥ध्रुवपद॥
- २ एक नृपति चोर पकड़्या अग्यारा, दूऔ^६ मारण रौ दीधो।
साहुकार एक अरज करी इम, सांभळजो प्रसीधो ॥ स्वाम।

१. भि. दू. १२।

२. दुर्भागो।

३. असमर्थ।

४. तत्काल तर्कसंगत उत्तर देने की क्षमता।

५. भि. दू. १४०।

६. घोपणा/आज्ञा

- ३ पंच-पंच सौ रुपीया परगट, इक-इक चोर नां लीजै।
आप कृपानिधि अरज मांन नै, चोर अग्यारा छोड़ीजै॥ स्वाम.
- ४ राजा भाखै-महा अपराधी, दुष्ट घणां दुखदाता।
छोड़वां जोग नहीं छै तसकर, मांन मछर मदमाता॥ स्वाम.
- ५ सेठ कहै-दस मूंकौ स्वामी, लाभ रूपीया रौ लीजै।
तौ पिण नृप नहीं छोड़ै तसकर, कहै-चोरां री पख नहिं कीजै॥ स्वाम.
- ६ नव तसकर मूंकौ किरपानिधि, आठ सात आदि जांणी।
इसी पर अर्ज करी अधिकेरी महिपति तौ नहीं मांनी॥ स्वाम.
- ७ रोकड़ पंच सौ देइ राजा नैं, चोर एक छोड़ायौ।
ते पिण विनती अधिक करी तब, तसकर मूंक्यौ ताह्यौ॥ स्वाम.
- ८ पुर ना लोक करै गुण परगट, सेठ तणा सहु कोयो।
धिन-धिन लोक कहै ओ धर्मी, हरख हीयै अति होयो॥ स्वाम.
- ९ बंधी-छोड़^१ लोका मैं बाजै, अधिक कीयौ उपगारो।
तसकर पिण गुण गावै तेहना, सुजस फैल्यौ संसारो॥ स्वाम.
- १० महिपति दस चोरां नैं मराया, इक निज स्थानक आयौ।
समाचार न्यातीलां नैं सुणाया, परियण^२ दुख अति पायौ॥ स्वाम.
- ११ तसकर दश नां न्यातीला ते, भारी धेष भरांणा।
'वैर वालण^३ नै' भेळा हुआ बहु, प्रत्यख ही प्रगटांणा॥ स्वाम.
- १२ चोर सारां नैं साथै लेइ चाल्यौ, पुर दरवाजै पिछांणौ।
चीठी बांध लोकां नैं चेतायौ, सांभळजो सहु वांणो॥ स्वाम.
- १३ मुझ तस्कर दश मार्या तिण रौ, ग्यार गुणों वैर गुंणसूं।
मनुष एक सौ दस मार्यां सूं, पछै विष्टालौ^४ करसूं॥ स्वाम.
- १४ साहुकार नां पुत्र-सगां नैं, मित्र भणीं नहीं मारूं।
अवर न छोड़ूं उराणै^५ आयौ, पंथ रह्या पिण पारूं^६॥ स्वाम.
- १५ एम कही जन मारण उंमग्यौ^७, सुत किणहि रौ संघारै^८।
किणहि रौ तात भाई हणै किण रौं, मात किणी री मारै॥ स्वाम.

१. बंदी (कैदी) को मुक्त कराने वाला।

२. परिजन।

३. बदला लेने के लिए।

४. समझौता/विश्राम।

५. नजदीक।

६. पार पहुंचाऊं।

७. उमग्यौ (क)।

८. संहारे (क)।

- १६ किण री नार हणैं अति कोप्यौ, बहिन कोइ री विणासै।
 किण हि री भूआ भतीजी किण री, तसकर इम जन त्रासै॥ स्वाम.
- १७ 'प्रबल भयंकर'^१ नगर मैं प्रगट्यौ, होय रह्यौ हाहाकारो।
 सेठ नैं निंदवा लागा सहु जन, 'प्राभवै वचन प्रहारो'^२॥ स्वाम.
- १८ साहुकार रैं घर जइ सगला, रोवै लोग लुगाई।
 कोई कहै मुझ मात मराई, कोई कहै पिय^३ भाई॥ स्वाम.
- १९ रे पापी! तुझ घर धन बहु थौ, कूआ मैं क्यूं नहिं न्हाख्यौ।
 चोर छोडाइ म्हांरा मनुष मराया, तसकर जीवतौ राख्यौ। स्वाम.
- २० सेठ लातरियौ^४ सैहर छोडी नैं, बीजै गांम वस्यौ जाई।
 इण भव फिट-फिट दुऔ अधिकौ, परभव दुर्गति पाई॥ स्वाम.
- २१ जे जन गुण करता था तेहिज, अवगुण करत अथागो।
 संसार नौं उपगार इसौ है, मोख तणौं नहिं मागो। स्वाम.
- २२ मोख तणौ उपगार है मोटौ, सुर-सिव पद संचरियै।
 जिण आगन्या तिण माहै जांणी, 'उलट धरी'^५ आदरीयै॥
- २३ भीक्खू स्वाम भली पर भाख्यौ, दया ऊपर दृष्टंतो।
 उत्पत्तिया बुद्धि अधिक अनोपम, हळुकर्मी हरषंतो।
- २४ एक वीसमी ढाळ मैं आख्यौ, अघ हेतू उपगारो।
 प्रत्यख ही फळ सेठज पाया, आगलि बहु अधिकारो॥

१. अत्यंत भय का वातावरण।

२. वचन रूपी वाणों से तिरस्कृत करते हैं।

३. पिता।

४. विवश होकर।

५. आगे बढ़कर।

दूहा

- १ सिव संसार तणा सही, कह्या दोय उपगार।
भीक्खू तिण ऊपर भला, दिष्टं^१ दीया उदार॥
- २ उरपर^२ खाधौ एक नै, उजाड़ मैं अवधार।
किण झाड़ौ देई करी, ताजौ कीयौ तिवार॥
- ३ पिता कहै मुझ सुत दीयौ, भाई बहिन भाखंत।
तैं मोनैं भाई दीयौ, त्री^३ कहै दीधौ कंत॥
- ४ चूड़ौ चूंनरी^४ अमर रहि, ते थारौ उपगार।
इम कहै मंत्रणहार नै, स्वजन सगा परिवार॥
- ५ ए उपगार संसार नो, तिण मैं नहीं तंत सार।
कर्म-बंध कारण कह्यौ, नहीं धर्म पुन्य लिगार॥
- ६ उरपर खाधौ एक नै, साधां नैं कहै सोय।
जंत्र-मंत्र बूटी-जड़ी औपध आपौ मोय॥
- ७ संत कहै-कळपै नहीं, वलि बोल्यौ ते वांन।
करामात ह्वै तौ कहौ, कै लीयौ भेष तुफान?
- ८ करामात मुनि कहै-इसी, दुखी कदे नहि थाय।
ते कहै-मुझ ते पिण कहौ, अणसण मुनि उचराय॥
- ९ सरणा सूंस दीया घणां, सिवगांमी सुर थाय।
मोख तणौ उपगार ए, स्वाम दीयौ ओळखाय॥

ढाळ : २२

(डाभ मूंजादिक नीं डोरी)

- १ दूजौ दृष्टं^१ भीक्खू दीधौ, सांभळजो परसीधो।
लोक मोख नैं मग नहीं मेल, ते तौ कठेइ न थावै भेळ॥
- २ साहुकार रै अस्त्रीयां दोय, एक श्राविका सुद्ध अवलोय।
वैराग अत्यंत वखांण, किया रोवण रा पचखांण॥

१. भि. दृ. १२९।

२. सर्प।

३. स्त्री।

४. चूंदड़ी (क)।

५. भि. दृ. १३०।

- ३ दूजी धर्म मैं समझै नाहि, चित काम-भोग री चाहि।
केतलैइक काळ विचार, परदेश माहै भरतार॥
- ४ काळ कर गयौ ते किण वार, बात सांभळी छै बिहुं नार।
तिण रै रोवण रा छै त्याग, ते तो रोवै नहीं धर राग॥
- ५ समता धार बैठी सोय, कियौ नेम न भांगै कोय।
सुभ-असुभ कर्म स्वभाव, प्रत्यख ओळख लियौ प्रभाव॥
- ६ दुख पाप प्रभावै देख, वली कर्म बांधू किण लेख।
उदै बांध्या जिसाईज आय, इम चित नैं दियौ समजाय॥
- ७ बीजी रोवै करंत विलाप, कहै कवण उदै हुआ पाप।
छाती माथौ कूटै तन झाड़ै, अति रोवती 'बांगां' पाड़ै॥
- ८ हाहाकार हुआ तिण वेळा, लोक हुआ सइकडां भेळा।
रोवै तिण नैं अधिक सरावै, पतिव्रता ए दुख पावै॥
- ९ वले बोलै घणा लोग लुगाई, धिन-धिन ए नार सुहाई।
इण रै पीतम सूं अति प्यार, तिण सूं रोवै है बांगां पाड़ै॥
- १० नहीं रोवै तिण नै जन निंदै, आ तो पापणी थी अपछंदै।
आ तौ मूवौज वांछती कंत, आंख मैं आंसूं नहीं आवंत॥
- ११ संसारी रे मन इम भावै, मोह कर्म वसै मुरझावै।
साधु कहौ किण नैं सरावै, परमार्थ विरला पावै॥
- १२ मोख नैं लोक रौ मग न्यारौ, बुद्धिवंत हीया मैं विचारौ।
दियौ स्वाम भीक्खू दृष्टंत, प्रत्यख देखाया दोनूइं पंथ॥
- १३ इम हि संसार नों उपगारौ, मोख रा मार्ग सूं न्यारौ।
वारू मोख तणों उपगार, संसार नों छेदणहार॥
- १४ ऐसा भीक्खू ओजागर भारी, न्याय मेलवीया तंत सारौ।
कही ढाळ बावीसमीं सार, भीक्खू रा गुणां रौ नहिं पार॥

दूहा

- १ सरधा ऊपर स्वामजी, दीया घणा दृष्टंत।
कहि-कहिनैं कितरौ कहूं, न्याय मिलाया तंत॥
- २ वलि आचार रै ऊपरै, न्याय मिलाया सार।
ग्रंथ वधंतो जाणनै, न कियौ बहु विस्तार॥
- ३ इंद्रिवादी ऊपरै, काळवादी पर सोय।
दृष्टंत पूज दीया घणां, म्हैं बहु न कह्या जोय॥
- ४ प्रस्ताविक परगटपणैं, हेतू हद हितकार।
आख्या भीक्खू ओपता, उत्पत्तिया अधिकार॥
- ५ कथा नंदी सूत्रे कही, च्यार बुद्धि पहिछांण।
तिण कारण दृष्टंत सुण, चमकौ मती सुजांण॥
- ६ केसी स्वामी पिण कह्या, सखरा हेतू सार।
इमहिज भीक्खू जांणजो, पंचम काल मझार॥
- ७ मूरख जन दृष्टंत सुण, उलटा बांधै कर्म।
खबर नहीं जिन धर्म री, भूला अज्ञानी भर्म॥
- ८ हळुकर्मी दृष्टंत सुण, पांमैं अधिको पेम।
भारीकर्मा सांभळी, बोलै 'भावै तेम'॥
- ९ विचरत-विचरत आवीया, सैहर कैलवे स्वाम।
ठाकुर मोहकमसींगजी, वांदण आया तांम॥

ढाळ : २३

(भावै भावना)

- १ सहु परषद सुणतां, सिरदार सुहायो रे।
मोहकमसिंगजी , बोलै इम वायो रे॥
भीक्खू ऋष भणी ॥
- २ गांम-गांम री विनती, अति आपनैं आवै रे।
जन बहु देश नां, सहु आपनैं चाहवै रे।
भीक्खू ऋष भला॥

- ३ नर-नारी आप नैं, देखी हुवै राजी रे।
कर जोड़ी करै, जन कीरत जाझी रे॥ भीक्खू.
- ४ पुनवंता परतख, नर-नारी निरखै रे।
सूरत देख नैं, हिवडै अति हरखै रे॥ भीक्खू.
- ५ घणा लोक लुगायां नैं, आप वलभ^१ लागौ रे।
ते कारण किसौ, यां रै हरख अथागो रे? भीक्खू.
- ६ इसौ गुण कांड आप मै, ते मुझ नैं बतावौ रे।
सखरपणैं सही, दिल में दरसावो रे॥
भीक्खू ऋष भणै॥
- ७ भीक्खू इम भाखै, इक सेठ प्रदेशै रे।
वर्ष बहु बीतीया, त्रिय छै निज देशै रे॥ भीक्खू.
- ८ ते नार पतिव्रता, सीले गहगहती रे।
निज पीतम थकी, अति प्रेमे रहती रे॥ भीक्खू.
- ९ घणां महिना हुआ, कागद नहि आयो रे।
त्रिय चिंता करै, मन पीतम माह्यो रे॥ भीक्खू.
- १० ते सेठ प्रदेश थी, कासीद पठायौ रे।
खरची दे करी, तिण पुर ते आयौ रे॥ भीक्खू.
- ११ सेठ तणी हवेली, आय ऊभौ तायो रे।
किणहिक पूछीयौ, किण पुर थी आयौ रे? भीक्खू.
- १२ लियौ नांम ते पुर नौं, नारी सुण हरखी रे।
आवी बारणैं, नैणां तसुं निरखी रे॥ भीक्खू.
- १३ कासीद नैं देखी, हिवडै हरखांणी रे।
सुखसाता सुणी, रूं रूं विगसांणी रे॥ भीक्खू.
- १४ ऊन्हा पांणी सूं, उण रा पग धोवै रे।
आणंद जल भर्या, नेत्रां सूं जोवै रे॥ भीक्खू.
- १५ वर भोजन करनै, कनै बैस जीमावै रे।
पूछै वलि-वली, समाचार सुहावै रे॥ भीक्खू.

१. बल्लभ (क)।

- १६ साहजी 'डीला मैं', किसाइक छै जांणी रे।
सुखसाता अछै, पूछै हरखांणी रे॥ भीक्खू.
- १७ साहजी कठै पोढै, किण जागा बैसै रे।
बात सारी कहौ, सुणनै अति उलसै रे॥ भीक्खू.
- १८ कोइ कारण^१ नहीं छै, साहजी रै तन में रे?
उत्तर सांभळी, त्रिय हरखै मन मैं रे॥ भीक्खू.
- १९ साहजी कहौ मुझ नै, समाचार कह्या छै रे।
इहां आसी कदी, वर्ष बौहत थया छै रे॥ भीक्खू.
- २० दिन-रात्रि हूं तौ दिल, अति चिंता करती रे॥
कागद नां दीयौ, मन मैं दुख धरती रे। भीक्खू.
- २१ कासीद कहै-सुणौ, साहजी नां जाबो रे॥
एम कह्यौ सही, आवां छां सताबो रे^३। भीक्खू.
- २२ पिण कोयक कारण सूं, अल्प दिन री जेजो^४ रे।
मुझ नैं मेलीयौ, सुण वाध्यौ हेजो रे^५॥ भीक्खू.
- २३ समाचार आप नैं, साहजी कहिवाया रे।
म्हे ताकीद^६ सूं, आया कै आया रे॥ भीक्खू.
- २४ पेदास^७ घणी छै, सुख सूं तुम रहीजो रे।
किण ही बात री, मन फिकर म कीजो रे॥ भीक्खू.
- २५ समाचार ज्यूं-ज्यूं कहै, त्यूं-त्यूं मन हरखै रे।
राजी ह्वै घणी, कासीद नैं निरखै रे॥ भीक्खू.
- २६ कासीद नै देखी, हरखै अति नारी रे।
ते कहै पिउ तणी, वतका^८ अति प्यारी रे॥ भीक्खू.
- २७ एहवौ वृतंत देखी, कहै अजांण एमो रे।
इण दलद्री थकी, पतिव्रता नौ पेमो रे॥ भीक्खू.
- २८ सुण बोल्यौ सेणौ, नहीं इण सूं प्यारो रे।
पिउ समाचार थी, हरखी है नारो रे॥ भीक्खू.

१. शरीर में

२. बीमारी।

३. शीघ्र।

४. देरी।

५. हेत/स्नेह।

६. शीघ्रता।

७. आमदनी।

८. वार्ता

- २९ और भर्म^१ म राखौ, आ महा गुणवंती रे।
 सत्यवंती 'सती, सुद्ध माग चलंती रे॥ भीक्खू.
- ३० समाचार प्रयोगे, पतिव्रता हरखांणी रे।
 और भर्म नहीं, तिमहिज म्हे जांणी रे॥ भीक्खू.
- ३१ भगवान रा गुण म्हे, विध रीत बतावां रे।
 सिव संसार नौं, मारग ओळखावां रे॥ भीक्खू.
- ३२ झीणी - झीणी म्हे, सूत्र रहिस बतावां रे।
 लोभ - रहितपणै, भिन्न-भिन्न दरसावां रे॥ भीक्खू.
- ३३ दुख नरक-निगोद नां, दूरा टळ जावै रे।
 ते वातां कहां, तिण कारण चाहवै रे॥ भीक्खू.
- ३४ घणा लोक-लुगाई, इण कारण राजी रे।
 गांमोगांम थी, वीनतियां ताजी रे॥ भीक्खू.
- ३५ कवडी नहि मांगां, सिव पंथ बतावां रे।
 नर-नार्यां भणी, इण कारण सुहावां रे॥
- ३६ कासीद निर्गुण थौ, पिण पीउ समाचारो रे।
 तिण मुख सूं कह्वा, तिण सूं हरखी नारो रे॥
- ३७ म्हे महाव्रतधारी, जिन वयण सुणावां रे।
 बिहुं^२ प्रकार सूं, नर-नार्यां नैं सुहावां रे॥
- ३८ नरपति सुरपति पिण, रांण्यां इंद्रांणी रे।
 ते मुनिवर भणी, निरखै हरखांणी रे॥
- ३९ मुनि नौ अभरोसौ, कोई नहीं राखै रे।
 अणसमजू^३ तिकौ, मन ह्वै ज्यूं भाखै रे॥
- ४० ठाकुर मोहकमसींग, सुणनै हरखांणो रे।
 सत्य वच आप रा, स्वामी वयण सुंहांणो रे॥
- ४१ ऐसा भीक्खू स्वामी, बुद्धि अधिक उदारी रे।
 उत्तर अति भला, सुणतां सुखकारी रे॥

१. भ्रम (क)।

२. बहु (क)।

३. अण समझू (क)।

४२	भीक्खू	नां	जाब	सूं,	अनुरागी	हरखै	रे।
	भीक्खू	गुण	भला,	गुणग्राही	परखै	रे॥	
४३	द्वेषी		अगुणीजन,	सुण	मुंह	मचकौड़ै	रे।
	ते	अवगुण	थकी,	आतम	नैं	जोड़ै	रे॥
४४	तत	ढाळ	तेवीसमीं,	सुणतां	सुखदाई	रे।	
	स्वाम	भीक्खू	तणी,	वतका	मन	भाई	रे॥

दूहा

- १ किण^१ ही भीक्खू नैं कह्यौ- लागू तुझ बहु लोय।
अवगुण काढै थांहरा, स्वाम कहै तब सोय॥
- २ अवगुण काढै मांहरा, 'छौ नीं'^२ काढ़ता सोय।
म्हारै अवगुण काढ़णा, माहै न राखणा कोय॥
- ३ कांयक तप संजम करी, अवगुण काढ़ां आप।
कांयक लोक ओगुण करै, सम रहि काढ़ां पाप॥
- ४ 'सवल्लि वेवै'^३ स्वामजी, इम बहु वात अनेक।
देसूरी^४ जातां मिल्यौ, द्वेषी महाजन एक॥
- ५ तिण पूछ्यौ-स्युं नाम तुझ? भीखन नांम कहीज।
तिण कह्यौ तेरापंथी ते? स्वाम कहै-तेहीज॥
- ६ तब कहै-तुझ मुख देखीयां, जावै नरक मझार।
पूज कहै-तुझ मुख देखीयां, किहां जावै कहौ धार?
- ७ मुझ मुख देख्यां सिव स्वर्ग, तब बोल्या महाराय।
म्हे तौ इसडी नां कहां, मुख थी नरक सिव पाय॥
- ८ पिण मुख देख्यौ थांहरौ, म्हारै तो सिव-स्वर्ग।
म्हारौ मुख देख्यौ तुम्हे, तुम्ह कहिणी तुझ नर्ग॥
- ९ सुणनै कष्ट हुवौ घणौ, ऐसी बुद्धि अधिकाय।
वलि उत्पत्तिया बुद्धि करी, निरमळ मेल्या न्याय॥

ढाळ : २४

(कहै छै रूपश्री नार)

- १ स्वाम भीक्खू सुखदाय मणिधारी महामुनिराय हो।
भीक्खू बुद्धि भारी।
अति मति श्रुति पर्यव अथाय, जसु गुण पूरा कह्या न जाय हो।
भीक्खू बुद्धि भारी।
बुद्धि भारी अति अधिक अपारी, औ तौ स्वाम सदा सुखकारी हो।
भीक्खू बुद्धि भारी।

१. भि. दृ. १३।

२. भले ही।

३. अनुकूल रूप में लेते हैं।

४. भि. दृ. १५।

- २ धर देव गुरु नै धर्म, पद तीन दिखाया पर्म हो। भीक्खू.
सुद्ध सरध्यां समगत सार 'धुर सिव पावडीयो' धार हो ॥ भीक्खू.
३ दीयौ गुरु ऊपर दृष्टंत, लकड़ी रौ डांडी रौ तंत हो ॥ भीक्खू.
तीन बेच^३ डांडी रै समीच^४ बिहुं पासे नै इक बीच हो ॥ भीक्खू.
४ विचलै ह्वै फरकज बाण, कहियै तसुं अंतरकाण^५ हो। भीक्खू ...
तसुं विचलौ बेच हुवै तंत, कोइ अंत्रकाणी^६ न कहंत हो ॥ भीक्खू ...
५ ज्यूं देव गुरु धर्म जांणी, पद गुरु नौ बीच पिछांणी हो। भीक्खू ...
गुरु^७ होवै सुद्ध गुणवंत, तौ देव धर्म कहै तंत हो ॥ भीक्खू ...
६ होवै गुरु हीण आचारी, वलि सरधा भृष्ट^८ विचारी हो। भीक्खू ...
पाड़ै देव माहै पिण फेर, धर्म मै पिण कर दै अंधेर हो ॥ भीक्खू ...
७ गुरु मिलै ब्राह्मण ततखेव, तौ देव कहै महादेव हो। भीक्खू ...
अनै धर्म वतावै एह, जन विप्र जीमावै जेह हो ॥ भीक्खू ...
८ भोपा गुरु मिलै भर्माजा, देव कहै-देव धर्मराजा हो। भीक्खू ...
'सुरह गाय नों वाहरुसावौ'^९ धर्म पाती ल्यौ भोपा जीमावौ हो ॥ भीक्खू ...
९ गुरु मिलै कांबरिया कहै जी, देव वताय देवै रांम देजी हो। भीक्खू ...
धर्म कहै कांबर जीमावौ, वले जमा री रात्रि जगावो हो ॥ भीक्खू ...
१० अरु गुरु मिल जावै मुल्ला, तौ देव वताय दै अल्ला हो। भीक्खू ...
धर्म जबै करण जलपंता, 'ऐर चरंति'^{१०} आदि कहंता हो ॥ भीक्खू ...
११ जो गुरु मिलै हिंस्या धर्मी, कहै निगुणा देव कुकर्मो हो। भीक्खू ...
धर्म फूल-पांणी मै थापै, सूतर नां वचन उथापै हो ॥ भीक्खू ...

१. मोक्ष का पगथिया (पेड़ी)।

२. भि. दृ. २९३।

३. छिद्र।

४. समीचीन-अच्छी तरह।

५. तराजू में पदार्थों को तोलते समय खाली पलड़े में एक तरफ तराजू का झुकाव।

६. अंतरकाणी (क)।

७. गुरु (क)।

८. भ्रष्ट (क)।

९. सौरभेयी-काली गाय का नांदिया।

१०. १ एर चरंति मेर चरंति, खेर चरंति बहुतेरा।

हुकम आया अल्ला साहिब रा,
गला काटूंगा तेरा॥

२ ए साखी पढ पापिया, कती करै पर जीव।

तै पाप उदय आयां छातां, पांमै
दुख अतीव॥

१२ गुरु मिलै असल निर्ग्रंथ, देव वताय देवै अरिहंत हो। भीक्खू ...
धर्म जिण आज्ञा में बतावै, इहां अंतरकाण न आवै हो॥ भीक्खू ...

दूहा

१३ गजी^१ मैमूंदी^२ बासती^३, तीनूं एकण गोत।
जिण नैं जैसा गुरु मिल्या, तिसा काढ़ीया पोत॥

ढाळ

(कहै छै रूप श्री नार.)

१४ इण दिष्टंत गुरु हुवै जैसा, तिकै देव वतावै तैसा हो। भीक्खू ...
वलि धर्म इसौज वतावै, नर समजू न्याय मिलावै हो॥ भीक्खू ...
१५ उत्तम पुरुष आचारी, गुरु सप्तवीस गुणधारी हो। भीक्खू ...
निर्मळ धर्म देव निर्दोख, मनसूं सरध्यां लहै मोख हो॥ भीक्खू ...
१६ वर लेखा भीक्खू बताया, दिल मैं भिन्न-भिन्न दरसाया हो। भीक्खू ...
ए कही चोवीसमीं ढाळ, भीक्खू जश अधिक रसाल हो॥ भीक्खू ...

१. एक प्रकार का देसी कपड़ा, जिसका अरज कम चौड़ा होता है। (चौड़ाई कम होती है)।

२. एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा।
३. मोटा कपड़ा/दौवटी।

दूहा

- १ अजाण^१ केयक इम कहै, म्हारै करणी सूं नहि कांम।
म्हे तौ औघौ^२ मुंहपती, वांदा छां सिर नांम॥
- २ भीक्खू कहै ओघा भणी, वंदणा कीयां तिरंत।
तौ औघौ हुवै ऊंन रौ, ऊंन गाडर उपजंत॥
- ३ पग गाडर ना पकरणा, जो तिरै ओघा थी तास।
धिन है माता तूं सही, सो ओघा करै पैदास॥
- ४ मुंहपति हुवै कपास नीं, 'कपास वणि'^३ नों होय।
जो तिरै मुंहपति वांदीया, तौ वणि नैं वंदणौ जोय॥
- ५ धिन है वणि सो ताहरी, हुवै मुंहपति एह।
भेष भणी इम वांदीयां, भव-दधि केम तिरैह॥
- ६ गुण लारै पूजा कही, तौ ही निगुण पूजंता जाय।
चौड़े भूला मानवी, किम आंणीजै ठाय?
- ७ जिण मारग मैं देखलौ, गुण लारै पूजाह।
निगुणां नै पूजै तिके, ते मार्ग दूजाह॥
- ८ गुण^४ गोळी^५ सीरै^६ भरी, पुरस्यां पांत धपाय।
गुण विण ठाली ठीकरौ, देख्यां भूख न जाय॥
- ९ एक व्रत भागै इसौ, दोषण थापै जाण।
इम इक व्रत भागां छातां, पांचूं जाय पिछांण॥

ढाळ : २५

(कामणगारौ छै कूकड़ो)

- १ किणहिक^७ स्वाम भणी कह्यौ रे, किम ए बात मिलाय।
एक महाव्रत भागां छता रे, पंच वरत किम जाय।
सुणजो दृष्टंत भीक्खू तणा ॥

१. भि. दृ. २९४।

२. रजोहरण

३. कपास का डोडा।

४. गोलाकार पीतल का बड़ा बर्तन।

५. गोलाकार मिट्टी का बड़ा बर्तन।

६. हलुआ से।

७. भि. दृ. ४१।

- २ स्वाम कहै तुम्हे सांभळो रे, पाप उदय थी पिछांण।
इहभव मैं पिण दुख ऊपजै रे, सुण इक हेतु सयांण।
तंत दृष्टंत भीक्खू तणा॥
- ३ एक भिख्यारी भीख मांगतौ रे, फिरतां-फिरतां पुर माय।
पंच रोटी रौ आठौ पामीयौ रे, अंतर भूख अथाय॥ तंत.
- ४ रोटी करण लागौ तदा रे, भिख्याचर भाग हीन।
एक रोटी नैं उतारनै रे, चूला लारै मेली दीन॥ तंत.
- ५ एक रोटी तवै सिक रही रे, एक खीरै सिकै आंम।
एक रोटी रौ लोयौ हाथ मैं रे, लोयौ एक कठोती मैं तांम॥ तंत.
- ६ स्वांन एक आयौ तिण समैं रे, पाप तणैं परमांण।
लोयौ कठोती^१ रौ ले गयौ रे, जद ते स्वांन लारै न्हाठौ जांण॥ तंत.
- ७ स्वांन लारै भिख्याचर न्हासतां रे, आखुर पडीयौ अचांण^२।
हाथ माहै जे लोयौ हुंतो रे, ते धूळ मैं बीखरीयौ पिछांण॥ तंत.
- ८ ततखिण पाछौ आवी तदा रे, देखण लागौ तिवार।
चूला लारै रोटी पड़ी हुंती रे, ले गइ तास मंजार॥ तंत.
- ९ तवा तणी तवै बळ गई रे, खीरा री खीरै हुइ गई छार^३।
पांचू विलाई इण रीत सूं, पाप तणा फळ धार॥ तंत.
- १० इमहिज एक भागां थकां, पांच जावै परवार^४।
दोषण थापै जे जांण नैं, भव-भव होवै खुवार^५॥ तंत.
- ११ दोष सेव्यां डंड संपजै रे, डंड जितोई भागंत।
नवी दिख्या आवै जेहथी रे, ते दोष सेव्यां सर्व जावंत॥ तंत.
- १२ भीक्खू स्वाम भली परै रे, दीधौ वारू दृष्टंत।
हळुकर्मी सुण हरखीयै रे, भारी कर्मा भिड़कंत॥ तंत.
- १३ पचीसमीं ढाळ परवरी रे, भीक्खू बुद्धि भरपूर।
नित्य प्रति हूं वंदना करूं रे, 'पौह ऊगंते सूर'^६॥ तंत.

१. काठ का बर्तन।

२. अचानक।

३. राख।

४. अपने आप, बिना जानकारी के।

५. विनष्ट।

६. प्रभात के समय।

दूहा

- १ आधाकर्मी जायगां, थानक तिण रौ नांम।
एहवा थानक भोगवै, वले कहै निर्दोषण तांम॥
- २ वले कहै म्हे मुख सूं कद कह्यौ? जद बोल्या-भीक्खू स्वांम^१।
जाय जमाई सासरै, तौ पिण न कहै तांम॥
- ३ मुझ निमतै सीरौ करौ, इम तौ न कहै तेह।
पिण कीधोरौ भोगवै, जद दूजी बार करेह॥
- ४ जो सीरां नां सूंस कहै, तौ न करै दूजी बार।
त्याग नहीं तिण सूं करै, भोजन विविध प्रकार॥
- ५ ज्यूं भेषधारी रहै थानक मझे, वले कहै मुख सूं तांम।
थानक मुझ निमतै करो, इम म्हे कद कह्यौ आंम?
- ६ त्यां निमते कीयौ भोगवै, फिर करै दूजी वार।
त्याग करै थानक तणा, तौ आरंभ टळै अपार॥
- ७ वली डावरौ^२ कद कहै, करौ सगाई मोय।
पिण सगपण^३ कीधां पछै, कुण परणीजै सोय?
- ८ वलि बहु बाजै केहनीं, घर किण रौ मंडाय।
डावरा तणौज जाणंजो, थानक एम गिणाय॥
- ९ थानक बाजै तेहनौं, माहै पिण रहै तेह।
न कह्यौ थानक नौ तिणां^४ पिण सहु कांम करेह॥

ढाल : २६

(नहीं इसौ दूसरो महावीर)

- १ गछवास्यां^५ रै उपासरौ रे, मथेण^६ तणै पोसाल।
फकीर रै तकियौ कहै रे, नांम में फेर नीहाल॥ रे जीव!

स्वाम बुद्धि अति सोभती रे, निरमल न्याय नीहाल॥

रे जीव! स्वांम बुद्धि विसाल॥ ध्रुवपद॥

१. भि. दू. ६४

२. लड़का। भि. दू. ६३।

३. सगाई।

४. उन लोगों ने।

५. भि. दू. ३०८।

६. महात्मा/विद्या गुरु।

- २ 'कांनफाडां रे आसण कहै रे, भक्तां रै अस्तल भाल।
भक्त फुटकर तेहनै रे, मंडी नांम नीहाल^१। रे जीव॥
- ३ 'सिन्यास्यां रै मठ कहै रे, रामसनेह्यां रै गेह।
रामदुवारौ केयक कहै रे, राममोहलो कहै केह^२॥ रे जीव!
- ४ घर रा धणी रै घर कहै रे, सेठ रै हवेली सुहाय
कहै गांम धणी रै कोटरी रे, किहांयक रावळौ कहाय॥ रे जीव!
- ५ राजा रै महिल कहै सही रे, कायक ठोड़ दरबार।
साधां रे थानक वाजतौ रे, नांम मैं फेर विचार॥ रे जीव!
- ६ सगलाइ घर रा घर अछै रे, कठैयक 'बूहा कोदाल'^३।
किहांयक 'कसी' बूही' सही रे, आधाकर्मी असराल॥ रे जीव!
- ७ आरम्भ तौ षट्काय नौं रे, हुऔ ज्यूं रौ ज्यूं जांण।
अरिहंत नीं नहीं आगन्या रे, छ काय नौं घमसांण॥ रे जीव!
- ८ घर छोड्या मुख सूं कहै रे, गांम-गांम रह्या घर मांड।
तिण घर रौ नाम थानक दीयौ रे, रह्या भेष नैं भांड॥ रे जीव!
- ९ आधाकर्मी थानक भोगव्यां रे, महासावज किरिया संभाळ।
दूजै आचारंग देखलो रे, कह्यौ दूजै अध्ययन दयाल^४॥ रे जीव!
- १० आधाकर्मी आदर्यां रे, चौमासी डंड पिछांण।
'नसीत दसमें'^५ नीहाळजो रे, वीर तणी ए वांण॥ रे जीव!
- ११ आधाकर्मी भोगव्यां रे, रुळै अनंतौ काळ।
'पहिले शतक भगोती'^६ मैं पेखलौ रे, नवमें उद्देशे नीहाल॥ रे जीव!
- १२ इत्यादिक बहु वारता रे, आखी आगम माया^७।
भीक्खू तास भली परै रे, रूढ़ी रीत दीधी ओळखाय॥ रे जीव!
- १३ उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे, अधिक ओजागर आप।
निश दिन मनडौ माहरौ रे, जप रह्यौ आप रौ जाप॥ रे जीव!

१. कान छिदवा कर उनमें मुद्रा या कुंडल धारण करने वाले संन्यासियों के स्थान को आसन, दादूपंथी, संन्यासियों के रहने के स्थान को अस्थल और दशनामी साधु-संन्यासियों के रहने के स्थान को मंडी कहा जाता है।

२. बड़े संन्यासियों के रहने का स्थान मठ और राम स्नेही साधुओं के रहने का

स्थान 'राम-दुवारा' व 'राम मोहला' कहलाता है।

३. कहीं कुदाल का प्रयोग हुआ।

४. कहीं कसी का प्रयोग हुआ।

५. द्वितीय आचारंग श्रु. २ अ. २ उ. २ सूत्र ४१।

६. निशीथ उ. १० सूत्र ६।

७. भगवती शतक १ उ. ९ सूत्र ४३६।

- १४ सुपनैँ सूरत स्वाम नीं रे, देखत ही सुख होय।
 प्रत्यख नौं कहिवौ किसूं रे, सरण आपनौं मोय॥ रे जीव!
- १५ आदि जिणंद तणी परै रे, ओळखायौ सरधा आचार।
 जनम-जनम किम वीसरै रे, तुझ गुण अनघ अपार॥ रे जीव!
- १६ वारू ढाळ छवीसमीं रे, भीक्खू गुण मुझ चीत।
 याद आयां हियौ हूलसै रे, परम आप सूं पीत॥ रे जीव!

दूहा

- १ भारीमाल सोभै भला, पूज भीखणजी पास।
वारू कळा वखांण की, घन जिम शब्द गुंजास॥
- २ नित्य वखाण दै निरमळौ, ऊपर^१ भीखू आप।
दान-दया दीपावता, सुणतां टलै संताप॥
- ३ हळुकर्मी हरखै घणां, भारीकर्मी भिडकंत।
अळगा ही अवगुण करै, विकल वचन विलपंत॥
- ४ किणहिक^२ भीखू नैं कह्यौ, वर तुम करौ वखांण।
निंदक औ निंघा करै, अळगा बैठ अजांण॥
- ५ भीखू उत्तर दै भलौ, स्वान तणौज स्वभावं।
झालर कौ झिणकार सुण, रोवण केरौ राव^३॥
- ६ नींच इती जाणै नहीं, ए झालर अधिकार।
व्याहव^४ तणी वाजै अछै, कै मूआ^५ नीं धार?
- ७ ज्यूं ए पिण जाणै नहीं, वाचै ग्यांन वखांण।
राजी ह्वैणौ ज्यांहि रह्यौ, अवगुण करै अजांण॥
- ८ उलटी निंघा औ करै, निघा तणौज न्हाल।
स्वभाव यांरौ छै सही, झूठी करै झखाल^६॥
- ९ ऐसी बुद्धि उतपात री, निमळ अपूर्व न्याय।
मेलै मुनि महिमानिला, स्वाम घणां सुखदाय॥

ढाळ : २७

(हो म्हारा राजा रा)

- १ स्वाम भीखू गुरु महा सुखदाई, भारीमाल शीष अतिभारी।
अमृत वांण सुधा सी अनोपम, हद देशना महा हितकारी॥
- हो म्हारा सासण रा सिणगार स्वामीजी, भीखू भारीमाल ऋषभारी॥ध्रुवपद॥

१. बाद में।

२. भि. दृ. १९

३. शब्द।

४. विवाह, व्याव (क)।

५. मुवां (क)।

६. बकवास।

- २ हृद वाण सुणी हळुकर्मी हरखै, द्वेषी बोल्या^१ धर्म-द्वेषधारी।
 सवा डौढ पोहर रात्रि आई, सो, यां नैं कल्पै नहीं इण वारी॥ हो म्हांरा।
- ३ भीक्खू कहै दुख नीं रात्रि भूंडी, झट सुख-निश^२ सोहरी जावै।
 'समीसांझ'^३ माहै मनुष मूआं सूं, लोकां नैं रात्रि मोटी लखावै॥ हो म्हांरा।
- ४ संत वखाण देवै ते न सुहावै, ज्यांनै रात्रि घणीज जणावै।
 दंभ मिट्यां तौ अधिक न दीसै, आ तौ पौहर रै आसरै आवै॥ हो म्हांरा।
- ५ 'दूहां सहित दीया दृष्टंत दोनूं'^४, पैतालीसै सैहर पीपार।
 तंत चौमास सोजत मैं तेपनैं; उठै हूवौ घणौ उपगार॥ हो म्हांरा।
- ६ किणहिक^५ स्वाम भीक्खूं नैं कह्यौ, इम उपगार तौ आछौ कीधौ।
 जीव घणां नैं समजाया जुगत सूं, लाभ धर्म रौ लीधौ॥ हो म्हांरा।
- ७ वळता भीक्खू कहै खेती तौ वाई, पिण 'गांम रै गोरवै'^६ पेखो।
 सौ खर नहीं आय पड़ा है तौ टिकसी, बाकी कठिण है अधिक विसेखो॥ हो म्हांरा।
- ८ गधा समान पाखंडी गिणियै, जिहां जारौ^७ विशेष जिणां रौ।
 खेती समान धर्म खय कर दै, तिण सूं संग न करणौ तिणां रौ॥ हो म्हांरा।
- ९ किण ही कह्यौ देवौ दृष्टंत करला^८, स्वामीनाथ बोल्या^९-सुण वायो।
 'करडौ रोग उठ्यौ गंभीर'^{१०} केरौ, 'मृदु फूंजाल्या'^{११} केम मिटायौ॥ हो म्हांरा।
- १० हलवाणी^{१२} रा डांम^{१३} लागां हुवै हलकौ, गंभीर^{१४} रौ रोग गिणायो।
 करडौ मिथ्यात रोग मिटावण काजै, करडा दृष्टंत कहायो॥ हो म्हांरा।
- ११ किण ही स्वामीजी नैं पूछा कीधी, कच्ची बुद्धि वाळौ समझै न कांई?
 मुनि भीक्खू कहै^{१५}-दाल मूंग मोटां री, थिर^{१६} दाल चणां री पिण थाई॥ हो म्हांरा।

१. भि. दृ. १८।

२. सुख की रात्रि।

३. सायं काल।

४. एक दृष्टंत उक्त दोहों में और दूसरा
 ढाल के पद्यों में।

५. भि. दृ. २१।

६. गांव के किनारे।

७. जाड़/झुंड।

८. कड़ा।

९. भि. दृ. ६९।

१०. विषम वात-रोग।

११. हल्के हाथ से खुजली करने पर।

१२. लोहे की लम्बी छड़, जिसका एक
 सिरा तीक्ष्ण और नोकदार होता है।

१३. दागना।

१४. गहरा वायु विकार।

१५. भि. दृ. १५७।

१६. फिर (क)।

- १२ पिण गोहां री दाल हुवै नहीं प्रत्यख, ज्यू भारीकर्मा न समजै जांणी।
 हळुकर्मी बुद्धिवान हुवै ते, पक्ष छांडै जिणधर्म पिछांणी॥ हो म्हांरा.
 १३ सुध जाब दूजौ देवै तिण मैं न समजै, आपरी भाषा रो ई अजांण।
 दृष्टंत^१ स्वाम ते ऊपर दीधौ, समजावण काज सयांण॥ हो म्हांरा.
 १४ एक बाई बोली-म्हारो भर्तार एहवौ, आखर लिखै ते अधिक अजोग।
 बीजा सूं आखर वचै नहीं विरुआ^२, मोनैं ठोंठ^३ रौ मिलियौ संजोग॥ हो म्हांरा.
 १५ इतरै दूजी कहै-मुझ पिउ इसडौ, 'पोता^४ रा' लिख्या अखर पिछांणो।
 जे पिण पोता सूं वच्या नहीं जावै, अति हि मूरख एहवौ अजांणो॥ हो म्हांरा.
 १६ ज्यू आपरी भाषा नैं आप न जांणै, केवळि भाख्यौ धर्म किम आवै?
 सरधा तौ परम दुलभ कही सूत्रे^५, परवीण हळुकर्मी पावै॥ हो म्हांरा.
 १७ पाखंड्यां^६ रौ मग गायान री पगडांडी, दूर थोडी तौ मारग दीसै।
 'आगै उजाड'^७ मोटी अटवी मैं, दुष्ट कांटा विषम दुधरीसै^८॥ हो म्हांरा.
 १८ ज्यू दान सीलादिक अल्प दिखाई, पाखंडी पछै हिंस्या पमावै।
 आगे चलै नहीं ए उनमारग, जाब माहै घणां अटक जावै॥ हो म्हांरा.
 १९ पातसाही-रस्ता^९ जिम पंथ प्रभु नौं, नहीं अटकै कठेइ ते न्यायो।
 दृष्टंत^{१०} पाग तणौ स्वाम दीधौ, पार थेट तांइ पौहचायौ॥ हो म्हांरा.
 २० पाग चोरी ल्यायां पूछ्यां न पूगै, मुदौ थेट तांइ न मिलाई।
 साचौ कहै-मोल ली उण सेती, रूढ़ी अमकडीया^{११} पास रंगाई॥ हो म्हांरा.
 २१ इम साची सरधा-किहांई न अटकै, झूठी सरधा अटक^{१२} झोला खावै।
 दृष्टंत स्वाम भीक्खू एहवा दीधा, दान दया आज्ञा दरसावै॥ हो म्हांरा.
 २२ एहवा भीक्खू स्वाम आप ओजागर, ज्यां रा गुण पूरा कहुवा न जावै।
 हद न्याय सुणी हरखै हलुकर्मी, भारीकर्मा सांभळ भिड़कावै॥ हो म्हांरा.
 २३ सखर^{१३} ढाळ कही सप्त वीसमीं, दृष्टंत भीक्खू रा दिखाया।
 मति-श्रुत सूं वर न्याय मिलाई, स्वामी जीव घणा समजाया॥ हो म्हांरा.

१. भि. दृ. २६२।

२. विद्रूप।

३. अनपद।

४. स्वयं का।

५. उत्तरञ्जयणाणि-अ. ३ गा. १।

६. भि. दृ. १३४।

७. निर्जन बस्ती।

८. दुर्धर्प।

९. राजमार्ग।

१०. भि. दृ. १३१।

११. अमुक।

१२. अटकै (क)।

१३. सुन्दर।

दूहा

- १ किणहिक^१ भीक्खू नैं कह्यौ, सूंस^२ करावौ सोय।
ते लेई भागै तिकौ, पाप आपनैं होय॥
- २ स्वामी भाखै सांभळो, कोयक साहूकार।
वस्त्र किण नैं वेचीयौ, सौ रुपियां रो सार॥
- ३ नफौ मोकळौ नीपनों, वेच्यौ तास विचार।
वलि वसतर लेवाल रा, सांभळजो समाचार॥
- ४ कपड़ौ लीधौ तिण कीया, एक-एक रा दोय।
तौ पिण नफौ उण तणों, वेच्यौ तास न होय॥
- ५ कपड़ो जो लेई करी, जालै अग्रि मझार।
तोटी पिण उण रै तिकौ, वेच्यौ तसुं म विचार॥
- ६ समजाई म्हे सूंस^३ दा^४, तिण रौ नफौ अमांम^५।
हमनै तौ ते हुय गयौ, तोटा में नहिं तांम॥
- ७ सूंस पाळसी अति सखर, थिर फळ तेहनैं थाप।
भांग्यां दोषण उण भणी, पिण म्हांनै नहीं पाप॥
- ८ वलि दूजौ दृष्टंत^६ वर, दमि^६ नैं किण घृत दीध।
मुनि नैहराइ^७ 'जिय मूंआं^८, पापज तास प्रसीध॥
- ९ अथवा मुनि अन्य साध नैं, घृत दे बंध^९ जिन-गोत।
तौ पिण फळ ते मुनि तणैं, हिव गृही नैं नहिं होत॥

ढाल : २८

(सीता विभीषण नैं कहै निशंक स्यूं)

- १ वैरागी री वांणी सुण्यां वैराग वाधै, दीयौ स्वाम भीक्खू दृष्टंतो^{१०} रे लोय।
कसूंबो आप गळ्यां गाळै कपड़ौ, आवै रंग अत्यंतो रे लोय॥
स्वाम भीक्खू तणा दृष्टंत सुणजो ॥

१. भि. दृ. १३६।

२. प्रतिज्ञा।

३. द्यां (क)।

४. श्रेष्ठ।

५. भि. दृ. १३७।

६. संयमी।

७. असावधानी से।

८. जीव मरने से।

९. बंधे (क)।

१०. भि. दृ. २२४।

- २ गांठ कसूंबा री गाढी बांधै, पोतै गळीयां विण रंग न पमावै^१ रे लोय।
ज्यूं वैराग हीण तणी वांणी सूं, अति वैराग किण विध आवै रे लोय॥ स्वाम.
- ३ वेषधारी कहै म्हे जीव वचावां, भीखनजी नांहि बचायो रे लोय।
भीखू^२ कहै थारा रह्या वचावणा, मारणाज छोड़ै मन ल्यायो रे लोय॥ स्वाम.
- ४ थानक मांहै रहौ किवाड़ जड़ौ थे, जीव घणां मर जावै रे लोय।
किवाड़ जड़वा रा सूंस कियां सूं, घणां जीवां री घात न थावै रे लोय॥ स्वाम.
- ५ चौकीदार हुंतौ सो चौकी दैणी तौ छोड़ी, चोरी करवा लागौ छानै^३-छानै रे लोय।
कहै लोकां नैं चौकी धूं करूं जाबता^४, मैंनत रा पइसा देवौ थे म्हांनै रे लोय॥ स्वाम.
- ६ चौकी रही थारी चोर्यां छोड़ तूं, बोल्या लोक तिवारै^५ रे लोय।
दिन रा तौ घर-हाट देखी जावै, पछै रात्रि समैं आय फाड़ै रे लोय॥ स्वाम.
- ७ पइसौ पइसौ तोनैं देसां परहौ, घर बैठां नैं गिणायो रे लोय।
ज्यूं भेषधारी कहै म्हे जीव बचावां, मारणा छोड़ै भीखू फुरमाओ रे लोय॥ स्वाम.
- ८ किण ही पूछ्यौ-ऋषपाल^६ मुनि कहा, ऋछ्या^७ करै किण रीतो रे लोय।
भीखू कहै-ज्यूं छै तिमहिज राखणा, आघा-पाछा न करणा अनीतो रे लोय॥ स्वाम.
- ९ पशु नीलोती^८ चरतां नै मुनि पेखै, किम ऋषपाल कहीजै रे लोय।
त्रिविधे-त्रिविधे हणवौ त्याग्यौ ते रक्षक, अभय सर्व नैं आपीजै रे लोय॥ स्वाम.
- १० कोइ^९ कहै हिवड़ां पंचम काळ छै, पूरौ साधपणौं न पळायौ रे लोय।
तब पूज कहै-चोथा आरा मैं तेलौ, कितरा दिनां रौ कहायो रे लोय? स्वाम.
- ११ तब ते बोल्यौ-तीन दिन रौ तेलौ, चौथे आरै चित चाह्यौ रे लोय।
भीखू पूछ्यौ-एक भूंगरौ भोगव्यां, तेलौ रहै कै भागै ताह्यौ? रे लोय॥ स्वाम.
- १२ तब ते बोल्यौ-'परहौ'^{१०} भागै' तेलौ, इम चौथा आरा रो तेलौ ओळखायो रे लोय।
फेर स्वामी पूछै-पंचम आरै, किता दिवस रो तेलौ कहायौ रे लोय? स्वाम.
- १३ तब ते बोल्यौ-तेलो तीन दिनां रो, पंचम आरै पिछांणी रे लोय।
भीखू कहै-एक भूंगरो खाधां, सुद्ध रहै कै भागै सो जांणी रे लोय? स्वाम.

१. रंगीन नहीं बना सकता।

२. भि. दृ. ६५।

३. छिपकर।

४. सुरक्षा/परिश्रम।

५. तब।

६. संरक्षक/रखवाला।

७. रक्षा।

८. भि. दृ. १५०।

९. हरियाली।

१०. भि. दृ. ६।

११. खंडित हो जाए।

- १४ तब ते बोल्यो-परहौ भागै तेलो, वलि पूज बोल्या वायो रे लोय।
 भूंगरा सूं ई तेलौ परहौ भागै, दोष थाप्यां संजम किम ठहरायो रे लोय? स्वाम।
 १५ काळ दुषम रै माथै कांय न्हाखौ, 'नेयटै छहुं'^१ चरण ते नीकौ रे लोय।
 पंचम चौथा आरां मै प्रत्यख, सहु रै त्याग है एक सरीखो रे लोय। स्वाम।
 १६ दोष लागां रो डंड दोनूं आरां में, डंड लीधां चारित्र दोनूं आरौ रे लोय।
 दोनूं आरां मांहै दोष थाप्यां सूं, चारित दोनूं आरां मै हुवै छारो रे लोय॥ स्वाम।
 १७ भीक्खू स्वाम दृष्टंत भली पर, वारू भिन्न-भिन्न भेद बताया रे लोय।
 ज्यां पुरसां जिण-माग जमायौ, स्वामी च्यारतीर्थ सुखदाया रे लोय॥ स्वाम।
 १८ एहवा पुरसां रा औगुण बोलै, कृतघ्न कर्म-रेख काळी रे लोय।
 दुर्लभ बोध अवर्णवाद सूं दाख्यौ, सूत्र ठाणांग^२ लीजो संभाळी रे लोय॥ स्वाम।
 १९ अष्टवीसमीं ढाळ अनोपम, भीक्खू रा दृष्टंत भाळी रे लोय।
 उत्पत्तिया भेद मति रौ है आछौ, नंदी^३ मै पाठ नीहाळी^४ रे लोय॥ स्वाम।

१. छह प्रकार के नियंत/निग्रंथों में।

२. ठाणं ५/१३३।

३. नंदी सूत्र ३८।

४. देखो।

दूहा

- १ किणहिक^१ भीक्खू नै कह्यौ- संजम लेउं सार।
मन ऊठै है माहरौ, स्वाम कहै सुखकार॥
- २ घर मैं पुत्रादिक घणा, रुदन करै धर राग।
तुझ काचौ हीय तेहथी, अति हि कठण अथाग॥
- ३ न्याती रोता निरखनै, मोह धरे मन माय।
तूं पिण रुदन करै तदा, कांम कठिण कहिवाय॥
- ४ तिण कह्यौ स्वामी! तहत वच, आंसू तौ आय जाय।
परियण रोता पेख नैं, म्हारे पिण मोह आय॥
- ५ स्वाम कहै-कोइ सासरै, जाय जमाई जांण।
आंणौ^३ ले आतां छातां, त्रिय तौ रोवै तांण॥
- ६ पिण उण री देखा-देख पिउ, जेह जमाई जोय।
रुदन करै मोह-राग सूं, हासी जग मैं होय॥
- ७ त्रिय रोवै पियर तणौ, विजोग पडै विशेष।
वर रोवै किण वासतै? उपनय कहूं अशेष॥
- ८ ज्यूं संजम लेवै जरै, स्वारथ रुदन स्वजन।
तत चारित लेवै तिकौ, मोह धरै किम मन?
- ९ तिण सूं संजम कठिण तुझ, दियौ इसौ दृष्टंत।
वलि हेतु आख्या विविध, स्वाम भला सोभंत॥

ढाल: २९

(सुमित्रनंदन श्री मुनिसुव्रत)

- १ जगत तौ मोह नै दया जाणै छै, दया ओळखणी दोहरी।
प्रत्यख राग अठारै पाप मैं, साची श्रद्धा नही सोहरी रा॥
भविक जन! भीक्खू रा दृष्टंत भारी॥
- २ पूज मोह ओळखायौ प्रत्यख, दीयौ एहवौ दृष्टंतौ^३।
परण्यां पछै कोइ परभव पौहता, बाल अवस्थावंतो रा॥ भविक.

१. भि. दृ. ३७।

२. विवाहोपरान्त वधु का पहली बार

ससुराल को आना।

३. भि. दृ. २५७।

- ३ मूँऔ देख हाहाकार माच्यौ, त्रिया रोवै तिण वेळा।
प्रत्यख हाय-हाय शब्द पुकारै, भयचक्र^१ जन हुआ भेळा रा॥ भविक.
- ४ कहै बापरी^२ छोहरी रौ घाट^३ कांइ हुसी इण री देखौ अवस्था ऐसी।
बारै वरस री विधवा हुइ सो, किण विध दिन काढेसी रा? भविक.
- ५ एम विलाप करै लोक अधिका, जगत इण नैं दया जाणैं।
कुरणा दया इण छोहरी नीं करै छै, मूँहख तो इम माणैं रा॥ भविक.
- ६ पिण भोळा इतरी नहि पेखै, अै वंछै इण रा काम भोगो।
जाणै ऊ रह्यौ हुंतौ जीवतौ तौ, सखर मिल्यौ थौ संजोगौ रा॥ भविक.
- ७ दो-च्यार हुंता डावरा-डावरी, भोग भला भोगवती।
पिण न जाणैं आ काम भोगां थी, माठी^४ गति माहि पड़ती रा॥ भविक.
- ८ तिण री चिंता तौ नहीं तिणां नैं, तथा पिऊ 'किण गति पांगरीयौ'^५॥
ते पिण मूळ चिंता नहीं त्यानैं, जगत माया मोह जुड़ीयौ रा॥ भविक.
- ९ ग्यानी पुरुष मरण-जीवण सम गिणैं, 'उलट^६ सोग' नहिं आणै।
मूढ मिथ्याती मोह राग नैं, जीवणां नैं दया जाणैं रा॥ भविक.
- १० अथवा राग-द्वेष रै ऊपर, दृष्टं^७ दूजौ दीधौ।
डावरा रै किण ही माथा मै दीधी, सांप्रत द्वेष प्रसीधौ रा॥ भविक.
- ११ उण नैं सहु कोई देवै ओलूंभा, डावरा रै माथा मै कांय देवै?
क्रोध करी दीयां द्वेष कहै सहु, कोइ आछौ नहीं कैहवै रा॥ भविक.
- १२ डावरा नैं किण ही लाडू दीधौ, अथवा मूँळौ दीयौ आणी।
कोइ न कहै इणनैं कांय डबोवै, प्रत्यख राग पिछाणी रा॥ भविक.
- १३ औ राग ओळखणौ दोहरौ अति ही, इणनैं दया कहै छै अजाणो।
दुर्जय राग दसम^८ ताई देखो, वीतां वीतराग कहाणो रा॥ भविक.
- १४ इम राग-द्वेष भीखू ओळखाया, मोह-राग पाखंडी दया माणैं।
स्वाम भीखू न्याय-सूतर सोधी, निरवद दया आज्ञा मै जाणैं रा॥ भविक.

१. भौचक्का (विस्मित)

२. बेचारी/असहाय।

३. हाल/दशा।

४. खराब।

५. कौन सी गति में उत्पन्न हुआ।

६. हर्ष।

७. भि. दृ. ६।

८. दसवें गुणस्थान तक।

- १५ भरत-खेतर मैं दीपक भीक्खू, द्वीपा समान दीपायौ।
जिहाज तुल्य भीक्खू जशधारी, प्रत्यख ही पेखायौ रा॥ भविक.
- १६ याद आवै भीक्खू मुझ अह-निश, तन-मन शरण तुम्हारौ।
त्यां पुरसां री आसता तीखी, जिण रौ है सफल जमारौ रा॥ भविक.
- १७ गुणतीसमीं ढाळे ग्यांनी गुर ना, वारू वचन बताया।
कठा तिलक^१ भीक्खू गुण कहियै, चिर जश-कलश चढाया रा॥ भविक.

१. कहां तक।

दूहा

- १ विहरत^१ पूज पधारीया, 'काफरले' किण वार।
संत गौचरी संचर्या, आज्ञा लेइ उदार॥
- २ एक जाटणी रै उदक, जाच्यौ साधां जाय।
ते धोवण नहीं दै तिका, कहै-देवै सौ पाय॥
- ३ साधां आय कह्यौ सही, स्वाम पास सुविहांण।
एक जाटणी रै अधिक, पिण नहीं देवै पांण॥
- ४ तब स्वामी आया तिहां, बाइ जळ वहिराय।
जब ते कहै-देवै जिसौ, परभव मैं फळ पाय॥
- ५ औ धोवण द्युं आपनै, परभव धोवण पाय।
जे जळ पीधौ जाय नहि, मुझ सेती मुनिराय॥
- ६ पूज तास पूछा करी- गाय भणी दै घास।
तिण रौ स्युं दै ते गउ, आपै दूध उजास॥
- ७ इम मुनि नैं जळ आपीयां, परभव सुख फळ पाय।
निरदोषण नां फळ निमळ, स्वाम दर्ई समजाय॥
- ८ जद आज्ञा दी जाटणी, वहिरी ते सुद्ध वार।
आप ठिकाणैं आवीया, ऐसी बुद्धि उदार॥
- ९ मति ग्यांन महा निरमळौ, भीक्खू नौं भरपूर।
नीत चरण पाळण निपुण, स्वाम सिंघ सम सूर॥

ढाल : ३०

(भगवंत भाख्या रे श्रावक एहवा)

- १ आज म्हार पुज सूं रे पाखंड थरहडै, सुर गिर आप सधीरो जी।
पारस साचौ रे भीक्खू परगट्यौ, हद स्वाम अमोलक हीरो जी॥ आज.
- २ पादू^२ सैहरे रे पूज पधारीया, उतर्या उपासरै आंणो जी।
शिष हेम संघातै रे गौचरी ऊठतां, इतलै कुंण अवसानो^३ जी॥ आज.

१. भि. दृ. ३४।

२. भि. दृ. १०।

३. वृत्तान्त।

- ३ आया दोय जणा रे तिण अवसरै, सांमदासजी रा साधो जी।
खांधे पोथ्यां तणा जोड़ा खरा, मैला वस्त्र मर्यादो जी॥ आज.
४ विहार करंता उपाश्रै आवीया, बोलै मुख सूं बोलो जी।
कठै भीखनजीरे भीखनजी कठै? तब भीखू बोल्या तोलो जी॥ आज.
५ भीखन नांम म्हारौ स्वामी भणै, वलि ते बोल्या विसेखो जी।
थानें देखण री मन मैं हुंती, तब स्वाम कहै तुम देखौ जी॥ आज.
६ वलि उवे बोल्या थे सगली वारता, आछी कीधी अमांमोजी।
एक बात आछी नहीं आदरी, तब पूज कहै-कहौ तामो जी॥ आज.
७ वलि ते कहिवा रे लागा वारता, म्हे बावीस टोळा रा साधो जी।
त्यां सगला नैं असाध कहौ तिका, विरुइ बात विराधो जी॥ आज.
८ मुनि भीखू कहै-तुझ टोळा मझै, लिखत इसौ अवलोयो जी।
इकवीस टोळारौ तुझ गण आवीया, संजम देणौ सोयो जी॥ आज.
९ ऐसौ लिखत थारा गण मैं अछै, जांणौ कै थे न जांणौ जी?
जद उवे बोल्या-रे म्हे जांणां अछां, छै मुझ लिखत अछांनौजी१॥ आज.
१० भीखू पभणै-इकीस टोळां भणी, थेइज प्रत्यख उथाप्या जी।
गृही नैं दिख्या देइ लौ गण मझै, थे गृही तुल्य त्यांनै ई थाप्या जी॥ आज.
११ इकवीस टोळारौ तुझ गण आवीयां, दिख्या दे लेवौ माह्यौ जी।
गृही नैं दिख्या देइ लौ गण विषै, गृही तुल्य तास गिणायो जी॥ आज.
१२ इकवीस टोळा इम थेइज उथापीया, तुझ टोळौ रह्यौ तेहो जी।
तिण रौ लेखौ वतावूं तो भणी, सांभळजो ससनेहो जी॥ आज.
१३ डंड बेला रौ आवै जिण भणी, तेलौ देवै तहतीको जी।
तेला रो डंड आवै तिण भणी, श्री जिन वयण सधीको जी॥ आज.
१४ इकवीस टोळां नैं साध सरधौ अछौ, वले नवौ साधपणों देवौ जी।
तिण लेखै दिख्या रे तुझ आवै नवी, विवेक लोचन सूं वेवो१ जी॥ आज.
१५ थारौ टोळौ पिण इण लेखा थकी, ऊथप गयौ उवेखो जी।
इम वावीस टोळा ऊथप गया, दंभ तजी नैं देखो जी॥ आज.
१६ एम सुणीनै ते बोल्या-इण विधै, वारू वयण विचारी जी।
सुणौ भीखनजी! रे साची वारता, बुद्धि तौ थारी भारी जी॥ आज.

- १७ इम कहि जावा रे लागा उण समैं, स्वाम कहै सुखकारौ जी।
 रहौ तौ चरचा करां रूढ़ी तरै, न्याय तणी निरधारो जी॥ आजै।
 १८ तब उवे बोल्यारे-मुझ रहिवा तणी, हिचडां थिरता न होयो जी।
 ततक्षण एम कही नैं तिहां थकी, रह्या चालता दोयो जी॥ आज।
 १९ ऐसी बुद्धि रे अनोपम आपरी, बुद्धिवंत पांमैं विनोदो जी।
 चिमतकार अति पांमैं चित मझे, प्रगटपणैं प्रमोदो जी॥ आज।
 २० रागी सुण नैं रे चित मैं रित^१ लहै, द्वेषी द्वेषज धारै जी।
 उलट बुद्धि नर अवगुण आदरै, वच सुण मूंह विगाड़ै जी॥ आज।
 २१ वर भीक्खू री रे सुंदर वारता, सांभळतां सुखकारी जी।
 हलुकर्मी जन सुण हरखै घणां, पूज वारता प्यारी जी॥ आज।
 २२ तंत तीसमी रे ढाळ तपासनी^२, अति बुद्धि भीक्खू नीं अैनो जी।
 अंतरजांमी रे याद आयां छतां, चित्त मैं पांम्यो चैनो जी॥ आज।

१. रति (क)।

२. तत्त्व की पहचान कराने वाली।

दूहा

- १ विचरत पूज पधारिया, सरीयारी मैं सोय।
प्रश्न^१ वौहरै पूछीया, जाति खीवसरा जोय॥
- २ जीव नरक मैं जाय तसुं, तांणणवाळी^२ तांम।
कुंण है कहौ कृपा करी? इम पूछ्यौ अभिरांम॥
- ३ भीक्खू उत्तर इम भणै, सखर जाब सुखकार।
पत्थर कूआ मैं न्हाखीयां, कुंण तसुं खांचणहार?
- ४ कठिण पत्थर भारे करी, आफेई^३ तल जाय।
कर्म-भार सूं कुगति लहै, स्वाम कहै इम वाय॥
- ५ बोहरै पूछा^४ वलि करी- जीव स्वर्ग किम जाय।
कुंण लेजावणहार तसुं, वारू अर्थ बताय?
- ६ भीक्खू कहै वौहरा भणी- प्रतख पाणी माय।
काष्ट न्हांखै कर ग्रही, ते किण रीत तिराय?
- ७ तिण काष्ट रै तळ कहौ, किण मांड्या है हाथ?
हळकापणा स्वभाव सूं, ऊपर तिरनै आत॥
- ८ हळकौ कर्म करी हुवां, जीव स्वर्ग मैं जाय।
सगला कर्म रहीत सो, परम मोक्ष गति पाय॥
- ९ ऐसा उत्तर आपीया, वारू बुद्धि विनांण।
वलि उत्पत्तिया बुद्धि थकी, सखर जाब सुविहांण॥

ढाळ ३१

(देवै मुनिवर देशना)

- १ पूज भणी किण पूछीयौ^५- हळको जीव किम होय ललना!
दृष्टंत स्वाम दीयौ इसौ, सांभळजो सहु कोय ललना।

तंत दृष्टंत भीक्खू तणा ॥

१. भि. दृ. १४१।

२. खींचने वाला।

३. अपने आप।

४. भि. दृ. १४२।

५. भि. दृ. १४३।

- २ तंत दृष्टंत भीक्खू तणा, तंत वचन तहतीक ललना।
तंत स्वाम नाव तारणी, न्याय तंत निरभीक ललना॥ तंत.
- ३ पइसौ मेहलै^१ पांणी मझै, ततखिण डूबै तेह ललना।
उणहीज पइसा नैं अग्रि मै, अधिक तप दे एह ललना॥ तंत.
- ४ कूटी-कूटी वाटकी करी, तिरै उदक मैं ताय ललना।
वलि उण वाटकी नैं विषै, पइसौ मेल्यां तिराय ललना॥ तंत.
- ५ तिम जीव संजम-तप करी, करै आतम हळकी कोय ललना।
कर्म-भार अळगौ कीयां, तिरियै भव-दधि तोय^२ ललना॥ तंत.
- ६ किण्हिक^३ स्वाम भणी कह्यौ, दुरंगा पात्रा देख ललना।
काळा-धोळा-लाल किणकारणै? स्वाम कहै सुविशेष ललना॥ तंत.
- ७ विविध रंग कुंथुआ हुवै, इक रंग सूं दूजा पर आय ललना।
सांप्रत दीसणौ सोहिलौ, कारण एह कहाय ललना॥ तंत.
- ८ अतिभार हींगलू एकलौ, काळौ फोरो^४ कहिवाय ललना।
वलि सोहरौ वासी^५ उतारणो, इत्यादिक ओळखाय ललना॥ तंत.
- ९ जू जूआ रंग देवै जुदा, निगम^६ में वरज्या नांहि।
वरज्या ते ममत्व भावे करी, ते ममत री थाप न ताहि ललना॥ तंत.
- १० बालपणै स्वामी वैणीरामजी^७, भीक्खू प्रतै भाखंत ललना।
हींगलू सूं पात्रा रंगणा नहीं, तब कहै भीक्खू तंत ललना॥ तंत.
- ११ म्हारै तो पात्रा रंग्या अछै, तुझ मन संका ह्वै तांम ललना।
तौ तुझ पात्रा रंगौ मती, म्हे तौ दोष न जांणां आंम ललना॥ तंत.
- १२ तब बोल्या वैणीरामजी-केलू^८ थी रंगवा रा भाव ललना।
भीक्खू तास भली परै, निर्मल वतावै न्याव ललना॥ तंत.
- १३ जो कैलू लेवा तूं जाय छै, पहिला पीलौ कचा रंग रौ पेख ललना।
पका लाल रंग रौ आगै पड़्यौ, पहिलौ छोड़णौ नहीं तुझ लेख ललना॥ तंत.
- १४ पहिला देख्यौ कच्चा रंग रौ परहरि, चोखौ केलू हेरै^९ चित चाय ललना।
जद तौ ध्यान घणां रंग रौज छै, इम कहिनै दीया समजाय ललना॥ तंत.

१. रखे।

२. जल।

३. भि. दृ. १६१।

४. हल्का।

५. चिकनाहट।

६. सूत्र/आगम।

७. भि. दृ. १६०।

८. खपरेला।

९. खोजता है।

- १५ ऐसी बुद्धि उत्पात री, नहीं मान वडाई री नीत ललना।
आत्म-अर्थी ओपता, पूरी ज्यां री प्रतीत ललना॥ तंतू.
- १६ आप ववहार मैं ओळखी, दोष जांणी कीया दूर ललना।
निरदोष जाण्यौ निरमळौ, सम आदरीयौ सूर ललना॥ तंत.
- १७ प्रथम आचारंग पेखलो, पंचम अधेन पिछांण ललना।
पंचम उदेशै^१ परवडौ^२, वीर तणी ए वांण ललना॥ तंत.
- १८ सुद्ध ववहार आलोचीयां, असम्य^३ पिण सम्य थाय ललना।
ते कांमी नहीं तिण दोष नौं, सुद्ध साधु नीं रीत सुहाय ललना॥ तंत.
- १९ उत्तम ए पाठ ओळखी, कोइ बोल रौ भर्म-कर्म जोग ललना।
तौ भीक्खू री आसता राखीयां, पांमै सुख पर-लोग ललना॥ तंत.
- २० आखी ढाळ इकतीसमीं, भीक्खू बुद्धि भंडार ललना।
दृष्टंत दिल मैं देखतां, चित्त पांमै चिमत्कार॥ तंत.

१. आयारो. अ. ५ उ. ५ सूत्र ९६।

२. अच्छा।

३. असम्यग्।

दूहा

- १ किणहि^१ भीखू नै कह्यौ- जीव छोड़ावै जाण।
स्यूं फल तेहनों संपजै? वर भीखू कहै वांण॥
- २ घट मैं ग्यांन घाली करी, हिंस्या छोड़ायां धर्म।
जीवण वांछै जेहनों, कटै नहिं तसुं कर्म॥
- ३ ऊंची कर बे आंगुली, आखै भीखू आप।
औ बकरौ, राजपूत औ, कहौ बांधै कुंण पाप?
- ४ मरणहार बूडै महा, कै बूडै मारणहार?
ऊ कहै-मारणहार सो, जासी नरक मझार॥
- ५ भीखू कहै-डूबता भणी, तारै संत तिवार।
समजावै राजपूत नैं, सिव मारग श्रीकार॥
- ६ जे बकरा रौ जीवणौ, वांछै नहीं लिंगार^३।
तिण ऊपर दृष्टंत ते, सांभळजो सुखकार॥
- ७ साहूकार रै दोय सुत, इक कपूत अवधार।
ऋण करडी जागा तणौ, माथै करै अपार॥
- ८ दूजौ सुत जग-दीपतौ, जश संसार मझार।
करडी जागा रौ करज, उत्तारै तिण वार॥
- ९ कहौ किण नैं वरजै पिता, दोय पुत्र मैं देख।
वरजै करज करै तसुं, कै ऋण मेटत पेख?

ढाल : ३२

(समता रस विरला)

- १ करज माथै सुत अधिक करंतो, वार वार पिता वरजंतो रे।
समजू^२ नर विरला ॥
करडी जागा रा माथै काय कीजै, प्रतख दुख पांमीजै रे॥ समजू.
- २ अधिक माथा रौ जे करज उतारै, जनक तास नहि बारै रे। स.
पिता समान साधू पहिछांणौ, बकरौ राजपूत बे-सुत मांणौ रे॥ स.

१. भि. दू. १२८।

२. अंश मात्र।

३. तत्त्व को पहचानने वाले।

- ३ कर्म रूप ऋण माथै कुंण करतौ, आगला कर्म कुंण अपहरतौ रे।
कर्म ऋण रजपूत माथै करै छै, बकरा संचित कर्म भोगवै छै रे॥ समजू.
- ४ साधु रजपूत नैं वरजै सुहाय, कर्म करज करै काय रे।
कर्म बांध्यां घणां गोता खासी, परभव मै दुख पासी रे॥ समजू.
- ५ सखरपणैं तिण नैं समजायौ, तिणरौ तिरणौ वंछ्यौ मुनिरायो रे।
बकरा जीवावण नहिं दै उपदेश, रूढ़ी^१ ओळखै बुद्धिवंत रेसरे॥ समजू.
- ६ इमहिज^२ कसाइ सौ बकरा हणंतो, सुद्ध उपदेश दे तार्यौ संतो रे।
कसाइ गुणग्राम साधु रा करंतो, मुझ तारक आप महंतो रे॥ समजू.
- ७ बकरा हरख्या जीवां वंचीया विशेष, यारै काज न दियौ उपदेश रे।
'ग्यांनादि चिउ'^३ कसाइ घट आया, पिण बकरा तौ मूळ न पाया रे॥ समजू.
- ८ कहै कसाइ दोनूं कर जोड़, सौ बकरा करै सोर रे।
कहौ तौ नीलौ चारौ यानै चराऊं, पछै 'काचौ'^४ पांणी 'त्यानै पांऊरे॥ समजू.
- ९ आप कहौ तौ एवर^५ नैं उछेरूं, कहौ तौ अमरिया^६ करेरूं रे।
आप कहौ तौ सूपूं आपनैं आंणी, पाइजो धोवण ऊंन्हौ पांणी रे॥ समजू.
- १० तुम सूकौ चारौ नीरजो बहुतेरौ, एवर साधां रौ उछेरौ रे।
साधु कहै सूंस^७ सखरा पाळीजे, जाबता सूंसा री कीजै रे॥ समजू.
- ११ सूंसा री एम भळावण देवै, बकरां नी मूळ न वेवै रे।
उपदेश देवै जो बकरा वचावण, तौ बकरां री देत भळावण रे॥ समजू.
- १२ समज्यौ कसाइ सखर सिव साई, इण री मुनि नैं दलाली आई रे।
जेहिज धर्म साधु नैं जोय, पिण बकरां रौ धर्म न कोय रे॥ समजू.
- १३ कसाइ अग्यांनी रौ ग्यानी कहायौ, पिण बकरां तौ ग्यांन न पायो रे।
कसाइ मिथ्याती रौ समकती कहियै, सुद्ध तत्व बकरा न सदहियै रे॥ समजू.
- १४ हिंसक रौ दयावान हुअौ कसाइ, दिल बकरां रै दया न आई रे।
तिरियौ कसाइ बकरा नहीं तिरिया, दुर्गति सूं नहीं डरीया रे॥ समजू.
- १५ कसाइ तिर्यौ ते धर्म इण काज, तारक महामुनिराज रे।
तिरण-तारण कसाइ रा तपासो, वारू हीया मै विमासौ रे॥ समजू.

१. अच्छी

२. भि. दृ. १४०।

३. ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप।

४. अप्रासुक जल।

५. भेड़ या बकरियों का झुंड।

६. अबध्या।

७. त्याग।

- १६ तसकर नौं दूजौ दृष्टंत तेह, सांभळजो ससनेह रे।
 किणहि मेश्री^१ नौं हाटे किण वार, ऊतरीया अणगार रे॥ समजू.
 १७ तसकर रात्रि समै तिण वार, खोल्या है आय कमाड़ रे।
 तब मुनिवर कहै जागी नै तांम, कुंण हौ? आया किण कांम रे? समजू.
 १८ कहै तसकर-म्हे तौ चोर कहाया, इहां चोरी करण नैं आया रे।
 सहंस रुपीया री थेली मेहली सेठ, निडर ले जावसां नेठ^२ रे॥ समजू.
 १९ तब साधु उपदेश देवै तिण वार, कह्या चोरी रा फळ दुखकार रे।
 आगे नरक-निगोद नां दुख अधिकाया, भिन-भिन भेद बताया रे॥ समजू.
 २० धन तौ न्यातीला सहु मिल खासी, परभव दुख तूं पासी रे।
 रूड़ौ उपदेश देइ मुनिराया, त्याग चोरी नां कराया रे॥ समजू.
 २१ तसकर कहै-मुझ डूबतां^३ तार्यौ, विषम कर्म स्यूं वार्यौ रे।
 वारू विविध गुण करत विख्यातं, प्रगट थयौ प्रभातं रे॥ समजू.
 २२ इतलै दुकांन तणौ धणी आयौ, ग्यान नहीं घट माह्यो रे।
 पेढी^४ नैं नमस्कार करि प्रसीधो, कांयक लटकौ^५ साधुनैई कीधौ रे॥ समजू.
 २३ तसकर नै पूछा करी तिवार, कुंण हो? खोल्या किण दुवार रे?
 तसकर बोल्या-म्हे चोर छां तांम, अब तौ त्यागे दीधी आंम रे॥ समजू.
 २४ हुंडी बटाय^६ नै रुपिया हजार, थेली माहै मेहली थे तिवार रे।
 सो म्हे सांझे देखता था सोय, आया लेवण अवलोय रे॥ समजू.
 २५ साधां उपदेश देइ समजाया, चोरी नां लखण छोड़ाया रे।
 साधारौ भलौ होयज्यो काज सार्या, तुरत डूबतां नैं तार्या रे॥ समजू.
 २६ मेसरी सुण नैं हरख्यौ मन माह्यौ, पड़ीयौ साधां रै पायो रे।
 आप म्हारी हाटे भलांइ ऊतरीया, सकल मनोरथ सरीया रे॥ समजू.
 २७ थेली म्हारी आप राखी थिर थापी, प्रत्यख ले जावता चोर पापी रे।
 हिवडां ले जावता रुपीया हजार, निपट^७ हुंतो निराधार रे॥ समजू.
 २८ च्यार पुत्र मुझ चतुर विचारा, कर्म वस रहिता कुंवारा रे।
 सुत च्यारूंई परणावसूं सार, ओ आप तणौ उपगार रे॥ समजू.

१. महेश्वरी।

२. निश्चित।

३. डूबता ने (क)।

४. दुकान।

५. नमस्कार का दिखावा।

६. भुनाकर।

७. बिलकुल।

- २९ इम कहै मेसरी वयण अथागो, ऋषजी तणौ तौ न रागो रे।
 धन राखण उपदेश म धार, ते तौ तसकर तारणहार रे॥ समजू.
 ३० कसाइ समज्यां बकरा कुसले कद्दाजी, तसकर समज्यां धन रौ धणी राजी रे।
 कसाइ-चोर तारण ऋष कांमी, धन-बकरा राखण नहीं धांमी रे॥ समजू.
 ३१ तीजो दृष्टंत कहूं तंत सार, एक पुरुष लम्पट अधिकार रे।
 सो पुरुष पर-नारी नौं सेवणहार, अति ही बंधांणी पीत अपार रे॥ समजू.
 ३२ ते लंपट आयौ मुनि तणै पाय, साधां दियौ समजाय रे।
 पर-स्त्री नौं पाप सुणी भय पायौ, अधिक वैरागज आयो रे॥ समजू.
 ३३ ते त्याग जावजीव कीधा ते ठाम, गावै मुनि नां गुणग्राम रे।
 आप मोनैं डूबता नैं उबार्यौ, 'निकुच विसन'^३ थी निवार्यौ रे॥ समजू.
 ३४ सील आदरीयौ सुण्यौ तिण नार, ऊपनौ द्वेष अपार रे।
 उण नैं कहै-महैं धार्यौ इकतार, धुर^४ ही थी थां पर धार रे॥ समजू.
 ३५ कांम औरां सूं नहीं मुझ कोय, इसड़ी धारी अवलोय रे।
 कैहतौ म्हारौ कह्यौ मान लै तास, म्हांसूं करै ग्रहवास रे॥ समजू.
 ३६ कह्यौ न मान्यौ तौ कुअै पड़सूं, मोत कुमोते मरसूं रे।
 जब ते कहै मोनैं मिलीया जिहाज, परतख भवदधि पाज रे॥ समजू.
 ३७ त्यां पर-नारी नों पाप बतायौ, महैं त्याग किया मन ल्यायो रे।
 तिण सूं म्हारै थां सूं मूंळ न तार, करै अनेक प्रकार रे॥ समजू.
 ३८ इम सुण अस्त्री कुअै पड़ी आय, तिण रौ पाप साधु नैं न थाय रे।
 समज्यौ कसाइ बकरा वच्या सोय, तसकर समज्यां रह्यौ धन जोय रे॥ समजू.
 ३९ नर लंपट समज्यां कूअै पड़ी नारो, चतुर हीया मै विचारो रे।
 तसकर कसाइ लंपट नै तारण, साधां उपदेश दीयौ सुधारण रे॥ समजू.
 ४० ए तीनूं तिर्या साधु तारणहार, यां रौ धर्म साधां नैं उदार रे।
 मुक्ति-मारग यां तीनां रै वधाया, घणां जामण^३ मरण मिटाया रे॥ समजू.
 ४१ बकरा वच्या धणी रे धन रहीयौ, तिण रौ धर्म साधु रै न कहीयौ रे।
 नार कूअै पड़ी तिण रौ न पापो, अदल^४ विचारो आपो रे॥ समजू.

१. निकृष्ट व्यसन।

२. पहले।

३. जन्म।

४. निष्पक्ष।

- ४२ केइ अग्यांनी कहै भूला भर्मो, जीव-धन रह्यौ तिण रौ है धर्मो रे।
 उण री सरधा रै लेखै इम थापो, प्रत्यख नार मूआं रौ है पापो रे॥ समजू.
- ४३ नार मूंआं रौ पाप दिल नांणै, जीव वचीया रो धर्म कांय जांणै रे।
 वले धन रह्या रौ धर्म कांय धारो, बुद्धिवंत न्याय विचारो रे॥ समजू.
- ४४ भीक्खू स्वाम इम भेद बताया, असल न्याय ओळखाया रे।
 कसाइ तसकर लंपट केरौ, भीक्खू दृष्टंत दियौ भलेरो रे॥ समजू.
- ४५ ऐसा भीक्खू ऋष महा अवतारी, त्यां सरधा सोधी तंत सारी रे।
 ज्यां पुरसां री जे प्रतीत करसी, त्यांरो जीतव-जन्म सुधरसी रे॥ समजू.
- ४६ ऐसा भीक्खू याद आवै मोय, हरख हीयै अति होय रे।
 समरण आप तणौ नित्य साधूं, भीक्खू पारस साचौ म्हैं लाधूं रे॥ समजू.
- ४७ सुरगिर सांप्रत आप सधीरा, मोनै मिलिया अमोलक हीरा रे।
 पंचम आरा मै कीयौ प्रकास, सखरी फैली है वास सुवास रे॥ समजू.
- ४८ दोय तीसमीं ढाळे दृष्टंतो, वर्णन बहु विरतंतो रे।
 स्वाम भीक्खू ओळखायौ विशेष, तिण सूं म्हैं पिण आख्यौ असेस रे॥ समजू.

दूहा

- १ किणहिक^१ भीक्खू नैं कह्यौ- जीव वच्चा जे जाण।
दया कहीजै तेहनैं, जीवण दया पिछांण॥
- २ भीक्खू कहै-कीड़ी भणी, कीड़ी जाणै कोय।
ग्यांन कहीजै तेहनैं, कै कीड़ी ग्यांनज होय?
- ३ तब ते कहै-कीड़ी भणी, जे कोइ कीड़ी जान।
ग्यांन कहीजै तेहनैं, पिण कीड़ी नहीं ग्यांन॥
- ४ वलि भीक्खू कहै-कीड़ी भणी, कीड़ी सरधै कोय।
समकत कहिजै तेहनैं, कै कीड़ी समगत होय?
- ५ तब ते कहै-कीड़ी भणी, कीड़ी सरधै तत।
समगत ते सरधा सही, पिण कीड़ी नहीं समकत॥
- ६ त्याग कीड़ी हणवा तणा, दया तेह दीपाय?
कै कीड़ी रही तिका दया, भीक्खू पूछी वाय॥
- ७ तब ते कहै-कीड़ी रही, तिका दया कहिवाय।
खोटी सरधा थापवा, बोल्यौ झूठ बनाय॥
- ८ भीक्खू कहै-पवने करी, कीड़ी उड गइ ताय।
तुझ लेखै दया उड़ गइ, निरमळ निरखौ न्याय॥
- ९ जद ऊ कहै विचारनै, कीड़ी हणवा रा त्याग कीयाह।
दया तेहज दीसै खरी, पिण कीड़ी रही न दयाह॥

ढाल : ३३

(कर्म भुगत्यां इज छूटीयै)

- १ वलता भीक्खू बोलीया, कीड़ी मारण रा पचखाण लाल रे।
तेहिज दया साची कही, वारु सुणौ इक बांण लाल रे।
जोयजो रे बुद्धि भीक्खू तणी ॥
- २ रूड़ी दया निज घट मै रही, कै कीड़ी पास कहाय? लाल रे।
तब ते कहै-पोता कनैं, कीड़ी पास न काय लाल रे॥ जोयजो.

- ३ पूज कहै-घट मैं दया,
किण रा जतन करणा कहौ?
- ४ करणा यत्न दया तणा,
उ कहै-जत्न दया तणा,
- ५ त्रिविध त्याग हणवा तणा,
त्याग विनाई हणैं नहीं,
- ६ इमज छकाय हणैं नहीं,
जगत हणैं जीवां भणी,
- ७ भारी बुद्धि भीक्खू तणी,
न्याय मिलाया निरमळा,
- ८ किणहिक^१ इम पूछा करी,
अति ही थाकौ उजाड़ मैं,
- ९ सैहजेइ^२ गाड़ौ आवतौ,
गांम माहै आण्यौ सही,
- १० भीक्खू कहै-गाड़ौ नहीं,
गधै चढाय आण्यो गांम मैं,
- ११ तब ऊ बोल्यौ तड़कनै,
स्वाम कहै-साधू भणी,
- १२ गाडे बेसांणे आण्यौ गांम मैं,
तौ गधै बैसाण्यां ही धर्म है,
- १३ उत्पत्तिया बुद्धि आकरी^३,
सरधा सुद्ध सोधी सही,
- १४ पाणी अणगळ^४ पावीयां,
केयक मिश्र कहै तिहां,
- कीड़ी पै दया नहि काय लाल रे।
साचौ जाब सुहाय लाल रे॥ जोयजो.
कै कीड़ी रा जतन कराय लाल रे?
इम साच बोली आयौ ठाय लाल रे॥ जोयजो.
ए दया संवर रूप देख लाल रे।
सखर निर्जरा संपेख लाल रे॥ जोयजो.
दया तेहिज दीपाय लाल रे।
निज-पोता री दया न जाय लाल रे॥ जोयजो.
सखर सिद्धंत संभाळ लाल रे।
भांज्या भर्म भयाळ लाल रे॥ जोयजो.
महा मोटो मुनिराय लाल रे।
चालण शक्ति न काय लाल रे॥ जोयजो.
तिण गाडा ऊपर बेसांण लाल रे।
तेहनैं कांइ थयौ जांण लाल रे॥ जोयजो.
पूणीया^५ आवत पेख।
तिण मैं स्यूं थयौ तुझ लेख लाल रे? जोयजो.
गधा री क्यूं करौ बात लाल रे?
दोनूं अकल्प देखात लाल रे॥ जोयजो.
थे धर्म तणी करौ थाप लाल रे।
पाप छैतौ दोयां मैं इ पाप लाल रे॥ जोयजो.
निरमळ चारित नीत लाल रे।
वारू स्वाम वदीत लाल रे॥ जोयजो.
केइ पाखंडी कहै पुन लाल रे।
जे^६ दोनूंइ सरधा जबून^७ लाल रे॥ जोयजो.

१. भि. दू. १५३।

२. सहज रूप में/अनायास

३. पूणी-रुई की बनी हुई पोणी/वत्ती,
जिसे कातने पर सूत का धागा बढ़-
चढ़कर निकलता है, उनको
विक्रयार्थ गधों पर लाद कर
लाने वाले।

४. आपरी (क)।

५. अनछाना।

६. ते (क)।

७. निकृष्ट, मिथ्या।

- १५ पुन्यवाळा कहै पूज नैं, सुणौ भीखणजी बात लाल रे।
महाखोटी सरधा मिश्र री, किहांइ मेल न खात लाल रे॥ जोयजो.
- १६ भीक्खू स्वामी^१ इम भणैं, किण री फूटी एक लाल रे।
किण री दोय फूटी सही, वारू करलौ विवेक लाल रे॥ जोयजो.
- १७ मिश्र कहै छै मानवी, त्यां री फूटी एक लाल रे।
पुन परूपै पाधरौ, दोनूं फूटी देख लाल रे॥ जोयजो.
- १८ जाब दीयै^२ इम जुगत सूं, अहो-अहो बुद्धि अनूप लाल रे।
अहो-अहो! खिम्या आपरी, चित्त चरचा हद चूंप लाल रे॥ जोयजो.
- १९ तूं^३ चिंतामणि सुरतरु, पंचमै^४ कीयौ प्रकास लाल रे।
आसापूरण आप छौ, वारू तुझ विसवास लाल रे॥ जोयजो.
- २० तंत ढाळ तेतीसमीं, भीक्खू गुण भंडार लाल रे।
अंतरजामी माहरा, सुख संपति दातार लाल रे॥ जोयजो.

१. भि. दृ. १२६।

२. दियौ (क)।

३. तुम (क)।

४. पांचमे आरे में।

दूहा

- १ पचावनै^१ वर्स पूज जी, सैहर कांकरोली सार।
सैहलोतां री पौळ मै, ऊतरीया तिण वार॥
- २ प्रत्यख बारी पौळ री, जड़ी हुंती जिणवार।
ऋष भीक्खू रहितां थकां, एक दिवस अवधार॥
- ३ बारी खोली वारणै, दिशा जायवा देख।
नीसरीया भीक्खू निशा, पूछ्यौ हेम संपेख॥
- ४ स्वामी बारी खोलण तणौ, नहीं कांइ अटकाव?
तब भीक्खू बोल्या तुरत, प्रतख ते प्रस्ताव॥
- ५ पाली सैहर तणौ प्रत्यख, नाम चौथजी न्हाळ।
दर्शन करवा आवीयौ, ए देखै इण काळ॥
- ६ अति संकीलौ ए अछै, पिण इण बात री तांम।
संका इण रै नां पड़ी, केम पड़ी तुझ आंम?
- ७ हेम कहै-माहरै हियै, कांइ संका रौ कांम?
पूछण रूप म्है पूछीयौ, नहि संका रौ नांम॥
- ८ पूज कहै-पूछै इसी, इण रौ नहीं अटकाव।
अटकाव हुवै जो एहनों, म्है खोलां किण न्याव॥
- ९ हेम सुणी जाण्यौ हियै, किवाड़ीयों खोलाय।
आहार लीयां मै दोष नहीं, खोल्यां दोष किम थाय॥

ढाळ : ३४

(सुण जो नर नाथ!)

- १ स्वाम भीक्खू रा दृष्टंत सुहाया, भव्य उत्तम जीवां मन भाया।
सुणजो चित्त शांत, भीक्खू ना भारी दृष्टंत॥
- २ वचन-सुधा वागरै स्वामी वारू, सुद्ध भवि-जन तारण सारू।
सुणजो सुखदाया, स्वामी ना दृष्टंत सुहाया॥

३. असल न्याय भिन-भिन ओळखाया, प्रभु-पंथ भीक्खू हद पाया।
 भेषधारी सरधा हींण भयाला, दीयौ दृष्टंत^१ पूज दयाला।
 ४ समक्तहींण जे अधिक असार, यांरौ असल नहीं आचार।
 थोथा चणां री भखारी^२ थी एक, साबतो^३ चणों मूल म पेखा।
 ५ ऊंदरा रडबड कीधी आखी रात, एक कण पिण नायौ हाथ।
 सांगधार्यां माहै समकत नांय, पडै उंदर सम नर पाय।
 ६ कहौ साध श्रावक त्यानै केम कहाय, अै तौ दोनूं सरीखा देखाय।
 समकत रहित दोनूंई न तंत, दीयौ स्वाम भीक्खू दृष्टंत।
 ७ कोयलां री तो राब अति काळी, काळा बासण^४ में रांधी कराली।
 अमावस नीं रात्रि आंधा जीमण बाळा, परुसण वाळाई आंधा पयाला।
 ८ जीमता बोलै खूंखारा करंता, काळौ कूंखौ^५ टाळजो मतिवंता।
 कहै-खबरदार होय जीमजो सोय, रखै आय जायला काळौ कोय।
 ९ मूढ इतरौ नहीं जाणै समेळौ, काळौहीज काळौ हुओ भेळौ।
 ज्यूं सरधा-आचार रौ नहीं ठिकाण, सगळौ मिलियौ सरीखौ घाण।
 १० साध-श्रावकपणां रौ अंस नहीं सारो, संवर लेखै दोयां रै अंधारो।
 न्याय री बात नहीं सुद्ध नीत, वले बोलै वचन विपरीत।
 ११ वस्त्र-पात्र अधिका राखै विसेख, आधाकर्म्यादि^६ दोष अनेक।
 वले कहै-भीखनजी! काढौ इण रौ तार^७, सुद्ध स्वाम बोल्या सुखकार।
 १२ तब पूज कहै-काढै तार कांई, थानें डांडा ही सूझै नाहीं।
 सबल आधाकर्म आदि न सूझै, कहौ नान्हा दोष किम बूझै?
 १३ दोष री थाप थारै दिन रेणो, कठण काम सरधा रौ तौ कैहणौ।
 'वायरै वंग' घरटी मांडी बाई, पीसती जावै ज्यूं उड्यौ जाई।
 १४ आखी रात्रि पीसी ढाकणी^८ मैं उसार्यौ^९, एहवौ दृष्टंत भीक्खू उतार्यौ।
 ज्यूं दोष लगायनै डंड न लेवै, कुमति दोष री थाप करेवै।

१. भि. दृ. १७३।

२. अनाज ईधन आदि रखने का अंधेरा कोठा
 या एक प्रकार की छोटी कोठरी।

३. पूरा।

४. बर्तन।

५. तिनका।

६. साधु के लिए बनाया हुआ आहार
 आदि।

७. रहस्या। भि. दृ. १७४।

८. हवा के सामने।

९. मिट्टी से बना हुआ ढंकने का बर्तन।

१०. समेटा

- १५ क्यारै क्यारै क्यूं ही नहीं रहै काई, देश-सर्व दृष्टंत देखाई।
 असा भीक्खू ऋष आप ओजागर, सरणागत महाबुद्धि सागर।
 १६ उत्पत्तिया बुद्धि अधिक अमांमी, धुर जिन आज्ञा परमति धांमी।
 जिण आगन्या माहै धर्म जतायौ, आज्ञा बारै असुभ सहु आयौ।
 १७ संखला^१ न्याय मेल्या सूत्र देख, वाह वाह भीक्खू बुद्धि विसेख।
 याद आयां तन मन उलसाय, रस-कूपिका^२ तूं ऋषराय।
 १८ स्यूं ओपमा तुझनै कहूं सार, 'अजिणा जिण-सरिसा' उदार।
 उवाइ^३ में ओपम एह अनूप, सखर थिवरा नैं दीधी सद्रूप।
 १९ आदिनाथ ज्यूं काढी धर्म आदि, सखरी उपजाई आप समाधि।
 वारू सरण आप रौ सुविसाल, म्हारै तूं हीज दीन-दयाल।
 २० सांम भीक्खू गुण गावत समरीयौ, म्हारौ हिवड़ौ हरख सूं भरीयौ।
 चौतीसमो ढाळे भीक्खू चित चाह्या, वारू परमानंद वरताया।

१. सखरा/स्पष्ट।

२. सिद्ध पुरुषों द्वारा वरदान के रूप में दी जाने वाली रसभरी कूपी। जिसके रस के स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है।

३. ओवाइयं. सूत्र २६।

दूहा

- १ काळवादी करलौ घणौ, नहि समकत सुद्ध नीव^१।
सिद्धा मैं पावै नहीं, आखै तास अजीव॥
- २ वखतरांमजी नाम तसुं, पुर माहै पहिछांण।
कुकळा कुबुद्धिज केलवी, विहार करी गया जांण॥
- ३ इतलै भीक्खू आवीया, चरचा करत पिछांण।
मेघ भाट मुनि नै कहै, वगताजी री वांण॥
- ४ काळवादी इसड़ी कहै, 'अति घन वात अतीव^२।'।
भीखनजी गाथा मझै, कहै एकलड़ौ^३ जीव॥

भिक्षु कृत गाथा

एकलड़ौ जीव खासी गोता, जद आडा नहीं आवै बेटा-पोता।
नरक माहै खातां मारौ, पायौ मनुष जमारौ मत हारौ॥१॥

दूहा

- ५ इण विध भीखनजी कहै, गाथा मैं इक जीव।
वलि नव-तत मैं पांच कहै, विरुई बात अतीव॥
- ६ जो पांच जीव नव तत्त्व मैं, तौ कहिणो पांचलड़ौ जीव।
एकलड़ौ ते किम कहै! इम पूछा तिण कीव।
- ७ पूज कहै-तसुं पूछणौ, सिद्धां मैं सुखकार।
कहौ आतमा केतली? तब काळवादी कहै च्यार॥
- ८ फिर त्यांनै इम पूछणौ- ते च्यारुं जीव कै न्याय?
जब कहैं च्यारुं जीव है, च्यार जीव तसुं न्याय॥
- ९ चौलड़ौ जीव त्यां ही कह्यौ, मुझ लड़ अधिकी एक।
सांभळनै ते समजीयौ, मेघौ भाट विसेख॥

१. नीव (क)।

२. अत्युक्ति।

३. भि. दू. ५०।

ढाळ : ३५

(राजा दशरथ दीपतौ रे)

- १ पूज^१ भीखनजी पधारीया रे, देस ढूंढार दीपायो रे।
अति घणां श्रावगी आवीया रे, चरचा करण चित चाह्यो रे।
भारी बुद्धि भीक्खू तणी रे॥
- २ स्वाम भणी कहै श्रावगी रे, नग्न-मुद्रा मुनि नागा रे।
तार मात्र वस्त्र न राखणौ रे, राखै ते परिसह थी भागा रे।
तंत दृष्टंत भीक्खू तणा रे॥
- ३ वस्त्र राखौ शीत टालवा रे, तौ भागा शीत परिसह थी ताह्यो रे।
तिण सूं वस्त्र नहीं राखणौ रे, जद पूज बतावै न्यायो रे॥ तंत.
- ४ स्वाम कहै-कितरा सही रे, परिसह भेद प्रकासौ रे?
ते कहै-परिसह बावीस छै रे, वलि पूछै पूज विमासो रे॥ तंत.
- ५ कहौ प्रथम परिसह किसो रे? ते कहै खुध्या रौ ताह्यो रे।
पूज कहै-थारा मुनि रे, आहार करै कै नाह्यौ रे? तंत.
- ६ श्रावगी कहै-करै सही रे, इक टक^२ आहार ते जागा रे।
पूज कहै-तुझ लेखै मुनि रे, प्रथम परिसह थी भागा रे॥ तंत.
- ७ ते कहै-खुध्यां लागां छतां रे, आहार करै अणगारो रे।
स्वाम कहै-सी लागां सही रे, वस्त्र म्हे राखां विचारो रे॥ तंत.
- ८ पूज वली पूछा करी रे, प्रगट तुझ मुनि पहिछांणी रे।
पांणी पीवै कै पीवै नहीं रे, उत्तर आपौ सुजांणी रे? तंत.
- ९ श्रावगी कहै-पीवै सही रे, इक टक उदक ते जागां रे।
स्वाम कहै-तुझ लेखै तिकै रे, दूजा परिसह थी भागा रे॥ तंत.
- १० ते कहै-त्रिस लागा छतां रे, उदक पीयै अणगारो रे।
स्वाम कहै-सी टालिवा रे, वस्त्र ओढां म्हे विचारो रे॥ तंत.
- ११ भूख लागा अन्न भोगवै रे, प्यास लागा पीयै पांणी रे।
इम निर्दोषण आचर्यां रे, न भागै परिसह थी नांणी रे॥ तंत.

१. भि. दृ. ३०।

२. एक बार। एक टक (क)

- १२ तिम् शीत ढंसादिक टाळवा रे, मूछा रहित मुनिरायो रे।
 वस्त्र मानोपेत^१ वावरै^२ रे, ते परिसह थी भागै किण न्यायो रे? तंत.
- १३ इत्यादिक उत्पात^३ सूं रे, उत्तर दीधा अमांमो रे।
 स्वाम गुणां रा सागरू रे, ऊंडी बुद्धि अभिरांमो रे॥ तंत.
- १४ एक^४ दिवस बहु आवीया रे, श्रावगी सांमी पासो रे।
 कहै-वस्त्र न राखौ तौ तुम तणी रे, वारू करणी विमासो रे॥ तंत.
- १५ स्वाम कहै-श्वेताम्बर शास्त्र थी रे, घर छोड़ थया अणगारो रे।
 तिण माहे तीन पछेवड़ी रे, चोलपटादि कह्या सुविचारो रे॥ तंत.
- १६ तिण कारण राखां तिके रे, आसता तुझ शास्त्र नीं आयां रे।
 नग्र होय जासां वस्त्र न्हांख नै रे, प्रतीत दिगंबर नीं पायां रे॥ तंत.
- १७ जाब दिया अति जुगत सूं रे, बुद्धिवंत हरखै विसेखो रे।
 न्याय-नीत यां रै निरमळी रे, पक्ष रहित संपेखो रे॥ तंत.
- १८ वाह-वाह भीक्खू मुनिवरु रे, अंतरजामी आपो रे।
 दीपक तूं इण काळ में रे, जपूं तुम्हारौ जापो रे॥ तंत.
- १९ पैंतीसमीं ढाळ परवरी रे, चरचा दिगंबर नीं छांणी रे।
 भीक्खू भजन स्युं भय मिटै रे, 'जय-जश' सुख हद जांणी रे॥ तंत.

१. निर्धारित नियमानुसार।

२. काम में लेते हैं।

३. तात्कालिक बुद्धि से।

४. भि. दृ. ३१।

दूहा

- १ दया-धर्म अति दीपतौ, श्री जिण आण सहीत।
भीक्खू स्वाम भली परै, पवर धर्यौ अति पीत॥
- २ केइ^१ हिस्याधर्मी कहै- दया दया पुकारौ कांय।
दया रांड लोटै पडी, 'उकरड़ी'^२ रै माय॥
- ३ भीक्खू ऋष भाखै भली, दया मात दीपाय।
'उत्तराधेन चौबीस मै'^३, कही आठ प्रवचन माय॥
- ४ किण सेठ आउ पूरौ कीयौ, स्त्री रही लारै सोय।
सपूत सुत ह्वै ते सही, जन्न करै ते जोय॥
- ५ कपूत हवै ते मात नैं, वदै वचन विकराल।
रंडकार नीं गाल दै, बोलै आळ-पंपाळ॥
- ६ धणी दया नां दीपता, महावीर महाराज।
ते तौ मोख सिधावीया, कीधा आतम काज॥
- ७ श्रावक-साध सपूत ते, दया मात इम जांण।
जन्न करै अति जुगत सूं, विरुइ न वदै वांण॥
- ८ प्रगट्या कपूत थां जिसा, बोलावौ कहि रांड।
दया मात नैं गाळ दै, ते भव-भव होवै भांड॥
- ९ जिनमत एम जमावता, पाखंड मत परिहार।
स्वाम रवि जिहां संचर्या, तिमर हरण इकतार॥

ढाळ : ३६

(राजनगर भणतां थकां रे)

- १ किणहिक^४ भीक्खू नैं कह्यौ रे, थे जावो जिण गांम रै माय।
धसका^५ पड़ै लोकां तणैं, तिण रौ कांइ कारण कहिवाय?

भीक्खू भव तारक भारी रे, आप प्रगट्या अवतारी रे।

उत्पत्तिया बुद्धि अधिकारी रे, दिष्टंत दीया सुविचारी रे ॥ध्रुवपद॥

१. भि. दृ. २७।

२. कूड़े का ढेर-घूरा।

३. उत्तराञ्जयणाणि. अ. २४ गा. १, २।

४. भि. दृ.-२९९।

५. मानसिक आघात।

- २ स्वाम कहै तुम्हें सांभळो, गारडू^१ आवै गांम।
डाकणीयां नैं काढण भणी जद, कहौ डरै कुंण तांम? भीक्खू.
- ३ प्रभाते नीला कांटां मझै रे, बाळसां डाकणीयां नैं बोलाय।
तौ धसका पडै डाकणीयां तणैं, तथा न्यातीलां रै पडै ताय॥ भीक्खू.
- ४ दूजा तौ लोक राजी हुवै रे, त्यां रै तौ चिंत न काय।
जाणै उपद्रव सैहर तणों मिटै, तिणसूं और तौ हरखत थाय॥ भीक्खू.
- ५ ज्यूं गांम मैं साध आयां छतां रे, भेषधार्यां रै धसका पडंत।
कै त्यांरा श्रावकां रै धसका पडै, भारीकर्मा तौ इम भिडकंत॥ भीक्खू.
- ६ वारू सरधा आचार वताय नैं, देसी म्हांनैं ओळखाय।
त्यारै धसका पडै तिण कारणै, हळुकर्मी तौ मन हरखाय॥ भीक्खू.
- ७ उत्तम मन इम चिंतवै रे, सुणसां साधां रा बखांण।
दांन सुपात्र देइ करी, करसां आतम तणां कित्यांण॥ भीक्खू.
- ८ कुगुरां रा पखपाती भणी रे, संत मुनि न सुहाय।
दिष्टं^२ स्वाम दीयौ इसौ, ते तौ सांभळजो सुखदाय॥ भीक्खू.
- ९ जुर^३ वाळौ गयौ जीमवारे, जीमणवार मैं जांण।
पकवांन तौ कडवा घणा, वद-वद^४ कहै लोकां नैं वांण॥ भीक्खू.
- १० लोक कहै-लागै घणां रे, प्रगट मीठा पकवांन।
तुझ शरीर मैं ताव है, जिणसूं कडुआ लागै छै जान॥ भीक्खू.
- ११ ज्यूं मिथ्यात-रोग जाडौ^५ हुवै, संत तास न सुहाय।
हळुकर्मी हीयै हरखता, चित मैं मुनि-दर्शण चाय॥ भीक्खू.
- १२ भूखां मरता रोटी वासतै रे, सांग^६ साधु नों धारंत।
त्यांनैं कहै चारित चोखौ पालजौ, जद स्वाम दीयौ दृष्टंत^७॥ भीक्खू.

१. मंत्रवादी।

२. भि. दृ. ३०३।

३. ज्वर।

४. बड़-बड़ करा।

५. सघन/गहरा।

६. वेप।

७. भि. दृ. ३०२।

- १३ 'बलवंत बाळै^१ बांध नै रे', तिण नैं कहै सिर नांम।
 सती माता 'तेजरा^२ तोडजै, ते कांइ तोड़ै तेजरा तांम? भीक्खू.
 १४ ज्यूं भेष पहिरै रोटी कारणै रे, तेहनैं कहौ चोखौ चारित पाळ।
 ते कठिन चारित पाळै किणविधे, दुकर कह्यौ है दीनदयाल॥ भीक्खू.
 १५ चोखा-खोटा गुरु ऊपरै, दीयौ नावा नों दृष्टांत^३।
 काठ की नाव साजी^४ कही, एक फूटी नावा छिद्रांत॥ भीक्खू.
 १६ तीजी नाव पथर तणी रे, उपनय हिव अवधारा।
 सुद्ध संत साजी नाव सारिखा, तिकै आप तिरै पर तारा॥
 १७ सांगधारी फूटी नावा सारिखा रे, आप डूबै औरां नैं डबोया।
 पथर नावा जिसा कह्या पाखंडी, जे तीन सौ तेसठ जोया॥
 १८ उत्तम तास न आदरै रे, धार्या ह्वै तो छोड़णा सुलभा।
 सांगधारी फूटी नावा सारिखा, त्यां नैं छोड़णा घणा दुलभा॥
 १९ इम भीक्खू ओळखावीया, पाखंडीया नैं पिछांण।
 स्यूं बुद्धि कहीयै स्वाम नीं, वारू किहां लग करूं वखांण॥
 २० ऊंडी तुझ आलोचना रे, तीर्थ-वछल तांम।
 सासण-नायक स्वाम नैं, करूं वारूं वार सलाम॥
 २१ तंत ढाळ षट्तीसमी रे, दाख्या स्वाम दृष्टंत।
 भीक्खू-भजन थी भय मिटै, अरु जय-जश सुख उपजंत॥

१. बलवान् व्यक्ति किसी स्त्री को
 बलात् चिता पर चढ़ाकर जलाता है।
 २. तीन दिनों के अंतर से आने वाला
 बुखार।

३. भि. दू. ३०१।
 ४. अखंड।

दूहा

- १ किणहिक भीक्खू नैं कह्यौ- टोळावाळा ताया
शीत-उष्ण अति कष्ट सहै, करलौ^१ लोच कराया॥
- २ तप 'छठ अठमांदिक'^२ तपै, सखरी करणी सोया
यूं ही जासीं यां तणी, एहना फळ अवलोय?॥
- ३ स्वाम^३ कहै-इक सेठ रै, पड़चौ देवाळौ पेख।
तुरत लाख रुपीया तणौ, विगड़ी वात विसेख॥
- ४ पछै एक पइसा तणौ, आंण्यो तेल तिवार।
पइसौ तसुं दीधौ परहौ, तौ पइसा रो साहुकार॥
- ५ रुपीया रा गहुं आंणनै, रुपीयौ पाछौ दीध।
तौ साहुकार रुपीया तणौ, प्रत्यख ते प्रसीध॥
- ६ इम पइसा रुपीया तणौ, साहुकार अवधार।
पिण देवाळौ लाख नौं, तेहनौं नहीं साहुकार॥
- ७ ज्यूं पंच-महाव्रत पचखनै, आधाकर्मि आद।
थाप निरंतर दोष नौं, मेट दीधी मर्याद॥
- ८ औ देवाळौ अति घणौ, लोच तपादिक कष्ट।
तेहथी किण विध ऊतरै, साधपणा रो भिष्ट॥
- ९ मासखमणादिक पचखनै, सुद्ध पाळ्यां तसुं साहुकार।
पिण महाव्रत भांग्या तेहनौं, साहुकार मत धार

ढाल : ३७

(जीवा! मोह अनुकंपा न आणीयै)

- १ किणहिक स्वाम भणी कह्यौ, सांगधार्यां रै साधु रौ सांग रे।
ऊहौ पांणी धेवण ए पिण आचरै, मानं मूकी रोटी खावै मांग रे॥

तुम्हे सुणजो दिष्टंत स्वामी तणा॥

१. कठिन (क)।

३. भि. दृ. २८९।

२. बेले (दो दिन का उपवास), तेले
(तीन दिन का उपवास) आदि।

- २ वसोंवसेँ लोच करावता, सीत-तापादि सहै साख्यात रे।
विहार नवकल्पी विचरता, तौ औ क्यूं नहीं साध कहात रे? तुम्हे.
- ३ स्वाम कहै तुम्हे सांभळो, धिर चारित्र इम किम थाय रे।
जेहवी 'वणी'-वणाई ब्राह्मणी, तिण रा साथी ए पिण कहिवाय रे॥ तुम्हे.
- ४ कुंण वणी-वणाई-ब्राह्मणी? तब स्वाम कहै सुविसेख रे।
मेरां^२ रौ इक गांव घाटा^३ मझै, उठै उत्तम घर नहीं एक रे॥ तुम्हे.
- ५ महाजन आवै सो दुख पावै घणां, जब कह्यौ मेरां नैं जांम रे।
अठै उत्तम घर नहीं एक ही, तिण सूं दुख पावां छां तांम रे॥ तुम्हे.
- ६ घणी लागत^४ देवां छां थां भणी, उत्तम घर विण इहां अवधार रे।
पांणी रोटी तणी अबखाई^५ पडै, सुद्ध राखौ उत्तम घर सारा॥ तुम्हे.
- ७ जद मेरां सैहर मांहे जायनै, महाजनां नैं कह्यौ मन ल्याय रे।
उत्तम वसौ म्हारै गांम आयनै, तिण रौ ऊपर^६ राखसां ताय रे॥ तुम्हे.
- ८ इम कह्यौ पिण कोइ आयौ नहीं, एक ढेढां रौ गुरु मूंऔ आंम रे।
तिण री अस्त्री गुरुड़ी^७ तदा, तिण नैं मेरां आंणी तिण ठाम रे॥ तुम्हे.
- ९ वणाइ मेरां तिणनै ब्राह्मणी, ब्राह्मणी जिसा वस्त्र पैहराय रे।
जागा कराय धवल राखी जिहां, तुलसी रौ थांणौ रोप्यौ ताय रे॥ तुम्हे.
- १० दोय रुपीयां रा गोहूं आणे दीया, अधेली^८ रा मूंग दिया आण रे।
एक रुपीया तणौ घृत आपीयौ, वदै^९ मेर तेहनै इम वांण रे॥ तुम्हे.
- ११ पइसा लेई महाजन रा पासा थकी, आवै ज्यां नैं रोटी कर आप^{१०} रे।
वर्ण^{११} पूछ्यां वतावजै ब्राह्मणी, धिर जाति फलाणी थाप रे॥ तुम्हे.
- १२ जाता-आता महाजन आवै जिके, पूछै उत्तम घर पहिछांण रे।
ब्राह्मणी रौ घर मेर वतावता, इम काळ कितोयक जांण रे॥ तुम्हे.
- १३ इतरै च्यार व्यापारी आवीया, घणां कोसां रा थाका ते गांम रे।
आय पूछ्यौ मेरां नैं इण तरै, उत्तम घर वताऔ आंम रे? तुम्हे.

१. भि. दृ. ११६।

२. राजस्थान की एक आदिवासी जाति।

३. पहाड़ों के बीच का रास्ता।

४. खर्चा/कीमत।

५. तकलीफ

६. अधिक सम्मान/देखरेख।

७. गुरुणी-ढेढ की पत्नी।

८. अठन्नी।

९. कहने लगे।

१०. दो।

११. जाति।

- १४ तब मेर कहै-जावौ तुम्हे,
जद आया व्यापारी च्यारुं जणां,
१५ वाई! रोटियां कर रूड़ी रीत सूं,
जद इण गोहां री रोट्यां जाडी करी,
१६ कीधी दाळ तिण मैं घाली काचर्यां,
करडी भूख रोट्यां पिण करकड़ी,
१७ रांधण^१ देखी फलाणां^२ गांम री,
रांधणां देखी बड़-बड़ा सैहर नीं,
१८ कहै-देखौ रै दाल किसी करी,
माहै काचरिया किसी स्वाद है,
१९ जद आ बोली-वीरां! वात सांभळौ,
खबर पड़ती काचरीयां रा स्वाद री,
२० जद यां पूछ्यौ-तीखण कहै केहनै?
काचरीयां बनारवा^५ कारणे,
२१ तब यां पूछ्यौ छुरी तोनै नां मिली,
आ कहै दांतां सूं वनार-वनारनै,
२२ तब औ बोल्या-तड़कनै हे पापणी!
इम कहीनै लगा थाळी पटकवा,
२३ रे वीरां! थाळी भांगजो मती,
जद औ बोल्या-हे पापणी!
२४ जद आ बोली--वीरां! बात सांभळौ,
असल जाति री तौ गुरुड़ी अछूं,
२५ धुर सूं बात सारी कही मांडनै,
भीक्खू कहै-साथी ब्राह्मणी तणा,
२६ ऊंन्हौ पांणी धोवण नित्य आचरै,
तिण सूं वणी-वणाई ब्राह्मणी,
- तिण ब्राह्मणी रै घर तास रे।
प्रगट वचन कहै तिण पास रे॥ तुम्हे.
झट घाल थाका आया जाण रे।
'सुरहौ घृत'^५ घाल्यौ सुविहांण रे॥ तुम्हे.
जीमवा लागा च्यारुंइ जाण रे।
वणिक जीमता करै वखांण रे॥ तुम्हे.
अमकड़िया नगर नीं अवलोय रे।
इसड़ी चतुराई नहिं देखी कोय रे॥ तुम्हे.
अति चोखी है, स्वाद अत्यंत रे।
घणी करै प्रसंसा जीमंत रे॥ तुम्हे.
तीखण^५ मिली हुंती तौ तांम रे।
पिण ते मिली नहीं अभिरांम रे॥ तुम्हे।
तब आ कहै-तीखण छुरी तांम रे।
छुरी मिली नहीं अभिरांम रो॥ तुम्हे।
तौ किण स्यूं वनारी तेह रे?
इण दाल माहै न्हाखी एह रे॥ तुम्हे।
म्हानै भिष्ट किया तैं जीमाय रे।
तब आ बोली उतावळी ताय रे॥ तुम्हे।
अमकड़िया डूंम^६ री आंणी मांग रे।
तूं कुंण जाति री? कुंण तुझ सांग? रे॥ तुम्हे।
वणी-वणाई ब्राह्मणी छूं ताय रे।
मेरां ब्राह्मणी दीधी वणाय रे॥ तुम्हे।
सांभळनै च्यारुंइ पछतात रे।
सांगधारी सर्व साख्यात रे॥ तुम्हे।
पिण समगत-चारित्र नहीं काय रे।
तिण रा साथी कहा इण न्याय रे॥ तुम्हे।

१. काली गाय का असली घृत।

२. भोजन बनाने वाली।

३. अमुक।

४. छुरी।

५. काटने के लिए।

६. परिगणित जाति।

- २७ दृष्टंत स्वाम इसौ दीयौ, सुध हेतु मिलाया सार रे।
 भारी-कर्मा सुण द्वेष माहै भरै, चित पांमैं उत्तम चिमत्कार रे॥ तुम्हे.
- २८ स्वाम सावज्ज-निरवद सोधीया, व्रत-अव्रत जूआ वताय रे।
 आज्ञा-अणआगन्या ओळखायने, दीधी दान-दया दीपाय रे॥ तुम्हे.
- २९ भीक्खू स्वाम प्रगटीया भरत मै, आप कीधौ अधिक उद्योत रे।
 ऐसौ उपगारी कुंण इण काळ मै, जिन ज्यूं घण घट घाली जोत रे॥ तुम्हे.
- ३० इसा उपगारी गुण आगळा, त्यांरा दृष्टंत सांभळ तंत रे।
 हळुकर्मी हरख हिवडै धरै, बहुलकर्मी रौ मूंह विगडंत रे॥ तुम्हे.
- ३१ तंत ढाळ कही साततीसमी, स्वामी मेल्या है न्याय साख्यात रे।
 रखे संका-कंखा भर्म राखनै, मत पडिवजजो^१ मिथ्यात रे॥ तुम्हे.

दूहा

- १ किणहिक भीक्खू नै कह्यौ, पाखंडी पहिछांण।
सूत्र-सार जिन वच सरस, वाचै सखर वखांण॥
- २ स्वाम कहै^१-तुम्हे सांभळौ, वाचै सूत्र-वखांण।
जीव खवायां पुन्य मिश्र, छेहड़ै इम करै छांण॥
- ३ जिम बायां रातीजगै^२, संसार लेखै जान।
गीत भल-भला गावती, तीखै मन कर तांन॥
- ४ गीतां छेहड़ै गावती, मोर्यौ-मारू^३ मंद॥
ज्युं प्रथम सूत्र 'प्रगमाय नै'^४, छेहड़ै सावज्ज फंद।
- ५ दीपावै सावज्ज दया, दाखै सावज्ज दांन॥
मोर्या-मारू नी परै, सर्व बिगाड़ै तांन॥
- ६ किणहिक भीक्खू नै कह्यौ^५- बुद्धिहींण इक बाल।
भाठा सुं कीड्यां भणी, कचरंतो तिण काळ॥
- ७ उण रौ पथर लै उरहौ, खोसी करी कषाय।
कहौ तिण नैं कासूं थयो? जद स्वाम कहै सुण वाय॥
- ८ तसुं पासा थी खोस लै, तसुं कर मैं स्यूं आत?
तब ऊ बोल्यौ उण तणैं, भाठौ आयौ हाथ॥
- ९ भाखै पूज-विचारलौ, धर्म जिण आज्ञा माया।
जबरी^६ कौ जिण नां कह्यौ, इम सर्व वस्तु गिणाय॥

ढाळ : ३८

(सल कोई मत राखज्यो)

- १ किणहिक भीक्खू नै कह्यौ^७- टोळावाळा ताह्यौ रे।
आप साध न सरधौ यां भणी रे, तो साध कहौ किण न्यायो रे॥
तंत दृष्टंत भीक्खू तणा॥

१. भि. दृ. १८४।

२. विशेष अवसरों पर औरतों द्वारा
मांगलिक गीत गाते हुए किया जाने वाला
रात्रि-जागरण।

३. खराब गीत।

४. आगम के अनुसार सिद्धांत बतलाकर।

५. भि. दृ. १२४।

६. बल प्रयोग।

७. भि. दृ. ९८।

२. औसाध! अमकडिया टोळा तणा, फळांणा टोळा रा साधो रे।
 इम साध कही वैण ऊचर्यां, वच सत्य कै मृषावादो रे? तंत.
३. स्वाम कहै किण हि सैहर मैं, किरियावर^१ किण रै थायो रे।
 नैहता^२ फेरै नगर मैं, वदै इसीपर वायो रे॥ तंत.
४. अमकडिया रे नैहतो अछै, खेमासाह रा घर रौ जांणो रे।
 अमकडिया रे नैहतो अछै, पेमा साह रा घर रौ पिछांणो रे॥ तंत.
५. देवाळौ त्यां काढे दीयौ, तौ पिण बाजै साहो रे।
 खेमो देवाळ्यौ वाजै नहीं, द्रव्य निक्षेपो देखायो रे॥ तंत.
६. ज्यू संजम नहीं पाळै जिक्के, नाम धरावै साधो रे।
 द्रव्य निक्षेपै साधू कह्यां, मूंळ न मृषावादो रे॥ तंत.
७. लकड़ी रा घोड़ा भणी, अश्व कह्यां दोष नाह्यो रे।
 नाम असद्भाव-थापना, कहिण मात्र कहिवांयो रे॥ तंत.
८. किणहि भीकखू नैं कह्यौ^३- टोळावाळा मैं ताह्यौ रे।
 कहौ-साध यां मैं कवण छै? असाध कुंण यां माह्यो रे? तंत.
९. स्वाम कहै-इक सैहर मैं, 'आंख अखम'^४ पूछै वायो रे।
 नागा कितरा इण नगर में, कितरा ढकीया कहिवायो रे? तंत.
१०. वैद विचक्षण इम वदै- औषध तुझ आंख्यां माह्यौ रे।
 घाल सूझतौ तो भणी, हूं कर देसूं ताह्यौ रे॥ तंत.
११. नागा-ढकीया तूं निरखलै, वैद बोल्यौ इम वायो रे।
 स्वाम कहै-साध-असाध री, ओळखणा देसां बतायो रे॥ तंत.
१२. पछै साध-असाध तूं परख लै, कहै नाम लेइ कोयो रे।
 कजियौ^५ पहिली तिण सूं करै, जिण सूं कैहणौ अवसर जोयो रे॥ तंत.
१३. किणहिक वलि इम पूछीयौ, कुंण यां मैं साध असाधो रे?
 स्वाम कहै-तुम्हे सांभळौ, विरुऔ तज विषवादो^६ रे॥ तंत.
१४. संजम लेइ पाळै सही, ते साधु सुखदायो रे।
 महाव्रत आदर मूंक दै, असाध ते असुहायो रे॥ तंत.

१. मृत्यु भोज।

२. न्यौता।

३. भि. दृ. ९९।

४. अचक्षु।

५. लड़ाई।

६. वितंडावाद।

- १५ दृष्टं^१ भीक्खू दीयौ इसौ, किणहिक पूछ्यौ किवारो रे।
 साहुकार कुण सैहर मैं, कुंण है देवाळ्यौ विकारो रे॥ तंत.
- १६ लेइ पाछौ देवै लोक मैं, साहुकार कहै सोयो रे।
 देणौ न देवै देवाळीयौ, झगड़ा उलटा मांडै जोयो रे॥ तंत.
- १७ ज्यूं संजम लेइ पाळ्यां साध है, दोष थांप्यां नहीं साधो रे।
 अथवा डंड न आदरै, वरतां नै देवै विराधो रे॥ तंत.
- १८ भीक्खू इसा न्याय भाखीया, स्वाम बिना कुंण सोधै रे?
 पूज गुणां नों पींजरौ, पूज भविक प्रतिबोधै रे॥ तंत.
- १९ भीक्खू है दीपक भरत मैं, भीक्खू भळौ भवतारण रे।
 साहिब भीक्खू साचलौ, भीक्खू है विघन-विडारण रे॥ तंत.
- २० याद आयां हियौ ऊलसै, अंतरजामी आपो रे।
 समरण सूं सुख संपजै, थिर चित्त म्हैं करी थापो रे॥ तंत.
- २१ स्वाम जिसौ इण भरत मैं, दीनदयाल न दूजौ रे।
 भविक जीवां! तुम्हे भाव सूं, पवर भीक्खू गुण पूजौरे॥ तंत.
- २२ तन-मन सेती तुझ भणी, हिरदय ओळख हरख्यौ रे।
 आसापूरण आप हौ, म्हैं तो प्रतख भीक्खू परख्यो रे॥ तंत.
- २३ आखी ढाळ अडतीसमीं, समर्यौ है भीक्खू सनूरो रे।
 'जय-जश' सुख संपति मिलै, दालिद्र दुख गया दूरो रे॥ तंत.

दूहा

- १ उपयोग री खांमी ऊपरै, दीयौ स्वाम दृष्टं^१।
निरमल-नीकी नीत सूं, सुध जाणौ तसुं संत॥
- २ कुंणकौ^२ देखी गुर कह्यौ, ए कुणकौ शिष जोय।
ऊपर पग दीजौ मती, तहत कीयौ शिष सोय॥
- ३ थोडी वार थी शिष तिकौ, फिरतौ-फिरतौ आय।
पग दीधौ तिण ऊपरै, तब गुरु बोल्या ताय॥
- ४ तुझ म्हैं वरज्यौ थौ तदा, मत दीजौ पग साख्यात।
शिष कहै-उपयोग सुद्ध, चूकौ स्वामीनाथ॥
- ५ बीजी वेला शीष वलि, फिरतां-फिरतां फेर।
पग दीधौ कण ऊपरै, गुरां निषेध्यौ घेर॥
- ६ आगै तुझ वरज्यौ हुंतौ, कहै शीष कर जोड़।
महाराज! उपयोग मुझ, चूक गयौ इण ठोड़॥
- ७ गुर कहै-अबके चूकीयौ, तो काल विगै^३ रा त्याग।
फिरतां-फिरतां शीष फिरी, वलि चूको ते जाग॥
- ८ इम वार-वार खांमी पड़ी, ते विगै टाळण थी ताहि।
वलि कण ऊपर पग देण थी, राजी नहीं मन माहि॥
- ९ कर्म-जोग उपयोग मै, खामी तौ अधिकाय।
पिण नीत सुद्ध अरु थाप नहि, साधपणौ ते न्याय॥

ढाळ : ३९

(किरपण दीन अनाथ ए)

- १ स्वाम भीक्खू नै सोय ए, किण ही पूछा करी इम जोय ए।
साध साधवीयां रै माय ए, अवगुण दीसै अधिकाय ए॥
- २ ज्यारैं नहीं इरज्या रौ ठिकाण ए, भाषा सुमति मै पिण दीसै हांण ए।
केइ करै चालंता बात ए, सुन्य उपयोग री साख्यात ए॥

१. भि. दू. २१४।

२. धान्य कण।

३. दूध, दही आदि छह प्रकार की विंगय।

- ३ सुमति एषणादिक मैं सोय ए, अधिक फेर दीसै अवलोय ए।
तीन गुप्त कही तंत सार ए, अतिही दीसै है फरक अपार ए॥
- ४ केकांरी प्रकृति करड़ी धार ए, छेड़वीयां सूं करै फूँकार ए।
मांन माया लोभ मैं मंत ए, किम कहियै तिणां नै संत ए?
- ५ करड़ी प्रकृति देख्या साध ए, कोई बोल्यौ वचन विराध ए।
यां मैं साधपणा रौ न अंश ए, अवगुण री करां केम प्रसंस ए॥
- ६ वर बोल्या है भीखू वाय ए, सुण दृष्टंत एक शोभाय ए।
एक साहुकार अवधार ए, कराइ हवेली सुखकार ए॥
- ७ रुपीया हजारां लगावीया ए, जाळी झरोखा अधिक झुखावीया ए।
ओपे^१ माळिया-महिल अनेक ए, सुद्ध शोभता सखर संपेख ए॥
- ८ चारू रूप विविध चित्रांम ए, अति कोरणीया^२ अभिरांम ए।
सुखदाई रूप सुविहांण ए, पूतळीयां मन हरणी पिछांण ए॥
- ९ आवै लोक अनेक ए, देख-देख नैं हरखै विसेख ए।
नर-नारी हजारां आवता ए, घणा देख-देख गुण गावता ए॥
- १० महिल-माळीया महा श्रीकार ए, तिके जू-जूआ देखै तिवार ए।
कहै देखौ कोरणीया तांम ए, चतुर रूप रच्या चित्रांम ए॥
- ११ साहुकारादिक सहू आय ए, ए तौ सगलाइ रह्या सराय ए।
जठै भंगी देखण आयौ जान ए, धुन सेतखांना^३ सूं ध्यान ए॥
- १२ महिल-माळिया सांहमी न दिष्ट ए, जाळी झरोखा सूं नहीं इष्ट ए।
तिण रै सेतखांना सूं काम ए, तिण सूं तेहज छै परिणांम ए॥
- १३ कहै-सेतखांना तौ आछौ नहीं ए, सेठ सुणता अवगुण बोलै सही ए।
जब सेठ कहै-सुण वाय ए, ताडतखानौ^३ किण वासतै ताय ए?
- १४ सेतखांना आछौ किम थाय ए, महा नीच वस्तु इण माय ए।
निंदनीक वस्तु ए निदांन ए, तू पिण नीच तिण सूं थारो ध्यान ए॥
- १५ झरोखा जाळ्यां आदि दे जाण ए, प्रगट आछा है अधिक प्रधान ए।
स्वाम कहै सुविचार ए, कहूं उपनय ए अवधार ए॥
- १६ संजम तप तौ हवेली समान ए, सेतखांना ज्यूं अवगुण जान ए।
साहुकारादिक देखणहार ए, ते सम उत्तम जीव उदार ए॥

१. हवेली के अनुरूप लग रहे हैं।

२. पत्थर पर की हुई खुदाई।

३. शौचालय

- १७ त्वारी दिष्ट संजम ऊपर ताम ए, पिण अवगुण सूं नहीं काम ए।
 गुण-ग्राहि उत्तम गुणवंत ए, ते तौ संजम-तप जाणै तंत ए॥
- १८ संजम गुण जाणै सुद्ध मान ए, पिण अवगुण सूं नहीं ध्यान ए।
 छिद्रपेही भंगी सम छार ए, संजम नै नहीं जाणै लिगार ए॥
- १९ छठौ गुणठाणौ इण विध जाय ए, त्यांनै ते पिण खबर न काय ए।
 छठौ गुणठाणौ इम ठहराय ए, ते पिण जाणपणौ नहीं ताय ए॥
- २० अवगुण नै करै अगवांण ए, महानिंदक मातंग^१ मांण ए।
 कहै अवगुण आछा नांय ए, तिण नै कहणौ इण रौ कहिसी कांय ए।
- २१ अवगुण तौ कद ही आछा न होय ए, ए तौ प्रत्यख ही अवलोय ए।
 एतौ निंदवा जोग निषेध ए, इण मै तैं काइ काढ्यौ भेद ए॥
- २२ पिण संजम-गुण इण मांय ए, तिण सूं वंदवा जोग कहाय ए।
 तूं मूढै आणै अवगुण वार-वार ए, थारै कुमति हिया मै अपार ए॥
- २३ दीधौ हवेली रौ दृष्टंत ए, भीक्खू भविक नीं भांजण भ्रंत ए।
 स्वामी सूतर न्याय श्रीकार ए, त्यां रा जाण भीक्खू तंत सार ए॥
- २४ औ तौ दियौ भीक्खू दृष्टंत ए, त्यां रा हेतु नै पुष्ट करंत ए।
 सूत्र शाख कहै 'जय' सार ए, तिण रौ सांभळज्यो विस्तार ए॥
- २५ कह्यौ सूत्र भगवती माय ए, शतक पचीस^२ मै सुखदाय ए।
 उत्तरगुण पडिसेवी पिछांण ए, बुकस नियंठो श्री जिन वांण ए॥
- २६ जगन दोय सौ कोड़ ते जान ए, नहिं विरह कदै नहीं हान ए।
 पंचम पद छठै गुणठांण ए, चारित्र रा गुण लेखै पिछांण ए॥
- २७ मूल गुण^३ नै 'उत्तर गुण'^४ माय ए, दोष लगावै ते दुखदाय ए।
 पडिसेवणा कुशील पिछांण ए, जगन दोय सौ कोड़ ते जांण ए॥
- २८ नहीं विरह एह थकी ओछा नाय ए, ए पिण छठे गुणठाणे कहिवाय ए।
 यां मै चारित गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा जोग विचार ए॥
- २९ पुलाग नेयठौ^५ पिछांण ए, लब्धि फोड़्यां कह्यौ जिन जांण ए।
 थिति अंतर्महूर्त्त थाय ए, लब्धि नीं थिति तौ अधिकाय ए॥

१. चंडाल।

२. भगवई शतक २५ उ. ६ सू. ४४७।

३. पंच महाव्रत।

४. दस प्रत्याख्यान।

५. नेयंठो (क)।

- ३० विरह उत्कृष्ट संखेजवास ए, पछै तो अवस्य प्रगटै विमास ए।
 यां मैं चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा जोग विचार ए॥
- ३१ कसायकुशील नेयठा माय ए, पांच शरीर छ लेस्या पाय ए।
 षट् समुदघात कहिवाय ए, इण रौ पेटौ भारी है अथाय ए॥
- ३२ बहु फोड़वै लब्धि प्रकाश ए, मोहकर्म उदय थी विमास ए।
 पिण चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सूं वंदवा जोग विचार ए॥
- ३३ पुलाक बुकस पडिसेवणा पेख ए, दिल सूं कषायकुशील देख ए।
 यां मैं दोष तणौ डंड जोय ए, वले दोष री थाप न कोय ए॥
- ३४ तिण कारण चारित्र चीज ए, दोष थाप्यां जावै गुण छीज ए॥
 जितरौ डंड तितरौ चरण जाय ए, दोष थाप्यां सर्व विललाय ए॥
- ३५ हीण-वृद्धि पजवां मैं होय ए, प्रगट शतक पचीसमौ^५ जोय ए।
 फेर अनंत गुणौ पजवां माय ए, तौ पिण चारित्र गुण सुखदाय ए॥
- ३६ दशमैधेन^६ ज्ञाता मैं दयाल ए, कह्यौ चंद दृष्टंत कृपाल ए।
 एकम आदि पूनमचंद पेख ए, वलि विद पख चंद विसेख ए॥
- ३७ ते सम संत समृद्धि ए, जती धर्म दसमैं हीन वृद्धि ए।
 क्षांति आदि ब्रह्मचर्य माय ए, एकम थी पूनम तांइ गिणाय ए॥
- ३८ इम विद पख चंद समांन ए, क्षमादिक गुण मैं फेर जान ए।
 किहां एकम किहां पूनम चंद ए, दसूं धर्म एम वृद्धि मंद ए॥
- ३९ चौथै ठांणे चौभंगी उपन्न^७ ए, शीलसम्पन्न नो चरितसंपन्न ए।
 दूजौ शीलसंपन्न मदेख^४ ए, चारित सहित कह्यौ विसेख ए॥
- ४० तीजौ शीलसंपन्न सुभाव ए, 'विले'^५ चारित्र सम्पन्न साव ए^६।
 चौथो शील चारित नहीं तांम ए, शील शीतल स्वभाव नों नांम ए॥
- ४१ शीतल प्रकृति तौ नहीं कोय ए, दूजै भांगै चारित्र कह्यौ जोय ए।
 वर न्याय हीयै सुविचार ए, प्रकृति देखी म भिड़कौ लिगार ए॥
- ४२ नसीत^७ वीसमैं न्हाल ए, वार वार रौ डंड विसाल ए।
 इम सांभळ छांडौ अनीत ए, राखौ सूत्र नीं प्रतीत ए॥

१. भगवई शतक २५ अ. ६ सूत्र ३४९ से ३६२।

२. ज्ञाता श्रुत. १ अ. १० सूत्र १ से ५।

३. ठाणं ४ सूत्र ४१०।

४. न (क)।

५. विलया।

६. पिण चारित्र तणो अभाव ए (क)।

७. निशीथ उ. २०।

- ४३ भारीकर्मा सुणी भिडकाय ए, बोले ऊंधमती इम वाय ए।
करै ढीली परूपणा काज ए, हिवै दोष तणी कांइ लाज ए॥
- ४४ इम बोले मूढ गिवार ए, ज्यां रा घट माहै घोर अंधार ए।
पिण इतरी न जाणै साख्यात ए, सर्व कही सूतर नीं बात ए॥
- ४५ स्थिर राखण समगत सार ए, अति मेटण भर्म अंधार ए।
आगम रहिस बतावै अमाम ए, ते तौ एकंत तारण काम ए॥
- ४६ अति मानणौ तसुं उपगार ए, थिर समगत राखणहार ए।
रह्यौ गुण मानणौ तौ ज्यांहीज ए, उलटी क्युं करौ त्यां पर खीज^१ ए॥
- ४७ परम दुर्लभ समगत पाय ए, रखे संका राखौ मन माय ए।
संका राख्या सूं समगत जाय ए, तिण सूं वार वार समजाय ए॥
- ४८ पज्जवा नैं हीण पाड़ै कोय ए, बुकस पड़िसेवणादिक जोय ए।
तौ तिण री तिण नैं मुसकल ए, पिण पोतै क्युं घालौ सल^२ ए॥
- ४९ खोड़^३ ऊंट री ऊंट नैं होय ए, ज्यूं पज्जवाहीण तसुं सोच जोय ए।
न फिरैं छठौ गुणठांण ए, तठा ताई असाध म जाण ए॥
- ५० श्रावक कह्या मा तात समान ए, पवर चौथै ठाणै^४ पहिछांण ए।
हेत सूं कहै रूड़ी रीत ए, पिण अंतरंग मैं अति पीत ए॥
- ५१ स्वामी भीखू तणैं प्रसाद ए, पांमी समगत चरण समाध ए।
दियौ हवेली रौ तौ दृष्टांत ए, संक्षेप थकी चित शांत ए॥
- ५२ त्यां रा प्रसाद थी अनुसार ए, साखां न्याय कह्या जय सार ए।
सूत्र मैं जिम न्याय वतावीया ए, लेश मात्र अणहुंता न ल्यावीया ए॥
- ५३ धिन-धिन भीखू स्वाम ए, सार्या घणा जणां रा काम ए।
त्यांरी आसता राखौ तहतीक^५ ए, तिण सूं होवै मोख नजीक ए॥
- ५४ स्वामी दान-दया दीपाय ए, आज्ञा अणआगन्या ओळखाय ए।
ज्यां रा गुण पूरा कह्या न जाय ए, प्रत्यख पारस भीखू पाय ए॥
- ५५ स्वामी याद आवै दिन रैन ए, चित मैं अति पांमै चैन ए।
ऐसा भीखू औजागर आप ए, समरण सूं मिटै सोग-संताप ए॥
- ५६ नव तीसमीं ढाळ नीहाळ ए, भर्म-भंजण समय संभाळ ए।
हवेली रौ हेतु कह्यौ स्वाम ए, सूत्र साख जीत कही ताम ए॥

१. क्रोध।

२. शल्या।

३. कुलक्षण/खोट।

४. ठाणं ४ सूत्र ४३०।

५. सही।

दूहा

- १ विचरत^१ पूज पधारीया, पादू सैहर मझार।
शीष हेम साथै सखर, संत अवर पिण सार॥
- २ इक भायौ इह अवसरै, भीकखू भणी भणेह।
हेम चदर हाथै करी, अधिकी दीसै एह॥
- ३ चतुर स्वाम ते चदर ले, माप दिखायौ मान।
लांबपणै चौड़ापणै, अधिक नहीं उनमान॥
- ४ पूज कहै-देखौ प्रगट, पछेवड़ी परमाण।
ते कहै-अधिकी तौ नहीं, ए तौ छै उनमान॥
- ५ तूं अधिकी कहितौ तदा, तब तै बोल्यो तांम।
मुझ झूठी संका पड़ी, तब घणौ निषेध्यौ स्वाम॥
- ६ च्यार अंगल रै वासतै, संजम खोवां सार।
मुझ भौला जांण्या इसा, आंण्यौ भर्म अपार॥
- ७ इती^२ प्रतीत न तौ भणी, तौ मारग रै माय।
पय काचौ पीवै तदा, तोनैं खबर न काय॥
- ८ इत्यादिक वचने करी, अधिक निषेध्यौ आप।
कर जोड़ी नै ते कहै, कूड़ी^३ संका किलाप॥
- ९ सखरी इण पर शीख दै, खोड मिटावण कांम।
फिर संका तसुं नहि पडै, पवर स्वाम परिणाम॥

ढाळ : ४०

(जाणपणौ जग दोहिलौ रे लाल)

- १ स्वाम भीकखू गुण-सागरूरे लाल, खरा भीकखू खिम्यावांन सुखकारी रे।
संवली^४ वेवै स्वामजी रे लाल, सुणौ सुरत दे कांन सुखकारी रे।

सुणजो गुण स्वामी तणा रे लाल॥

१. भि. दू. ७७।

२. ऐती (क)।

३. झूठी।

४. सही रूप में लेते हैं।

- २ सोभाचंद^१ सेवग हुंतो रे लाल, नाडोलाइ नों न्हाल। सुखकारी रे!
 आयौ पाली मैं एकदा रे लाल, तिण नैं कहै पाखंडी ते काळ। सुखकारी रे! सुण।
 ३ तूं विश्वर^२ जोड़ भीखणजी तणा रे लाल, तोनैं देसां बहु रुपीया तांम। सुखकारी रे!
 भीखनजी सूं वातां कर जोड़ सूं रे लाल, इम कहै सोभाचंद आंम। सुखकारी रे! सुण।
 ४ इम कही खेरवै आवीयौ रे लाल, जिहां पूज विराज्या जांण। सुखकारी रे!
 ऊभौ भीक्खू रै आगलै रे लाल, वंदणा कीधी आंण। सुखकारी रे! सुण।
 ५ पूज कहै वच परवड़ा रे लाल, तुझ नांम सोभाचंद ताय। सुखकारी रे!
 सोभाचंद कहै हां सही रे लाल, एहिज नाम कहाय। सुखकारी रे! सुण।
 ६ भीक्खू वलि तसुं इम भणै रे लाल, सुत रोडीदास नों सोय? सुखकारी रे!
 सेवग कहै स्वामी भणी रे लाल, सत वच तुझ अवलोय॥ सुखकारी रे! सुण।
 ७ वलि सोभाचंद बोलियौ रे लाल, आप आछी न कीधी एक। सुखकारी रे!
 उथापौ श्री भगवान नैं रे लाल, विरुइ वात विसेख॥ सुखकारी रे! सुण।
 ८ वळता भीक्खू बोलीया-रे लाल, म्हे क्यांनैं उथापां भगवांन? सुखकारी रे!
 म्हे भगवंत रा वचनां थकी रे लाल, घर छोड़ साधू थया जाना॥ सुखकारी रे! सुण।
 ९ वलि सोभाचंद बोलियौ रे लाल, आप देवरौ^३ दीयौ उथाप। सुखकारी रे!
 जाब देवै स्वामी जुगत सूं रे लाल, चतुर सुणौ चुपचाप॥ सुखकारी रे! सुण।
 १० हजारां मण पथर देवळ^४ तणौ रे लाल, 'कहौ उथापियै केम'^५? सुखकारी रे!
 म्हे तो सेर दोय सेर प्रयोजन विना रे लाल, आछौ पाछौ करां नहीं एम॥ सुखकारी रे! सुण।
 ११ फेर सोभाचंद पूछतौ रे लाल, आप जिन प्रतिमा दी उथाप। सुखकारी रे!
 प्रतिमा नै कहौ पाषाण छै रे लाल, ए आछी न करी आप॥ सुखकारी रे! सुण।
 १२ स्वाम कहै-तूं सांभळे रे लाल, म्हे प्रतिमा उथापा किण कांम। सुखकारी रे!
 म्हारै त्याग है झूठ बोलण तणां रे लाल, इण रौ न्याय कहुं अभिराम॥ सुखकारी रे! सुण।
 १३ सोना री प्रतिमा भणी रे लाल, सोना री प्रतिमा कहंत। सुखकारी रे!
 रूपा री प्रतिमा भणी रे लाल, म्हे रूपां री कहां धर खंत॥ सुखकारी रे! सुण।
 १४ सर्व धातु नीं प्रतिमा भणी रे लाल, सर्व धातु नीं कहां सोय। सुखकारी रे!
 पाषाण री प्रतिमा भणी रे लाल, कहां पाषाण री जोय॥ सुखकारी रे! सुण।

१. भि. दृ. ९६।

२. निंदा सूचक छंद।

३. मंदिर (देवालय), देहरो (क्र.)।

४. मंदिर।

५. कैसे उठाया जा सकता है।

- १५ पाषाण री प्रतिमा भणी रे लाल,
तिण सूकहां छां प्रतिमा पाषाण री रे लाल,
१६ सोभाचंद इम सांभली रे लाल,
इसडा उत्तम महापुरस नारे लाल,
१७ गुण चाहिजै इण पुरुस नारे लाल,
दोय छंद जोड़्या दीपता रे लाल,
१८ स्वामी नैं छंद सुणाय नैं रे लाल,
पाखंडमतीयां पूछीयौ रे लाल,
१९ ते कहै-छंद वणावीया रे लाल,
भीखनजी रा श्रावकां रै आगलै रे लाल,
२० स्वामीजी रा श्रावकां कनै रे लाल,
पाखंडमती श्रावकां भणी रे लाल,
२१ सेवग ओ निरापेखी सही रे लाल,
थंरै म्हंरै तौ सरधा पक्ष नीं रे लाल,
२२ सोभाचंद नैं इम कहै रे लाल,
सुद्ध छै किंवा असुद्ध छै रे लाल,
२३ उणां री सरधा उणां कनै रे लाल,
तौ पिण पाखंडमतीया कहै रे लाल,
२४ अब सोभाचंद कहै-सांभळी रे लाल,
कहिसूं मोनैं दरससी जिसा रे लाल,
२५ सोभाचंद सेवग इम सांभळी रे लाल,
ते छंद दोनूंइ गुणां तणां रे लाल,

सोना री कह्यां लागै झूठ। सुखकारी रे!
म्हे तौ दीधी है झूठ नैं पूठा। सुखकारी रे! सुण.
हरख्यौ घणौ हीया मांया। सुखकारी रे!
किम अवगुण कहिवाय? सुखकारी रे! सुण.
वारू इसडी विचार। सुखकारी रे!
सांभळतां सुखकार॥ सुखकारी रे! सुण.
पाछौ आयौ पाली माहि। सुखकारी रे!
तैं छंद बणाया कै नाहि? सुखकारी रे! सुण.
पाखंडमती बोल्या फेर॥ सुखकारी रे!
छंद कहिजै होय सेरा॥ सुखकारी रे! सुण.
आया सेवग लेइ साथ। सुखकारी रे!
वारू सुणौ मुझ वाता॥ सुखकारी रे! सुण.
अदल^१ कहिसी अवलोय। सुखकारी रे!
इण रै तो पख नहिं कोय॥ सुखकारी रे! सुण.
भीखनजी साधु किसाएक। सुखकारी रे!
तब सेवग कहै सुविसेख॥ सुखकारी रे! सुण.
आपां री आपां पास। सुखकारी रे!
तूं तौ निसंक प्रकास॥ सुखकारी रे! सुण.
गुण-अवगुण भीखनजी मैं होय। सुखकारी रे!
तब अै कहै-दरसै जिसा तोय॥ सुखकारी रे! सुण.
सुध कह्या त्यां छंद श्रीकार। सुखकारी रे!
सांभळजो सुखकार॥ सुखकारी रे! सुण.

(सोभाचंद सेवग कृत इन्दव छंद)

- १ अनभय कथणी रहिणी करणी अति,
गुणवंत अनंत सिद्धंत कळा गुण,
शास्त्र सार बत्तीस जाणै सहु,
पंचइंद्री कूं जीत, न मानंत पाखंड,
साध मुक्ति का वास-वंदा^१ सहु,

आतूंई कर्म जिपै अधिकारी।
प्राकम पौहच विद्या पुण भारी।
केवलज्ञानी का गुण उपकारी।
साध मुनिंद्र बड़ा सतधारी।
भीखम स्वाम सिद्धंत है भारी॥

१. यथार्थ (न्याययुक्त)।

२. मुख्य सेवक।

२ स्वामी परभव कै स्वार्थ साचहै, वाचहै सूत्र कला विसतारी।
 तेरा ही पंथ साचा त्रिहूँ लोक में, नाग सुरेन्द्र नमैं नर नारी।
 'सुणीहै' सत्य वात सिद्धंत सुज्ञान की, बौहत गुणी करणी वलिहारी।
 प्रथी^१ के तारक पंचम आर मैं, भीखम स्वामी का मारग भारी॥

(मूल)

२६ सोभाचंद छंद कह्या इसारे लाल, सांभळ ते गया सरक^३। सुखकारी रे!
 मन माहै मुरझाणा घणां रे लाल, स्वामीजी रा श्रावक होय गया गरक^४॥ सुखकारी रे! सुण.
 २७ पूज खिम्या रा प्रताप सूं रे लाल, पड़ी पाखंड्यां री आब^५। सुखकारी रे!
 ऐसा भीक्खू गुण आगळारे लाल, सुजस विस्तरीयौ सताब॥ सुखकारी रे! सुण.
 २८ ऊंडी पूज आलोचना रे लाल, वारु बुद्धि नां जाब। सुखकारी रे!
 धोरी धर्म तणी धुरा रे लाल, दीयौ पाखंड मत दाब॥ सुखकारी रे! सुण.
 २९ अवतरीया इण भरत मैं रे लाल, खरै मारग रह्या खेल। सुखकारी रे!
 सूतर बुद्धि समसेर^६ सूं रे लाल, पाखंड मत दियौ पेल^७॥ सुखकारी रे! सुण.
 ३० समरण तुझ गुण संभरू रे लाल, आवै निश दिन याद। सुखकारी रे!
 रोम-रोम सुख रति लहुं रे लाल, पामूं परम समाध॥ सुखकारी रे! सुण.
 ३१ चारू ढाळ चाळीसमीं रे लाल, भय भर्म भंजन स्वाम। सुखकारी रे!
 'जय-जश' संपति दायकारे लाल, आशा पूरण आंम॥ सुखकारी रे! सुण.

१. सुणियै (क)।

२. पृथ्वी (क)।

३. खिसक गए।

४. खुशी में डूब गए।

५. इज्जत।

६. तलवार।

७. हटा दिया।

दूहा

- १ बूंदी में 'बूझा करी', सवाइरामजी सोय।
वखांण संपूर्ण हुआ पछै, आप नैहत^१ मांगो अवलोय॥
- २ नूहत घाल सौगन करी, इसड़ी कहौ छौ आप।
कांड आपरैई तोटौ अछै, ते तोटौ बूरण^३ ए थाप?
- ३ सुता परणाइ सेठ किण, न्यात^४ जीमाई न्हाळ।
तोटौ बूरण नैहत लै, ज्यूं सूं तोटो तुम भाळ?
- ४ स्वाम कहै-इक सेठ तिण, सुता परणाइ सोय।
बोलाया बहु गांम रा, न्यात मित्र अवलोय॥
- ५ जीमण कर जीमावीया, सगळां नैं पकवान।
दिवस घणां राख्यां पछै, सीख दीधी सनमान॥
- ६ एक-एक पकवान री, साथ कोथली दीध।
रसतै भूख भांजण, इम सुखे पूगता कीध॥
- ७ ज्यूं म्हे पिण बहु दिवस लग, वखांण मैं विसतार।
वातां विविध वैराग री, संभळाइ सुखकार॥
- ८ हळुकर्मी सुण हरखीया, कर्म कट्या अधिकाय।
छेहड़ै ए पकवान री, कोथली रूप कहाय॥
- ९ त्याग करावां तेहनैं, सुखे मोख मैं जाय।
इम टोटौ मेटण अवर नौं, नूहत मांगा इण न्याय॥

ढाळ : ४१

(धीज करै सीता सती रे लाल)

- १ स्वाम भीखु बुद्धि-सागरूरे लाल, निरमळ मेल्या न्याय रे। सुगुण नर।
सुविनीत सुण हरखै सही रे लाल, अविनीत नैं असुहाय रे। सुगुण नर।
सुणजो दृष्टंत स्वामी तणां रे लाल॥
- २ अविनीत साधु ऊपरै रे लाल, दीधौ स्वाम दृष्टंत। रे सुगुण नर।
एक साहुकार नीं असतरी रे लाल, पांणी काजै गइ धर खंत। रे सुगुण नर। सुण.

१. जानकारी।

२. न्यौता।

३. मिटाने के लिए।

४. ज्ञाति (सम्बन्धी) समूह।

- ३ बेहड़ौ^१ तौ माथै पांणी सूं भर्यौ^२ रे लाल,
माराग मै तिणरी वाहिली^३ मिली रे लाल,
४ एक घड़ी तांइ तौ ऊभां थकां रे लाल,
पछै घर आवी निज पीउ भणी रे लाल,
५ तुरत घड़ौ उतारौ मुझ सिर तणौ रे लाल,
बेहड़ौ उतार्यौ तिण बैर^४ नौ रे लाल,
६ कहै म्हारै माथै तौ बेहड़ौ उदक नौ रे लाल,
थानै तो मूळ सूझै नहीं रे लाल,
७ संसार तणै लेखै सही रे लाल,
रसतै एक घड़ी बेहड़ा छतां रे लाल,
८ किंचित जेज^५ पीउ करी रे लाल,
इसड़ी अजोग ते असतरी रे लाल,
९ अविनीत साधू एहवौ रे लाल,
किणहि बाइ भाइ सूं वातां करै रे लाल,
१० अथवा दर्शन देवा कोई भणी रे लाल,
तिहां ऊभां घणी वेळा लगै रे लाल,
११ वड़ा थोड़ोई काम भळावीयां रे लाल,
तथा पांणी राख्यौ ते लेवा मेलीयां रे लाल,
१२ अथवा जातौ दोहरौ हुवै रे लाल,
गुर शीख दीयै चूकती^६ पड़्यां रे लाल,
१३ अविनीत साधु नै दीधी ओपमा रे लाल,
इम सांभळ उत्तमां नरां रे लाल,
१४ वले विनीत-अविनीत री चोपी विषै रे लाल,
संखेप थकी कहूं छूं सही रे लाल,
१५ अविनीत नै थावरीयां नौ ओपमा रे लाल,
पुत्र हुसी 'पुन्य-आगलौ^७' रे लाल,

पोता रै घर आवतां पेख रे सुगुण नरा।
वातां करवा लागी विसेख रे सुगुण नरा। सुण.
हिलमिल वातां करी हरखाय रे सुगुण नरा॥
तिण हेलौ पाड़्यौ ताय रे सुगुण नरा॥ सुण.
जो किंचित वेला थी भरतार रे सुगुण नरा।
तौ क्रोध मै आई अपार रे सुगुण नरा॥ सुण.
सो हूं भार्या मूंड घणी सोय रे सुगुण नरा।
जिण सूं वेळा इतरी लगाई जोय रे सुगुण नरा। सुण.
नार इसी अविनीत रे सुगुण नरा।
पोतै बातां करी धर पीत रे सुगुण नरा॥ सुण.
तड़का-भड़का करवा लागी तांम रे सुगुण नरा।
अविनीत जग कहै आंम रे सुगुण नरा॥ सुण.
गोचरीयादिक माहि रे सुगुण नरा।
एक घड़ी तांइ ऊभां ताहि रे सुगुण नरा॥ सुण.
झट चलायनै परहो जाय रे सुगुण नरा।
वातां करै-वणाय वणाय रे सुगुण नरा॥ सुण.
करतां कठमठाठा^८ करै जेह रे सुगुण नरा।
टाळाटोळौ^९ कर देवै तेह रे सुगुण नरा॥ सुण.
वले देवै मूंह विगाड़ रे सुगुण नरा।
तौ करै उळटौ फूंकार रे सुगुण नरा॥ सुण.
अविनीत अंस्त्री नौ भौखू आप रे सुगुण नरा।
थिर चित सुविनय थाप रे सुगुण नरा॥ सुण.
आख्या^{१०} दृष्टंत अनेक रे सुगुण नरा।
सांभळजो सुविवेक रे सुगुण नरा॥ सुण.
गर्भवती नै कहै डाकोय^{११} रे सुगुण नरा।
पाडोसण नै कहै पुत्री होय रे सुगुण नरा॥ सुण.

१. दो घड़े।

२. सहेली।

३. पत्नी।

४. विलंब।

५. उत्तर-पड़ुत्तर।

६. टालमटोल।

७. भूल।

८. कहै है।

९. डाकोत/देशांतरिया/सनिचरिया/तेलिया

१०. पुण्यवान।

- १६ गुर-भगता श्रावक-श्राविका कनैरे लाल, गावै गुर रा गुणग्राम रे सुगुण नर।
 आपरै वस जाणै तिण कनैरे लाल, अवगुण बोलै ताम रे सुगुण नर॥ सुण.
- १७ कनै रहै साधू ते थकी रे लाल, वैर-बुधी ज्यूं जाण रे सुगुण नर।
 और अळगा रहै ते थकी रे लाल, हेत रखै सुविहांण रे सुगुण नर॥ सुण.
- १८ कूह्यां^१ कानां री कुती भणी रे लाल, काढ़ै घर सूं सहू कोय रे सुगुण नर।
 ज्यूं अविनीत जिहां जावै तिहां रे लाल, आदर मान न होय रे सुगुण नर॥ सुण.
- १९ भंडसूरी^२ कण छांडी नै भिष्टी भखै रे लाल, हरिया जव छांडी मृग पडै पास रे सुगुण नर।
 ज्यूं अविनीत विनय छाडी करी रे लाल, अविनय धारै उलास रे सुगुण नर॥ सुण.
- २० गधै घोड़ै गलियार^३ अविनीत डौ रे लाल, कूट्यां विण आधौ नहि चालै कोय रे सुगुण नर।
 ज्यूं अविनीत नै काम भळावीयां रे लाल, कह्यां नीठ-नीठ पार होय रे सुगुण नर॥ सुण.
- २१ बुटकनै^४ गधै मांमा बळद नै रे लाल, मरायौ कुबुद्धि सीखाय रे सुगुण नर।
 ज्यूं अविनीत री संगत कीयां रे लाल, भव-भव मै दुख पाय रे सुगुण नर॥ सुण.
- २२ वेस्या मुतलब थी पुरुषां नै रीझावती रे लाल, स्वार्थ न पूगां तुरत देवै छेह रे सुगुण नर।
 ज्यूं अविनीत मुतळब विनय करै घणौ रे लाल, स्वार्थ नहीं सझ्यां तोड़ै सनेह रे सुगुण नर॥ सुण.
- २३ बांध्यौ काळ्या री पाखती^५ गोरीयौ रे लाल, वर्ण नावै तौ पिण लखण आय रे सुगुण नर॥
 ज्यूं अविनीत री संगत करै रे लाल, तौ ऊ अविनय कुबुद्धि सीखाय रे सुगुण नर॥ सुण.
- २४ सौक रा सौक लोकां कनै रे लाल, अवगुण बोलै नै वांछै घात रे सुगुण नर।
 ज्यूं अविनीत वरतै गुरु थकी रे लाल, अवगुण-ग्राही साख्यात रे सुगुण नर॥ सुण.
- २५ कुजाति री त्रिया पिउ सूं लड़ी रे लाल, ताकै कूए कै ऊठै और साथ रे सुगुण नर।
 करै अविनीत क्रोध सूं सलेखणा रे लाल, कै गण छोड़ जुदौ होय जात रे सुगुण नर॥ सुण.
- २६ सोर ठंडौ हुवै मुख मै घालीयां रे लाल, तातौ अग्रि मै घाल्यां हुवै ताय रे सुगुण नर।
 ज्यूं वस्त्रादिक दीयां अविनीत राजी रहै रे लाल, स्वार्थ अण पूगां अवगुण गाय रे सुगुण नर॥ सुण.
- २७ सोर सोरीगर रा घर थकी रे लाल, दूरा रहै बुद्धिवांन रे सुगुण नर।
 ज्यूं अविनीत सूं अळगा रहै रे लाल, ते डाहा चतुर सुजाण रे सुगुण नर॥ सुण.
- २८ आछी वस्त घालै जो अग्रि मै रे लाल, ते छिन माहै होय जावै छार रे सुगुण नर।
 ज्यूं अविनय-अग्रि सूं गुण बळै रे लाल, अवगुण प्रगटै अपार रे सुगुण नर॥ सुण.

१. सड़े कान वाली।

२. सूअर।

३. दुष्ट/समर्थ होते हुए भी काम न देने वाला।

४. कान-कटा।

५. निकट।

२९ नाग खीजावै नान्हों जाण नैं रे लाल,
ज्यूं नाहं गुरनीं पिण निंघा कीयां रे लाल,
३० काळौ नाग कोप्यौ करै रे लाल,
'गुरु-चरण'^१ अप्रसन हुआं रे लाल,
३१ कदा अग्रि न बाळै मंत्र जोग सूं रे लाल,
कदा तालपुट विष पिण मारै नहीं रे लाल,
३२ कोइ वांछै सिर सूं गिर^२ फोड़वौ रे लाल,
कोइ भाला री अणी नैं मारै टाकरां^३ रे लाल,
३३ कदा गिरपिण फोड़ै कोइ मस्तके रे लाल,
कदा भालो न भेदै टाकर मारीयां रे लाल,
३४ ज्यूं काष्ट बूहो^४ जाय जल मझै रे लाल,
कुशिष अभिमानी क्रोधी आतमा रे लाल,
३५ गुर सीख दियै अविनीत नैं रे लाल,
ते डांडे करी 'ठेलै लिखमी आवती'^५ रे लाल,
३६ केइ हाथी घोड़ा अविनीत छै रे लाल,
तौ धर्म आचार्य रा अविनीत नैं रे लाल,
३७ अविनीत नर-नारी इण लोक मै रे लाल,
ते डांडै-शस्त्रे करी ताड़ीजता रे लाल,
३८ वले देव दांणव अविनीत छै रे लाल,
गुरु नां अविनीत नैं दुख अति घणौ रे लाल,
३९ विनीत अविनीत जातां वांट मै रे लाल,
अविनीत कहै-पग ए हाथी तणो रे लाल,
४० विनीत कहै-हथणी पिण काणी डावी आंख री रे लाल,
वले पुत्र-रत्न तिण री कूख मै रे लाल,
४१ एक बाइ प्रश्न आगै पूछीयौ रे लाल,
म्हारौ सुत प्रदेश ते मिलसी कदे रे लाल?

तौ ऊ घात पांमै ततकाल रे सुगुण नरा।
आपद पांमै असराल^१ रे सुगुण नरा॥ सुण.
जीव-घात सूं अधिक म जान रे सुगुण नरा।
अबोधि दुर्गत दुख खान रे सुगुण नरा॥ सुण.
कदा कोप्यौई सर्प न खाय रे सुगुण नरा।
पिण गुरु हेलणां सूं मुगति न जाय रे सुगुण नरा॥ सुण.
कोई सूतौई सीह जगाय रे सुगुण नरा।
ज्यूं गुरु नीं अशातना थाय रे सुगुण नरा॥ सुण.
कदा कोप्यौ सीह न खाय रे सुगुण नरा।
पिण गुरु हेलणां सूं सिव नाय रे सुगुण नरा॥ सुण.
ज्यूं अविनीत तांणीजै संसार रे सुगुण नरा।
धुरत मायावीयौ धार रे सुगुण नरा॥ सुण.
तौ ऊ क्रोध करै तिण वार रे सुगुण नरा।
साची सीख न सरधै लिगार रे सुगुण नरा॥ सुण.
दीसै प्रत्यख दुख रे सुगुण नरा।
कहौ हुवै किम सुख? रे सुगुण नरा॥ सुण.
विकलेंद्री सरीखा विपरीत रे सुगुण नरा।
अति दुख पांमै गुरु नों अविनीत रे सुगुण नरा॥ सुण.
दुखीया ते पिण देख रे सुगुण नरा।
काळ अनंत संपेख रे सुगुण नरा॥ सुण.
दोनूं जणा हथिणी रौ पग देख रे सुगुण नरा।
इण नैं ऊंधौ सूझै असेख रे सुगुण नरा॥ सुण.
ऊपर राजा री रांणी सहीत रे सुगुण नरा।
विवरा सुध बोल्थौ सुविनीत रे सुगुण नरा॥ सुण.
ऊभी सरवर पाळ रे सुगुण नरा।
कहै--अविनीत उण कियौ काळ रे सुगुण नरा॥ सुण.

१. अत्यधिक।

२. पग गुरु ना (क)

३. पर्वत।

४. मुट्ठी बंद करके उल्टी अंगुली से किया जाने वाला प्रहार।

५. बहता हुआ।

६. आती हुई लक्ष्मी को धकेलता है।

४२ हूं काटूं-बाढ़ूं जीभड़ली ताहरी रे लाल,
तूं धसकौ क्यूं न्हाखै पापी एहवौ रे लाल,
४३ पुत्र थारौ घर आवीयौ रे लाल,
इण रौ वचन म माने औ झूठौ घणौ रे लाल,
४४ ए दोनूं बोलां अविनीत झूठौ पड़्यौ रे लाल,
कहै मोनैं न भणायौ कपटे करी रे लाल,
४५ इहलोक मै गुर नां अविनीत री रे लाल,
तौ धर्म आचार्य रा अविनीत री रे लाल,
४६ नकटी बूटी^१ कुलहीणी नार नैं रे लाल,
जोगी भखरादिक तिण नैं आदरै रे लाल,
४७ नकटी-सरीखौ अविनीतड़ौ रे लाल,
तिण नैं आप सरीखौ आवी मिलै रे लाल,
४८ नकटी तौ जोवै भखरादिक भणी रे लाल,
जो असुभ उदै हुवै अविनीत रे लाल,
४९ सौ वार पांणी सूं कांदा धोविया रे लाल,
घणौ उपदेश दै गुर अविनीत नैं रे लाल,
५० अविनीत उझिया भोगवती जिसौ रे लाल,
गुरु गण सूंपै सुविनीत नैं रे लाल,
५१ किण ही गाय दीधी च्यार विप्रां भणी रे लाल,
पिण चारौ न नीरै लोभी थका रे लाल,
५२ गाय सरीखा आचार्य मोटका रे लाल,
शिष मिल्या ब्राह्मण सारिखा रे लाल,
५३ आहार-पांणी आदि व्यावच तणी रे लाल,
एहवा अविनीतां रे वस गुर पड़्या रे लाल,
५४ ब्राह्मण तौ एक भव मझै रे लाल,
गुरु ना अविनीत रौ कहिवौ किसू रे लाल,
५५ गर्ग आचार्य नैं मिल्या रे लाल,
तिण रौ विस्तार तौ छै घणौ रे लाल,

तूं विरुऔ बोलै केम? रे सुगुण नरा।
जब विनीत कहैछै एम रे सुगुण नरा॥ सुण.
आज मिलसी तौसूं निसंक रे सुगुण नरा।
इणरै जीभ वेरण रौ बंकरे सुगुण नरा॥ सुण.
पछै गुर सूं झगड़्यौ आय रे सुगुण नरा।
गुर पूछ निरणौ कियौ ताय रे सुगुण नरा॥ सुण.
अकल बिगड़ गई एम रे सुगुण नरा।
ऊंधी अकल रौ कहिवौ केम रे सुगुण नरा॥ सुण.
परहरी निज भरतार रे सुगुण नरा।
उवा पिण जाअै उण लार रे सुगुण नरा॥ सुण.
तिण सूं निज गुरु न धरै प्यार रे सुगुण नरा।
तब पांमै हरख अपार रे सुगुण नरा॥ सुण.
अविनीत जोवै अजोग रे सुगुण नरा।
मिल जाय^३ सरीखौ संजोग रे सुगुण नरा॥ सुण.
विरुइ न मिटै वास रे सुगुण नरा।
पिण 'मूळ न लागै पास' रे सुगुण नरा॥ सुण.
रखीया रोहिणी जिसौ सुविनीत रे सुगुण नरा।
पूरी तिण री प्रतीत रे सुगुण नरा॥ सुण.
ते वारै - वारै दूहै ताय रे सुगुण नरा।
तिण सूं दुखे-दुखे मुंड गाय रे सुगुण नरा॥ सुण.
दूध सरीखौ ज्ञान अमोल रे सुगुण नरा।
ते ज्ञान लीयै दिल खोल रे सुगुण नरा॥ सुण.
न करै सार संभाळ रे सुगुण नरा।
त्यां पिण दुखे-दुखे कीयौ काळ रे सुगुण नरा॥ सुण.
फिट-फिट हुआ इहलोक रे सुगुण नरा।
पीड़ा विविध परलोक रे सुगुण नरा॥ सुण.
पांच सौ शिष अविनीत रे सुगुण नरा।
'उत्तराधेन'^४ माहै संगीत रे सुगुण नरा॥ सुण.

१. नाक कान कटी हुई।

२. जावै (क)

३. बिल्कुल रंग नहीं चढ़ता।

४. उत्तराध्ययन अ. २७।

५६ एकल थकी पिण बुरौ अविनीतड़ै रे लाल,
 सांमद्रोही सेवग सारिसौ रे लाल,
 ५७ छळ-बळ खेलै चोर ज्यूं रे लाल,
 चरचा-उपदेश तिण रौ अति बुरौ रे लाल,
 ५८ और साधां रा काढ़ै ग्रहस्थ खूंचणा रे लाल,
 अंतरंग में जाणै आप रौ रे लाल,
 ५९ गुणग्राम गावै सुविनीत रा रे लाल,
 निज आपौ परगट करै रे लाल,
 ६० और साधां री आसता उतारवा रे लाल,
 गुरु सीख देवै खामी-मेटवा रे लाल,
 ६१ जिण नैं आप तणौ करै रागियौ रे लाल,
 अभिमांनी अविनीत नीं रे लाल,
 ६२ सुविनीत रा समजावीया रे लाल,
 अविनीत रा समजावीया रे लाल,
 ६३ समझाया सुविनीत अविनीत रा रे लाल,
 ज्यूं तावड़ौ नैं छांहड़ी रे लाल,
 ६४ अविनीत नैं अविनीत मिलै रे लाल,
 ज्यूं डाकण राजी हुवै रे लाल,
 ६५ डाकण मारै मनुष नैं रे लाल,
 डाकण चोर राजा तणी रे लाल,
 ६६ लंपट रूप-गृद्धी फिट-फिट हुवै रे लाल,
 ज्यूं अविनीत गृद्धी घणौ खाण रौ रे लाल,
 ६७ ए अविनीत साधू ओळखावियौ रे लाल,
 वले श्रावक नैं श्राविका तणी रे लाल,
 ६८ साध-साधवीयां री निंदा करै रे लाल,
 सूंस कराय ग्रहस्थ भणी रे लाल,
 ६९ केई श्रावक खावै घर तणौ रे लाल,
 पिण अविनीतपणौ छूटौ नहीं रे लाल,

१. दो मन वाला।

२. चाटुकारिता।

साधां रा गण माहै जान रे सुगुण नरा।
 दुमनौ^१ चाकर दुसमण समान रे सुगुण नरा॥ सुण।
 छिद्री थकौ रहै टोळा माहि रे सुगुण नरा।
 फाड़ा-तोड़ा काजै करै ताहि रे सुगुण नरा॥ सुण।
 तिण सूं बात करै दिल खोल रे सुगुण नरा।
 तिण नै सीखावै चरचा बोल रे सुगुण नरा॥ सुण।
 तौ अविनीत सूं सद्दा नहि जाय रे सुगुण नरा।
 म्हांनै तो ललपल^२ न सुहाय रे सुगुण नरा॥ सुण।
 आपौ प्रगट करै मूढ रे सुगुण नरा।
 तौ सांहमौ मंड जाए करै छोटी रूढ रे सुगुण नरा॥ सुण।
 संका औरा री घाल रे सुगुण नरा।
 एहवी छै ऊंधी चाल रे सुगुण नरा॥ सुण।
 'साल दाळ ज्यूं'^३ भेळा होय जाय रे सुगुण नरा।
 कोकला^४ ज्यूं कानी थाय रे सुगुण नरा॥ सुण।
 फेर कितोयक होय रे सुगुण नरा।
 इतरौ अंतर जोय रे सुगुण नरा॥ सुण।
 ते पामै घणौ मन हरख रे सुगुण नरा।
 चढवा नैं मिलियां जरख रे सुगुण नरा॥ सुण।
 औ करै समगत री घात रे सुगुण नरा।
 ओ तीर्थकर नो चोर विख्यात रे सुगुण नरा॥ सुण।
 जे न गिणै जाति कुजात रे सुगुण नरा।
 विकळां नैं मूंडै विख्यात रे सुगुण नरा॥ सुण।
 इमहिज साधवी जाण रे सुगुण नरा।
 तिमहिज करजौ पिछांण रे सुगुण नरा॥ सुण।
 अवगुण बोलै विपरीत रे सुगुण नरा।
 त्यांरी भौळा मांनै परतीत रे सुगुण नरा॥ सुण।
 केयक मांगै खाय रे सुगुण नरा।
 तौ गरज सैर नहीं काय रे सुगुण नरा॥ सुण।

३. चावल-दाल।

४. सूखा हुआ काचरा।

७० त्यांनै दीधा मैं पुन्य परूपीयां रे लाल,
साधु पाप परूपै त्यांरा दान मैं रे लाल,
७१ कोई अविनीत हुवै साध-साधवी रे लाल,
जो अविनीत श्रावक सांभळै रे लाल,
७२ साधां नैं आय वंदणा करै रे लाल,
त्यांनै श्रावक-श्राविका म जांणजो रे लाल,
७३ तिण श्री जिन धर्म न ओळख्यौ रे लाल,
आप छांदै माठी मति ऊपजै रे लाल,
७४ मोटो उपगार मुंनी तणौ रे लाल,
एहवा अविनीत साधु श्रावक ऊपरै रे लाल,
७५ कोई सर्प पड़्यौ उजाड़ मैं रे लाल,
तिण सर्प री अनुकंपा करी रे लाल,
७६ ते सर्प सचेत थयां पछै रे लाल,
जो ऊ 'लुंठौ' हुवै तौ उनै दाब दे रे लाल,
७७ सर्प सरीखा अविनीत मानवी रे लाल,
त्यां नैं समगत चारित पमायनै रे लाल,
७८ एहवौ उपगार कीयौ तिकौ रे लाल,
उळटा अवगुण बोलै तेहनां रे लाल,
७९ आहारपांणी वस्त्रादिक कारणै रे लाल,
इण नैं उपरलो हुवै तौ दाबै डंड दै रे लाल,
८० सर्प नैं मिश्री दूध पायां पछै रे लाल,
ज्युं औ समगत चारित्र लीयां पछै रे लाल,
८१ वले खाणा-पीणा रौ हुवौ लोळपी रे लाल,
छेरवीयां सूं साहमौ मंडै रे लाल,
८२ तिण नैं दूर करै तौ दुसमण थको रे लाल,
असाध परूपै सगळा साध नैं रे लाल,

स्वान ज्युं पूंछ हलाय रे सुगुण नरा।
तौ लागै अभ्यंतर लाय रे सुगुण नरा॥ सुण.
कदा गुर दै लोकां नैं जताय रे सुगुण नरा।
तौ तुरत कहै तिण नैं जाय रे सुगुण नरा॥ सुण.
साधवीयां नैं न वांदै रुड़ी रीत रे सुगुण नरा।
ते तौ मूढमती छै अविनीत रे सुगुण नरा॥ सुण.
वले भण-भण करै अभिमान रे सुगुण नरा।
तिण नैं 'लागौ नहीं गुरु कान' रे सुगुण नरा॥ सुण.
कृतघ्नी कीधौ न गिणंत रे सुगुण नरा।
भीक्खू आख्यौ एक दृष्टंत रे सुगुण नरा॥ सुण.
चेत नहीं सुद्ध काय रे सुगुण नरा।
दूध मिश्री घाली मुख माय रे सुगुण नरा॥ सुण.
आडौ फिरियो आय रे सुगुण नरा।
काचौ है तो दै डंक लगाय रे सुगुण नरा॥ सुण.
एकल फिरै ज्युं 'ढोर रुळियार' रे सुगुण नरा।
कीधौ मोटौ अणगार रे सुगुण नरा॥ सुण.
ततकाल भूलै अविनीत रे सुगुण नरा।
उण रै सर्प वाळी छै रीत रे सुगुण नरा॥ सुण.
ते पिण झूठौ झगड़ौ जोय रे सुगुण नरा।
आषौ काढै तो उलटो भांडै सोय रे सुगुण नरा॥ सुण.
डंक दै ते 'गेरी' सर्प देख रे सुगुण नरा।
हूऔ साधां रौ वेरी विसेख रे सुगुण नरा॥ सुण.
आप रा दोष नहीं सूझै मूळ रे सुगुण नरा।
वलै क्रोध करै प्रतिकूल रे सुगुण नरा॥ सुण.
बोलै घणौ विपरीत रे सुगुण नरा।
तिणरै गेरी सर्प नीं रीत रे सुगुण नरा॥ सुण.

१. गुरु की शिक्षा कानों में नहीं पड़ी।

२. बलवान।

३. बिना मतलब इधर-उधर घूमने वाला पशु।

४. दुष्ट।

८३ सुगुरासापनै दूध पायां थकां रे लाल, ऊ करै पाछौ उपगार रे सुगुण नर।
तिण नै धन देई धनवंत करै रे लाल, वले दीठां हुवै हरख अपार रे सुगुण नर॥

भाव सुणो सुविनीत रा रे लाल॥

- ८४ केइ आप छांदै फिरै एकला रे लाल, पिण सरल परिणामी सुद्ध रीत रे सुगुण नर।
तिण नै समझाय समकत चारित दीयौ रे लाल, ते आज्ञा पाळै रूढ़ी रीत रे सुगुण नर॥ भाव.
- ८५ तिण रै समकत नै संजम बिहुं रे लाल, रुचिया अभ्यंतर सार रे सुगुण नर।
चलावै ज्युं चालै छांदौ रूंध नै रे लाल, ज्यां सूं करै पाछौ उपगार रे सुगुण नर॥ भाव.
- ८६ मोटो उपगार त्यांरौ किम वीसरै रे लाल, सूपै सर्व देही त्यांरै काज रे सुगुण नर।
त्यांरौ दर्शण देख हरखत हुवै रे लाल, सर्व काम मै धोरी ज्युं समाज रे सुगुण नर॥ भाव.
- ८७ वले गामां-नगरां फिरतां थकां रे लाल, सदा-काळ करै गुण ग्राम रे सुगुण नर।
ते सुविनीत गुण-ग्राही आतमा रे लाल, त्यांनै वीर बखाण्यां तांम रे सुगुण नर॥ भाव.
- ८८ शिष सुविनीत नै सोभती रे लाल, ओपमा दीधी अनेक रे सुगुण नर।
सूत्र-न्याय भीक्खू स्वामजी रे लाल, सांभळजो सुविसेख रे सुगुण नर॥ भाव.
- ८९ भद्र कित्याणकारी घोड़े चढ्यां रे लाल, असवार रै हरख आणंद रे सुगुण नर।
ज्युं सीख दीयां सुविनीत नै रे लाल, गुरु पांमै परमानंद रे सुगुण नर॥ भाव.
- ९० सुविनीत हय देखी चाबखो^१ रे लाल, असवार रै गमतौ चालंत रे सुगुण नर।
चाबखा रूप वचन लागां बिना रे लाल, सुविनीत वर्ते चित शांत रे सुगुण नर॥ भाव.
- ९१ अग्रिहोत्री ब्राह्मण सेवै अग्रि नै रे लाल, घृतादिक सोंची करै नमस्कार रे सुगुण नर।
सुविनीत सेवै इम गुरु भणी रे लाल, केवळी छतौ पिण अधिकार रे सुगुण नर॥ भाव.
- ९२ सुविनीत हय-गय नर-नारी सुखी रे लाल, सुखी देव दानव सुरीत रे सुगुण नर।
ते तौ पूर्व पून्य ना प्रभाव सूं रे लाल, दीसै लोक मै विनय सुरीत रे सुगुण नर॥ भाव.
- ९३ केइ पेट-भराइ सिल्प कारणे रे लाल, संसार नां गुरु कनै सोय रे सुगुण नर।
राजादिक नां कुंवर डांडादिक सहै रे लाल, करडा वचन सहै नर्म होय रे सुगुण नर॥ भाव.
- ९४ तौ सिद्धंत भणावै ते सतगुर तणौ रे लाल, किम लोपै विनयवंत कार रे सुगुण नर।
समगत चारित्र पमावीयौ रे लाल, औ उतकष्टौ उपगार रे सुगुण नर॥ भाव.
- ९५ धर्म रूप वृक्ष रौ विनय मूळ छै रे लाल, बीजा गुण शाखादिक सम जाण रे सुगुण नर।
तिण सूं शीघ्र वृद्धि कीर्त-सूत्र नीं रे लाल, 'दशवैकालिक नवमां रे दूजे वाण'^२ रे सुगुण नर॥ भाव.

१. चाबुका।

२. दशवैकालिक अ. ९ उ. २ गा. १।

१६ वृक्ष नौ मूळ सूकां छतां रे लाल,
 ज्यूं विनय मूळ धर्म विणसीयां रे लाल,
 १७ एहवौ विनय गुण वर्णव्यौ रे लाल,
 अविनय नै अळगौ करौ रे लाल,
 १८ अविनीत रा भाव सांभळी रे लाल,
 केइ कुगुरु सुध- बुद्धि-बाहिरा रे लाल,
 १९ विनीत रा गुण सांभळी रे लाल,
 तौ पिण कुगुरु हरखत हुवै रे लाल,
 १०० ते समझै नहीं जिन-धर्म मैं रे लाल,
 ते ब्रत-विहंणा नागड़ा रे लाल,
 १०१ हाल देखी हंसली तणी रे लाल,
 पिण बुगली सूं चाल आवै नहीं रे लाल,
 १०२ कुगुरु साधां नै देखी करी रे लाल,
 आडंबर कर विनय करावता रे लाल,
 १०३ कोयल रा टहुका सुणी करी रे लाल,
 सोभाग सुण सतीयां तणां रे लाल,
 १०४ सांगधारी कुसतीयां काग सरिखा रे लाल,
 ठाला^१ बादळ ज्यूं थोथा गाजता रे लाल,
 १०५ गयवर नी गति देखनै रे लाल,
 ज्यूं भेषधारी देखी साध नै रे लाल,
 १०६ ते पिण विनय करावण रा भूखा घणा रे लाल,
 मिथ्या-दृष्टि ते मूळगा रे लाल,
 १०७ त्यां ठाम-ठांम थानक बांधीया रे लाल,
 ते पिण नाम धरावै साध रौ रे लाल,
 १०८ पोपांबाई रा राज मैं रे लाल,
 ज्यूं विकळ सेवग स्वामी मिल्या रे लाल,

शाखा पान फळादिक सूक जायरे सुगुण नरा।
 सगळाई गुण विललाय रे सुगुण नरा॥ भाव।
 सांभळ नै नर नार रे सुगुण नरा।
 करौ विनय धर्म अंगीकार रे सुगुण नरा॥ भाव।
 अविनीत बहु दुख पाय रे सुगुण नरा।
 ते पिण हरखत थाय रे सुगुण नरा॥ भाव।
 विनीत रै आनंद औछाव रे सुगुण नरा।
 विनय करावण चाव रे सुगुण नरा॥ भाव।
 आज्ञा अण आज्ञा ओळखै नांय रे सुगुण नरा।
 प्रतख प्रथम गुणठाणै देखाय रे सुगुण नरा॥ भाव।
 बुगली पिण काढी चाल रे सुगुण नरा।
 ए दृष्टंत लीजौ संभाळ रे सुगुण नरा॥ भाव।
 ते पिण करवा लागा अभिमांण रे सुगुण नरा।
 नहीं सरधा आचार रौ ठिकाण रे सुगुण नरा॥ भाव।
 क्रां क्रां शब्द करै काग रे सुगुण नरा।
 कुडै^२ कुसतीयां अथाग रे सुगुण नरा॥ भाव।
 असुद्ध सरधा आचार रै माहि रे सुगुण नरा।
 विनय करावता लाजै नाहिं रे सुगुण नरा॥ भाव।
 भुसै स्वान ऊंचा कर कांन रे सुगुण नरा।
 स्वान ज्यूं कर रद्दा तांन रे सुगुण नरा॥ भाव।
 साथी सीप सींगोट्यां रा सोय रे सुगुण नरा।
 त्यांनै ओळखै बुद्धिवंत लोय रे सुगुण नरा॥ भाव।
 थापे जीव खवायां पुन्य रे सुगुण नरा।
 सेवलौ नहिं^४ सूझै समकत सुन्य रे सुगुण नरा॥ भाव।
 नव तूंबा तेरै नेगदार^५ रे सुगुण नरा।
 एहवौ भेषधार्यां रै अंधार रे सुगुण नरा॥ भाव।

१. जुं (क)।

२. कूडै (क)।

३. जल रहित।

४. न (क)।

५. नेग (भेंट) पाने के अधिकारी।

१०९ वस्त्र-पात्र अधिका राखता रे लाल, आडा जड़ै कमाड़ रे सुगुण नरा।
 मोल लिया थानक माहै रहै रे लाल, इसडी थाप निरंतर धार रे सुगुण नरा॥ भाव।
 ११० आज्ञा बारै पुन्य सरधता रे लाल, आज्ञा मैं पाप समाज रे सुगुण नरा।
 काचौ पांणी पायां पुन्य सरधता रे लाल, प्रत्यख पोपांबाई रौ राज रे सुगुण नरा॥ भाव।
 १११ ते समज न पडै श्रावकां भणी रे लाल, ज्यांरा मत माहै मोटी पोल सुगुण नरा।
 पिण आंधां नैं मूळ सूझै नहीं रे लाल, तांबा ऊपर झोळ रे सुगुण नरा॥ भाव।
 ११२ कुगुरु निषेध्यां अविनीतड़ै रे लाल, ऊंधा अर्थ करै विपरीत रे सुगुण नरा।
 ते सतगुरु नैं कुगुरु कहै रे लाल, नहीं विनय करण री नीत रे सुगुण नरा॥ भाव।
 ११३ उण सूं विनय कियौ जावै नहीं रे लाल, तिण सूं बोलै कपट सहीत रे सुगुण नरा।
 कहै विनय कह्यौ छै सुद्ध साध नौ रे लाल, इणरै भ्यंतर खोटी नीत रे सुगुण नरा॥ भाव।
 ११४ साधा नैं असाध सरधायवा रे लाल, बोलै माया सहीत रे सुगुण नरा।
 तिण नैं बुद्धिवंत ह्वै ते ओळखै रे लाल, औ पूरै मतै अविनीत रे सुगुण नर? भाव।
 ११५ कहै-आचार मैं चूकै घणां रे लाल, म्हां सूं विनय कियौ किम जाय रे सुगुण नर?
 ते बुद्धि-हीण जीव बापड़ा रे लाल, न जाणै सूतर - न्याय रे सुगुण नरा॥ भाव।
 ११६ बुकस पडिसेवणा भेळा रहै रे लाल, अवधि मनपर्यव केवळी अवंक रे सुगुण नरा।
 ते भेळा आहार करता संकै नहीं रे लाल, इण नैं विनय करतां आवै संकरे सुगुण नरा॥ भाव।
 ११७ देखौ अंधारौ अविनीत रै रे लाल, निज अवगुण सूझै नांय रे सुगुण नरा।
 विनय नौ तौ गुण पोतै नहीं रे लाल, तिण सूं पर तणौ औगुण देखाय रे सुगुण नरा॥ भाव।
 ११८ दर्शण-मोह उदय घणौ रे लाल, पूरौ विनय कियौ नहीं जाय रे सुगुण नरा।
 ओळखै अवगुण आपरौ रे लाल, ए उत्तमपणौ सुहाय रे सुगुण नरा॥ भाव।
 ११९ ते कहै केवळी बुकस भेळा रहै रे लाल, मोह बळ्यौ तिण सूं नावै लैहर रे सुगुण नरा।
 लैहर आवै चित थिर नहीं रे लाल, ते जाणै निज कर्म रौ जैहर रे सुगुण नरा॥ भाव।
 १२० बुकस पडिसेवणा कदै नहीं मिटै रे लाल, तीनूड काळ रै माय रे सुगुण नरा।
 दोयसौ कोड सूं घटै नहीं रे लाल, चित अथिर सूं ते न मिटाय रे सुगुण नरा॥ भाव।
 १२१ ज्यांरै सूत्र तणी नहीं धारणा रे लाल, प्रकृति अतिघणी अजोग रे सुगुण नरा।
 ते थोड़ा मैं रंग-विरंग हुवै रे लाल, मोटौ दर्शनमोह रोग रे सुगुण नरा॥ भाव।
 १२२ केकारै दर्शनमोह तौ दीसै घणौ रे लाल, पिण सैणा घणा बुद्धिवांन रे सुगुण नरा।
 ते गुरु नैं सुणाय निसंक हुवै रे लाल, ज्यारै समगति रौ जोखो मत जाण रे सुगुण नरा॥ भाव।
 १२३ दोष री थाप गुरां रै नहीं रे लाल, दोष रा डंड री थाप रे सुगुण नरा।
 और री कीधी थाप हुवै नहीं रे लाल, इम जाण निसंक रहै आप रे सुगुण नरा॥ भाव।

- १२४ इम सांभळ उत्तमां नरां रे लाल, राखौ देव गुरां री प्रतीत रे सुगुण नरा।
 आसता राख आगै घणां रे लाल, गया जमारौ जीत रे सुगुण नरा॥ भाव.
 १२५ वरण-नाग नतूआ तणौ रे लाल, मित्र तर्यो प्रतीत सूं पेख^१ रे सुगुण नरा।
 तौ^२ उत्तम पुरुषां री प्रतीत सूं रे लाल, तिर्या तिरै नै तिरसी अनेक सुगुण नरा॥ भाव.
 १२६ भीक्खू स्वाम कह्या भला रे लाल, दीपता वर दृष्टंत रे सुगुण नरा।
 केयक तौ सूत्रे करी रे लाल, केयक बुद्धि उपजंत रे सुगुण नरा॥ भाव.
 १२७ उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे लाल, स्वाम भीक्खू नीं सार रे सुगुण नरा।
 स्वाम गुणां नीं पोरसौ रे लाल, स्वाम शासन सिणगार रे सुगुण नरा॥ भाव.
 १२८ स्वाम दिशावान दीपतौ रे लाल, स्वाम तणी वर नीत रे सुगुण नरा।
 आसता तास न आदरै रे लाल, ते अपछंदा अविनीत रे सुगुण नरा॥ भाव.
 १२९ भीक्खू दीपक भरत मैं रे लाल, प्रगट्यौ बहु जन भाग रे सुगुण नरा।
 स्वाम भीक्खू गुण संभरूं रे लाल, आवै हरख अथाग रे सुगुण नरा॥ भाव.
 १३० ढाळ भली इकचाळीसमीं रे लाल, आख्या दृष्टंत अनेक रे सुगुण नरा।
 भीक्खू स्वाम प्रसाद थी रे लाल, 'जय-जश' करण विसेख रे सुगुण नरा॥ भाव.

१. चेड़ा-कौड़िक के संग्राम में युद्ध करते समय घायल होने पर [वरुण - चेटक के रथिक नाग का दोहित्र, एकांत में जाकर अनशनयुक्त शुभ भावों के साथ मरण प्राप्त कर स्वर्ग में उत्पन्न हुआ। उसके मित्र ने भी श्रद्धापूर्वक उसी तरह किया, जिससे वह मरकर मनुष्य जाति में उत्पन्न हुआ। फिर महाविदेह में जन्म लेकर सिद्ध बुद्ध होगा।

(भगवई श.७ उ. ९ सूत्र १९२ से २११)

२. तै (क)।

दूहा

- १ इत्यादिक दृष्टंत अति, सूत्र - न्याय वलि सार।
सखरा मेल्या स्वामजी, भीक्खू बुद्धि भंडार॥
- २ अनुकंपा रै ऊपरै, करणी पढम गुणठांण।
इन्द्रीवादी ऊपरै, बहु दृष्टंत वखांण॥
- ३ पोत्याबंध ऊपर प्रत्यख, प्रज्यायवादि पिछांण।
काळवादी की चउपई, दृष्टंत त्यां बहु जांण॥
- ४ व्रत - अव्रत री चउपई, अरु सरधा आचार।
जिण आज्ञा पर जुक्ति सूं, सखरा हेतू सार॥
- ५ टीकम डोसी कच्छ नौ, सूक्ष्म पूछा सोय।
जाब दीया अति जुक्ति सूं, ऋष भीक्खू अवलोय॥
- ६ भीक्खू नाम कह्यौ भलौ, सूत्रां मैं बहु ठाम।
भेदे कर्म भणी भलौ, गुण निप्पन्न तुझ नाम॥
- ७ पंच महाव्रत अंक पंच, बार व्रत नां बार।
अव्रत बारै अंक धर, त्रिकरण जोग प्रकार॥
- ८ इण विध मांड वतावतां, हेतु न्याय अनेक।
आप दिखाया अधिक ही, वर्णवै केम विसेख॥
- ९ दाख्या ते दृष्टंत नीं, संकलना सुविसाल।
कहूं छूं संक्षेपे करी, 'सूचा - मात्र' संभाळ॥

ढाळ : ४२

(डाभ मूंजादिक नीं डोरी)

- १ पांच सौ मण चणा पिछांण, पंच सीर्यां रा हेतू ते जांण।^१
डोकरा नै चणां सेर दीधूं, पीस पोय जल सूं तृप्त कीधूं।^२
- २ 'आखा पज्जूसणा^३ मैं न आलै', चोड़ै परंपरा थित चालै।^३
माता वेस्या नै तैं जळ पायौ, पाप छै पिण सरीखा न थायौ॥

१. सूची रूप।

२. विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें-व्रतां को लेखो (जयगणिकृत)

३. पर्यूर्षण के दिनों में आखा/अक्षत/अनाज नहीं देते हैं।

- ३ तिम श्रावक कसाइ न सरिखौ, पाप सुणी कोई मत भिड़को^१।
चदर ले गयौ तसकर एक, एक दीधी प्राछित किण रो पेख^२॥
- ४ थारा धणी रौ नांम नाथू होय? कहै - क्यांनै नाथू हुवै सोय^३।
मूळा दीयां कांइ हुवै त्यां नै, पूछ्यौ अमरसिंघजी रा साधां नै^४॥
- ५ पड़िया तसकर नै आफू^५ खवायौ, ते तौ सेठ नों वैरी छै ताह्यौ^६।
खेत पाकां करसणी रै बाळौ, तिण रौ रोग मेट्यां फळ न्हाळौ^७॥
- ६ ममता ऊतरी कहै प्रसीधी, दस वीगा खेती किण नै दीधी^{१०}।
सावज्ज दांन रा तूं करै त्याग, म्हानै भांडवा नै कै वैराग^{११}?॥
- ७ जल लोट्यौ सूपजो म्हारै हाट, ज्यूं पुन कहै सांनी^{१२} रै वाट^{१३}।
पडिमाधर नै दीयां स्यूं होय? लेण वाळा नै ते अवलोय^{१४}॥
- ८ कोई काचौ पांणी किण नै पावै, कोई पारकी खाई^{१५} लुटावै^{१६}।
धन दीयौ अव्रती नै ताहि, लाय मासूं न्हाख्यौ लाय माहि^{१७}॥
- ९ घृत - तंबाकू भेळ्यां न मेळ, ज्यूं व्रत अव्रत मै नहीं भेळ^{१८}।
आंख जीभ ओषध रौ दूष्टंत, व्रत-अव्रत पर उपजंत^{१९}॥
- १० सोर अग्रि न्यारा सूं न न्हास^{२०}, ज्यूं व्रत अव्रत जूजूआ तास^{२१}।
सोमल मिश्री पसारी रै न्यार, व्रत अव्रत जुआ^{२२} विचार^{२३}॥
- ११ कहै ग्रहस्थ रौ है छंद, छांदा माहै तौ धूल है मंद^{२४}।
खांड घृत मैदौ खरा होय, ज्यूं चित्त वित्त पात्र सुजोय^{२५}॥
- १२ थानै असाध जाणै दीयां दांन, उत्तर, खाधी मिश्री विष जान^{२६}।
आक थोड^{२७} रौ दूध असुद्ध, सावज दया अनुकंपा न सुद्ध^{२८}॥
- १३ लाय बुझायां मिश्र थापंत, तौ नाहर मार्यां न पाप एकंत^{२९}।
वले कुरणा घणा री आंण, कसाइ नै मार्यां मिश्र जाण^{३०}॥
- १४ वले उरपर नै मारै विसेख, तिण मै पिण मिश्र छै त्यारै लेख^{३१}।
वले अटवी बालंतो जाणै, तिण नै मार्यां मिश्र क्युं न माणै^{३२}॥

१. अफीम।

२. इशारा।

३. परकोटे के बाहर सुरक्षा की दृष्टि से बनाई गई जल से भरी खाई।

४. नाश (क)।

५. अलगा।

६. थोर (क)।

- १५ कतल करतौ तुरकादिक ताय, तिण नैं मार्यां मिश्र त्यारै न्याय^{२८}।
 गायदिक हिंसक जीव संघारै, त्यांनै मार्यां मिश्र क्यूं नहिं धारै^{२९}।
 १६ पासी काटै^१ ते धर्मी कहिवायौ, तौ थारा गुरु न काटै किण न्यायो^{३०}?
 चोर ग्यारां मैँ एक छौडायौ, तिण रौ सेठ प्रत्यख फल पायो^{३१}॥
 १७ उरपर खाधौ उजाड़ रै माह्यौ, मंत्रवादी झाड़ौ दे वचायौ^{३२}।
 साधां सुणायौ श्री नवकार, आज्ञा मैँ किसौ छै उपकार^{३३}॥
 १८ साहुकार नीं अस्त्र्यां दोय, एक रोवै न रोवै ते जोय।
 कहौ साधुजी किण नै सरावै, संसारी रै मन कुंण भावै^{३४}?
 १९ मोहकमसींग जी पूछ्यौ महाराज! आप गमता लागौ किण काज?।
 नार हरखै कासीद नै निरख, तिम सिव मग नौ यारै हरख^{३५}॥
 २० तुझ आंगुण^३ काढै है ताय^{३६}, थारा मुंहढौ देख्यां नरक जाय^{३७}।
 ताकड़ी डांडी रौ दृष्टंत^{३८}, कहै ओघा भणी वांदंत^{३९}॥
 २१ गुण गोळी सीरा सूं सोभाय^{४०}, एक भागां पांचूं किम जाय^{४१}।
 करौ थानक म्हे कद आख्यौ, सीरौ करौ जमाई न दाख्यौ^{४२}॥
 २२ सखरी मुझ करौ सगाई, डावरै कद कह्यौ छै ताहि^{४३}?
 जती रै उपासरौ कहाय, मथेण रै पोसाल है ताय^{४४}॥
 २३ झालर सुण स्वान रुदन करंत, विहाव री मुंआ री न जाणंत^{४५}।
 दुख नीं रात्रि मोटी दिखाय, सुख रात्रि छोटी दीसै ताय^{४६}॥
 २४ गांम रै गोरवै खेती वाइ, गधा न पड़्या है तौ ठैहराई^{४७}।
 करड़ा दृष्टंत कहौ किण न्याय, करड़ौ रोग फूजाळ्यां न जाय^{४८}॥
 २५ गौहां री तौ दाळ हुवै नांहि, अल्प बुद्धि न समझै ताहि^{४९}।
 आप री भाषा नहीं ओळखाय, पोतै लिख्यौ वच्यौ नहीं जाय^{५०}॥
 २६ गो-पगडांडी पाखंड मग ताहि, जिण माग रस्तौ पातसाई^{५१}।
 पाग चोरी मूदौ न पौहचाय^३, झूठौ ठाम-ठाम *अटकाय^{५२}॥
 २७ साधां सूंस करायौ सोय, भांग्यां साधु नैं पाप न होय।
 कपड़ौ वेच नफौ लीयौ सार^{५३}, साधु नै घृत दीयौ उदार^{५४}॥
 २८ वैरागी वैराग चढ़ावै, कसूंबो गळियां रंग पमावै^{५५}।
 कहै-म्हे जीव वचावां, ए ठागौ, चोकी छोड़ चोर्यां करवा लागौ^{५६}॥

१. काढै (क)।

२. अवगुण (क)।

३. पौंचाय (क)।

४. अटक जाय (क)।

- २९ ऋषपाल जिम छै तिम राखै^{५७}, पूरौ न पळै पंचम-काळ भाखै।
 तेलौ तीन दिनं रौ ते काळ, हिवड़ा पिण तीन दिवस नों न्हाळ^{५८}॥
- ३० दिख्या लेऊं पिण आंसू तौ आय, जमाई रोयां सोभ न पाय^{५९}।
 बाल-विधवा देखी लोक रोय, तिण रा कांम-भोग वांछै सोय^{६०}।
- ३१ डावरा रै माथै दीयां द्वेष, लाडू दीधौ ते राग संपेख^{६१}।
 जाटणी रौ उदक जाच्यौ जाय, चारौ नीर्यां दूध दै गाय^{६२}॥
- ३२ और गण रौ थारै माहै आय, तिण नैं दिख्या देइ लेवौ माय^{६३}।
 नरक मै जाय कुंण तसुं तांणै? पत्थर नैं कुए तळि कुंण आंणै^{६४}॥
- ३३ कुंण स्वर्ग ले जावै ताय? काष्ट जल पर कुंण ठहराय^{६५}?
 पइसौ डूबै, वाटकी तिराय, संजम तप सूं हळकौ इम थाय^{६६}?
 ३४ पात्रा रै रंग कुंथवा दोहरा, काळा लाल सूं देखणा सोहरा^{६७}।
 म्हारै केलू सूं रंगवा रा भाव, कचौ केलू छोड़ै किण न्याव^{६८}?
 ३५ कुजागा रा करै एक माथै, एक करज मेटै निज हाथै^{६९}।
 चोर हिंसक कुसीळिया तीन, त्यांरा तीन दृष्टंत सुचीन^{७०}॥
- ३६ कीड़ी नैं कीड़ी जाणै ते नांण, पिण कीड़ी ज्ञान मत जाण^{७१}।
 साधु थाका नैं गाडै बैसांण, किणहि गधै बैसाण्यौ जाण^{७२}।
- ३७ पुन्य मिश्र ऊपर अवलोय, किण री एक पूर्यी किण री दोय^{७३}।
 पोळ बारी खोली दिशा बार, देखी हेम नैं उत्तर उदार^{७४}॥
- ३८ थोथा चणा री भखागी विख्यात, उंदरां रड़बड़ की सारी रात^{७५}।
 कोयलां री राब वासण काळा, वले आंधा जीमण परुसण वाळा^{७६}॥
- ३९ तारं काढौ, काढै तार कांइ! थानैं डांडा ही सूझै नाहीं^{७७}।
 वाय-वंग घरटी उड्यै जाय, दोष थाप्यां संजम किम ठहराय^{७८}?
 ४० एकलडौ जीव कहै किण लेख, त्यांरै लेखै ही चौलडौ देख^{७९}॥
 वस्त्र श्रृंखलां सी परिसह थी भाजै, तो अन सूं प्रथम रहै किण लाजै^{८०}॥
- ४१ श्वेताम्बर शास्त्र थी गृह छंड, तिण सूं राखां छां तीन सुमंड^{८१}।
 अनार्य कहै दया नैं रांड, करै कपूत माता नैं भांड^{८२}॥
- ४२ डाकणीया डरै गारडू आयां, साधु आयां पाखंडी भय पाया^{८३}।
 कड़वा पकवानं जुर सूं कहाय, मिथ्या जुर सूं साधू न सुहाय^{८४}॥

- ४३ बांधी बाळ्यां किम तेजरा तोडै? चारित्र वैराग विण किम जोडै^{९७}?
 दीयौ तीन नावां नौं दृष्टंत, सुगुर-कुगुर ऊपर सोभंत^{९८}॥
- ४४ भेषधारी पिण तप करै ताय, मोटौ देवाळौ केम मिटाय^{९९}॥
 वणी वणाइ ब्राह्मणी री वात, सांप्रत तिण रा साथी साख्यात^{१००}॥
- ४५ सूत्र वांचै छेहडै हिंस्या थाप, छेहडै मोर्या मारू ज्यूं किलाप^{१०१}॥
 पत्थर खेस्यो तिण नै काई होय, तिण रै हाथ आयो ते तूं जोय^{१०२}॥
- ४६ खेमासाह र घर रै नैहतौ होय, द्रव्य साध यानैं कहां सोय^{१०३}॥
 साध-असाध कुंण कहौ वाय? नागा ढकीया कितरा गांम माय^{१०४}?
 ४७ वले कुण देवाळ्यौ साहुकार, लखण वतावूं करलौ विचार^{१०५}॥
 दीयौ कुणका पर पग तीन बार, खांमी छै पिण तिण सूं न प्यार^{१०६}
- ४८ दीयौ सेतखाना रो दृष्टंत, छिद्रपेही ऊपर दाखंत^{१०७}॥
 हेम पछेवडी कही अधिकाय, तिण नैं कठिण शीख समजाय^{१०८}॥
- ४९ सोभाचंद नै कह्या सुद्ध न्याय, पाषाण नै सोनौ न कहाय^{१०९}॥
 नैहत मांगौ आप किण न्याय? सुता ब्याहव में मित्र बोलाय^{११०}॥
- ५० अविनीत त्रिया नौं पिछांण, अविनीत साधु ऊपर जांण^{१११}॥
 कह्या संखेप थी अल्प मात, पाछै वर्णवी सगळी वात॥
- ५१ चौपी विनीत-अविनीत री तास, आसरै तिण सूं हेतु पचास॥
 ते इक्ताळीसमी ढाळ मै आख्या, तिण कारण इहां न भाख्या॥
- ५२ इत्यादिक कह्या हेतु अनेक, पूरा कह्या न जाय विसेख॥
 हुआ भीक्खू ओजागर ऐसा, सांप्रत काळ मै श्री जिन जैसा॥
- ५३ तसुं भजन चिंतामण सरखौ, प्रत्यक्ष पारस भीक्खू नै परखौ॥
 म्हारै प्रबल भाग्य प्रमाण, इण काळ अवतरीया आंण॥
- ५४ नित्य समरण कर नर-नार, सुख-संपति कारण सार॥
 दुख-दोहग टाळणहार, इह भव पर भव सुखकार॥
- ५५ निमल ज्ञान नेत्रे करि निरख्यौ, पूज भिक्खू विवध कर परख्यौ॥
 वर पूरौ है तसुं विश्वास, अति वंचत पूरण आस॥
- ५६ बयाळीसमीं ढाळ विमास, सुद्ध दूजौ खंड सुप्रकाश॥
 स्वामी जय-जश करण सुहाया, प्रबल भाग बले भिक्खू पाया॥

कलश

१ दृष्टंत वारू अधिक चारू, स्वाम ना ज सुहांमणा।
भव उदधि तारण जग उधारण, ऋष भीक्खू रळीयामणा॥
सुख वृद्धि संपति दमन दंपति, भरम भंजन अति भलौ।
हद बुध हिमागर सुमति सागर, नमो भीक्खू गुणनिलौ॥

इति श्री भीक्खु जश रसायणे द्वितीयः खंडः॥

तृतीय खण्ड सोरठा

१ आख्यौ द्वितीय खण्ड रे, अ सि आ उ सा^१ नै प्रणम।
मुनि-वर्णन महि मंड रे, तीजौ खण्ड निसुणौ तुम्हे॥

दूहा

- २ चारित^२ लीधौ चूँप सूँ, पाखंड-पंथ निवार।
भवीयण रै मन भावता, हूआ मोटा अणगार॥
- ३ 'उदै-उदै पूजा^३' कही, समण-निग्रंथ नीं जांण।
तिण सूँ पूज प्रगट थया, ए जिण वचन प्रमांण॥
- ४ ओपम तो आछी कही, समण निग्रंथ नैं श्रीकार।
चोरासी अति दीपती, सूत्र अणुजोगदुवार मझार^४॥
- ५ वले 'दसमां अंग अधिकर मै^५', कही तीस ओपमा तंत।
समण भीक्खू नैं सोभती, भाख गया भगवंत॥
- ६ वले षट् दस दीधी ओपमा, बहुश्रुती नैं श्रीकार।
'उत्तराधेन इग्यारमें^६', श्री वीर कह्यौ विस्तार॥
- ७ इण अणुसारै औळखौ, भीक्खू नैं भली भंत।
ओपम गुण आछा घणा, तिण रौ पार न कोइ पामंत॥
- ८ गुणवंत गुर नां गुण गावतां, तीर्थकर नाम-गोत बंधाय।
हिंवै ओपम सहित गुण वर्णवूं, ते सुणजो चित ल्याय॥

१. अ-अरिहंत, सि-सिद्ध, आ-आचार्य, उ-उपाध्याय, सा-साधु।

२. मुनि वैणीराम जी (२८) कृत 'भिक्षु-चरित' की चौथी ढाळ है। जयाचार्य ने इसको इसी रूप में 'भिक्षु जश रसायण' में नामोल्लेखपूर्वक स्थान दिया है।

३. उत्तरोत्तर पूजा (पञ्जोसवणा कप्पो सूत्र ९१)

४. अनुयोगद्वार-४

५. प्रश्न व्याकरण, अध्ययन १०, सूत्र ११।

६. उत्तराध्ययन, अ. ११, गा. १५ से ३०।)

ढाळ : ४३

(हरिया नै रंग भरिया जी नीला जिन निरखूं नैण सूं)

- १ आदिनाथ आदेसर जी जिणेसर जग-तारण गुरु।
धर्म आदि काढी अरिहंत।
इण दुखम औरै कर्म कटीयाजी, परगटीया आदि जिणंद ज्यूं।
ओ इचर्य^१ इधक आवंत।
साध भीक्खू सुखदाया जी, मन भाया भवियण जीव नैं॥ध्रुवपद॥
- २ स्याम वरण अति 'सोवै जी, मन मोवै^२' नेम जिणंद ज्यूं।
त्यांरी वाणी अमीय समांण।
भवियण नैं मन भाया जी, चित चाया तीरथ च्यार मै।
मुनि गुण रतना री खांण। साध.
- ३ काळवादी आदि जांणी जी, मत आंणी मारग उथापवा।
'कुबद्धां केलवीया कूर^३'।
अै 'पाखण्ड घोचा^४ पोचा^५ जो कांड, ज्ञान करै^६ गिरवा मुनि।
चरचा कर कीया चकचूरा साध.
- ४ संख उजल श्रीकारीजी, पयधारी दोनूं दीपता।
नहीं बिगड़ै दूध लिगार।
ज्यूं थे तप-जप किरिया कीधी जी, कर लीधी आतम ऊजळी।
पय 'दश जती धर्म^७ धार साध.
- ५ कंबोज देश नौ घोड़ै जी, अति सोरो करै सिरदार नैं।
'नहीं आंणै अहिल^८ लिगार'।
ज्यूं भवियण नै थे तार्या जी, ऊतार्या पार संसार थी।
सुखे जासी मोख मझार साध.

१. आश्चर्य।

२. सोहै जी मन मोहे (क)।

३. कुबुद्धि वाले व्यक्तियों ने मिथ्या प्रचार किया।

४. पाखंड (शास्त्र विरुद्ध आचरण करने) वाले तिनके।

५. कमजोर।

६. करी (क)।

७. क्षांति, मुक्ति आदि।

८. धक्का नहीं लगने देते।

- ६ सूर-सिरोमणि साचो जी, नहीं काचौ लड़तां कटक^१ मैं।
सुविनीत अश्व-असवार।
ज्यूं कर्म-कटक 'दळ^२ दीधौ' जी, जश लीधौ जाझो^३ जगत मैं।
चढ सुतर अश्व श्रीकार। साध.
७ हाथी-हथण्यां परवारै जी, बळ धारै दिन-दिन 'ही वधै^४'
बधै साठ वरस सुध मानं।
ज्यूं थे तयाळी वरस लग जाझा जी, तप ताजा तेज तीखा रह्या।
प्राक्रम पिण परधानं॥ साध.
८ वृषभ सींग खंध भारी जी, सिरदारी गायां-गण मझै।
थेट भार वहै भली भंत।
ज्यूं थे गण-भार थेट निभाया जी, चलाया तीरथ चूप सूं।
सहु साधां मैं सोभंत॥ साध.
९ सिंघ मृगादिक नौं राजा जी, तप ताजा डाढा तेज सूं।
जीव न जीपै जोया।
ज्यूं आप केसर^५ नी परै गूंज्या जी, धूज्या पाखंड^६ धाक सूं।
थांसूं गंज^७ न सकै कोय॥ साध.
१० वासुदेव बळ जाण्यो जी, बखाण्यौ वीर सिधंत मैं।
संख चक्र मदा धरणहार।
ज्यूं थांरा ग्यांन दरसन चारित्र तीखा जी, नहीं फीका त्यां कर तेज सूं।
पूज पाखण्ड दीयौ निवार॥ साध.
११ आखा भरत नौं राजा जी, अति ताजा सेन्या सझ करी।
आणै वैर्यां नौ अंत।
ज्यूं थे पाखंड सहु ओळखाया जी, हटाय बुध उतपात सूं।
तत्त्व बताया तंत॥ साध.

१. सेना।

२. पछाड़ दिया।

३. बहुत।

४. दीपतौ (क)।

५. केशरी (सिंह)।

६. पाखंडी (क)।

७. जीत।

- १२ सकइन्द्र^१ सिरदारी जी, वज्रधारी सुर मैं सोभतो।
जखादिक जीपै जांण।
ज्यूं सुतर वज्र श्रीकारीजी, बळधारी बुध उतपात सूं।
पूज पाडी पाखंड री हांण॥ साध.
- १३ आइच्च^२ उगां आकासै जी, विणासै तिमर^३ तेज सूं।
इधिको करै उद्योत।
ज्यूं थे अज्ञान अंधार मिटयौ जी, बतायौ मारग मुगत रो।
घण-घट^४ घाली जोत॥ साध.
- १४ चंद सदा सुखकारी जी, परिवारी ग्रह नां गण मझै।
सोमकारी^५ सोभंत।
ज्यूं च्यार तीरथ सुखदाया जी, मन भाया भवियण जीव रै।
भीक्खू भला जसवंत॥ साध.
- १५ लोक घणां आधारी जी, अति भारी धांनांकर भर्यो।
ते कोठागार कहाय।
ज्यूं ज्ञानादिक गुण भरीया जी, परवरीया पूज परगट थया।
आधार भूत अथाय॥ साध.
- १६ सर्व वृक्षां मैं अत सोवै जी, मन मोवै दीसै दीपतौ।
जंबू सुदरसण जांण।
ज्यूं संतां मैं सिरदारी जी मत भारी भीक्खू भरत मैं।
उपना इचर्यकारी आंण॥ साध.
- १७ सीता नंदी सिरै जांणी जी, वखांणी वीर सिधंत मैं।
पांचसै जोजन प्रवाह।
ज्यूं तप-तेज अति तीखा जी, नहीं फीका, रह्याज फाबता^६।
सदा-काळ सुखदाय॥

१. शक्रेन्द्र-प्रथम देवलोक का इन्द्र।

२. आदित्य (सूर्य)।

३. अंधकार।

४. अनेक व्यक्तियों के हृदय में।

५. शान्तिकारी।

६. शोभित होते हुए।

- १८ मेरू नीं ओपम आछी जी, नहीं काची कही किरपाळ जी।
ते ऊंचौ घणौ अत्यंत।
ओषद अनेक छाजै जी, विराजै गुण त्यां मैं घणा।
ज्युं अै बहुश्रुति बुधवंत॥ साध.
- १९ 'स्वयंभूरमण समुद्र रूड़ो जी, पूरो पाव-राज पिहुलो पड़्यौ'^१
प्रभूत^२ रत्न भरपूर।
सागर जेम गंभीरा जी, सूरवीरा गुण कर गाजता।
सूतर चरचा मैं सूर॥ साध.
- २० अै षट् दस ओपम आछी जी, कांइ साची सूतर मैं कही।
बहुश्रुति नैं श्रीकार।
इण अनुसारै जाणो जी, पिछांगौ करल्यौ पारिखा।
भीक्खू गुण भंडार॥ साध.
- २१ ओपम अनेक गुण छाज्या जी, विराज्या गादी वीर नीं।
पूज पाट लायक गुण पाय।
समुद्र जेम अथागा जी, जल थागा जिण कह्यौ नहीं।
ज्युं गुण पूरा केम कहिवाय? साध.
- २२ पाट लायक शिष भाळी जी, सुंहाळी प्रकति सुंदरू।
भारमलजी गैहर गंभीरा।
पदवी थिर कर थापी जी, आ आपी आचार्य तणी।
जांणे सुविनीत सधीर॥ साध.

१. स्वयंभूरमण समुद्र पाव (एक रज्जु का चौथा भाग) रज्जु चौड़ाई वाला है। असंख्य योजन का एक रज्जु होता है।

२. विपुल।

दूहा

- १ भाग बली भीक्खू तणै, संत हुआ गण माहि।
वर्णन संखेपे पवर, आंखू धर ओछाहि॥
- २ केयक पंडित मरण कर, कीधौ जन्म कल्याण।
कर्म-जोग केयक टळ्या, सुणजो चतुर सुजाण॥
- ३ बड़ा संत भीक्खू थकी, जनक-सुतन वर जोड़।
पिता स्वाम 'धिरपालजी', 'फतेचंद' सुत मोड़॥
- ४ वड़ा टोळा में था बिहुं, राख्या वड़ा सुरीत।
सरल भद्र बिहुं श्रमण सुध, पूरी तसुं प्रतीत॥
- ५ तपसी तप करता बिहुं, शीत उष्ण वरसाळ^१।
वड़ वैरागी विनय वर, रूड़ा मुनि ऋषपाल॥
- ६ निरहंकारी निर्मळा, निर्लोभी निकलंक।
हळुआ कर्म उपधि करि, आर्जव उभय अवंक^३॥
- ७ शीतकाल अति शीत सहै, पछेवड़ी परिहार।
जन निशि देखी जांणीयौ, अँ तपसी अणगार॥
- ८ कोटै आप पधारीया, महिपति आवणहार।
सांभळ ने ते संत बिहुं, ततक्षण कियौ विहार॥
- ९ निज आत्म तारण निपुण, वारु वेपरवाह।
तप मुद्रा तीखी घणी, चित इक शिव पद चाह॥

ढाल : ४४

(राणी भाखै हे दासी सांभळ बात)

- १ संत दोनूं हो सोभै गुणवंत वनीत २, त्यां सूं प्रीत पूरण भीक्खू तणी।
भीक्खू सेती हो ज्यारै पूरण प्रीत २, गुणग्राही आत्म घणी॥
- २ पद आचार्य हो, भीक्खू बुद्धि नां भंडार २, जन बहु देखतां युक्ति सूं।
आप मूंकी हो पद नौं अहंकार २, कर जोड़ वंदणा करै भक्ति सूं॥

१. स्थानकवासी संप्रदाय में दोनों संत दीक्षा में बड़े थे।

२. वर्षा ऋतु (चतुर्मास काल)

३. सरल।

- ३ किण टोळा नां हो, तुम्हे संत कहिवाय २, इण विध लोक पूछै घणा।
 मानं मूकी हो, बोलै बिहुं मुनिराय २, म्हे भीखनजी रा टोळा तणां॥
- ४ प्रश्न चरचा हो त्यां नै कोइ पूछंत २, तौ संत दोनूं इम भाखता।
 भीक्खू भाखै हो तेहिज जाणजो तंत २, रुडी आसता भीक्खू नीं राखता॥
- ५ म्हांनै तो हो, पूरी खबर न काय २, भीखनजी नैं पूछी निरणौ करौ।
 सुध जाणौ हो, तेहिज सत्य वाय २, प्रगट कहै इम पाधरौ॥
- ६ त्यांरा तप नों हो, अधिकौ विस्तार २, कायर सुण कं पै घणा।
 अति पांमै हो, सूरु हरख अपार २, संत दोनूंइ सुहांमणा॥
- ७ संजम पाळ्यौ हो, बहु वर्स श्रीकार २, विचरत 'बरलू' आवीया।
 धर्म-मूर्ति हो, ज्ञानी महा गुणधार २, हलुकर्मौ हरषावीया॥
- ८ सुद्ध तपसा हो फतै चंदजी सैंतीस २, अधिक कियौ तप आकरौ।
 वारु करणी हो, ज्यांरी विसवावीस २, क्षांति गुणे मुनिवर खरौ॥
- ९ पिता दीधौ हो तसुं पारणौ आंण २, ठंडी घाट बाजरी तणी।
 फत्ता! करले हो पारणौ पहिछांण २, सरलपणैं कहै सुत भणी॥
- १० निरममती^१ हो सुत संत निहाल २, प्रगट अपथ^२ कीयौ पारणौ।
 कर गयौ हो तिण जोग सूं काळ २, सुमती जन्म सुधारणौ॥
- ११ इकतीसे हो, वर्से समत अठार २, फतैचंद फतै कर गया।
 निरमोही हो तात निमळ निहार २, थिर चित संजम अति थया॥
- १२ मुनि आयौ हो खेरवा सैहर माहि २, सलेखणा मंडीया सही।
 चिहुं मासे हो, पारणा चित चाहि २, आसै चउद किया वही॥
- १३ थिर चित सूं हो मुनिवर थिरपाल २, बर्स बत्तीसे^३ विचारीयौ।
 कर तपसा हो मुनि कर गयौ काळ २, जीतब जन्म सुधारीयौ॥

१. ममत्व रहित।

२. अपथ्य भोजन।

३. मुनि थिरपालजी का स्वर्गवास शासन विलास तथा ख्यात में सं. १८३२ कार्तिक कृष्ण ११ के दिन हुआ लिखा है। किन्तु १८३२ मृगसर बदि ७ के लिखत तथा १८३२ जेठ सुदि ११ के लिखत में उनके हस्ताक्षर हैं। और गुमानजी लूणावत (पीपाड़) द्वारा लिखित पोथे में श्रावक नेमीदास जी कृत

ढाल है। उसमें मुनि थिरपाल जी का सं. १८३३ कार्तिक बदि ११ के दिन स्वर्गवास हुआ, यह मिलता है। यह ढाल खेरवा में बनाई गई है। उस वर्ष मुनिश्री का चतुर्मास खेरवा में था। उनके साथ मुनि सुखजी तथा तिलोकजी थे। इन्ही सभी प्रमाणों के आधार पर १८३३ ही सही लगता है।

- १४ जोड़ी जुगती हो, तात-सुतन जिहाज, स्वाम भीक्खू रा प्रसाद थी।
 पंडित मरणौ हो, ओ तो भवदधि पाज २, पाम्या है परम समाधि थी।
- १५ सखरी भाखी हो, चौमाळीसमीं ढाळ २, स्वाम भीक्खू गुण सागरू।
 वारु करवै हो जय जश सुविशाल २, अधिक गुणां रा आगरू॥

दूहा

- १ समत अठार बतीस मैं, भीक्खु बुद्धि-भंडार।
प्रकृति देख साधां तणी, लिखत कीयौ तिण वार॥
- २ सहु साधां नैं पूछ नैं, बांधी इम मर्यादा।
सुखे संजम पाळण भणी, टाळण कलेश उपाध॥
- ३ पद युवराज समापीयौ, भारीमाल नैं जांण।
सर्व साधु नैं साधवी, पाळजो यांरी आंण॥
- ४ भारमलजी री आज्ञा थकी, विचरवौ शेषै काळ।
चोमासौ करिवौ तिकौ, आज्ञा ले सुविशाळ॥
- ५ दिख्या दैणी अवर नैं, भारीमाल रै नांम।
पिण आज्ञा लीधां बिनां, शिष नहीं करणौ तांम॥
- ६ इच्छा हुवै भारीमाल री, शिष गुरु भाई सोय।
पदवी देवै तेहनै, तसुं आज्ञा अवलोय॥
- ७ एक तणी आज्ञा मझै, रहिवौ रूढ़ी रीत।
एहवी रीत परंपरा, बांधी स्वाम वदीत॥
- ८ टोळा मां सूं कोइ टळै, एक दोय दे आद।
धुरत बुगलध्यानी हुवै, तिण नैं न गिणवौ साध॥
- ९ तीर्थ मै गिणवौ न तसुं, चिउं संघ नों निंदक-जांण।
एहवा नैं वांदै तिके, आज्ञा बार पिछांण॥

ढाळ : ४५

(पांडव बोलै बोल)

- १ एहवौ लिखत अमांम, 'सखर मर्यादा हो बांधी स्वांमजी।
नीचे साधां रा नांम, कठिण संजम नैं हो पाळण कांमजी॥
- २ मेटण कलेश मिथ्यात, थिर चित थाप्पण हो मर्यादा थुणी।
वारु बुद्धि विख्यात, सुगुण सुबुद्धि हो हरख पांमैं सुणी॥
- ३ अपछंदा अविनीत, दोषण काढ़ै हो इण मर्याद मैं।
कुबुद्धि कहै कुरीत, अवगुण ग्राही हो आत्म असमाध मैं॥

- ४ विगड्यौ पछै 'वीरभाण', आज्ञा लोप्यां सूं हो स्वामी अळगौ कियौ।
 'पाछै कह्यौ' प्रबंध पहिछांण', दर्शन मोह पिण हो तिण नैं दबावीयौ॥
- ५ 'टोकरजी' तंतसार, हाजर रहीता हो स्वामी 'हरनाथजी'।
 संत दोनूं सुखकार, वर जश वारु हो तास विख्यात जी॥
- ६ 'भारीमाल' नै भाळ, पद युवराज हो पूज समापीयौ।
 संत बड़ा सुविशाल, दंभ मेटी नैं हो थर चित थापीयो॥
- ७ सोम्य मूर्ति सुखकार, स्वाम प्रसंस्या हो अंत्य समैं सही।
 साज थी संजम सार, कीति भीक्खु हो आप मुखे कही॥
- ८ बगड़ी सैहर विसेख, स्वाम टोकरजी हो संथारो लीयौ।
 देश दूंदार मैं देख, हद संथारो हो हरनाथ जी कीयौ॥
- ९ स्वाम भीक्खु रै प्रसाद, संत दोनूंई हो जन्म सुधारीयौ॥
 उपजै मन अहिलाद, समरण साचौ हो अति सुख कारीयौ॥
- १० भारीमाल युवराज, सेव स्वामी नौ हो अंत तांई सिरै।
 पदवीधर भव पाज, अणसण आछौ हो वर्स अठंतरै॥
- ११ 'लिखमैजी' संजम लीध, कर्म प्रभावे हो गण सूं न्यारौ थयौ।
 'पडिवाइ कहौ कद सीध', देसूंण अद्ध पुद्गल हो उत्कृष्ट जिन कह्यौ१॥
- १२ 'अखेरामजी' सुमंड, स्वाम भीक्खु पे हो संजम आदर्यौ।
 भेषधार्यां नें छंड, सुध मन सेती हो पवर चरण धर्यौ॥
- १३ पारख जाति पिछांण, पारख साची हो थे पूर्ण करी।
 लोहावट नां सुजांण, चरण आराध्यौ हो थिर चित आदरी॥
- १४ धर तप छेहड़ै धिन्न, छतीस तेला हो चोला मैं चलता रह्या।
 अखै दीवाली दिन्न, वर्स इकसठे हो परभव मैं गया॥
- १५ 'अमरोजी' छूटक धार, पंच काया थी हो अभवी अनंत गुणा।
 अभवी थी अधिकार, ज्ञानी देवां भाख्या हो पडिवाइ अनंत गुणा॥
- १६ संत बड़ा 'सुखराम'३, वासी लोहावट ना हो पोत्याबंध वही।
 समझाया भीक्खु स्वाम, सुर-तरु सरिखौ हो चरण लियौ सही॥

१. पूर्वोक्त ढाल ८ गा. २१, २२, २३।

२. जो प्राणी सम्यक्त्व से गिर जाता है, वह प्रतिपाती सम्यक्दृष्टि कहलाता है। वह उत्कृष्टतः अर्ध पुद्गल परावर्तन काल में मुक्त होता है,

ऐसा भगवान् ने कहा है।

३. शासन विलास और ख्यात के अनुसार 'अखेरामजी' और अमरोजी से सुखरामजी बड़े थे।

- १७ देव-मूरत सम देख, धुनि ईर्या नीं हो निरमळ धारणा।
 वारू चरण विसेख, सोम्य सुप्रकृति हो महा सुख कारुणा॥
- १८ आसरै बयांलीस वास, निरमळ चारित्र हो स्वामी गुणनिलो।
 बासठै वरस विमास, दिवस पचीसै हो अणसण अति भलौ॥
- १९ स्वाम भीक्खू साख्यात, तत्त्व ओळखाइ हो बहु जन तारीया।
 वर्णवीयै स्यूं वात, स्वाम सोभागी हो महासुखकारीया॥
- २० समरूं हूं दिन रैन, याद आया सूं हो हिवड़ौ उल्लसै।
 चित माहि पामूं चैन, वंछित पूरण हो तुं मुझ मन वसै॥
- २१ पांच चाळीसमीं ढाळ, समण सोभाया हो भजन वंछित फलै।
 'जय-जश' करण विशाल, समरण संपति मन चिंतत मिलै॥

सोरठा

- १ छूटक 'तिलोकचंद'^{१२} रे, वासी चेलावास रा।
चंद्रभाण कर फंद रे, जिलौ^१ बांधनै फटावीया॥
२ 'मोजीराम'^{१३} गण माय रे, सुध मन सूं संजमलीयो।
कर्मा दीयौ धकाय रे, ते पिण छूटक जांणजो॥

दूहा

- ३ 'सिवजी'^{१४} स्वामी सोभता, स्वाम तणा सुविनीत।
पिंडतमरण कियौ पवर, गया जमारो जीत॥

सोरठा

- ४ जाति चोरड़िया जांण रे, पुर नां वासी पिछांण जो।
चारित्र 'चंद्रभाण'^{१५} रे, सुध मन सूं संजम लीयौ॥
५ भण्या बुधि भरपूर रे, पिण प्रकृति अहंकार नी।
अविनय अवगुण भूर^२ रे, आज्ञा कठण आराधवी॥
६ जिलौ बांधीयौ जांण रे, तिलोकचंद सूं तुरत ही।
मन मै अधिकौ मांण रे, साध फटाया अवर ही॥
७ संत अवर समझाय रे, स्वांम भीक्खू सिंघ सारिखा।
एक-एक नैं ताय रे, छोड्या बिहुं नैं जूजूआ॥
८ अवगुण अधिक अजोग रे, त्यां बोल्या भीक्खू तणा।
प्रत्यक्ष कषाय प्रयोग रे, असाध परूण्या स्वाम नैं॥
९ भीक्खू बुद्धि भंडार रे, सुध मन सूं समझावीया।
प्रायश्चित कर अंगीकार रे, पाछा आया गुण मझै॥
१० सहु नैं किया निसंक रे, आया डंड अंगीकरी।
विरुऔ यामैं वंक रे, प्रत्यक्ष लोकां पेखीयौ॥
११ समणी संत समाध रे, किण नैं डंड न ठहरावीयो।
सहु नैं कह्या असाध रे, त्यां रा इज पग वांदीया॥

१. दलबंदी।

२. बहुत।

- १२ मान घणौ घट माहि रे, बिगड़ी तिण सूं बातड़ी।
प्रायश्चित नहीं ले ताहि रे, बिहुं नैं साथे छोड़ीया॥
- १३ वर्णन बहु विस्तार रे, रास^१ माहि भीक्खू रच्यौ।
अल्प इहां अधिकार रे, दाख्यौ म्हैं प्रस्ताव थौं॥
- १४ अणंदै^{१६} बिना विचार रे संधारौ कीधौ सही।
चौविहार चित्त धार रे, गांम 'वीठौरै' पूज गण॥
- १५ ऊपनी^{१७} तृखा अपार रे, सतरै दिन सूं नीसर्यौ।
सैणा करै संधार रे, तिण सूं पहिला तोल नैं।
- १६ 'पनजी'^{१७} छूटक पेख रे, 'संतोषचंद'^{१८} 'सिवराम'^{१९} नैं।
चंद्रभाणजी देख रे, दोनूं भणी फटावीया॥
- १७ केइ पोतै हुआ न्यार रे, केका नैं दूरा कीया।
अपछंदा अवधार रे, त्यानैं चारित्र दोहिलौ॥

ढाळ : ४६

(दलाली लालन की)

- १ नीत निपुण 'नगजी'^{२०} निरमल, 'कूंड्या'^{२१} ना वसवान।
संधारौ कर कारज सार्या, कीधौ जन्म कल्याण।
सुविनीत शिष आय मिल्या,
धिन धिन हो भीक्खू थारा भाग।
सुखदाइ शिष आय मिल्या ॥ध्रुवपद॥

२ सांम रांम बूंदी नां वासी, जाति श्रावगी जांण।
जुगल जोड़लै दोनूं जाया, सोम्य भद्र सुविहांण॥ सुविनीत.

३ कर मनसोबौ आया केलवै, पूज भीक्खू पै तांम।
'आज्ञा साम'^{२१} भणी आपीनै, संजम दीवायौ रांम॥ सुविनीत.

४ इह अवसर मै श्रीजीदुवारे, साह भोपौ सुत सार।

~~नांम खेतसी निरमल नीकौ, थयौ संजम नैं त्यार॥ सुविनीत.~~

१. 'अविनीत रास'।

२. उपनी (क)।

३. वह गांव 'चित्तोड़' जिला (राजस्थान) में है।

४. मूल प्रति में साम के स्थान राम और राम के स्थान साम था, पर 'शासन विलास' आदि में पहले सामजी और फिर रामजी के दीक्षित होने का उल्लेख है, जो ठीक है। अतः यहां वैसा ही कर दिया गया है।

- ५ दोय व्याहव पहिली कर दीधा, तीजौ करता त्यारा।
उत्तम जीव खेतसी अधिकौ, इण रै वंछा न लिगार॥ सुविनीत।
- ६ बहिन दोय रावळिया ब्याही, जाय तिहां किण वार।
बहिन-बैनोई न्यातीला नै, समझावै सुखकार॥ सुविनीत।
- ७ विणज कस्त मुढ जैणा विध सूं, वर वैराग वधाय।
चित चारित लेवा सूं चढतौ, आज्ञा मांगी नहीं जाय॥ सुविनीत।
- ८ इसा विनीत तात ना अधिका, इतलै तिण पुर माह।
संजम लै रंगू सती रे, सांभळ्यौ भोपै साह॥ सुविनीत।
- ९ भोपौ साह कहै खेतसी भणी रे, चित तुझ लेण चरित्र।
कहै खेतसी बे कर जोड़ी, मुझ मन अधिक पवित्र॥ सुविनीत।
- १० आज्ञा हरष धरी नै आपी, वदै भोपौ साह वाय।
रगूंजी भेळा करौ रे, इण रा महुछव अधिकाय॥ सुविनीत।
- ११ अड़तीसै संजम आदरीयौ, भीक्खू ऋष रै हाथ।
विहार करी 'कोठ्यारै' आया, लारै तौ चल गयौ तात॥ सुविनीत।
- १२ भीक्खू पूछ्यां सतजुगि भाखै, मन चिंता किम मोय?
पहिली उवे अबै आप मिल्या पिय^१, विरह पड़्यौ नहि कोय॥ सुविनीत।
- १३ परम विनीत 'खेतसी^{२२}' प्रगट्या, स्वाम भणी सुखकार।
कार्य भळ्यां बे कर जोड़ी, तुरत करण नै त्यारा॥ सुविनीत।
- १४ कोमल-कठिन वचन कर भीक्खू, शीख दीयै सुखकार।
क्षांति-हरस कर धरै खेतसी, तहत^३ वचन तंत सार॥ सुविनीत।
- १५ हरष धरी रहै भीक्खू हाजर, अंतरंग प्रीत अपार।
सेव करी रीझाया स्वामी, सो जाण लिया तंत सार॥ सुविनीत।
- १६ सतजुग सरिसा प्रकृति विनय सूं, निमल सतजुगी नाम।
गण आधार खेतसी गिरवां^४, सरायो भीक्खू स्वाम॥ सुविनीत।
- १७ सतजुगि-चिरत^५ माहि छै सगलो, विवरा सुध विस्तार।
इहां संखेप^५ करीनै आख्यौ, संत वर्णन माहै सार॥ सुविनीत।

१. पिता।

२. ठीका।

३. गहरा/गंभीर।

४. चरित्र।

५. संक्षेप (क)।

- १८ पांच-पांच ना पवर थोकड़ा, वर किया बोहळी चार।
उत्कृष्टो तप दिवस अठारै, एक टक उदक आगार॥ सुविनीत।
- १९ उभा रहिवा री तपसा अति, एक पौहर उन्मान।
जे बहु वर्सा लग जाणजौ, खेतसीजी गुण खान॥ सुविनीत।
- २० शीत उष्ण मुनि सह्यौज^१ अधिकौ, सकल संघ सुखकार।
स्वाम सतजुगि संभर्यां रे, आवै हरख अपार॥ सुविनीत।
- २१ सतजुगी तणा प्रसंग थी रे, ते आगे चलसी विस्तार।
बे बहिन भांणेजे चारित्र लीधौ, छेहड़ा लग सुविचार॥ सुविनीत।
- २२ वर्स बावीस स्वाम नीं सेवा, आसरै वर्स अठार।
भारीमाल नी छेह लग भगती, अधिक हुवौ उपगार॥ सुविनीत।
- २३ संलेखणा छेहड़ै करी सखरी, सखरौ ही संथार।
भीखू भारीमाल पाछै परभव मै, असीये वर्स उदार॥ सुविनीत।
- २४ भीखू स्वाम प्रसाद थी रे, सतजुगी संजम सार।
पछै 'रामजी' संजम पचख्यौ, ओ भीखू तणौ उपगार॥ सुविनीत।
- २५ भीखू भांज्या भर्म घणां रा, भीखू भवदधि पाज।
भीखू दीपक भरत खेत्र नों, जगत उधारण जिहाज॥ सुविनीत।
- २६ भाग बली भीखू ऋष भारी, शिष मिलिया सुविनीत।
भीखू याद आवै निश दिन मुझ, परम भीखू सूं पीत॥ सुविनीत।
- २७ पवर ढाळ कही छयांळीसमी, सतजुगी नों विस्तार।
सेव करै स्वामी नीं सखरी, 'जय-जश' करण उदार॥ सुविनीत।

१. सह्यौ (क)।

दूहा

- १ सांम राम साधू सरल, संतां नै सुखदाय।
भद्र प्रकृति भारी घणी, नीत निपुण नरमाय॥
- २ वर्स पेंसठै उवास^१ मैं, भीक्खू पाछै भाळ।
पाली मैं परभव गया, निरमळ सांम निहाळ॥
- ३ राम ऋषि रळियांमणा, इन्द्रगढ़ मैं आय।
चौला^२ मैं चलता रह्या, संतरै वर्से ताय॥
- ४ देवगढ दिख्या ग्रही, संभूजी^{२४} सुविचार।
वार-वार संका पड़ै, छोड़ दियौ तिण वार॥
- ५ तौ पिण गण बारै छतौ, करै साधां नीं सेव।
साध आहार आंण्यां पछै, आप ल्यावै नित मेव॥
- ६ पीत मुनि थी अति पवर, मुनि जिण गांव मझार।
आवै दर्शन करण कूं, पिण संका थी हुऔ खुवार॥
- ७ 'संघजी^{२५}' थौ गुजरात रौ, चरण लियौ चित चाय।
सरियारी मैं नीकल्यौ, दुधर व्रत दिखाय॥
- ८ तदनंतर संजम लीयौ, 'वरल्या-वौहरा'^३ जोय
इकचालीसै आसरै, नांम 'नानजी^{२६}' सोय॥
- ९ स्वाम भीक्खू पाछै सही, एकोतरै अवलोय।
तेला मैं चलता रह्या, धर्मध्यान मैं जोय॥

ढाळ : ४७

(परम गुरु पूजजी मुझ प्यारा)

- १ नानजी पछै चरण निहालौ रे, मुनि नेम मोटौ गुणमालौ रे।
वासी रोयट नों सुविशालौ रे।
हरष ऋषराय नै नित्य वंदो रे॥

१. उपवास (क)।

२. 'हेम नवरसा' ढाळ ५ गाथा २ के अनुसार
तेले की तपस्या में तथा 'हेम गुण वर्णन'

ढाळ ३ गाथा १७, १९ के अनुसार राम ऋषि
संधारा पूर्वक दिवंगत हुए।

३. बरल्या जाति के बोहरा-- ब्याज पर कर्ज
देने का काम करने वाले।

- २ पवर चरण भीक्खू पास पायौ रे, संजम बहु वसें सोभायोरे।
मुनि जिन शासण दीपायौ,
भीक्खू शिष्य सोभता नित्यवंदौ रे।
- ३ सैहर नैणवै कीयौ संधारौ रे, पाम्यौ भव सायर नों पारौ रे।
औ तौ भीक्खू तणौ उपगारौ॥ भीक्खू.
- ४ तदनंतर वर्स चोमालो रे, 'वैणीरामजी'^{२४} अधिक विसालो रे।
निकळंक चरण चित्त न्हालो॥ भीक्खू.
- ५ दीख्या भीखनजी स्वामी दीधीरे, वसवान वगड़ी रा प्रसीधी रे।
मुनि गण माहै सोभा लीधी॥ भीक्खू.
- ६ हुवौ वैणीराम ऋष नीको रे, प्रबल पिंडत चरचावादी तीखौ रे।
मुनि लीयौ सुजश नौं टीकौ॥ भीक्खू.
- ७ वारु वाचत सखर वखानौ रे, सखर हेतु दृष्टांत सुजाणो रे।
भरत मैं प्रगट्यौ जिम भाणो॥ भीक्खू.
- ८ हद देसना मैं हुसीयारौ रे, श्रोता नै लागै अधिक सुप्यारो रे।
चित माहै पांमै चिमत्कारो॥ भीक्खू.
- ९ जाय मालव देश जमायौ रे, खंडी^{२५} सूं चरचा कर ताह्यौ रे।
बहु जन नै लिया समझायो॥ भीक्खू.
- १० त्यांरी धाक सूं पाखंड धूजै रे, वैणीराम केसरी जिम गूंजै रे।
प्रगट हळुकर्मी प्रतिबूझै॥ भीक्खू.
- ११ उत्पत्तिया है बुद्धि उदारौ रे, समझाया घणां नर-नारौ रे।
हुऔ जिन शासण सिणगारौ॥ भीक्खू.
- १२ घणा नै दीयौ संजम भारो रे, धर्म वृद्धि मूरत सुखकारौ रे।
ओतो भीक्खू तणौ उपगारो॥ भीक्खू.
- १३ कीयौ स्वाम भीक्खू पछै काळौरे, सैहर चासटू^{२६} मैं सुविशालौ रे।
समत अठारै संतरै^{२७} न्हालौ॥ भीक्खू.
- १४ भीक्खू तार्या घणा नर नारौ रे, भवि तारक भीक्खू विचारो रे।
स्वामी 'जय-जश' करण श्रीकारो॥ भीक्खू.
- १५ सैंतालीसमीं ढाळ सुहाया रे, भीक्खू सीस मोटा मुनिराया रे।
स्वाम संग परम सुख पाया॥ भीक्खू.

१. अन्य संप्रदाय के साधुओं से।

२. यह गांव-जयपुर के पास है।

३. सं. १८७० ज्येष्ठ शुक्ला १०

(वेणी चौढालियो ढा. १४ गा. ५६।)

दूहा

- १ तिण अवसर कोटा तणा, दोलतरांमजी देख।
आया तसुं टोळा थकी, संत च्यार सुविसेख॥

सोरठा

- २ दोय रूपचंद^{२९} देख रे, वारू ऋष वर्द्धमांन^{३०} जी।
'सूरतौजी'^{३१} संपेख रे, स्वाम गणे संजम लीयौ॥
३ रूपचंद बहुमांन रे, छूटौ तेह प्रयोग थी।
प्रकृति अजोग पिछांण रे, सुरतौ पिण छूटक थयौ॥

दूहा

- ४ बड़ा संत वृद्धमांनजी, संजम सरल सुधार।
विचरत-विचरत आवीया देश दूंडार मझार॥
५ लू रा कारण थी लीयौ, मारग मै संधार।
समत अठार पचावनै, लीधौ संजम सार॥
६ लघु 'रूपचंद'^{३२} स्वाम गण, माधोपुर रै माहि।
अणसण रौ बंधौ कीयो, वैणीरांमजी पाहि॥
७ पछै परिणाम कच्चा पड़्या, बोल्यौ एहवी वाय।
हूं थारै नहीं कांम कौ, रत्न कांकरौ थाय॥
८ इम कहिनै अळगौ थयौ, काळ कितौ इम थाय।
इक चेलौ कीधा पछै, आयौ इन्द्रगढ माय॥
९ शिष तज कहै ग्रहस्थां भणी- तंत सूत्र मुझ तांम।
भीक्खू नैं वहिरावजो, मुझ गुरु भीक्खू स्वांम॥
१० इम कही साधुपणौ पचख, दीयौ संधारौ ठाय।
पांच दिवस नैं आसरै, परभव पहुंतौ^१ जाय॥

१. पहुंतौ (क)।

सोरठा

- ११ जती भेष नैं जाण रे, 'मायारामजी^{३३}' मूंकीयो।
 प्रत्यक्ष ही पहिछान रे, भेषधार्यां मैं आवीयो॥
- १२ भेषधार्यां नैं छंड रे, संजम लीधौ स्वाम पै।
 बहु वर्स चरण सुमंड रे, निकळ काळवादी थयौ॥
- १३ 'विगतौ^{३४} नाम'^{३५} विचार रे, वासी बोरावड़ तणौ।
 संजम ले सुखकार रे कर्म प्रभावे नीकळयौ॥

ढाळ : ४८

(बाजोट पर नहीं बेसणौ मुनि पग ऊपर पग मेल)

- १ तदनंतर 'दुंगच'^{३६} ना वासी, 'सुखजी^{३७}' नाम श्रीकार।
 स्वाम भीक्खू पै संजम लीधौ, आंणी हरख अपार रा।
 भीक्खू स्वाम ओजागर! आप रा सुविनीत भला शिष्य, जिण मारग जमायौ रे।
 सुगुणा परम पूज रै प्रसंग, सुज्ञांनी जय-जश छायौ रे ॥ध्रुवपद॥
- २ स्वाम भीक्खू पछै चोसठै, कांइ सैहर देवगढ सारा।
 अणसण कर आत्म उजवाळी, तो शुद्ध दश दिन संथार रा॥ भीक्खू.
- ३ वर्स तेपनै सरीयारी वासी, 'हेम'^{३८}आछा' हद जात।
 संजम स्वाम समाप्यो सुवर्णन हेम-नवरसे विख्यात रा॥ भीक्खू.
- ४ उत्पत्तिया बुद्धि आगला, स्वामी हेम-सखर सुविनीत।
 प्रबल-बुधि पुन्य-पोरसा, कांइ पूर्ण पूज सूं पीत रा॥ भीक्खू.
- ५ परम विनयवंत परखीया, वारू बुधि भारी सुविचार।
 हद कीयौ सिंघाड़ौ हेम नौं, भारी ज्ञानी गुणां र भंडार रा॥ भीक्खू.
- ६ हेम सुनिमळ हीया तणा, अरु हेम स्वामी हितकार।
 हेम सुमति ना सागरू, अरु हेम गुप्ति गुणकार रा॥ भीक्खू.
- ७ हेम दिशावान दीपतौ, मुनि हेम मोटौ महाभाग।
 हेम ओजागर ओपतौ, वर हेम हीयै वैराग रा॥ भीक्खू.

१. बगतोजी नाम से भी इनका उल्लेख मिलता है।

२. 'मोखुंदा' के पास (मेवाड़) में है।

- ८ हेम ईर्या-धुनि ओपती, गति जाणै चाल्यौ गजराज।
हेम गंभीर गैहरौ घणौ, औ तौ हेम गरीबनिवाज रा॥ भीक्खू.
- ९ हेम दया दिल मैं घणी, शुद्ध सत दत हेम सधीरा।
हेम शील माहि रम रह्यौ, वारुकर्म-काटण बड़-वीर रा॥ भीक्खू.
- १० हेम-संग रहित सुर-तरु, कांइ हेम मेरू जिम धीरा।
हेम चिंतामणि सारीखौ, ओतो हेम जाणै पर पीड़ रा॥ भीक्खू.
- ११ सुंदर मुद्रा हेम नीं, अरु अतिसय कारी ऐन।
पेखत चित प्रश्न^१ हुवै, चित माहै पांमै चैन रा॥ भीक्खू.
- १२ समत अठारसे तेपना पाछै, धर्म वृधि अधिकाय।
वंकचूलिया मैं वारता, आ तौ प्रत्यक्ष मिली इहां आय रा॥ भीक्खू.
- १३ बारै संत तौ आगै हुंता, कांइ स्वाम भीक्खू पै सोय।
हेम हुवा संत तेरमा, तठा पछै न घटीयौ कोय रा॥ भीक्खू.
- १४ भाग बली भीक्खू तणै, शिष हेम हुआ वृधिकार।
पाखंडी पग मांडै नहीं, पड़ै हेम नीं धाक अपार रा॥ भीक्खू.
- १५ चौथै आरै सांभळ्या, ऐ तौ खिमा-सूरा अरिहंत।
प्रत्यक्ष आरै पंचमै, ऐ तौ हेम सरीखा संत रा॥ भीक्खू.
- १६ भीक्खू भारीमाल ऋषराय रै, वरतारा मैं हेम वदीत।
चरचावादी सूरमा, लीया घणां पाखण्ड्यां नै जीत रा॥ भीक्खू.
- १७ घणां जणां नै संजम दीयौ, देश-व्रत घणां नै सुलंभ।
बहु भणाय पंडित कीया, हेम जिन-शासन रौ थंभ रा॥ भीक्खू.
- १८ हेम नवरसा मैं कह्यौ, वर हेम तणौ विस्तार।
ग्रंथ वधंतौ जाणनै, इहां संखेप्यौ अधिकार रा॥ भीक्खू.
- १९ भीक्खू भारीमाल चलीयां पछै, ऋषराय तणै वरतार।
उगणीसै चौकै समै, सरीयारी मैं हेम संथार रा॥ भीक्खू.
- २० भाग प्रबल भीक्खू तणा, हुआ संत-शासन-सिणगार।
हेम गजेंद्र समौ गुणी, वले आखूं अवर अणगार रा॥ भीक्खू.
- २१ आठ चाळीसमी सोभती, आखी ढाळ रसाळ अपार।
स्वाम भीक्खू गण सुरतरु, ओ तौ 'जय-जश' करण उदार रा॥ भीक्खू.

दूहा

- १ तदनंतर तपसी भलौ, वर चपलोत विचार।
वासी केलवा नौ पवर, 'उदैराम^{३७}' अधिकार॥
- २ पचावनैं पाली मझै, पूज भीखनजी पास।
सांवण मैं संजम लीयौ, अधिकौ धर्म उजास॥
- ३ अति उमंग तप आदर्यौ, वर आंबल वृद्धमान।
बयांलीस ओळी लगै, चढ्योज चढतै ध्यान॥
- ४ अवर तप कीधौ अधिक, छठ-छठ आदि विचार।
आठ सौ इकतालीस आसरै, आंबिल कीया उदार॥
- ५ साठै स्वाम पछै सही, सखरौ कर संथार।
चेलावास^१ चलतौ रह्यौ, भारीमाल उतार्यौ पार॥

सोरठा

- ६ तदनंतर तिण वार रे, 'खुशालजी^{३८}' संजम लीयौ।
प्रकृति कठिण अपार रे, कर्म-जोग थी नीकळ्यौ॥
- ७ 'ओटो^{३९}' जाति सोनार रे, वासी खारचीयां तणौ॥
स्वाम कनै समाचार रे, आय कहै इण रीत सूं॥
- ८ अति कायौ^२ हुवौ बाप रे, आज्ञा दी मुझ इण परै।
तूं मुझ क्यूं दै ताप रे, कर तुझ दाय आवै जिसौ॥
- ९ म्हारी कानी सूं जाण रे, जोगी जती है ढूंढीयौ।
इक नर सुणतां कही वांण रे, स्वामी तब संजम दीयौ॥
- १० प्रकृत तणै प्रताप रे, संजम पाळणौ दोहिळौ।
कठिण परिषह ताप रे, छूटौ ते तब छिनक मैं॥
- ११ 'नाथोजी^{४०}' पोरवाल रे, वासी देसूरी तणौ।
सुत-गृह छांडी सार रे, संजम सतरै स्वाम पै॥
- १२ जिभ्या लोळपी जाण रे, मुनि बांधी मर्याद नैं।
छूटौ तेह पिछांण रे, पिण श्रद्धा सनमुख रह्यौ॥

१. राणावास के पास।

२. हैरान।

ढाळ : ४९

जै जै जै गणपति नमूं रे नमूं

- १ समत अठारै वर्स सतावनैं, गांम रावळीयां गुणीयै।
लघु वेस 'ऋषराय' दीख्या ली, थिर चित सेती शुणीयै॥
जै जै जै गणपति नमूं रे नमूं, नमूं रे नमूं हूं तो घणी रे खमूं।

जय जय गणपति शिष नमूं रे नमूं ॥ ध्रुवपद ॥

- २ बंब जाति चतुरौ साह सुतवर, नाम रायचंद नीकौ।
वर्स इग्यार आसरै वय मैं, संजम सखर सधीकौ॥ जै.
३ हथणी होदे हरख हूऔ अति, मात कुशालां वारु।
साथै संजम पूज समाप्यौ, चैत्री पूनम चारु॥ जै.
४ प्रबलबुद्धि गुण पुन्य पैखनै, परम पूज फुरमायौ।
पद लायक ए पुन्य पोरसौ, वचनामृत वरसायौ॥ जै.
५ दिशावान ऋषराय दीपतौ, भाग्य बली बुद्धि भारी।
हस्तमुखी मूर्ति हद हरखत, पेखत मुद्रा प्यारी॥ जै.
६ पाट तीजै आगूं च परुप्या, ~~स्वाम~~ वचन सुखदाया।
~~जंबू स्वाम जिसा जयवंता,~~ जाज्ञा ~~थाट~~ जमाया॥ जै.
७ अंत काल भीखू नैं अधिकौ, साहज सखर सुखदाया।
भारीमाल रै पास भुजागळ, रायचंद ऋषराया॥ जै.
८ गुणंतै वर्स भारीमाल नी, आज्ञा ले अगवांणी।
'प्रथम' सीस' ऋष जीत कियौ, निज पट लायक सुविहांणी॥ जै.
९ भारीमाल नैं स्हाज दीयौ अति, 'अन्त सीम' अधिकायौ।
आप ओजागर अधिक अनोपम, दीन-दयाल दीपायौ॥ जै.
१० तस उपगार तणौ वर्णन, करतां अति ग्रंथ वधीयौ।
भीखु तणौ संबंध इहा, तिण कारण संखेपीयौ॥ जै.

१. हंसमुख।

२. भुजा की तरह अगुआ/हर कार्य में सहयोगी।

३. सं. १८६९ माघ कृष्ण ७ के दिन जयपुर में जीतमलजी (जयाचार्य) को दीक्षा देने के लिए आचार्यश्री भारीमालजी ने मुनि रायचंदजी को भेजा। उन्होंने कहा--मेरे

पीछे तो भार संभालने वाले तुम हो ही, तुम्हें अपने उत्तराधिकारी की आवश्यकता होगी, अतः तुम ही उसे दीक्षा दो।

उसी आदेश के अनुसार मुनि रायचंदजी ने जीतमलजी को अपने हाथ से दीक्षित किया। 'ऋषि राय पंचदाळियो' ढा. १/२२-२४।

४. जीवन भर। अंत समय (क)।

- ११ संसारी लेखै मांमा, सतजुगी महा मतिवंता।
 भल भाणेज रायचंद भणीयौ, जशधारी जैवंता॥ जै.
- १२ भीक्खु ऋष अति भाग्य बली, शिष्य मिलिया रायचंद नीका।
 गिरवा गैहर गंभीर गुणागर, पूज प्रथम ही परिखा॥ जै.
- १३ बहु वर्सा लग मार्ग नी वृद्धि, जिणजी आगुं जांणी।
 भीक्खु रै अति भाग्यबली, ऋषराय मिल्या शिष आंणी॥ जै.
- १४ ऐसा भीक्खु आप ओजागर, शिष्य पिण मिल्या सरीखा।
 तस पग छेहड़ै संत हुआ ते, सांभळीयै सुवृधिका॥ जै.
- १५ ए गुणपचासमीं ढाळ अनुंपम, मिल्यौ संत मन मान्यौ।
 कहियै धर्म-वृधि नौ कारण, 'जय-जश' करण सुजांण्यो॥ जै.

दूहा

- १ समत अठार सतावनैं, जेठ मास मैं जोया
पिता पुत्र धर चरण-पद, हरष घणौ अति होया॥ ॥
- २ 'ताराचंदजी' तात सुत, 'डूंगरसी' महामंडा
पिता भार्या परहरी, सुतन सगाइ छंडा॥
- ३ वड वैरागी संत बिहुं, सखरौ कर संथार।
भीक्खू स्वाम पछै उभय, समचित जन्म सुधार॥
- ४ अणसण इकताळीस दिन, ताराचंद उवेख।
दश दिन अणसण दीपतौ, डूंगरसी नैं देख॥
- ५ तदनंतर संजम लीयौ, 'वरल्या-वौहरा' ताय।
'जीवौ' मुनि तासोल नों, महा मोटो मुनिराय॥
- ६ सरल भद्र प्रकृति सखर, तीन पाट नीं तांम।
सेव करी साचै मनै, धुन सुविनय मैं धाम॥
- ७ भीक्खु भारीमाल पाछै भलौ, नेउए वर्स निहाल।
गोघूंदे अणसण गुणी, महा मुनी गुणमाल॥

ढाळ : ५०

(चेत चतुर नर कहै तनै सतगुरु)

- १ 'जोगीदासजी' स्वाम जोरावर, तदनंतर त्रिया त्यागी।
स्वाम भीखनजी संजम दीधौ, बालपणै बड वैरागी॥
भरम छांड भीक्खु शिष्य भजलै, तज मिथ्या मति तालंदा।
कर्म-जाळ काटौ करणी कर, परम ज्ञान परमानंदा ॥ध्रुवपद॥
- २ सैहर केलवा रा वासी सुद्ध, जोगीदास साचौ जोगी।
सखर सोभागी ममता त्यागी, भल सुमती पिण नहीं भोगी॥ भरम.
- ३ अल्प काळ मै अचांणचक रौ, सैहर पीसांगण मैं सुणीयौ।
चौविहार संथारौ चोखौ, थिर चित सूं मुनिवर थुणीयौ॥ भरम.
- ४ गुणसठै वर्स मुनि गुणवंतौ, पूज छतां परभव पहुंचतौ।
आतम तार्यौ जन्म सुधार्यौ, हिय निर्मल ऋषराज हुंतौ॥ भरम.

- ५ तदनंतर 'जोधौ' मारू ते, गांम केरड़ा नों गुणीयौ।
स्वाम भीक्खू स्व.हस्त संजम शुद्ध, भारी तपसी तप भणीयौ॥ भरम.
- ६ अढी मास तप आछ आगारै, तप उत्कृष्टपणै तपियौ।
सरल भद्र मुनिवर सोभागी, जाप विविध तन मन जपियौ॥ भरम.
- ७ दिन अड़तीस कोचले' दीप्यो, संथारौ सखरौ सुणीयौ।
स्वाम पछै परभव सुमति सुध, जोधो धिन माता जणीयौ॥ भरम.
- ८ सैहर खेरवा ना 'भगजी' सुध, वर आज्ञा दी बहिन बड़ी।
संजम भीक्खू स्वाम समाप्यौ, सखर विनय थी सोभ चढी॥ भरम.
- ९ जाति वैद मूंहता जशधारी, भगजी भक्ति करी भारी।
भीक्खू भारीमाल ऋषराय तणी भल, पेखत ही मुद्रा प्यारी॥ भरम.
- १० ऋषराय तणें वरतारै रूड़ौ, पंडित मरण मुनि पायौ।
निनाणूं आत्म नैं निंदी, सुद्ध परिणाम सोभायौ॥ भरम.

सोरठा

- ११ जोगड़ जाति सुजांण रे, वासी बीदासर तणौ।
पूज समीप पिछांण रे, 'भागचंद' आवी करी॥
- १२ वारु गुणसठै वास रे, चारित धार्यौ चूंप सूं।
वर्स कितेक विमास रे, कर्म-जोग थी नीकल्यौ॥
- १३ चंद्रभांणजी माय रे, रह्यौ पंच मास आसरै।
भारीमाल पै आय रे, कहै मुझ नैं ल्यौ गण मझै॥
- १४ हूं रह्यौ चंद्रभांण माय रे, त्यांनैं साध न सरधीया।
थे मोटा मुनिराय रे, साधु सरधतौ स्वाम गण॥
- १५ भारीमाल ऋषराय रे छेद दीयौ षट मास रौ।
लीयौ तास गण माय रे, अवलोकीभीक्खू लिखत॥
- १६ आपां माहिलौ जांण रे, जाय चंद्रभांणजी मझै।
अल्पकाळ पहिछांण रे, आहार पांणी भेळौ करै॥
- १७ पिण आपां नैं साध रे, सरधै सुद्ध मन सूं सही।
सरधै तास असाध रे, नवी दिख्या दैणी न तसुं॥

- १८ जथाजोग्य डंड जाण रे, दे लैणौ तसुं गण मझै।
वर्स सैंतीसै वाण रे, लिखत भीखु ऋष नौ कीयौ॥
- १९ एहवौ लिखत अवलोक रे, नवी दिख्या दीधी न तसुं।
छेद दे' मेठ्यौ दोख रे, भारीमाल ववहार थी॥
- २० पासथा पास पिछांण रे, आहार लेवै देवै तसुं।
नसीत बीसमैं जाण रे, डंड चौमासी दाखीयौ॥
- २१ चौमासी डंड स्थान रे, वार-वार सेव्यां छतां।
ववहार प्रथम कही वांन रे, चौमासी प्रायश्चित तसुं॥
- २२ इम बहु न्याय विचार रे, वली मर्याद विमास नैं।
वारु देख ववहार रे, छेद देइ माहै लीयौ॥
- २३ वीतौ कितोयक काळ रे, फिर 'छूटी थयौ' एकलौ।
इक शिष्य कीधौ न्हाल रे, नांम भवानंजी तेहनों॥
- २४ डंड ले आया माहि रे, तप नौ अभिग्रह आदर्यौ।
नायौ पालणी ताहि रे, तिण कारण थयौ एकलौ॥
- २५ काळ कितोक वदीत रे, फिर आयौ भारीमाल पै।
संत सत्यां नैं सुरीत रे, कर जोड़ी वंदना करी॥
- २६ बोलै बेकर जोड़ रे, मुझ नैं लेवौ गण मझै।
अढीधीप ना चोर रे, त्यां सूं हूं अधिकौ घणौ॥
- २७ छठ-छठ तप पहिछांन रे, जावजीव अदराय दौ।
कहौ तौ करूं संधार रे, पिण मुझ नैं ल्यौ गण मझै॥
- २८ भारीमाल बहु जाण रे, दीख्या दे माहै लीयौ।
समत अठारै पिछांण रे, एकोतरै चरण आदर्यौ॥
- २९ मासखमण बहुवार रे, विकट तप मुनिवर कीयौ।
सतांणूए सुखकार रे, जन्म सुधारे जश लीयौ॥

(चेत चतुर नर कहै तनै सत गुरु)

- ३० भारी तपसी 'भोप' हुवौ भल, कोसीथळ वासी कहियौ।
जाति तणौ चपलोत जांणिजै, लाभ स्वाम हाथै लहियौ॥ भरम.

१ दश प्रायश्चित में 'छेद' सातवां प्रायश्चित है।

२ छूटक थई(क)।

- ३१ पाली मैं संजम लै प्रत्यक्ष, मुनि तपसा करवा मंडीयौ।
कबहिक छासठ कबहिक अठावन, चढत-चढत अधिकौ चढीयौ॥ भ्रम.
- ३२ कदहिक च्यार मास मैं कीधा, सतर पारणा सुमति सहू।
ग्रंथ-बहुल भय-तप वर्णन गुण, तिण कारण सहु ते न कहूं। भ्रम.
- ३३ साढी च्यार पौहर संधारौ, स्वाम पछे सुद्ध गति सारु।
पाली धर्म-उद्योत प्रगट हद, वरस छासठै मुनि वारु॥ भ्रम.
- ३४ मुनि महिमागर अधिक ओजागर, गुण सागर नागर ज्ञानी।
'वचन-सुधा-वागर'^१ धर्म जागर^२, धर्म-धुनी^३ धर महाध्यानी॥ भ्रम.
- ३५ अंजन मंजन चंदन अंगन, शिव शंजन रंजन साधी।
भ्रम-भंजन भीक्खू गुरु भेटी, अरि गंजन मति आराधी॥ भ्रम.
- ३६ स्वाम-शरण सुख-करण तरण शुद्ध, तम-भ्रम हरण स्वाम तरणी।
शिववधु-वरण धरण दुधर सम, कहा कहूं मुनि नीं करणी? भ्रम.
- ३७ सुरगिर धीर गंभीर समीर, सदा- सुख सीर सुतार सजै।
तोड़ जंजीर वीर वड़ तुम हो, ऋष भीक्खु गुण हीर रजै॥ भ्रम.
- ३८ पर्म प्रतीत रीत प्रभु वच सै, लोक वदीत अनीत लजै।
ज्ञान-संगीत नीत हद गुणियण, भल भीक्खू ऋष जीत भजै॥ भ्रम.
- ३९ वांण विमल अति निमल कमल वर, जमल अमल सिव मग जांणी।
समल तमल मिथ्या मति सोखी, आप सुत्ति^४ अघ दल हाणी॥
- ४० आप तणै प्रशाद अनोपम, तंत मुनिस्वर बहु तरीया॥
आप सुरतरु आप गुणोदधि, आप घणा ना अघ हरीया॥
- ४१ समरण स्वाम तणों नित साधुं, स्वाम तणों मुझ नित सरणौ।
आसापूरण सांम अनोपम, निमळ चित्त कीधौ निरणौ॥
- ४२ सखरा स्वाम मुनी गुण साचा, म्हैं संक्षेप थकी थुणिया।
जल-सागर किम झालै गागर, गुण अनंत अथग अनग गुणीया॥
- ४३ निमळ पचासमीं ढाळ निहाळी, भल भीक्खू गुण सूं भरीया।
'जय-जश' संपति करण जाणजो, इण खंड भीक्खू अवतरीया॥

१. वचन रूप अमृत बरसाने वाले।

२. धर्म में जागृत रहने वाले।

३. धर्म में तन्मया।

४. सूरत।

दूहा

- १ अड़ताळीस मुनि अख्या, पूज छतां पहिछांण।
चारित्र लीधौ चित धरी, उजम^१ अधिकौ आंण॥
- २ अष्टवीस गण मैं सही, सखर रह्या सुजगीस।
गुर छंदै गिरवा गुणी, अलग रह्या छै वीस॥
- ३ वीसां माहै एक वर, रूपचंद सुध रीत।
छेहड़ै अणसण-चरण लिय, पूज आंण प्रतीत॥
- ४ पूज थकां चारित्र प्रगट, अब सतियां अधिकार।
केइक बारै नीकळी, पोहती^२ केइक पार॥
- ५ एक साथ व्रत आदर्या, तीन जण्यां तिण वार।
'कुसलांजी' बड़ी करी, कुसल खेम अवतार॥

ढाळ : ५१

(खिमावंत जोय भगवंत रौ रे ज्ञान)

- १ पवर चरण सुध पालता जी, कुसलांजी नैं विचार।
'दीर्घपृष्ठ'^१ गूंदोच मैं जी, ते डसीयौ तिण वार॥

खिमावंत धिन सतीया अवतार ॥ ध्रुवपद ॥

- २ जंत्र-मंत्र झाड़ा भणी जी, वंछ्यौ नहीं तिण वार।
सुध परिणामे महासती जी, पोहती परलोक मझार॥ खिमावंत.
- ३ 'मटूजी'^२ मोटी सती जी, स्वाम आंण सिर धार।
पद आराधक पांमियौ जी, ओ भीक्खू नों उपगार॥ खिमावंत.

सोरठा

- ४ 'अजबू'^३ प्रकृति अजोग रे, कर्म जोग सूं नीकली।
प्रकृति कठण प्रयोग रे, चारित्र खोवै छिनक मैं॥

(खिमावंत जोय भगवंत रौ रे ज्ञान)

१. उद्यमा

३. सांप।

२. पहेंती (क)।

- ५ नाम 'सुजाणा'^४ निरमळी जी, 'देऊजी'^५ दीपाय।
स्वाम तणै गण में सही जी, पर-भव पोहती जाय॥ खिमावंत.

सोरठा

- ६ तदनंतर तिण वार रे, साधुपणौ लीधौ सही।
'नेऊ'^६ नाम निहाळ रे, कर्म-प्रयोगे नीकळी॥

(खिमावंत जोय भगवंत रौ.)

- ७ सती 'गुमांना'^७ सोभती जी, संजम वर संधार।
इमज^८ 'कसूबांजी' अखी जी, अणसण अधिक उदार॥ खिमावंत.
८ 'जीऊजी'^९ वलै जांणियै जी, स्वाम तणै गण सार।
पोतै बहू सुत परहरी जी, वासी 'रीयां' रा विचार॥ खिमावंत.
९ काळ कितैक पछै कीयौ जी, सैहर पीपाड़ संधार।
इकतालीस खंडी ओपती जी, मांडी करी तिवार॥ खिमावंत.

सोरठा

- १० 'फतू'^{१०} 'अखूजी'^{११} न्हाल रे, 'अजबू'^{१२} 'चंदूजी'^{१३} अज्जा।
भेषधार्यां में भाल रे, पछै चरण लियौ पूज पै॥
११ समत अठारै सोय रे, वरस तेतीसै वारता।
लिखत करी अवलोय रे, मुनि लीधी टोळा मझै॥
१२ आप मतै अवधार रे, मन छंदै रही मोकळी।
अति तसुं कठिन अपार रे, छांदै गुरां रै चालणौ॥
१३ असुद्ध प्रकृति अविनीत रे, सुमते जाणै स्वामजी।
ऋष भीक्खु शुद्ध रीत रे, तंतु^{१४} धाम्यौ तेहने॥
१४ तुझ नै कल्पै तेह रे, ते तंतु लेवौ तुम्हे।
इम कही कपड़ौ देह रे, फतू आदि पांचां भणी॥
१५ पूछ्यौ तास प्रमाण रे, कहै मुझ अधिकौ को नहीं।
पूज करै पहिचान रे, निसुणौ निरणय निरमळौ॥
१६ अखैराम अणगार रे, मेल्यौ कपड़ौ मापवा।
तस थानक तिण वार रे, माप्यां अधिकौ नीकळ्यौ॥

१. कषड़ा।

१७ इम तंतू अति राख रे, झूठ बोली वले जाण नैं।
 सुध नहिं संजम साख रे, नीत चरण पाळण तणी॥
 १८ च्यारूं ते पहिछांन रे, 'चैना'^{१४} भेळी पंचमी।
 झट पांचू नैं जाण रे, छोड़ी चंडावळ मझै॥

(खिमावंत जोय भगवंत रौ रे ज्ञान)

१९ मैणांजी^{१५} मोटी सती जी, वासी पुर का विचार।
 स्वाम कनै संजम लीयौ जी, छांडी निज भरतार॥ खिमावंत.
 २० पढी-भणी पंडित थई जी, बहु सुत्रां नी रे जाण।
 साठै संधारौ करे जी, कीधौ जन्म कित्याण॥ खिमावंत.

सोरठा

२१ 'धनु'^{१६} 'केलीजी'^{१७} धार रे, 'रतू'^{१८} 'नंदूजी'^{१९} वली।
 मांढा गांम मझार रे, छोड़ी यां च्यारां भणी॥

(खिमावंत जोय भगवंत रौ रे ज्ञान)

२२ 'रंगूजी'^{२०} रळियामणी जी, श्रीजीदुवारा ना सार।
 पोरवाल प्रगटपणै जी, संजम लियौ सुखकार॥ खिमावंत.
 २३ अड़तीसै व्रत आदर्या जी, स्वाम खेतसी रे साथ।
 सरियारी चलता रह्या जी, वारु भणी विख्यात॥ खिमावंत.
 २४ 'सदांजी'^{२१} मोटी सती जी, तलेसरा तंत सार।
 श्रीजीदुवारा ना सही जी, सखर कियौ संधार॥ खिमावंत.
 २५ सुत बहु तज संजम लियौ जी, कंटाळ्या ना कहिवाय।
 अणसण लोटोती मझै जी, 'फुलांजी'^{२२} सुखदाय॥ खिमावंत.
 २६ उत्तम 'अमरां'^{२३} आर्या जी, स्वाम तणै उपगार।
 जीतब जनम सुधारीयौ जी, सखरौ कर संधार॥ खिमावंत.
 २७ ढाळ एक पचासमीं जी, भीक्खु नैं गण भाळ।
 बडी-बडी सतियां हुई जी, वारु गण सुविशाल॥ खिमावंत.

सोरठा

- १ 'रत्नू^{२४}' ले चारित्र रे, छूटी खोयौ चरण नैं।
पाली माहि पवित्र रे, पछै संथारौ पचखीयौ॥
- २ उपाय कीया अनेक रे, भेषधार्यां लेवा भणी।
तौ पिण राखी टेक रे, त्यां माहै तौ नां गई॥

दूहा

- ३ सुध चित सूं 'तेजू^{२५} सती', पोरवाल पहिछांन।
वासी 'ढोल-कंबोल' रा, संजम लियौ सुजांन॥
- ४ काळ कितेक पछै कीयौ, संथारौ सुविहांण।
दिवस बयांळी दीपता, कीधौ जन्म किल्यांण॥

सोरठा

- ५ वनांजी सुविचार रे, संजम लीधौ सुध मनैं।
कर्मा करी खुवार रे, टोळा सूं न्यारी टळी॥

दूहा

- ६ 'वगूतजी' वगड़ी तणा, वर कुल जाति 'सवेत'^१।
हीरा हीरकणी जिसी, भारीमाल मानेत^१॥
- ७ नांम 'नगी'^{१९} गुण निरमळी, वैणीरांमजी री ब्हेन।
एक दिवस तीनूं अज्जा, चरणधार चित चैन॥
- ८ चमालीसै वर्स स्वामजी, संजम दे इक साथ।
सूंप्या रंगूजी भणी, वारु जश विख्यात॥
- ९ ए तीनूं भीक्खु पछै, संथारा कर सार।
महियल मोटी महासती, पांमी भव नौ पार॥
- १० सरूप भीम ऋष जीत नी, 'अजबू' भुआ सुजोग।
चौमालै धार्यौ चरण, अठ्यासीयै परलोग॥

१. ना नेत (मू., क)।

११ सिरियारी ना महासती, 'पनांजी'^{११} पहिछांण।
 संजम पाळ्यौ स्वाम गण, संथारौ सुविहांण॥

सोरठा

१२ कांकरोली री कहाय रे, 'लालांजी'^{१२} संजम लीयौ।
 'परवस सीत'^१ सुपाय' रे, इण कारण गृह आवीया॥
 १३ बहु वरसां सूं विचार रे, श्रावक धर्मज साधीयौ।
 तप-जप कियौ उदार रे, फिर चारित्र नहीं पचखीयौ॥

ढाळ : ५२

(ज्यांरा इन्द्र नरेन्द्र रखवाला)

१ 'गुमांन'^{१३} महा गुणवंती, तासोल तणी चित संती।
 जीवा मुनि री बड़ी मा जांणी, सती संजम लीयौ सुखदाणी हो लाल॥

सतियां नामज मोटी ॥ ध्रुवपद ॥

२ एक मास कीयौ अति भारी, दोय मास छेहडै दिल धारी।
 सुद्ध राजनगर संथारौ, सती सरल भद्र सुखकारौ हो लाल॥ सतियां.
 ३ वर सैहर बूंदी रा वासी, वारू श्रावगी कुल सुविमासी।
 खेरवै संथारो खंती, 'खेमांजी' खेम करंती हो लाल॥ सतियां.

सोरठा

४ जूं परिसह थी जाण रे, छूटी 'जसु' छिनक मैं,
 'चोखी' टळी पिछांण रे, कांकरोली री बिहुं कही॥

(ज्यांरा इन्द्र नरेन्द्र रुखवाला)

५ सतजुगी री बहिन सुख वासी, ऋष रायचंदजी री मासी,
 पिउ पुत्र तज्या पहिछांणी, 'रूपांजी'^{१४} महा रलियांणी हो लाल॥ सतियां.

१. शीतांग/ सन्निपात/चित्तविभ्रमता के कारण
 पागल सी हो गई।

- ६ 'संजम बावनै' सधीकौ, सतावनें संथारौ नीकौ,
खुशालांजी री लघु बहिन कहियै, रूपांजी जग जश लहियै हो लाल॥ सतियां।
- ७ 'सरूपांजी'^{३८} कंटाळ्यै संथारौ, अग्रवाल जाति अवधारौ।
माधोपुर ना वसवानो, सुत तीन तजी व्रत ध्याने हो लाल॥ सतियां।
- ८ 'वरजूजी'^{३९} वदीत विमासी, रूड़ी सील गुणां री रासी।
तिण रौ भीखू तोल बधायौ, सती सुजश शासन में पायौ हो लाल॥ सतियां।
- ९ 'विजाजी'^{४०} महा ब्रधकारी, धर चरण-सील सुखकारी।
करड़ौ तप छेहड़ै कीधौ, सती जग माहै जश लीधौ हो लाल॥ सतियां।
- १० 'वनांजी'^{४१} सुविनयवंती, सुध चरण पाळ चित संती।
सुखदायक गण सुविशाली, सती आतम नैं उजवाळी हो लाल॥ सतियां।
- ११ सुद्ध यां तीनां नै सिख्या, दीधी भीखु एक दिन दिख्या।
सखरौ छेहड़ै संथारौ, समणी हद मुद्रा सारो हो लाल॥ सतियां।

सोरठा

- १२ 'वीरां'^{४२} जाति कुभार रे, संजम लीधौ स्वाम पै,
प्रकृति असुध अपार रे, तिण कारण गण सूं टळी॥

(ज्यारा इन्द्र नरेन्द्र रुखवाळा)

- १३ 'उदांजी'^{४३} उद्यमवती, सती जाति सोनार सोहंती।
बहु वर्सा चरण सुविचारौ, आंवेट माहै संथारौ हो लाल॥ सतियां।
- १४ 'झूमांजी'^{४४} जाति पोरवाल श्रीजीदुवारा ना सार।
छपने वर्स संजम लीधौ, स्वाम पछै संथारौ सीधो हो लाल॥ सतियां।
- १५ वर्स सतावनें सुविचारौ, ऋषराय चरण हितकारौ।
तिण वरस हुवौ उपगारौ, तिण रौ सांभळजौ विस्तारौ हो लाल॥ सतियां।
- १६ संसार लेखै सो भाया, लखपती ल्होड़ै सजनाया^१।
मतिवंत 'हस्तु'^{४५} महि मंडी, लीयौ चरण पिउ सुत छंडी हो लाल॥ सतियां।

१. शासन विलास, डा. २, गा. ३० तथा साध्वी कुशालांजी (४६) की गुण वर्णन गीतिका गा. ३९ में ९ साल साधुत्व पालने का उल्लेख होने से दीक्षा वर्ष १८४९ ठहरता है। विस्तृत समीक्षा 'शासन-समुद्र' में वर्णित

साध्वी रूपांजी (३६) के प्रकरण में पढ़ें।
२. ओसवाल जाति में जो बीसा हैं वे 'बड़े साजन' और जो दसा हैं वे 'ल्होड़े साजन' कहलाते हैं।

- १७ दुख घरकां बोहळौ दीधौ, सती अडगपणें व्रत लीधौ।
सताणूवै लाहवै^१ संधारौ, हस्तु गुण ज्ञान भंडारौ हो लाल॥ सतियां।
- १८ 'कुशालांजी'^{५०} रवळीयां र कहियै, सतजुगी नीं बहिन व्रत लहियै।
ऋष रायचंदजी नीं माता, संजम ले पामी साता हो लाल॥ सतियां।
जिन शासन में सुखदाता हो लाल सतियां।
- १९ भल हस्तूजी नीं भगनी, सती 'कस्तूरा'^{५१} सुभ लगनी।
सुत पीउ छांड व्रत धारो, सतंतरे उजेण संधारौ हो लाल॥ सतियां।
- २० ल्हावा थी संजम लीधौ, पिउ छांड परम रस पीधौ।
घणी बुद्धि अकल गुणवंती, 'जोतांजी'^{५२} महा जशवंती हो लाल॥ सतियां।
- २१ सिरियारी ना सुमगन में, छांड्यौ पिउ सुत तिण छिन में।
संधारो बोहिंतरे सीधौ, 'नोरांजी'^{५३} जग जश लीधौ हो लाल॥ सतियां।
- २२ सुद्ध एक वरस में सिख्या, दुरमति तज लीधी दिख्या।
पांचांइ पिउ नैं छंडी, ज्यां री प्रीत मुक्ति सूं मंडी हो लाल॥ सतियां।
- २३ गुणसठै वरस गुणवंती, बहु चरण धार बुद्धिवंती।
त्यांमै तीन जण्यां इक साथै, हद दिख्या भीखू नैं हाथै हो लाल॥ सतियां।
- २४ 'कुशालांजी'^{५०} 'नाथांजी'^{५१} 'विजांजी'^{५२}, पाली ना त्रिहुं भ्रम-भांजी।
तीनूं शीलामृत कूंपी, दिख्या दे नैं ब्रजूजी नैं सूंपी हो लाल॥ सतियां।
- २५ सतंतरे कुशालांजी संधारौ, भारीमाल भेळा सुविचारो।
माधोपुर मास कार्तिक में, परलोके पोहता छिनक में हो लाल॥ सतियां।
- २६ नाथाजी गांम जासोल न्हाली, वर संधारौ सुविशाली।
संसारो लेखै ऋधवंती, समणी सुध प्रकृति सोहंती हो लाल॥ सतियां।
- २७ तप दिवस बत्तीस सुतपिया, जिन जाप विजांजी जपिया।
तीन दिवस तणौ संधारौ, वरस छयांसीये अवधारौ हो लाल॥ सतियां।
- २८ सरूप भीम जीत ना ताह्यौ, 'कलूंबै'^{५४} काकी कहिवायौ।
गुणसठै दिख्या गुणवंती, 'गोमांजी'^{५५} नेउए पार पोहंती हो लाल॥ सतियां।
- २९ 'जशोदा'^{५५} खेरवां नीं वासी, 'डाहीजी'^{५५} 'नोजांजी'^{५६} विमासी।
संजम भिखु छतां सारो, बहु वर्सा पाछै संधारो हो लाल॥ सतियां।

- ३० ए स्वाम तणौ गण सारू, छप्पन गण चरण प्रकारू।
 सतरै छूटक हुइ अज्जा, छोड़ी लोकि क लोकोत्तर लज्जा हो लाल॥ सतियां।
- ३१ रही गुणचाळीस गण राची, पिउ छांड सात व्रत जाची।
 दोय बहिन भायां रा जोड़ा, सतजुगी वैणीराम सु होडा हो लाल॥ सतियां।
- ३२ ऋष रायचन्द मा साथै, संजम लीधौ पूज हाथै।
 आख्यौ समणी नों अधिकारौ, ओ तौ भीखू तणौ उपगारौ हो लाल॥ सतियां।
- ३३ आगै संत कह्या अड़ताळी, अज्जा छपन इहां भाळी।
 सहु थया एक सौ च्यार, स्वामी गण लियौ चरण सुसार हो लाल॥ सतियां।
- ३४ बीस सतर गण वारी, अठवीस गुणचालीस सुधारी।
 बीसां मै रूपचंद सुद्ध रीतं, राखी स्वाम तणी प्रतीत हो लाल॥ सतियां।

छंद

(भुजंगी)

- ३५ थया संत मोटा बड़ा सुधिर्पाल^१, भलूं नंद नीकौ फतेचंद^२ भालं।
 विनयवंत वारु सुटोक्रं^३ विशालं, निजानंदकारी हरनाथ^४ न्हालं॥
- ३६ भला धर्म धोरी मुनि भारीमाल^५, चल्या आप चारू वडां नीं सुचालं।
 अखै स्थान काजै अखैराम^६ आछा, सदानंदकारी सुखाराम^७ साचा॥
- ३७ सिवानंद सारू सिवौ^८ स्वाम शीशं, नगो^९ स्वाम नीकौ नगिंद्र नमीसं।
 भला सामजी^{१०} संत हूआ सुभारी, सही खेतसीजी^{११} सदा शांतिकारी॥
- ३८ ऋषी राम^{१२} रूड़ौ भीखु शीस राजै, वलि नानंजी^{१३} स्वामी स्वामी नीवाजै^१।
 निभै नेम जाचा^२ मुनि^{१४} नेम नामं, वडो संत ज्ञानी भलौ वैणीराम^{१५}॥
- ३९ वली संत मोटौ बड़ौ वर्द्धमानं^{१६}, सुखौ^{१७} स्वाम साचौ सुध्यानं सुग्यानं।
 हदां हेम जैसा सु हेमं^{१८} हजारी, उदैराम^{१९} आछौ तपस्वी उदारी॥
- ४० ऋषी पाट थाप्यो मुनि रायचंदं^{२०}, दिपै तेज तीखौ सुमेरु दिनंदं।
 भलौ संत तारासुचंद्र^{२१} भणीजै, गिरेन्द्र समौ संत डूंगर^{२२} गिणीजै॥

१. स्वामी भीखणजी के अनुग्रह को प्राप्त करने वाले।

२. संयम यात्रा।

- ४१ जयो जीवराजं^{२३} अरु जोगीदासं^{२४}, दमीश्वर जोधौ^{२५} तपै देह त्रांस।
 भगो नाम^{२६} नीकौ भीखू शीष भारी, सही भागचंद^{२७} पछै ही सुधारी॥
- ४२ थयो भोप^{२८} भारी तपे ध्यान थापी, पका संत सूरु भीखू नैं प्रतापी।
 रह्या स्वाम आण 'धुरां'-छेह'रुड़ा, सही के टली नैं थया फेर सूरु॥
 अख्या संत नामं अठावीस आछा, जिके जीव तार्या भीखू स्वाम जाचा॥

छप्पय

- ४३ इसा भीखू अणगार, सार जिन मारग सोधी।
 अधिक कीयौ उपगार, बहु भवि नैं प्रतिबोधी।
 समणी-संत सुजांण, सखर कीधा सुखकारी।
 परम-धर्म पहिछांण, धुरा जिन आणा धारी।
 अरु देशव्रत धारक अधिका, नित्य कृत भजन तुम नांम कौ।
 सुख करण सरण हद जग सुजश, सखर भीखनजी स्वांम कौ॥

दूहा

- ४४ अष्टवीस मुनिवर अख्या, सखरा गण सिणगार।
 बीस थया गण बाहिरै, तास नांम अवधार॥
- ४५ वीरभांण^१ लिखमो^२ वली, अमरोजी^३ अभिधान।
 तिलोक^४ मोजीरामजी^५, चंद्रभांणजी^६ जान॥
- ४६ अणंदोजी^७ पनजी^८ अख्या, संतोष^९ शिवजीराम^{१०}।
 संभू^{११} संघजी^{१२} रूपजी^{१३}, लघु रूपजी^{१४} तांम॥
- ४७ सुरतौजी^{१५} संघ सूं टळ्यौ, मयाराम^{१६} पहिछांण।
 विगतौ^{१७} खुशालजी^{१८} वली, ओटो^{१९} नाथू^{२०} जांण॥
- ४८ केकां नैं न्यारा किया, केयक टळिया आप।
 अब कहियै छै अर्जिका, चतुर सुणौ चुप चाप॥

छप्पय

- ४९ 'कुसलां'^१ 'मटु'^२ कहाय, 'सुजांणां'^३ कहियै साची।
 'देउ'^४ 'गुमानां'^५ देख, 'कसूंबाजी'^६ नहि काची।

१. आदि से अंत तक।

'जीऊ'⁷ 'मैणा'⁸ जिहाज, 'रंगू'⁹ 'सदा'¹⁰ 'फूला'¹¹ सुखकारी।
 'अमरां'¹² 'तेजू'¹³ आण, वलि 'वगतू'¹⁴ वृद्धकारी।
 'हीरांजी'¹⁵ हीर-कणी जिसी, सती-सिरोमणि सोभती।
 निकलंक 'नगा'¹⁶ 'अजबू'¹⁷ निमल, महियल ए मोटी सती ॥
 ५० 'पत्रां'¹⁸ सती पिछाण, 'गुमानां'¹⁹ 'खेमां'²⁰ गुणियै।
 'रूपांजी'²¹ वर रीत, 'सरूपां'²² समणी-सुणियै।
 'वरजू'²³ 'विजां'²⁴ विसाल, 'वनां'²⁵ ऊदा²⁶ हद वारु।
 'झूमा'²⁷ 'हस्तु'²⁸ जिहाज, 'कुसाला'²⁹ गण सुखकारू।
 'कस्तूरां'³⁰ 'जोतांजी'³¹ कही, सुद्ध संजम 'नौरा'³² सझी।
 इक वरस माहि व्रत आदर्या, पांचूं यां पीतम तजी॥
 ५१ सखर 'खुशालां'³³ सती, पवर 'नाथां'³⁴ पुनवंती।
 विनय 'विजां'³⁵ सुविनीत, घणूं 'गोमां'³⁶ गुणवंती।
 चरण 'जशोदा'³⁷ चित्त, हीयै 'डाही'³⁸ हरखंती।
 'नोजां'³⁹ निमल निहाल, स्वाम आणा समरंती।
 गुणचाली अज्जा गण मै अखी, इक सोनार सुजाणियै।
 कुलवंत इतर सतीयां कही, वडी वैराग वखाणियै॥

दूहा

५२ सतरै छूटक नाम तसुं, 'अजबू'¹ 'नेतू'² ताय।
 वले 'फतू'³ नैं 'अखू'⁴, फिर 'अजबू'⁵ कहिवाय॥
 ५३ चंदू⁶ 'चैना'⁷ छूटक वलि, 'धनू'⁸ 'केली'⁹ धार।
 'रतू'¹⁰ 'नंदू'¹¹ फिर 'रतू'¹², 'वनां'¹³ थइ गण बार॥
 ५४ 'लालां'¹⁴ परवस नीकळी, 'जसु'¹⁵ 'चोखी'¹⁶ 'वीरां'¹⁷ जान।
 सतरै छूटक सांभळी, गण गुण्याली सुज्ञान॥

(ज्यारा इन्द्र नरेन्द्र रुखवाळा)

५५ भीकखु हुआ ओजागर भारी, हद करणी री बलिहारी।
 नित याद आवै मुझ मन, तन मन अति होय प्रसन्न हो लाल॥

जिन शासन में सुखदाता॥

- ५६ सुमतागर सासन स्वामी, जश धर मुझ अंतरजामी।
 सखरौ कुण स्वामी सरखौ? पूज गुण 'सुखम दृग' परखो हो लाल॥ जिन.
- ५७ आसापूरण आपौ, जपूं आप तणौ नित जापौ।
 पूरण मुझ आप सूं पीतं, निरमळ सुद्ध आप री नीतं हो लाल॥ जिन.
- ५८ कही एह बावनमी ढालं, वर 'जय-जश' करण विशालं।
 मोनैं भाग्य-प्रमाणैं मिलिया, मननाज मनोरथ फळीया॥ जिन.
 मुंह मांग्या पासा ढळीया हो लाल॥ जिन.
- ५९ तीजो खंड कह्यौ तहतीकौ, निरमळ भीक्खु गण नीकौ।
 सासण सुखदाय सधीकौ, 'जय-जश' वृद्धि शिव नौं टीकौ हो लाल॥ जिन.

कलश

- १ मुनि सुगुण माळ वर विसाला, सुमति पाल सुजांणीयै।
 तम कुगति ताला भर्म ज्वाला, परम दयालं पिछांणीयै॥
 सुख सद्म संत महंत सुंदर, भ्रांत भंजन अति भलौ।
 सुमति सागर अमल आगर, निमल मुनि गण गुणनिलौ॥

॥ इति भीक्खु जश रसायणे तृतीय : खंड ॥

चतुर्थ खण्ड सोरठा

- १ समरुं गोयम स्वाम रे, सुधर्म जंबू आद मुनि।
वले भीक्खू गुरु नांम रे, चौथों खंड कहूं चूंप सूं॥
- २ मुरधर देश मेवाड़ रे, हाड़ोती ढूंढाड मैं।
चावा^१ देशज च्यार रे, समचित विचर्या स्वामजी॥
- ३ घेरुलालजी व्यास रे, श्रावक तेरां माहिलो।
ते कछ देशे गयो तास रे, टीकम नै समजावीयो॥
- ४ टीकम डोसी आम रे, देश कछ मैं दीपतो।
तेपनै गुणसठै तांम रे, पूज कनै आयो प्रगट॥
- ५ प्रगट तेह प्रजोग रे, कछ देशे धर्म बाधीयो।
सांम तणै संजोग रे, जीव हजारों उद्धर्या॥
- ६ चर्म किल्याण पिछांण रे, इण भव आश्री जाणज्यो।
सुणज्यो चतुर सुजांण रे, पूज भीक्खू नों प्रगट हिव॥

दूहा

- ७ पांचू इंद्रयां परवरी, न पड़ी^२ काई हींण।
ब्रधपणै^३ पिण पूज नीं, सीघ्र चाल शुभ चीन॥
- ८ थाणै^३ कठैइ नां थप्या, उदमी^४ इधक अपार।
चारु चरचा करण चित, पूज तणै अति प्यार॥
- ९ उठै गोचरी आप नित, अतिसैकारी^५ ऐन।
पूज सुमुद्रा पेखतां, चित मैं पांमै चैन॥
- १० छेहला-छेहला गांम फरसता, छेहलाई करत विहार।
चांणोद सूं पीपाड़ लग, विचर्या स्वांम उदार॥

१. प्रसिद्ध।

२. वृद्धपणै (क)।

३. स्थिरवास।

४. उद्यमी (क)।

५. अतिशयकारी (क)।

ढाळ : ५३

(अभिनंदन वांदूं नित्य मन रली)

- १ भर्म भय भंजन हो जन-रंजन गुण जिहाज, सुमतिसुमंडन स्वाम सोभावीया।
कुमति विहंडन हो मिथ्या खंडन काज, विचरत-विचरत सोजत आवीया॥
- २ चौहटे चारु हो छत्री छै सुविचार, आज्ञा लेई नैं स्वाम तिहां ऊतर्यां।
जन-मन हरख्या हो निरख्यौ पूज दीदार, जाणक श्री जिन आप समवसर्या॥
- ३ दर्शण कारण हो धारण चरचा बोल, संत-सती बहु स्वाम पै आवीया॥
आज्ञा लेवा हो चौमासा री अमोल, परम-पूज पै आवी सुख पावीया॥
- ४ दम-सम-सागर हो स्वामी परम दयाल, भळाया चौमासा संत-सत्यां भणी।
इतलै आयो हो हुकमचंद आछौ न्हाळ, पूज दर्शण कर प्रीत पांमी घणी॥
- ५ बेकर जोड़ी हो मान मरोड़ी बोलंत, विविध विनय करि कर रह्यौ वीनती।
स्वाम चौमासो हो सरीयारी करौ संत, सूझती छै पकी हाट मुझ सोभती॥
- ६ गुण-निधि ज्ञानी हो गिरवा आप गंभीर, ऋषपति अरज करूं हूं रीत सूं।
वारु-वचने हो विनती कीधी वजीर, सुगुर प्रसन्न हुवै शिष सुविनीत सूं॥
- ७ स्वामी मानी हो वीनती तसुं सार, विहार करी नैं बगड़ी सूं सोभावीया॥
निरमळ चित सूं हो अरज करै नर-नार, सैहर कंटाल्यै बगड़ी सूं सोभावीया॥
- ८ गति गयवर सी हो इर्या-धुन गुण-जिहाज, प्रवर संतां कर मुनिवर परवर्या।
परतख कहियै हो ऋष भवदधि नीं पाज, सैहर सरीयारी में स्वाम समवसर्या॥
- ९ सैहर सरीयारी हो सोभै कांठा नीं कोर, दोलौ^१ मगरौ^२ गढ कोट ज्यूं दीपतौ।
जन बहु वस्ती हो महाजनां री जोर, जूना-जूना केइ पुर भणी जीपतो॥
- १० निर्भय नगरी हो ऋद्धि-समृद्धि निहोर, ज्यां धर्म-ध्यान घणौ तप-जाप नौं।
राज करै छै हो दौलतसौंग राठोड़, कूपावत कहियै करड़ी छाप नौं॥
- ११ तिहां मुनी आया हो सप्त ऋषी तंत सार, जय-जश धरण करण मन जीपता।
सांमी सोभै हो गणनायक सिरदार, दमीसर पूज भीखनजी दीपता॥
- १२ भरत खेत्र मैं हो भीकखू सांप्रत भांण, आज्ञा लेइ नैं पकी हाट ऊतर्या।
जन बहु हरख्या हो पूज पधास्या जांण, धर्मानुराग करी तन मन भर्या॥
- १३ वखांण वाणी मैं हो आगैवांण विशाल, थिर पद पूज भीखनजी थापीयौ।
भार लायक हो सोभै मुनि भारीमाल, पद जुगराज पहिलाई समापीयौ॥

चारों तरफ।

२. पहाड़।

- १४ सखर सेवा मैं हो खेतसीजी सुविनीत, 'सतजुगी' नांम अपर सोभावीयौ।
पूर्ण त्यारै हो पूजजी री प्रतीत, च्यार-तीर्थ माहै जश तसुं छावीयौ॥
- १५ उदैरामजी हो तपसी अधिक उदार, ऋष रायचंदजी बालक-वय राजता।
जीवौ मुनी हो भगजी गुण नां भंडार, स्वाम तणी हद सेव सुसाजता॥
- १६ ए तो आखी हो तीन पचासमीं ढाळ, सरियारी मैं सांम आया सुख कारणा।
रुड़ी निसुणौ हो आगल बात रसाल, 'जय-जश' करण भीक्खू जन-तारणा॥

दूहा

- १ सावण मासे सामजी, पूनम लगै पिछांण ।
सखर गोचरी सहर मै, आप करी अगवांण॥
- २ आवसग अर्थ अनोपम, लिख-लिखनै अवलोय।
शिष नैं आप सिखावता, जसधारी मुनी जोय॥
- ३ सांवण सुद छेहडै सही, मुनी तणै तन माहि।
कांइक कारण उपनो, 'फेरा' तणौज ताहि॥
- ४ तो पिण ऊठै गोचरी, गांम माहि मुनीराय।
'दसां' बाहिर जावै सही, लांबी गिणत न काय॥
- ५ ओषध लीयो अणायनै^३, कारण मेटण काम।
पिण कारण मिटियौ नहीं, पूज समा परिणाम॥

ढाल : ५४

(कै तैं पूजी गोरज्या कै तैं इसर देवो ए)

- १ चरम किल्यांण चतुर सुणौ मास भाद्रवा माह्यौ ए।
सुखदायो ए, हुईवृद्धि अति धर्म नीं क. भवियण ए॥
- २ पज्जुसणां मै परवाड़ा, वारू हुवै वखाणो ए॥
सुविहांणो ए, सरस तीन टक देशनां^४ क. मुनिवर ए॥
- ३ सुंदर वांण सुहांमणी, निसुणै बहु नर नारौ ए।
सुखकारो ए, चौथज आई चांदणी क. मु.॥
- ४ पिंजर तन हीण्यौ^५ पड़्यौ परम पूज पहिछांण्यौ ए।
मन जांण्यो ए, आउ नेड़ौ उनमांन थी क. मु.॥
- ५ स्वाम कहै सतजुगि भणी, थे सखर शिष सुविनीतो ए।
धर पीतो ए, साज दीयौ संजम तणो क. मु.॥
- ६ टोकरजी तीखा हुंता, विनयवंत सुविचारी ए।
हितकारी ए, भक्ति करी भारी घणी क. मु.॥

१. दस्त।

२. शौचार्थ।

३. मंगाकर।

४. व्याख्यान।

५. हीणौ (क)।

- ७ भारमलजी सूं भैळप भली, रहीज रूडी रीतो ए।
 अति प्रीतो ए, जाणक पाछिलभव तणी क. मु.॥
- ८ सखर तीनां रा साझ सूं, वर संजम उजवाळ्यौ ए।
 म्हैं पाळ्यौ ए, प्रत्यख ही सूरापणैं क. मु.॥
- ९ चित्त समाधि रही घणी, म्हारा मन मझारी ए।
 हुसीयारी ए, यां तीनां रा साझ थी क. मु.॥
- १० शिष सुविनीत हुवै सही, तो गुर रै रहै आणदो ए।
 चित चंदो ए, देव जिनेन्द्रे दाखीयौ क.मु.॥
- ११ गुणग्राही एहवा गुणी, पूज भीखनजी पेखौ ए।
 दिल देखौ ए, स्वाम गुणज्ञ सुहांमणा क. मु.॥
- १२ ऐसी कीजै पीतड़ी, जैसी भीक्खू भारीमालो ए।
 सुविसालो ए, सतजुगी टोकरजी सारिखी क. मु.॥
- १३ जोड़ी वीर गोयम जिसी, पवर स्वाम शिष पीतो ए।
 हदरीतो ए, चाल सखर 'चौथा तणीं' क. मु.॥
- १४ ए चौपनमी ढाळ मै, सखरौ कह्यौ संबंधो ए।
 प्रबंधो ए, स्वाम भीक्खू नो सोभतौ क. मु.॥

दूहा

- १ साध श्रावक नैं श्राविका, बहु सुणता तिण वार।
सौखावण दै स्वामजी, हद सखरी हितकार॥
- २ वीरजि मोख विराजतां, वारू कियौ वखांण।
सोलै पौहर रै आसरै, सीख दीधी सुविहांण॥
- ३ इण दुखम आरा मझै, स्वाम भीखनजी सार।
प्रत्यख श्री जिन नों परै, आखी सीख उदार॥
- ४ सखर बुद्धि वांणी सखर, सखर कळा सुखकार।
नीत सखर चित निरमळै, वचन वदै सुविचार॥

ढाळ : ५५

(भावे भावना)

- १ जिम मुझ नैं जाणता, म्हारी परतीतो रे।
तिमहिज राखजो, भारमलजी री रीतो रे॥
सीख स्वामी तणी॥
- २ सहु संत-सत्यां रा, भारमलजी नाथो रे।
आज्ञा आराधजो, मत लोपजो वातो रे॥ सीख.
- ३ यांरी आंण लोपीनैं, निकळै गण बारो रे,
तसुं गिणजो मती, चिऊं तीर्थ मझारो रे॥ । सीख.
- ४ यांरी आंण आराधै, सदा रहै सुविनीतो रे।
तसुं सेवा करौ, ए जिण मग रीतो रे॥ । सीख.
- ५ म्है पदवी आपी, भार लायक जांणी रे।
भारमलजी भणी, सुद्ध प्रकृति सुहांणी रे॥ सीख.
- ६ नीत चरण पाळण री, भल ऋष भारीमालो रे।
संक म राखजो, सुद्ध साधू नों चालो रे॥ सीख.
- ७ सुद्ध समण सेवजो, अणाचार्यां सूं दूरा रे।
सीख दोनूं धर्यां, हुवै मुक्ति हजूरा रे॥ सीख.

- ८ अरिहंत गुरु आज्ञा, लोपै कर्म जोगो रे।
अपछंदा^१ तिके, नहीं वंदण जोगो रे॥ सीख.
- ९ उसना^२ नै पासथा^३, कुशीळ्या^४ प्रमादी^५ रे।
अपछंदा इणां, जिण आंण विराधी रे॥ सीख.
- १० यानै वीर निषेध्या, ज्ञाता^६ मैं विसालो रे।
संग करणौ नहीं, बांधी जिन पाळो रे॥ सीख.
- ११ आणंद लियौ अभिग्रहौ, जिण-गण^७ थी न्यारूं रे।
तसुं वादूं नहीं, पहिली वच न उचारूं रे॥ सीख.
- १२ अन्यमति ना देव गुरु, अथवा जमाली रे।
तास नमूं नहीं, नहीं वंदू न्हाळी रे॥ सीख.
- १३ वलि विगर बोलायां, बोलण रौ नेमो रे।
आहार आपूं नहीं, अभिग्रह लियौ एमो रे॥ सीख.
- १४ अभिग्रह जिन आगळ, आणंद ए लीधौ ए।
ससम अंग^८ मैं, शुद्ध पाठ प्रसीधो रे॥ सीख.
- १५ रीत एहिज राखणी, चिहुं संघ नै चारू रे।
टाळोकर तणी, संग दूर निवारू रे॥ सीख.
- १६ ए रीत आराध्यां, पामौ भव पारो रे।
श्री जिन सीखड़ी, सरध्यां सुख सारो रे॥ सीख.
- १७ सहु साध-साधवी, वर हेत विशेषो रे।
रूड़ौ राखजो, धरणौ नहीं द्वेषो रे॥ सीख.
- १८ वलि जिलौ न बांधणौ, गुरु आण सुगांमी रे।
सीख प्रथम सही, दी भीक्खू स्वामी रे॥ सीख.
- १९ गुरु आज्ञा लोपी, बांधै जे जिलौ रे।
अति अविनीत ते, दीयौ कर्मा टिलौ रे॥ सीख.
- २० एकल सुं ई खोटौ, इसड़ौ अविनीतो रे।
तसुं समजायनै, रखणी सुध रीतो रे॥ सीख.

१. स्वच्छन्द।

२. निज धर्म पालन में आलसी साधु।

३. शिथिलाचारी साधु।

४. कुत्सित/दूषित आचार वाला साधु।

५. प्रमाद असावधानी करने वाला साधु।

६. ज्ञाता श्रु. १ अ., ५ सूत्र १२५।

७. उपासकदसा, अ. १, सू. ४५।

- २१ दिल देख देखनै, दीख्या सुध दीजो रे।
 वलि जिण-तिण भणी, गण मैं म मूंडीजो रे॥ सीख.
- २२ सरधा आचार रौ, कल्प सूत्र रौ बोलो रे।
 गुरु बुद्धिवंत री, राखौ प्रतीत अमोलो रे॥ सीख.
- २३ कोई बोल न बैसै, केवळियां नै भळावी रे।
 तांण कीजो मती, मन नैं समजावी रे॥ सीख.
- २४ अपछंदे विण आज्ञा, नहीं थापणौ बोलो रे।
 गुरु आज्ञा थकी, तीखौ गण तोलो रे॥ सीख.
- २५ एक दोय तीन आदि, नीकलै गण बारो रे।
 साध म सरध्यो, सुध सीख श्रीकारो रे॥ सीख.
- २६ एक आज्ञा मैं रहीजो, ए रीत परंपर रे।
~~लिखत आगै कीयौ, सेहु धरजो खराखर रे॥ सीख.~~
- २७ कोइ दोष लगावी, वलि बोलै कूड़ो रे।
 प्राछित नां लियै, तिण नै कर दीजो दूरो रे॥ सीख.
- २८ शासण प्रव्रतावण, सीख दीधी स्वामी रे।
 और कारण नहीं, भल अंतरजांमी रे॥ सीख.
- २९ सुणतां सुखदाई, स्वामी नां बोलो रे।
 बहु सुणतां कह्या, आछा नै अमोलो रे॥ सीख.
- ३० ऐसा स्वाम अनोपम, गण तारक ज्ञानी रे।
 कहा कहियै तसुं, बतका सुविहांनी रे॥ सीख.
- ३१ पचपनमीं चारु, कही ढाळ रसाळी रे।
 बात सुणौ वली, 'जय-जश' सुविशाली रे॥ सीख.

दूहा

- १ सीखांवण दी स्वामजी, आछी अधिक अनूप।
हळुकर्मी धारै हियै, सखरी सीख सद्रूप॥
- २ नीर गंगा ज्यूं निरमला, पूज तणा परिणाम।
निमल ध्यान निकलंक चित्त, समता रमता स्वाम॥
- ३ पद युगराज सु आदि मुनि, पूछा करै सुजोय।
अछै खेद सूं आपरै? स्वाम कहै नहिं कोय॥
- ४ निमल चरण वर करण निज, विमल सुधा सम वांण।
अमल दियै उपदेश अरु सुणज्यो चतुर सुजाण॥

ढाळ : ५६

(सायर लैहर स्युं जाणै)

- १ भारीमाल शिष भारी जी, आदि साधां भणी।
स्वाम कहै सुविचारी जी, वांण सुहांमणी॥
- २ परभव निकट पिछांणो जी, दीसै मुझ तणौ।
मुझ भय मूल न जांणो जी, हरख हियै घणौ॥
- ३ घणां जीवां रै घट माह्यौ जी, समकत रूपीयो।
महै बीज अमोलक वायो जी, मग ओळखावीयो॥
- ४ देशव्रत दीपायो जी, लाभ अधिक लीयो।
साधपणौ सुखदायो जी, बहु जन नैं दीयो॥
- ५ महै जोड़ां करी सूत्र-न्यायो जी, शुद्ध जांणे सही।
६ म्हारा मन रै माह्यौ जी, ऊंणारत नां रही॥
- ६ थे पिण थिर चित्त थापी जी, प्रभू पंथ पाळजो।
कुमति कलेश नैं कापी जी, आत्म उजवाळजो॥
- ७ रायचंद ब्रह्मचारी नैं जानो जी, सीख दे सोभती।
तूं बालक छै बुद्धिवानो जी, मोह कीजै मती॥

१. उणायत (क)।

२. मिटाकर।

- ८ ब्रह्मचारी कहै वांणो जी, सुध वच सुंदरू।
 आप कनै जन्म रे कित्याणो जी, हूं मोह किम करूं॥
- ९ वले स्वाम सीख दै सारो जी, सह संतां भणी।
 आराधजो आचारो जी, मत चूकौ अणी॥
- १० इर्या भाषा उदारौ जी, अधिकी एषणा।
 वस्त्रादि लैतां विचारो जी, 'परठत पेखणा'१॥
- ११ सखरी पांच सुमती जी, गुप्त गुणी धरो।
 दया सत सील सुदती जी, ममता मत करो॥
- १२ शिष शिषणी पर सोयो जी, उपगरण ऊपरै।
 मूर्च्छा म कीजौ कोयो जी, प्रमाद नैं परहरे॥
- ~~१३ पुद्गल ममत प्रसंगो जी, तन मन सूं तजी।~~
~~संजम सखर सुचंगो जी, भल भावै भजी॥~~
- १४ आछी सीख अनूपी जी, अति अभिरामजी।
 अमृत रस नीं कूंपी जी, दीधी स्वामजी॥
- १५ आखी ढाळ उदारो जी, षट पंचासमी।
 'जय-जश' करण श्रीकारो जी, स्वामी मति समी॥

१. परिष्ठापन करते समय सजगता रखना।

दूहा

- १ सीख सखर दै स्वामजी, हद वांणी हितकार।
स्वाम वचन सुणतां छतां, चित पामै चिमत्कार॥
- २ समता खमता सखर चित, दमता रमता देख।
नमता जमता निमल मुनि, वमता वंक विसेख॥
- ३ भव-समुद्र तिरवा भणी, भीक्खू भलैज भाव।
वृद्धि भाव हद वीर रस, जाण तिरण रौ डाव॥
- ४ वर वायक वांणी विमल, दायक अभय दयाल।
पद लायक भीक्खू प्रगट, नायक स्वाम निहाल॥

ढाल : ५७

(धन धन जंबू स्वाम नैं)

- १ शिष भारीमाल सुहांमणा, परम भक्ता पहिछांन हो मुणिंद।
पिंडत-मरण पेखी पूज रौ, बोले एहवी वांण हो मुणिंद॥
धिन-धिन भीक्खू स्वाम जी धिन-धिन निरमल ध्यान हो, मुणिंद॥
धिन -धिन पवर सूरापणौ। धिन-धिन स्वाम नों ज्ञान हो मुणिंद॥
- २ सखर स्वांम नां संग थी, मन हुसियारी माय हो मुणिंद।
अबै विरहौ पड़ै आपरौ, जाणै श्री जिन राय हो मुणिंद॥ धिन-धिन.
- ३ प्रभू-गोयम री पीतड़ी, चौथे आरै पिछांण हो मुणिंद।
प्रत्यख आरै पंचमैं, भीक्खू भारीमाल री जाण हो मुणिंद॥
- ४ तिण कारण भारीमालजी, आखी अल्प सी बात हो मुणिंद।
विरह तुम्हारौ दोहिलौ, जाणै श्री जगनाथ हो मुणिंद॥ धिन-धिन.
- ५ भीक्खू वलता इम भणै, थे संजम पालसो सार हो मुणिंद।
निरतीचारे निरमळौ, होसौ देव उदार हो मुणिंद॥ धिन.
- ६ महाविदेह खेतर मझै, मुझ थकी मोटा अणगार हो मुणिंद।
अरिहंत गणधर आदि दे, देखजो तसुं दीदार हो मुणिंद॥ धिन.

- ७ सतजुगी भाखै स्वाम नै, आप जाता दीसौ झंड माहि^१ हो मुणिंद।
 स्वाम कहै-सुण साधजी! चित मैं न झंड री चाहि हो मुणिंद॥ धिन.
- ८ सुख स्वर्गादिक ना सहु, पुद्गल रूप पिछांण हो मुणिंद।
 'पांमला सुख पोचा घणा^२', ज्यांनै जाणू जैहर समांण हो मुणिंद॥ धिन.
- ९ वार अनंती भोगव्या, अधिका सुख अहमिंद^३ हो मुणिंद।
 तौ पिण नहि हुऔ तिरपतौ, तिण कारण ए सुख फंद हो मुणिंद॥ धिन.
- १० तिण सूं म्हारै झंड तणी, वंछा नहीं लिगार हो मुणिंद।
 मुझ मन एकंत मोक्ष मैं, सासता सुख श्रीकार हो मुणिंद॥ धिन.
- ११ वैरागी एहवा मुनिवरू, जांण्या पुद्गल जैहर हो मुणिंद।
 स्वाम संबंध सुण्यां छतां, आवै संवेग^४ नीं लैहर हो मुणिंद॥ धिन.
- १२ सखर सतावनमीं सोभती, ढाळ रसाळ अपार हो मुणिंद।
 समरण भीक्खू स्वाम नौं, 'जय-जश' करण श्रीकार हो मुणिंद॥ धिन.

१. देवों के झुंड (समूह) में।

२. खुजली के सुख के समान अत्यंत तुच्छ।

३. अहमिंद्र (नवग्रैवेयक एवं पंच अनुत्तर विमान के देव)।

४. वैराग्य।

दूहा

- १ सुख कारण तारण सुजन, कुगति निवारण काम।
विघन विडारन अति पवर, सीख समापी स्वाम॥
- २ पंडित-मरण सुकरण पर, धरण आराधक धाम।
सिव-वधू वरण रु तरण सुद्ध, पूज परम परिणाम॥
- ३ निमळ नीत सुद्ध रीत निज, पूज प्रथम ही पेख।
अंत-काळ आयां छतां, वारू अधिक विसेख॥
- ४ समय जांण स्वामी सखर, आलोवण अधिकार।
आतम सुद्ध करै आपणी, ते सुणजो विसतार॥

ढाळ : ५८

(राम पूछै सुग्रीव नै रे)

- १ स्वाम भीखू तिण अवसै रे, आउ नैड़ौ आयौ जांण।
करै आलोवण किण-विधै रे, सखर रीत सुविहांण॥
भविक रे भीखू गुण रा भंडार॥
- २ तस थावर जीवां तणी रे, हिंस्या करी हुवै कोय।
त्रिविध-त्रिविध कर तेहनौ रे, 'मिच्छामि दुक्कडं' मोय॥ भविक.
- ३ क्रोध मान माया करी रे, लोभ वसै अवलोय।
झूठ लागौ हुवै जेहनौ रे, 'मिच्छामि दुक्कडं' मोय॥ भविक.
- ४ अदत्त जे कोइ आचर्यौ रे, ज्यांरा भेद अनेक सुजोय।
हद जिण आज्ञा लोपी हुवै रे, 'मिच्छामि दुक्कडं' मोय॥ भविक.
- ५ ममत धरी हुवै मिथुन सुं रे, सूता जागता रै सोय।
मन वचन काय माठा तणौ रे, 'मिच्छामि दुक्कडं' मोय॥ भविक.
- ६ 'परिग्रह नवूं प्रकार नों रे', शिष-शिषणी उपधि पर सोय।
त्रिविध-त्रिविध ममता तणौ रे, 'मिच्छामि दुक्कडं' मोय॥ भविक.
- ७ किणहि सूं क्रोध कियौ हुवै रे, वले क्रोध वसे वच कोय।
करडी सीख किण नै कही रे, 'मिच्छामि दुक्कडं' मोय॥ भविक.

१. अशुभा

२. क्षेत्र, वस्तु आदि नौ प्रकार का परिग्रह।

- ८ मान माया लोभ मन मैं धर्यौ दिल धर्या राग-द्वेष दोय।
इत्यादिक पाप अठार नौं रे, 'मिच्छामि दुक्कडं' मोय॥ भविक.
- ९ राग कियौ हुवै रागी थकी, द्वेषी सूं धर्यौ हुवै द्वेष।
मन साचै हिव माहरै रे, वर 'मिच्छामि दुक्कडं' विशेष॥ भविक.
- १० पांचूं आश्व पाडूआ^१ रे, लागौ जाण्यौ किण वार।
संभाळ-संभाळ स्वामजी रे, आलोया अतिचार॥ भविक.
- ११ पांच सुमति तीन गुपति मैं रे, पंच महाव्रत मझार।
याद करे अतिचार नैं रे, आलोवै भीक्खू अणगार॥ भविक.
- १२ सह जीवा-जोनि संसार मैं रे, चउरासी लाख सुचिंत।
ज्यारा भेद जूजूआ जाणजो रे, खमाउं धर खंत^२॥ भविक.
- १३ बड़ा शिष्य सुविनीत छै रे, अंतेवासी अमोल।
आगै लेहर आई हुवै रे, खमावै दिल खोल॥ भविक.
- १४ वले संत अनै सतियां मझै रे, केका नै करडा रै देख।
कठिण सीख कड़वौ कह्यौ रे, खमाउं सुविसेख॥ भविक.
- १५ श्रावक नैं वले श्राविका रे, केइ कठिण प्रकृति रा कहाय।
कठिण वचन कह्यौ हुवै रे, खांत^३ करी नै खमाय॥ भविक.
- १६ केइ गण बाहिर नीकळ्या रे, साध-साधवी रै सोय।
करड़ौ काठौ कह्यौ हुवै रे, ज्यां सूं खमत-खांमणा जोय॥ भविक.
- १७ चंद्रभाणजी थळी मझै रे, तलोकचंदजी रै तांम।
कहिजो खमत-खांमणा माहरारे, त्यां सूं पड़ीयौ बौहलौ कांम॥ भविक.
- १८ चरचा कीधी चूंप सूं रे, घणां जणां सूं बहु ठांम।
वच कठिण कह्या जाण्या तसूं रे, खमावै ले नांम॥ भविक.
- १९ केइ धर्म तणां द्वेषी हुंता रे, 'छिद्रपेही अधवसाय'^४।
त्यां ऊपर खेद आई तिका रे, सगळां नैं देऊं खमाय॥ भविक.
- २० चिउं तीर्थ शुद्ध चलायवा रे, सीखामण दैतां रै सोय।
कठिन वचन जो कह्यौ हुवै रे, मुझ खमत-खांमणा जोय॥ भविक.

१. खराब।

२. इच्छा।

३. गौर।

४. छिद्रान्वेषी दृष्टिकोण वाले।

- २१ इण विध करी अलोवणा रे, गिरवा महा गुणवंत।
 सांम भीखनजी शोभता रे, पदवीधर पूज महंत॥ भविक.
- २२ एहवी आलोवण कांनां सुण्यां रे, आवै अधिक वेराग।
 करै त्यां रौ कहिवौ किस्सूं रे, त्यांरै माथै मोटा भाग॥ भविक.
- २३ अठावनमीं शोभती रे, आखी ढाळ सु अँन।
 'जय-जश' करण भीक्खु भला, चित सुणतां प्रांमै चैन॥ भविक.

१. किस्सू (क)।

दूहा

- १ इण विध करी आलोवणा, निरमळ निरतीचारा।
स्वाम हुआ शुद्ध रीत सूं, अब अणसण अधिकार॥
- २ भाद्र सुकल पंचम भली, संवच्छरी नों सारा।
स्वाम कीयौ उपवास सुद्ध, चित उजल चौविहार॥
- ३ अतुल तृखा नों ऊपनी, अधिक असाता आंम।
सखर आंण सूरापणौ, समचित सहीज स्वांम॥
- ४ पूज कियौ छठ पारणौ, ओषध अल्प आहार।
पिण ते समौ न परगम्यौ, वमन हुआ तिण वार॥
- ५ तिण दिन तीनूं आहार नां, त्याग किया तहतीक।
पुद्गल स्वरूप पिछाणीयौ, निमळ स्वाम निरभीक॥

ढाळ : ५९

(राजा राघव राया रो राय कहायौ)

- १ सातम-आठम भीक्खू स्वामजी, अल्प सो लियौ आहारो।
ततखिण त्याग कियौ मन तीखै, हद पूज रौ मन हुसियारो॥
भीक्खू स्वाम आप जिनमत अधिक जमायौ॥
- २ खेतसीजी स्वामी कहै खांच^१ नै तरकै^२ न करणा त्यागो।
पूज कहै-देही पतळी पाड़णी, वारु विशेष चाहिजै वेरागो॥ भीक्खू.
- ३ भाद्र सुकल नवमी दिन भीक्खू, कहै-करुं आहार नां पचखांण।
कहै खेतसीजी-मुझ कर केरौ, चरम आहार ल्यौ पिछांण॥ भीक्खू.
- ४ अल्प आहार खेतसीजी आणीयौ, चाख किया पचखांणो।
वारु मन राख्यौ शिष सुविनीत रौ, पिण बहुल इच्छा मत जांणो॥ भीक्खू.
- ५ दशम दिन भारीमाल वीनवै, स्वामी आहार कीजै सुविहांणो।
चाळी चावळ दश मोठ रै आसरै, चाख किया पचखांणो॥ भीक्खू.

१. जोशीले शब्दों में।

२. शीघ्र।

- ६ 'इग्यारस आहार त्याग दीयौ मुनि, अमल-पाणी उपरंतो'।
 मुझ हिव आहार लेतौ मत जाणजो, कह्यौ वयण अमोलक तंतो॥ भीक्खू,
 ७ बारस रै दिन बेलौ कियौ पूज, तीन आहार तणा किया त्यागो॥
 सखर संथारौ करण सूं स्वामी नों, वारू चढ़तौ वैरागो॥ भीक्खू,
 ८ सांमली हाट सूं ऊठ मुनीश्वर, चलीया-चलीया आयो॥
 पकी हाट नै पका मुनीश्वर, सुणजो पको संथारौ सुहायो॥ भीक्खू,
 ९ सयण^१ शिषां कीधौ सुखदाई, वारू पूज लियो विसरामो॥
 इतले ऋष रायचंदजी आयनै, रूड़ा वचन वदै अभिरामो॥ भीक्खू,
 १० स्वामी किरपा कीजै दर्शण दीजियै, वदै ब्रह्मचारीजी विख्यातो॥
 पूज साहमौ जोवै नेत्र खोलनै, हद मस्तक दीधौ हाथौ॥ भीक्खू,
 ११ पूज नै कहै-‘प्राकम^३’ हीणा पड़िया, ऋषराय तणी सुण वायो॥
 भीक्खू पहिला तन तोल त्यारी था, सुण सीह ज्यूं उठ्या मुनिरायो॥ भीक्खू,
 १२ भीक्खू कहै-बोलावो भारीमाल नै, वले खेतसीजी नै विचारो॥
 याद करतां इ संत दोनूइ, झट आय ऊभा है जिवारो॥ भीक्खू,
 १३ णमोत्थुणं कीयौ अरिहंत सिद्धां नै, तीखै बच बोल्या तांमो॥
 बहु नरनारी सुणतां नै देखतां, संथारौ पचख्यौ भीक्खू स्वामो॥ भीक्खू,
 १४ शिष परम भगता कहै स्वाम नै, क्युं न राख्यो अमल नों आगारो?
 पूज कहै आगार किसौ हिवै, किसी करणी काया नों सारो? भीक्खू,
 १५ भाद्रवा सुदि बारस भली, तिथि सोमवार सुविचारो॥
 अणसण आदर्यौ वैराग आंणी नै, सुद्ध छेहलौ दुघड़ीयौ^४ सारो॥ भीक्खू,
 १६ घणा जन आवंता गुण गावंता, बोलता बेकर जोड़ो॥
 धिन-धिन हो थे मोटा मुनिश्वर, कीधी वडा-वडेरा री होडो॥ भीक्खू,
 १७ केइ सनमुख आया नै प्रणमैं पाया, विकसित होवै विलासं॥
 खांत करीनै स्वामी नै खमावता, हिवडै आण हुलासं॥ भीक्खू,
 १८ धिन-धिन पूज रौ धीरापणौ, धिन-धिन पूज नौ ध्यानो॥
 धिन-धिन स्वाम सूरु घणा सदरा^५, मन कीयो मेरू समानो॥ भीक्खू,
 १९ आखी ए गुणसठमीं ओपती, सुद्ध ढाळे स्वाम संथारो॥
 भल 'जय-जश' कर स्वाम भीक्खू नौ, समरण महा सुखकारो॥ भीक्खू,

१. एकादशी के दिन स्वामीजी ने अफीम और पानी के अतिरिक्त प्रत्याख्यान कर दिया।
 दस्तों के कारण वे औषध रूप में अफीम लिया करते थे।

२. बिछौना।
 ३. शारीरिक शक्ति।
 ४. अमृत का।
 ५. अडिग

दूहा

- १ केकां अभिग्रह एहवौ कीयो, यां सुद्ध मत काढ्यौ सार।
 (तो) छेहड़ै अणसण आवसी, पकौ ऊतरसी पार॥
- २ इण विध अभिग्रह आदर्यौ, भोळा लोकां तांम।
 बात सुणी कहै पचखीयो, अणसण भीकखू स्वाम॥
- ३ धेष्ठी था जिन-धर्म नां, चित पाम्या चिमत्कार।
 जाण्यौ ए मारग खरौ, केइ वांदै वारूंवार॥
- ४ अति नर-नारी आवता, गावता मुनि गुणग्राम।
 बाजार माहि अमावता^१, सरावता धिन स्वांम॥

ढाळ : ६०

(राम को सुजश घणो)

- १ स्वाम तणौ संधारौ सुणी हो, आवै लोक अनेक।
 कोड करीनै करै घणां हो, वारु वैराग विसेख॥
 स्वामी नों सुजश घणौ॥
- २ केइ कहै-संधारो सीझै स्वाम नौ हो, त्यां लग काचा पांणी रा त्याग।
 कोइ कहै-त्याग कुशील ग हो, वर चित आंण वैराग॥ स्वामी.
- ३ केइ अग्रि आरंभ नहीं आदरै हो, केइ करै हरी नां पचखांण।
 केकां रात्रि-भोजन तज्यौ हो, इत्यादिक वैराग वखांण॥ स्वामी.
- ४ केइ धर्म तणा द्वेषी हुंता हो, ते पिण अचर्य पांम्या तिण वार।
 अनमी केइ आवी नम्या, स्वाम तणै संधार॥ स्वामी.
- ५ पडिकमणौ कीधां पछै हो, स्वाम भीकखू सुविहांण।
 भारीमाल आदि शिष भणी हो, कहै वारु करौ वखांण॥ स्वामी.
- ६ शिष सुविनीत कहै सही हो, संधारो आपरै सोय।
 बखांण नों स्युं विशेष छै हो? तब पूज बोल्यो अवलोय॥ स्वामी.
- ७ किणहि आरजीयां अणसण कियौ हुवै हो, तौ करौ बखांण त्यां जाय।
 मुझ अणसण माहै देशना हो, नहि करौ थे किण न्याय? स्वामी.

१. नहीं समाते।

२. साध्वियां।

- ८ बखाण कियौ विस्तार सूं हो, शिष सुविनीत श्रीकार।
भाग वली भीकखू तणै हो, मिलियौ जोग उदार॥ स्वामी.
- ९ परिणाम चढता पूज रा हो, इण विध नीकली रात।
दिन तेरस हिव दीपतौ हो, परगटियौ परभात॥ स्वामी.
- १० गांम-गांम रा आवै घणा हो, दर्शण करवा देख।
जाणक मेळौ मंडीयौ हो, वारू हरख विसेख॥
- ११ गुण स्वामी ना गावता हो, आवता अति जन-ब्रंद।
हिवडै हरख हुलसावता हो, पावता परमानंद॥
- १२ जसकरमी था जीवड़ा हो, जय-जश करता जन।
परम पूज मुख पेखनै, तन मन होय प्रसन्न१॥
- १३ धुर ही थी धर्म छांणनै हो, शुद्ध मग लीधौ सार।
अंत ताई उजवाळीयौ हो, जिन मारग जयकार॥
- १४ धोरी^२ थे जिन-धर्म ना हो, इम बोलै नर-नार।
सूरपणै सखरौ कीयौ हो, स्वामी थे संथार॥
- १५ ए साठमी गुण आगळी हो, रूड़ी ढाळ रसाल।
'जय-जश' करण स्वामी तणा हो, वारू मुण विशाल॥

दूहा

- १ पांणी पीधौ पूजजी, आफे^१ चित उजमाला।
पौहर दिवस जाझौ प्रगट, आयौ थौ तिण-काळ॥
- २ साध बैठा सेवा करै, आंणी हरष अपार।
श्रावक-श्राविका स्वाम नौं, देख रह्या दीदार॥
- ३ भीक्खू ऋष सुद्ध भाव सूं, ध्यावता निरमल ध्यान।
'सकै तौ'^२ जाणू स्वाम नैं, ऊपनौ अवधि सुज्ञान॥
- ४ 'साध श्रावक होवै सही, वैमानिक विख्यात।
अवधि-ज्ञान तसुं ऊपजै^३, आगम वच आख्यात॥
- ५ दिन चढ्यौ पौहर दौढ़ आसरै, सांभळतां सह कोय।
वचन प्रकासै किणविधै, भल सुणियै भवि लोय॥

ढाळ : ६१

(भवियण नमो अरिहंताणं)

- १ साधू आवै साहमा जावौ, मुनी प्रकासै वाणं।
वले साधवीयां आवै बारै, स्वामी बोलै वचन सुहाणं॥
भवियण^४ नमो गुरु गिरवाणं, नमो भीक्खू चतुर सुजाणं॥
- २ कै तौ कहुँ अटकळ उनमानै, कै कहुँ बुद्धि प्रमाणं।
कै कोइ-अवधि ज्ञान ऊपनौ, ते जाणै सर्वनाणं॥ भवि.
- ३ केइ नर नारी मुख सूं इम भाखै, स्वामी रा जोग साधा मै वसीया।
इतलै एक महुरत आसरै, साध आया दोय तिसीया॥ भवि.
- ४ विकसत-विकसत साधू वांदै, चरण लगावै शीसं।
नर-नार्या जाण्यौ अवधि ऊपनौ, साचौ विसवावीसं॥ भवि.
- ५ स्वामी साधू आया जांणी, मस्तक दीधौ हाथं।
इतलै दोय महुरत आसरै, आयौ साधविया रौ साथं॥ भवि.

१. अपने-आप।

२. संभवतः।

३. जो साधू, श्रावक वैमानिक देवलोक में उत्पन्न होते हैं, उन्हें अन्तिम समय में अवधिज्ञान उत्पन्न हो जाता है, ऐसा आगम में कहा है।

४. "हेमराजजी स्वामी रौ जोड़्यौ भीक्खू चारित तेहनी ढाळं १३

तिण मै दशमी ढाळ तेहज राखी ते लिखियै छै।"

जयाचार्य द्वारा लिखित टिप्पणी।

- ६ वैणीरामजी साध वदीता, साथै खुशालजी आया।
साधवीयां वगतूजी झुमां डाहीजी, प्रणमैं भीक्खू पाया॥ भवि.
- ७ परचा^१ ज्यूं-ज्यूं आय पूगै छै, नर-नारी हरषत थावै।
धिन हो धिन थे मोट मुनीश्वर, आप तुलै कुंण आवै? भवि.
- ८ आया ते साधू गुण गावै, भांत-भांत परिणाम चढावै।
थे मोटा उपगारी महिमा भारी, सखरौ सुजश सुणावै॥ भवि.
- ९ थे पका-पका पाखण्डी हटया, सूत्र-न्याय बताया।
दांन दया आछी दीपाया, बुद्धिवंतां मन भाया॥ भवि.
- १० सावज्ज निरवद भला निवेरा, कीधा बुद्धि परिमाण।
सूत्र-न्याय सरधा सुद्ध लीधी, धारी अरिहंत आणं॥ भवि.
- ११ साधां जाण्यौ स्वामी सूतां नै, घणी हुइ छै वारं।
आप कहौ तौ बैठा करं हिव, जब भरीयौ काय हुंकारं॥ भवि.
- १२ बैठाकर साधू लारै बैठा, गुण स्वामी रा गावै।
~~बहु नर-नारी दर्शण देखी, मन मैं हरषत थावै॥ भवि.~~
- १३ आयौ आउखौ अणचिंतवीयौ, बैठां-बैठां जाणं।
सुखे-समाधे बाह्य दीसत, चटदे^२ छोड्या प्राणं॥ भवि.
- १४ अणसण आयौ सात भक्त^३ नौ, तीन भक्त^४ संथारं।
सात पौहर तिण मांहे वरत्या, पकौ उतार्यौ पारं॥ भवि.
- १५ मांहडी सीवे दरजी पूगा, कहै सुई पाग मैं घाली।
अचर्य लोक पांमीया अधिकौ, चट स्वामी गया चाली॥ भवि.
- १६ समत अठारै साठै वसैं, भाद्रवा सुदि तेरस मंगलवारं।
पूज पौहता परलोक सरियारी, गुण गावै नर-नारं॥ भवि.
- १७ दिन पाछलौ दौढ़ पौहर आसरै, उण वेला आउखौ आयौ।
दिवसे मरवौ राति जनमवौ, कहै विरला नै थायो॥ भवि.

१. स्वामीजी के मुखारविन्द से निकले हुए
अदृष्ट वचन।

२. तुरंत।

३. दिन और रात के दो भक्त गिने जाते हैं।
तदनुसार भाद्र शुक्ला दशमी सूर्यास्त से
पहले प्रत्याख्यान होने से दो भक्त, एकादशी,

द्वादशी के दो दो तथा त्रयोदशी का एक ;
कुल-७ भक्त।

४. द्वादशी के दिन में संथारा हुआ। अतः दो
भक्त तथा त्रयोदशी का एक कुल - ३ भक्त।

दूहा

- १ संधारौ कीधौ सखर, सखर स्वाम श्रीकार।
सूरपणै सीझ्यौ सखर, सखर सुजश संसार॥
- २ साधां तन वोसिरायनै, चिउं लोगस चित धार।
कियौ तदा सुद्ध काउसग, अरु तिण दिन तज आहार॥
- ३ पूज तणौ विरहौ पड्यौ, कठिण अधिक कहिवाय।
याद किया अरिहंत नै, सम-भावे सुख पाय॥
- ४ अहो अथिर संसार ए, संजोग जठै विजोग।
पूज सरीखा पुरुष था, पौहता आज- परलोग॥
- ५ देख्या भीक्खू दिल करी, वारू निसुणी वांण।
याद करै ते अति घणां, जन-गुण-ग्राही जांण॥
- ६ चिउं तीर्थ आवी मिल्या, स्वाम तणै संधार।
मास भाद्रवा रै मझै, अचर्य ए अधिकार॥
- ७ प्रबल पुन्य ना पोरसा, प्रबल गुणागर जांण।
पूज हुंता प्रगट पणै, पर-भव कियौ पयांण॥

ढाळ : ६२

(आज आनंदा रे)

- १ स्वाम संधारौ सीझीयां गुणधारी रे, मैहल्या मांहढी रै माया।
स्वाम सुखकारी रे।
तेरै खण्डी मांहढी तणी गुणधारी रे, महिमा कीधी अथाय।
स्वाम सुखकारी रे॥
- २ रुपीया सइकडां लगावीया गुणधारी रे, अनेक उछाल्या लार।
भीक्खु ऋष भारी रे।
ए सावज्ज किरतब संसार ना गुणधारी रे, तिण मै नहीं तंत सार। स्वाम।
- ३ वात हुई जिसी वरणवै गुणधारी रे, समभावे सुविचार॥ स्वाम।
तिण माहै पाप म तांणजो गुणधारी रे, दंभ तजी दिल धार। स्वाम।
- ४ अति घन जन-ब्रंद आवीया गुणधारी रे, आदरै सूंस अनेक। स्वाम।
विविध वैराग वधावता गुणधारी रे, वारू आंण विवेक॥ स्वाम।

५	पूज संधारौ पेखनै गुणधारी रे, धिन-धिन भीक्खू स्वामजी गुणधारी रे,	गावै जन गुण-ग्राम। नित्य-प्रत लीजै नांम॥	स्वाम. स्वाम.
६	आदेज ^१ वचन सु ओपतौ गुणधारी रे, खिम्यावंत स्वामी खरा गुणधारी रे,	स्वामी सिंघ सरूप। सखरा स्वाम सद्रूप॥	स्वाम. स्वाम.
७	नीत स्वाम नीं निरमळी गुणधारी रे, जीत लिया जन दुरमती गुणधारी रे,	प्रीत स्वाम गुण-पूर। स्वाम वदीत ^२ सनूर ^३ ॥	स्वाम. स्वाम.
८	स्वाम बुद्धि ना सागरू गुणधारी रे, परतख आरै पांचमै गुणधारी रे,	निरमळ मेल्या न्याय। जिन-मत दियौ जमाय॥	स्वाम. स्वाम.
९	उद्यमी स्वामी अति घणां गुणधारी रे, स्वाम गुपति हद सोभती गुणधारी रे,	स्वाम सुमति सुखदाय। निमळ स्वाम नरमाय॥	स्वाम. स्वाम.
१०	मणिधारी स्वाम महामुनी गुणधारी रे, जग-तारक स्वाम जाणजो गुणधारी रे,	स्वाम प्रबल संतोष। पूरण स्वाम नाँ पोष॥	स्वाम. स्वाम.
११	दिशावांन स्वाम दीपतौ गुणधारी रे, मिथ्या तिमर सुमेटवा गुणधारी रे,	अधिकी बुद्धि उत्पात। सूर्य स्वाम साख्यात॥	स्वाम. स्वाम.
१२	सखर भीक्खू नाम सांभळी गुणधारी रे, जश भीक्खू नाँ जगत मै गुणधारी रे,	पाखंड भय पामंत। देश-देश मै दीपंत॥	स्वाम. स्वाम.
१३	स्वाम तिलक शासन तणौ गुणधारी रे, स्वाम समी हद शोभता गुणधारी रे,	स्वाम आज्ञा सु उवेख। स्वाम दमीसर देख॥	स्वाम. स्वाम.
१४	स्वाम सुदान दीपावीयौ गुणधारी रे, स्वाम सुजान सोभावीयौ गुणधारी रे,	स्वाम सुज्ञान सरध। स्वाम सुमान मरद॥	स्वाम. स्वाम.
१५	द्रव्य-भाव स्वाम देखावीया गुणधारी रे, पुन-पाप नै परख नै गुणधारी रे,	स्वाम आश्व ओळखाय। स्वाम दीया सरधाय॥	स्वाम. स्वाम.
१६	स्वाम संवर अरु निरजरा गुणधारी रे, स्वाम जीवादिक जूजूआ गुणधारी रे,	बंध मोख पहिछांण। स्वाम दिखाया सुजांण॥	स्वाम. स्वाम.
१७	स्वाम दया ओळखाय नै गुणधारी रे, स्वाम सावज-निरवद सोध नै गुणधारी रे,	अति घन कीध उद्योत। घण घट घाली जोत॥	स्वाम. स्वाम.
१८	शुभ जोगां नै स्वामजी गुणधारी रे, आसता स्वामनीं आदयां गुणधारी रे,	ओळखाया हद रीत। जाय जमारौ जीत॥	स्वाम. स्वाम.

१. प्रियकारी।

२. विदित (सुप्रसिद्ध)।

३. तेजस्वी।

- १९ इंद्रिवादी^१ ओळखावियौ गुणधारी रे, कर काळवादी^२ निकंदा। स्वाम.
 प्रज्यायवादी^३ पिछांणीयौ गुणधारी रे, स्वाम साचेलौ चंद॥ स्वाम.
 २० आचार सरधा ऊपरै गुणधारी रे, स्वाम सोध्या सुद्ध न्याय। स्वाम.
 स्वाम सूत्र-वच सिर धरी गुणधारी रे, व्रत-अव्रत वताय॥ स्वाम.
 २१ सोध्या तौ लाधै नहीं गुणधारी रे, स्वाम सरीखा साध। स्वाम.
 कड़लौ^४ कांम पड़्या चरचा तणौ गुणधारी रे, आवैला भीक्खू याद॥ स्वाम.
 २२ स्वाम भीखणजी सारिखा गुणधारी रे, भरत खेत्र रै माय। स्वाम.
 हुआ नै होसी वले गुणधारी रे, हिवडां नहीं देखाय॥ स्वाम.
 २३ ऐसा भीक्खू ऋष ओपता गुणधारी रे, याद करै नर-नार। स्वाम.
 पूज गुणां रौ पंजरो^५, स्वाम सकल सुखकार॥ स्वाम.
 २४ स्वाम तणौ नांम संभर्यां गुणधारी रे, आवै हरस अपार। स्वाम.
 तौ प्रत्यख नौं कहिवौ किसूं गुणधारी रे, पांमैं तन-मन प्यार॥ स्वाम.
 २५ सरीयारी मैं स्वामजी गुणधारी रे, साठे वर्स संधार। स्वाम.
 मास भाद्रवा मैं भलो गुणधारी रे, जीत गर्भ मैं जिवार॥ स्वाम.
 २६ पंचमा काळे हूं ऊपनौं गुणधारी रे, पिण इक मुझ हरष परम। स्वाम.
 आप सुद्ध मग धार्या पछै गुणधारी रे, जन्म थइ पायौ धरम॥ स्वाम.
 २७ आसा-पूरण आप छौ गुणधारी रे, मेटण सकल संताप। स्वाम.
 समरण नित्य प्रति स्वाम नौं गुणधारी रे, जपूं तुम्हारौ जाप॥ स्वाम.
 २८ बासठमी ढाळ ओपती गुणधारी रे, समर्या स्वाम सुजांण। स्वाम.
 'जय-जश' करण भीक्खू भला गुणधारी रे, पूरण प्रीत पिछांण॥ स्वाम.

१. इन्द्रियवादी -- इन्द्रियों को सांवद्य मानने वाले।

२. कालवादी -- कार्य की निष्पत्ति में काल (समय) को मुख्य मानने वाले।

३. पर्यायवादी -- पर्याय को ही प्रमुखता देने वाले।

४. कठिन।

५. पीजरा।

दूहा

- १ वरस तंयाळी विचरीया, जाझौ कांयक जोय।
चारित्र पाळ्यौ चूपूं, हरष हीयै अति होय॥
- २ इधिकौ बळ इन्द्रयां तणौ, निरमळ देह निरोग।
भीक्खू सूरत अति भली, अरु तीखौ उपयोग॥
- ३ सखर चौमासा स्वाम ना, वारू अधिक विशाल।
सांभळजो भवियण सहू, चरम सहित चौमाळ॥
- ४ आठ चौमास आगै कीया, असल नहीं अणगार।
सतरा सूं साठा लगै, वरत्यौ सुद्ध ववहार॥
- ५ किहां किहां चौमासा कीया? जूजूआ नांम सुजांण।
संक्षेपे निरणय सहू, आखूं ऊजम आंण॥

ढाळ : ६३

(सीता आवै रे धर राग)

- १ सैहर कैलवै षट चौमासा, सतरे इकवीसे सोय।
पचीसे अड़तीसे गुणपचासे, अठावने अवलोय।
भीक्खू भज ले रे धर भाव॥
- २ वारू एक चौमासौ 'वड़लू', वरस अठारे विचार।
राजनगर वीसे सुद्ध रीते, कीयौ घणौ उपकार॥ भीक्खू.
- ३ दोय चौमासा कीया दीपता, पवर कंटाळ्यै पिछांण।
चौवीसै अठवीसै चारू, जन्मभूमि निज जांण॥ भीक्खू.
- ४ वगड़ी तीन चौमासा वारू, सतवीसै सुविसेखा।
तीसै अरू छतीसै त्यां द्रव्य, दीख्या-महोच्छव देख॥ भीक्खू.
- ५ 'गढ रिणतभंवर किरा री तलेटी', नगर माधोपुर न्हाळ।
दोय चौमासा कीया दीपता, इगतीसे अड़ताळ॥ भीक्खू.
- ६ दोय चौमासा कीया दीपता, परगट सैहर पीपार।
चउतीसे पैतालीसै वर्स, कीयौ घणौ उपगार॥ भीक्खू.

१. रिणतभंवर गढ़ के किले के तलहटी में
बसा हुआ माधोपुर नगर।

- ७ एक चौमासौ सैहर आंबेट में, वरस पैंतीसै विचार।
 सेंतीसै पादू सुखदाई, भीक्खू गुण-भंडार॥ भीक्खू.
- ८ सोजत सैहरे कीयौ स्वामजी, चारू एक चौमास।
 वर उपगार तेपनै धर्म-वृद्धि, हेम-चरण तिण वास॥ भीक्खू.
- ९ श्रीजीदुवारे तीन चौमासा, तसुं धुर वरस तयाळ।
 पवर पचासै छपनै पूरण, वर उपगार विशाल॥ भीक्खू.
- १० पुर में दोय चौमासा परगट, स्वाम किया सुविहांण।
 सैंताळीसै वर्स सतावनै, जुऔ छोड़ायौ जांण॥ भीक्खू.
- ११ सैहर खैरवै पांच चौमासा, छावीसै बतीसै छांण।
 वर्स इकताळै अरु छयाळै, वलि चौपने जांण॥ भीक्खू.
- १२ सात चौमासा पाली सैहरे, तेवीसै तेतीसै थाट।
 चाळीसे चमाळे बावने, पचावने गुणसाठ॥ भीक्खू.
- १३ सात चौमासा सरीयारी में, उगणीसे बावीसे सार।
 गुणतीसे गुणाल बयाल एकावने, साठे कीयौ संधार॥ भीक्खू.
- १४ पनरै गांम चौमासा प्रगट, स्वाम किया श्रीकार।
 'ज्ञान-दिवाकर' घण घट घाली, मेट्यो भरम अंधार॥ भीक्खू.
- १५ श्री वर्द्धमान तणो शासण, सखरो दीपायो स्वाम।
 बहु जीवां नै प्रतिबोधी नै, पोंहता परभव ठाम॥ भीक्खू.
- १६ सुख कारण तारण भव सारण, विघन विडारण वीर।
 नरक-निवारण जनम-सुधारण, सखरा स्वाम सधीर॥ भीक्खू.
- १७ समता दमता खमता रमता, नमता जमता न्हाल।
 तमता भ्रमता वमता तन-मन, गमता वचन विशाल॥ भीक्खू.
- १८ आप औजागर गुण-मणि आगर, सागर स्वाम सुजांन।
 वयण-सुधा वागर धर्म-जागर, नागर नाथ निध्यान॥ भीक्खू.
- १९ भरम-विहंडन दुरमति खंडन, महि-मंडन मुनिराज।
 कुमति-निकंदन मन आनंदन, पूज भवोदधि पाज॥ भीक्खू.
- २० सुमति करण अघ-हरण स्वामजी, शिव-वधू वरण सनूर।
 भवदधि तरण करण सुख संपति, चरण धरण चित सूर॥ भीक्खू.

- २१ परम धरम भज भरम करम तज, शरम नरम उभ साज।
शिव-पद अचरम आप आराधण, रूड़ो भीक्खू ऋषराज॥ भीक्खू.
- २२ वर-वायक पद-लायक वारू, नायक नाथ निहाल।
बोधि-पमायक धरम-वधायक, दायक स्वाम दयाल॥ भीक्खू.
- २३ ज्ञान-गंभीरा सखर सधीरा, 'षट-पीहरा'^१ तज खार।
हिवड़े स्वाम अमोलक हीरा, तोड़ जंझीरा^२ तार॥ भीक्खू.
- २४ जप-तप नीं तरवारे झटकौ, पाखंड खटकौ पेल।
समय सुलटकौ गुण नीं गटकौ, मटकौ मन कौ मेल॥ भीक्खू.
- २५ ऐसा भीक्खू आप ओजागर, अवतरीया इण आर।
स्वाम जिसा चौथे आरे पिण, विरला संत विचार॥ भीक्खू.
- २६ जन्म किल्याण कंटाळ्ये जाणो, सरीयारी चरम किल्याण।
द्रव्य-दिख्या-महोछव वगड़ी मै, जोड़े ए त्रिहुं जाण॥ भीक्खू.
- २७ स्वाम भीक्खू हिवड़े संभरीया, हिय तन मन हुलसाय।
सूक्ष्म बुद्धि करी सुविचार्यां, विमल कमल विकसाय॥ भीक्खू.
- २८ भाद्र सुकल तेरस दिन भीक्खू, परभव कियौ पयाण।
तिथि चवदस धरती धूजी अति, न्याय जाणै बुद्धिवान॥ भीक्खू.
- २९ तीन प्रकारे धरती धूजै, ठाणांग^३ तीजै ठाण।
भेद जूजूआ श्री जिन भाख्या, समजै सखर सयाण॥ भीक्खू.
- ३० घर में वर्स पचीस आसरै, आठ भेख मै तास।
पछै संजम ले परभव पौहता, चमालीसमै वास॥ भीक्खू.
- ३१ सर्व आउ सतंतर वरस आसरै, साध्यौ भीक्खू स्वाम।
जीव घणां समजायवा रे, कीधौ उत्तम कांम॥ भीक्खू.
- ३२ साध-साध्वी स्वाम छातां, आसरै एक सौ चार।
बोधि-दिशव्रत दीधौ बहु नै, सखरी रीत सुसार॥ भीक्खू.
- ३३ अड़तीसहंस आसरै कीधी, युक्ति न्याय सूं जोड़।
मुरधर मेवाड़ ढूंढार हाड़ोती, विचर्या सिरमणि मोड़॥ भीक्खू.
- ३४ राम नाम ज्यूं रटै स्वाम नै, मुझ मन अधिक निहोर।
हंसा मानसरोवर हरखै, चित जिम चंद चकोर॥ भीक्खू.

१. छह प्रकार के जीवों के रक्षक।

२. शृंखला।

३. स्थानांग, स्था. ३, सूत्र ४६४, ४६५।

- ३५ चात्रक मोर पपइया घन चित, गुरजी* ध्यान गगन।
 राग-विलासी राग आलापै, मुझ भीखू मैं मन॥ भीखू.
 ३६ पतिवरता समरै जिम पिउ नै, गोप्यां रै मन कांन१।
 तंबोळी रा पांन तणी पर, धरूं स्वाम नौ ध्यान॥ भीखू.
 ३७ आसा-पूरण आप तणां गुण, कह्या कठा लग जाय।
 सागर जल गागर किम मावै, किम आकाश मिणाय? भीखू.
 ३८ श्री वीर तणे पट स्वाम सुधर्मा, भीखू पट भारीमाल।
 रायचंद ऋष तीजै पट, दाख्यौ आगूंच दयाल॥ भीखू.
 ३९ आप तणा गुण हूं किम विसरूं, आप तणौ आधार।
 समरण आप तणौ नित्य समरूं, आप दयाल उदार॥ भीखू.
 ४० नांम आपरौ घट-भितर मुझ, जपूं आपरौ जाप।
 तुझ नांमे दुख-दोहग दूरा, कटै पाप-संताप॥ भीखू.
 ४१ मन वंछत मिलियै तुझ समरण, साध्यां सेती सोय।
 भजन तुम्हारौ भय-भव-भंजन, हरष अनोपम होय॥ भीखू.
 ४२ मंत्राक्षर जिम समरण मोटौ, परख्यौ म्हे तन-मन॥
 इहभव परभव मैं हितकारी, भीखू तणो भजन॥ भीखू.
 ४३ नमो-नमो भीखू ऋष निरमळ, मोख तणा दातार।
 समरण स्वाम तणो सुद्ध साध्यां, सिव-सुख पांमै सार॥ भीखू.
 ४४ हूंस घणा दिन सूं मुझ हुंती, आज फळी मन आस।
 'भीखू-जश-रसायण' नांमे, ग्रंथ रच्यो सुविलास॥ भीखू.
 ४५ विस्तार रच्यौ भीखू मुनिवर नौ, सुणीयौ तिण अनुसार।
 भीखू दृष्टंत हेम लिखाया, देखी ते अधिकार॥ भीखू.
 ४६ वैणीरामजी हेम कृत वर, भीखू चिरत सुपेख।
 इत्यादिक अवलोकी अधिकौ, ग्रंथ रच्यौ सुविसेख॥ भीखू.
 ४७ अधिकौ ओछौ जे कोई आयौ, विरुद्ध आयौ हुवै कोय।
 सिद्ध अरिहंत देव री शाखे, मिच्छामि दुकडं मोय॥ भीखू.
 ४८ संवत् उगणीसे आठे, आसोज एकम सुदि सार।
 शुक्रवार ए जोड़ रची, बीदासर सैहर मझार॥ भीखू.

१. कुरजी - क्रोंच पक्षिणी।

२. श्रीकृष्ण

४९ तेसठमी ढाळे स्वामी समर्या, कर्म काटण रै कांम।
कर जोडी 'ऋष जीत' कहै नित्य, लेउं तुम्हारौ नाम॥ भीक्खू.

कलश

१ मतिवंत संत महंत महामुनि, तंत भीक्खू ऋष तणा।
गुण सधन गाया परम पाया, हद सुहाया हिय घणा॥
तज जंत्र-मंत्र सुतंत्र लौकिक, भज ए मंत्र मनोहरू।
सुख-सदम पदम सुकरण 'जय-जश' नमो भीक्खू मुनिवरू॥

॥ इति भीक्खु जश रसायणे चतुर्थः खंडः॥

२

लघु भिक्खु जश रसायण

जयाचार्य

लघु भिक्खु जश रसायण : डा.

२१५

दूहा

- १ वीर-पाट सौधर्म वर, जंबू प्रभव उदार।
भट्ट सिद्धांभव 'मनक-पिय', जसोभद्र जयकार॥
- २ जसोभद्र ना सीस बे, संभूतविजय सुजांण।
भद्रबाहु मुनिवर भला, सोळ स्वपन कृत छांण॥
- ३ स्थूलभद्र दृढ़-चित रह्या, चउदश पूरव धार।
महागिरी सुहस्त फुन, 'गोत्र एलावच्छ सार'॥
- ४ सुद्ध परंपर महागिरी, नंदी^३ नाम उदार।
बहुल प्रमुख पट दूसगणी, अंत नामअवधार॥
- ५ संप्रति नै समझावीयौ, शिथिल थया सुहस्त।
कृतगढ़^४ अनेषणी प्रमुख, दोष विषै अभ्यस्त॥
- ६ महागिरी समझावीयौ, तब बोल्या इम वाय।
काळ आगामिक नै विषै, धर्म प्रवर्त्तस्यै ताय॥
- ७ दुर्भिख मैं मुनिवर भणी, जन देस्यै अनपाण।
आहार-पाणी तब तोड़ियौ, नशीत-चूरणे जाण॥
- ८ सुहस्त पट सुस्थित हुआ, कोटिवार जे ताहि।
सूर मंत्र जपवा थकी, कोटिक गच्छ कहिवाहि॥
- ९ सुहस्त परपाटी थई, तेह असुद्ध जणाय।
कल्पसूत्र मैं नाम तसु, वलि बहुश्रुत जाणै ताय॥
- १० आरंभी सुहस्त थी, सुस्थित सुप्रतिबुद्धाद।
अनुक्रम श्रेणज नीकळी, नंदीवृत्ति संवाद॥
- ११ सुहस्त पाछा सुद्ध हुवा, सुध परिपाटी आय।
ते पिण जाणै केवली, वंदे नंदी माय॥
- १२ 'प्रश्नोत्तर - रत्नमालिका', ग्रंथ कथा मैं ख्यात।
सुहस्ति दंड ले सुद्ध थया, एह मिलती दीसै बात॥

१. मनक के पिता

२. बे बंधव अधिकार (मू.)

३. नंदी थेरावलिया-गा. २५ से ४१ तक।

४. क्रीतकृत/अनाचार का भेद।

- १३ वज्रस्वाम नंदी विषे, सुध परिपाटी पट्ट।
कल्पसूत्र पिण नाम तसु, असुद्ध परंपर वट्ट॥
- १४ नंदीसूत्र विषै कथा, ते अनुसारे ताया।
धुर परिपाटी असुध में, द्रव्यै चरण जणाय।
- १५ पछै सुद्ध दिख्या ग्रही, सुद्ध परिपाटी पट्ट॥
एहवो न्याय जणाय छै, बहुश्रुत वदै सुवट्ट।
- १६ नंदी स्थिरावली विषै, दूसगणी अभिधान॥
अंत नाम ए आखीयो, पाछै न कह्यौ जान।
- १७ कल्प सूत्र मैं पिण कह्यौ, दूसगणी नो नांम।
थया हुवै ए वज्र जिम, ते पिण जाणै केवली ताम।
- १८ तथा वज्र पिण बे थया, दूसगणी पिण दोय।
ते पिण जाणै केवली, निश्चय खबर न कोय॥
- १९ कल्पसूत्र मैं इम कह्यौ, दूसगणी पट ताहि।
क्षमाश्रमण स्थिरगुप्त जे, वच्छसगोत्रज पाहि॥
- २० कुमार-धर्म थया पछै, पछै देवड्ढी नाम।
पछै नांम नहीं आखीया, कल्प विषै पिण ताम॥
- २१ कल्प विषै शाखा घणी, आखी छै त्यां माहि।
चरणधार केइ सुद्ध हुवै, ते पिण जाणै केवली ताहि॥

ढाळ : १

(प्रभवो मन में चिंतवै)

- १ वीर निर्वाण थकी रह्यौ, प्रवर पूर्व नो ज्ञान।
एक संहस्र वर्सा लगै, सतक वीसमें जान^१॥
- २ संवत पनरैसै तदा, वर इकतीसे वास।
भसमग्रह उतस्यां पछै, लूंको प्रगट्यौ तास॥
- ३ धूमकेतु बैठो तदा, दश वर्ष पहला दीस।
तास स्थिति वर्स तीन सौ, ऊपर फुन तेतीस॥
- ४ भस्मग्रह स्थिति वे सहंस वर्स नीं, ऊतरीयां सुं ताया।
'उदै-उदै' पूजा निग्रंथ नी, कल्पसूत्र मैं वाया॥

१. भगवती शतक २० उ. ८ सूत्र ७०।

२. उत्तरोत्तर।

- ५ वंकचूलिया मैं कह्यौ, प्रभु सिव थी संपेख।
बे सौ एकाणूं वर्सा लगै, विसुध परूपणा विसेख॥
- ६ ता पाछै उत्सूत्र नीं, परूपणा अधिकाय।
वर्स सोलसौ ऊपरै, निनाणूं लग ताय॥
- ७ तिहां दुष्ट वाणिया मानसै, हिंसा धर्म दिढ़ाय।
बहु जन भणी कुपंथ मैं, न्हाखेसी इधकाय॥
- ८ बे सौ एकाणूं वर्स लगै, सुध परूपणा ख्यात।
सोलेसै निनाणूं वर्स ए, असुध अधिक अवदात॥
- ९ ए उगणीसै नेऊ थयां, संघ सूत्र जे रास।
धेमकेतु तब बैसिस्थै, स्थिति तिण सय तेतीस वास॥
- १० ए वर्स तेवीसो तेवीस जे, तठा पछै अधिकाय।
उदय संघ नैं सूत्र तणो, वंकचूलिया मैं वाय॥
- ११ वर्स तेवीसोतेवीस ए, किसान वर्स लग थाय।
तेह तणौ निर्णय कहूं, सांभळजो चित ल्याय॥
- १२ च्यार सौ सत्तर वर्स लगै, नंदीवर्द्धन नो सोय।
संवत बरत्यू तठा पछै, वीर विक्रम नो जोय॥
- १३ अठारै सय तेपनें थया, वर्स तेवीसो तेवीस ।
धूमकेतु जद ऊतर्यौ, संघ पूजा अति दीस॥
- १४ द्वादश मुनि था तेपनें, स्वाम भीकखू रै सोय।
तब हेम हुआ मुनि तेरमा, पछै न घटीयौ कोय॥
- १५ बे सौ एकाणूं वर्षा लगै, सुध परूपणा किम न्याय।
सहस्र वर्ष पूर्वधर रह्या, केइक^१ सुध देखाय।
- १६ विसंभोग सुहस्त थी, नसीत-चूरणे न्हाळ।
उत्सूत्र तास परंपरा, पूरवधर तिण काळ॥
- १७ छ सौ नव वर्सा पछै^२, दिगंबर मत देख।
इम पूर्वज्ञानी थकां, विरुद्ध परूपण सेख॥
- १८ इम बे सौ एकाणु लगै, अति उत्सूत्र न थाय।
पाछै उत्सूत्र तणी, परूपणा अधिकाय॥

१. ते तौ (क)।

२. थयां पाछै (क)।

१९	सोलैसै निनाणु	वर्स ते,	अति	उत्सूत्र	कुहेतु।
	ए उगणीसै	नेऊं थयां,	बैठौ	ग्रह	धूमकेतु॥
२०	पनरसै	इकतीसै समै,	लूंकौ	प्रगट्यौ	न्हाल।
	भस्मग्रह	तब ऊतरयौ,	धूमकेतु	वय	बाल॥
२१	लूंका	नां प्रतिबोधीया,	सुध	ववहार	जणाय।
	धूमकेतु	बळ बाधीयां,	ते पिण	ढीला	थाय॥
२२	सतरै	सै नवकै समै,	ढूंढ्या	निकल्या	ताहि।
	संकड़ाइ	माहै ते रह्या,	समगत	दीसै	नांहि॥
२३	समत	अठारै सत्तरोत्तरे,	पंचांग	लेखै	जांण।
	वय वृध	धूमकेतु थयां,	प्रगट्या	भीक्खू	भांण॥
२४	मंद बल	धूमकेतु तदा,	लूंकौ	प्रगट्यौ	ताम।
	ऊतरतै	मंद बल तदा,	प्रगट्या	भिक्खू	स्वाम।
२५	तेर संत	सूं नीकळ्या,	धूमकेतु	थो	तिवार।
	तिण सूं	तेपनां लग बहु,	बध्यौ	न संघ	विस्तार॥
२६	अंत	तेपनें ऊतरयौ,	धूमकेतु		अपयोग।
	ता पाछै	बाध्यौ बहु,	च्यारूं	संघ	प्रयोग॥
२७	अठारै	सै साठै समै,	एकवीस	मुनि	योग।
	अज्जा	सतावीस मेलनै,	पोहता	भीक्खू	परलोग॥
२८	समत	अठारै अठंतरे,	संत	पैंतीस	सुचाल।
	अज्जा	इकताळीस मेलनै,	परभव		भारीमाल॥
२९	उगणीसै	आठै समै,	सतसठ		मुनिराय।
	इकसौ	चमालीस अज्जा मेलनै,	परभव	मैं	ऋषराय।
३०	भीक्खू	नै वरतारे थया,	संत	सती	सुखकार॥
	एकसौ	च्यार रै आसरै,	दिख्या	दीधी	सार॥
३१	मुनि	अज्जा बयासी थया,	भारीमाल	छतां	सार।
	थया	बे सौ पैताळीस आसरै,	रायऋषी	छतां	सार॥
३२	इम दिन-दिन	दीसै दीपतौ,	च्यार	तीर्थ	वृद्धिकार।
	वंकचूलिया	री वारता,	मिलती	दीसै	उदार॥
३३	प्रथम	ढाळ मैं पीठका,	धुर सूं	बात	प्रकासी।
	सुध श्रद्धा	आचार सूं,	'जय-जश'	आनन्द	थासी॥

दूहा

- १ हिव उत्पति भीखू तणी, धुर सेती अवलोय।
संक्षेपे कहियै अछै, सांभळजो सहु कोय॥
- २ किण स्थानक मुनि जनमीया, द्रव्य-दिख्या किण ठांम।
सुध श्रद्धा आई किहां, सूत्र थकी अभिराम ॥
- ३ किम चरचा द्रव्य-गुरु थकी, आहार तोड़्यौ किण ग्राम।
किम बहुजन प्रतिबोधीया, च्यार तीर्थ गुणधाम॥
- ४ लिखत मर्यादा किम करी, संलेखणा किम अंत।
किण विध संथारौ कीयौ, सहु संक्षेप कहंत॥

ढाळ : २

(कीड़ी चाली सासरे रे)

- १ भिक्खू प्रगट्या भरत मैं रे, मणिधारी मुनिराय।
अतिसय-धारी ओपता रे, जबर दिशा अधिकाय।
सुगण जन सांभळौ रे॥
- २ दान-दयादिक ऊपरै रे, दिया विविध दृष्टंत।
श्रीजिन आज्ञा सिर धरी रे, दीपायौ प्रभु पंथ॥ सुगण.
- ३ सावज्ज-निरवद सोधीया रे, ऊंडी बुद्धि उत्पात।
भाग्यबली भिक्खू भला रे, वारू जश विख्यात॥ सुगण.
- ४ समत सतरै बयांसीयें^१ रे, शहर कंटाळ्ये सार।
सींह सुपने सुत जनमीयौ रे, आसाढ़ सुध अधिकार॥ सुगण.
- ५ रमणी एक परण्यां तिहां रे, काळ कितै सुविचार।
शील आदर्यौ बिहुं जणां रे, दिख्या री दिलधार॥ सुगण.
- ६ अनुमत माता ना द्वियै रे, सुपने देख्यौ सीह।
द्रव्य गुरु कहै ए गूंजसी, 'मृगपति जेम अबीह'^२॥ सुगण.
- ७ समत् अठारै आठै समै रे, द्रव्य-गुरु धार्या रुघनाथ।
दिख्या-मोहछब दीपता रे, बगड़ी शहर विख्यात॥ सुगण.

१. विक्रम संवत् १७८३।

२. सिंह की तरह निर्भय।

- ८ बहु सिद्धांत वांची करी रे, जाण लियौ तिण वार।
थाप बहु दोषां तणी रे, पिण द्रव्य-गुरु सूं अति प्यार॥ सुगण.
- ९ पूछ्यां सुद्ध उत्तर नहीं रे, इह अवसर रै माय।
बात सुणी रुघनाथजी, कहै भीक्खू नै बोलाय॥ सुगण.
- १० श्रावक राजनगर तणां रे, वंदणा छोड़ी ताहि।
थे जइ संका मेट दो रे, बुधिवंत विण मिटै नांहि॥ सुगण.
- ११ सुण भिक्खू आया तिहां रे, भारीमालजी जांण।
टोकरजी हरनाथजी, वलि साथे वीरभांण॥ सुगण.
- १२ श्रावक कहै भिक्खू भणी रे, आधाकर्मी आद।
थाप दोष री थांहरै रे, म्हे किम सरधां साध? सुगण.
- १३ द्रव्य-गुरु रौ वच राखवा रे, निज बुद्धि करनै ताय।
पगां लगाया तेहनै रे, वलि श्रावक कहै वाय॥ सुगण.
- १४ संका तौ मुज नां मिटी रे, पिण थारी परतीत।
तिण कारण वंदना करां रे, आप वैरागी वदीत॥ सुगण.
- १५ इह अवसर भिक्खू तणै रे, तनु मैं प्रगट्यौ ताप।
सीयो^१ दुस्सह अति घणौ रे, तब मन चिंतै आप॥ सुगण.
- १६ म्हे साचां नै झूठा किया रे, प्रत्यक्ष मोटौ पाप।
आउ आवै इण अवसरै रे, तौ कुण गति हुवै मिलाप? सुगण.
- १७ द्रव्य-गुरु काम आवै कदी रे, मिटीयां वेदन मोय।
सुध-मारग धारूं सही रे, कांण न राखूं कोय॥ सुगण.
- १८ अभिग्रह एहवौ आदर्यौ रे, तुरत मिट्यौ तब ताव^३।
वार-वार सूत्र वांचीया रे, सखरौ जाण्यौ साव^३॥ सुगण.
- १९ सुध हाथे नाई श्रधा रे, असल नहीं आचार।
वर-जिन वचन विलोकतां रे, भूला ए भेषधार॥ सुगण.
- २० ताम श्रावकां नै तदा रे, बोल्या भीक्खू वाय।
थे साचा, सुद्ध थाप थी रे, म्हे झूठा छां ताय॥ सुगण.

१. शीत लगकर आने वाला ज्वर।

२. बुखार।

३. एकदम अच्छी तरह।

- २१ सुण श्रावक हरख्या सही रे, आप तणी परतीत।
जिसी हुंती ते तुरत ही रे, आप दिखाड़ी सुरीत॥ सुगण.
- २२ इम संवत अठार पनरोत्तरे रे, राजनगर मैं रंग।
सूत्र वांच निर्णय कियौ रे, सखरी रीत सुचंग॥ सुगण.
- २३ हिव चउमासौ ऊतस्यां रे, मरुधर देश मझार।
सोजत मैं आवी मिल्या रे, द्रव्य-गुरु सूं तिण वार॥ सुगण.
- २४ द्रव्य-गुरु नै इह विध कहै रे, भूला मारग सार।
सुध-सरधा आई नहीं रे, असल नहीं आचार॥ सुगण.
- २५ सावज करणी पाप री रे, निरवद पुन री होय।
पिण एकण करणी मझै रे, पुन्य-पाप नहिं दोय॥ सुगण.
- २६ असंजती नै दान दै रे, जिन कह्यौ एकंत पाप।
'शतक आठमें भगवती," स्थिर चित सेती थाप॥ सुगण.
- २७ असंजती रौ जीवणौ रे, वंछ्यां सावज जोग।
सावज अनुकंपा कही रे, देखो दे उपयोग॥ सुगण.
- २८ आधाकर्मी भोगवां रे, थानक नित-पिंड आहार।
मोल लीया वस्त्रादि जे रे, अहोनिश जडौ कवाड़॥ सुगण.
- २९ इत्यादिक बहु वारता रे, दाखी विविध प्रकार।
द्रव्य-गुरु सुण मांनी नहीं रे, क्रोध चढ्या तिण वार॥ सुगण.
- ३० जद भिक्खू मन चिंतवै रे, करिवौ कवण प्रकार?
हिवड़ां न दीसै समझता रे, समजाविस धर प्यार॥ सुगण.
- ३१ दोय वर्स कै आसरै रे, किया अनेक उपाय।
केतलायक नै समझायवा रे, द्रव्य-गुरु नै पिण ताय॥ सुगण.
- ३२ वले बगड़ी माहे आवीया रे, बोल्या भिक्खू वाय।
सुध सरधा आचार नै रे, धारौ आंण उछाह॥ सुगण.
- ३३ तब द्रव्य-गुरु मांनी नहीं रे, मन मैं कियौ विचार।
ए तो न दीसै समजता रे, हिवै करूं आतम नौं उद्धार॥ सुगण.
- ३४ इम मन पक्की धारनै रे, भिक्खू बुद्धि भंडार।
तड़कै तोड़ी नीकळ्या रे, आया स्थानक रै बार॥ सुगण.

- ३५ सेवग पुर मैं फिर गयो रे, बोल्यौ एहवी वाण।
जागां दीधी भीखू भणी रे, तो संघ तणी छै आंण॥ सुगण.
- ३६ करली कुबुधिज केलवी रे, सेज्या^१ न मिल्यां सोय।
आफेई^२ आसी उरहा^३ रे, थानक मैं अवलोय॥ सुगण.
- ३७ पुर मैं जागां नां मिली रे, भिखू कीयो विहार।
बगड़ी बाहिर आवीया रे, वाउल^४ वाजी तिवार॥ सुगण.
- ३८ जैतसिंहजी री जिहां रे, छतरी अधिक उदार।
आवीनै बैठा तिहां रे, सुणीयो शहर मझार॥ सुगण.
- ३९ दूजी ढाळ प्रगट पणै रे, स्वाम तणी सुखदाय।
वारूँ वतका^५ सांभळ्या रे, 'जय-जश' हरष सवाय॥ सुगण.

१. स्थान।

२. स्वतः।

३. वापस।

४. तेज हवा (आंधी)।

५. बात।

दूहा

- १ द्रव्य-गुरु सांभलीयौ तदा, लोक बहू ले लार।
आया छत्र्यां नै विषै, भिक्खू कनै तिवार॥
- २ द्रव्य गुरु नै भिक्खू तिहां, बैठा छत्र्यां माय।
मांहोमा बातां करै, ते सुणजो चित ल्याय॥

ढाल : ३

(हां रा मेवासी नान्ही सी नणदोळी रा)

- १ हांरे भिक्खू म्है दीधी तुज दिख्या रा २, धर मुज सिख्या रा २॥
सुण वारु जी॥
- २ हांरे भीखन! द्रव्य गुरु बोल्या ताह्यौ रा २, सुण मुज वायो रा २॥ सुण.
- ३ हांरे भीखन! ओ दुखम पंचम आरो रा २, अधिक असारो रा २॥ सुण.
- ४ हांरे भीखन! थारे दिद संजम सूं पेमो रा २, निभेलो केमौ रा २॥ सुण.

(डाभ मुंजादिक नी डोरी)

- ५ तब भिक्खू बोल्या ताह्यौ, म्हे किम मानां तुज वायौ।
सूत्र वाचेनै कीधौ निरणौ, लेसां जिन-वचनां नो सरणौ॥
- ६ सूत्र रूप तीर्थ ए जाचौ, रैहसी छेहड़ा तांई साचौ।
सुध पाळसां संजम भार, करस्यां आतम तणो उद्धार॥
- ७ द्रव्य-गुरु सुण वचन उदार, तब तूटी आस तिवार।
मोह आयौ तिणवार, मन चिंता हुई अपार॥
- ८ उदैभाण^१ बोलयौ तब एम- इम आंसूपच^२ करौ केम?
बाजौ टोळा तणा धणी आप, राखौ थिर चित दृढ़ मन थाप॥
- ९ कहै-किण रो जावै एक, म्हारा जावै पांच विसेख।
औ तौ प्रत्यक्ष ही इह वार, गण माहै पडै बघार^३॥
- १० भिक्खू दृढ़ चित कियौ उदार, म्हैं घर छोड्यौ तिणवार।
मुज माता रोई अपार, तौ पिण न मान्यौ तिवार॥

१. स्थानकवासी सामदासजी के टोले के साधु।

२. अश्रुपात।

३. मोटे छिद्र।

- ११ जो हुं रहूं भागलां माय, तौ परभव में दुख पाया
 इम दृढ़ चित ज्ञान विचार, आप सैंठा रह्या तिणवार॥
 १२ द्वेष सूं तौ तुरत डिगै नांय, मोह-राग थकी चल जाया
 द्रव्य-गुरु मोह आप्यौ ताय, पिण कारी न लागी काय॥

दूहा

- १३ वलि द्रव्य-गुरु मन चिंतवै, इम तौ डिगीयो नाय।
 वलि चलावा कारणे, बोल्या इह विध वाय॥

(हां रा मेवासी नान्ही)

- १४ हांरे भीखन! तू जासी कितीयक दूरो रा २, हूं लोक लगासूं पूरो रा २॥ सुण.
 १५ हांरे भीखन! आगै थारौ नै पूठै म्हारो रा २, रहिसूं लारो रा २॥ सुण.

(डाभ मुंजादिक नीं डोरी)

- १६ जद भीक्खू बोल्या वाय, परिषह खमवा री मन माय।
 इम तौ डरायौ न डरूं कोय, कितौ काळ जीवणौ मोय?
 १७ पछै छत्रां सूं कियौ विहार, हुआ रुधनाथजी लार।
 चरचा कीधी है वरलू माय, ते सांभळजो चित ल्याय॥
 १८ तब द्रव्य-गुरु बोल्या ताय, सांभळ भीखन! मुज वाय।
 साधुपणौ पळै नहीं पूरौ, ए दुषम काळ करूरो॥
 १९ तब भीक्खू कहै इम वाय, कह्यौ सूत्र आचारांग माय।
 ढीला भागल कहेसी एम, हिवड़ां न पळै चरण सुध नेम॥
 २० बल संघयणादिक हीण, दुषमकाळ महा क्षीण॥
 न पळै आचार सुध भाव, नहीं उत्सर्ग नो प्रस्ताव॥
 २१ कह्यौ आगूंच अर्थ उदार, इम कहसी ते भेषधार।
 द्रव्य-गुरु हुवा कष्ट^१ अपार, सुध जाब न आयौ तिवार॥
 २२ द्रव्य-गुरु भीक्खू रै ताहि, बहु चरचा हुई माहो माहि।
 इहां संक्षेप मात्रज आखी, वलि द्रव्य-गुरु इह विधि भाखी॥

(हां रा मेवासी नान्ही सी)

१. खिन्ना।

- २३ हां रे भीखन! चारित्र निरतीचारो रा २, दुक्करकारो रा २॥ सुण.
 २४ हां रे भीखन! जो दोय घड़ी निरदोखो रा २, चारित्र पाळै चौखौ रा २॥ सुण.
 २५ हां रे भीखन! इम सुध तन-मन सूं भावै रा २, तौ केवल पावै रा २॥ सुण.

(डांभ मुंजादिक नीं डोरी)

- २६ हां इम बोल्या है बिना विचार, भीक्खू सांभळ नै तिणवार॥
 पाछौ उत्तर देवै एम, तुम्हें सांभळजो धर प्रेम॥

(पूज मोटा भांगै टोटा)

- २७ इम सुन वचन झट सुघट सुध वच, प्रगट भिक्खू उच्चरै।
 घटिका जु बे सुध चरण निरमळ, अमल करि केवळ वरै॥
 २८ 'बे घड़ि तलक' वक्क काय नासा, रूंध समभावे रहूं।
 थिर चित्त अधिक पवित्त अति, हित चित थी केवळ लहूं॥
 २९ सौधर्म जंबू मुनि रह्या, छद्मस्थ बहु वसें सही।
 सुध निरतीचारज बे घड़ी, त्यां चरण पाळ्यौ कै नहीं?
 ३० तसु पट्ट प्रभव सिजंभवादिक, पूर्व ज्ञानज पावही।
 तुज लेख सुद्ध चरित्त, त्यां पिण बे घड़ी पाल्यौ नहीं॥
 ३१ मुनि तेर सहसज तीन सय, फुन रह्या जे छद्मस्थ ही।
 तुज लेख सुद्ध चरित्त त्यां पिण, बे घड़ी पाळ्यौ नहीं॥
 ३२ मुनि गोतमादिक सप्तसय, छद्मस्थ जे बहुकाळ ही।
 तुज लेख सुद्ध चरित्त, त्यां पिण बे घड़ी पाळ्यौ नहीं॥
 ३३ फुन वर्ष द्वादस तेर पख, महावीर प्रभु छद्मस्थ ही।
 तुज लेख सुद्ध चरित्त, त्यां पिण, बे घड़ी पाळ्यौ नहीं॥

सोरठा

- ३४ ए चर्म सरीरी जेह रे, केवळ उत्पत्ति काळ थी।
 बहु पूर्व काळेह रे, स्यूं दोय घड़ी पाल्यौ नथी॥

दूहा

- ३५ इत्यादिक हुई घणी, चरचा माहोमाय।
 समजाया समजै नहीं, कीया अनेक उपाय॥

(हां रा मेवासी नान्ही सी)

३६ हां रे सुगणजन! वरलूं सूं कियौ विहारो रा२, भीक्खू सारो रा २।

जशधारी जी॥

- ३७ हां रे सुगणजन! बुद्ध भीक्खू नी भारी रा २, अधिक उदारी रा २॥ जश.
३८ हां रे सुगणजन! भीक्खू चिंतव्यो मन माही रा २, ए तो समज्या नाहीं रा २॥ जश.
३९ हां रे सुगणजन! निज काका गुरु तामो रा २, जैमलजी नामो रा २॥ जश.
४० हां रे सुगणजन! समजाऊं सधीको रा २, ते सरल भद्रीको रा २॥ जश.
४१ हां रे सुगणजन! इम चिंतव मन माही रा २, आया चलाई रा २॥ जश.
४२ हां रे सुगणजन! जैमलजी रे उदारी रा २, श्रद्धा बेसारी रा २॥ जश.
४३ हां रे सुगणजन! तत्क्षिण भिक्खू रै लारी रा २, ते पिण हुआ त्यारी रा २॥ जश.
४४ हां रे सुगणजन! द्रव्य गुरु सुण नै तामो रा २, भांग्या परिणामौ रा २॥ जश.
४५ हां रे सुगणजन! बुद्धिवंत तुज गण माह्यौ रा २, त्यांनै लेसी ताह्यौ रा २॥ जश.
४६ हां रे सुगणजन! बीजा नै न लेवै लारो रा २, हुसी निराधारो रा २॥ जश.
४७ हां रे सुगणजन! इम ए दुखिया होसी रा २, थानै सह रोसी रा २॥ जश.
४८ हां रे सुगणजन! थारे बहु परिवारो रा २, मतीय^१ विचारो रो २॥ जश.
४९ हां रे सुगणजन! थे छो घणा रा नाथो रा २, म विचारौ वातो रा २॥ जश.
५० हां रे सुगणजन! तुज मुनि जोग सूं तामो रा २, भिक्खू रो होसी नामो रा २॥ जश.
५१ हां रे सुगणजन! टोळै भिक्खू रो वाजेसी रा २, थारो नाम न रैसी रा २॥ जश.
५२ हां रे सुगणजन! फकीर वालो दुपटै होई रा २, ए दृष्टांत जोई रा २॥ जश.
५३ हां रे सुगणजन! इत्यादिक वच करि तामो रा २, भांग्या परिणामौ रा २॥ जश.
५४ हां रे सुगणजन! बोल्या जैमलजी बायो रा २, सुणौ भिक्खू ताह्यौ रा २॥ जश.
५५ हां रे सुगणजन! गला जितो हूं कळियौ^२ रा २, न कहूं वच अलियो^३ रा २॥ जश.
५६ हां रे सुगणजन! थे संजम सुध पालौ रा २, आतम उजवालौ रा २॥ जश.
५७ हां रे सुगणजन! पिंडतारै अवलोयो रा २, जाण वरते सोयो रा २॥ जश.
५८ हां रे सुगणजन! जैमलजी रा उदारो रा २, षट अणगारो रा २॥ जश.
५९ हां रे सुगणजन! मन माहि गाढी धारौ रा २, हुआ भिक्खू लारो रा २॥ जश.
६० हां रे सुगणजन! जैमलजी रा षट संचो रा २, द्रव्य-गुरू रा पंचो रा २॥ जश.
६१ हां रे सुगणजन! अन्य गण ना बे धारी रा २, तेरै थया त्यारी रा २॥ जश.

१. मति से।

२. फंसा हुआ।

३. अयथार्थ।

६२	हां रे सुगणजन! शहर जोधाणै समेरो रा २,	थया श्रावक तेरो रा २॥ जश.
६३	हां रे सुगणजन! सामायक पोसह धारो रा २,	क्यूं बैठा बाजारो रा २॥ जश.
६४	हां रे सुगणजन! फतैचंद दीवाणौ रा २,	सिंघी पिछाणो रा २॥ जश.
६५	हां रे सुगणजन! देखी पूछै तिवारो रा २,	क्यूं बैठा बाजारो रा २॥? जश.
६६	हां रे सुगणजन! थानक माहै सीधा रा २,	पोसा क्यूं नी कीधा रा २॥ जश.
६७	हां रे सुगणजन! श्रावक कहै तिवारो रा २,	मुज गुरु सारो रा २॥ जश.
६८	हां रे सुगणजन! तज थानक नीसरिया रा २,	भिकखू गुण दरिया रा २॥ जश.
६९	हां रे सुगणजन! ताम दीवाणजी इच्छै रा २,	उत्पत्ति पूछै रा २॥ जश.
७०	हां रे सुगणजन! श्रावक बोल्या साख्यातो रा २,	छै बहु बातो रा २॥ जश.
७१	हां रे सुगणजन! थिरता ह्वै जद सुणजो रा २,	स्थिर चित्त थुणजो रा २॥ जश.
७२	हां रे सुगणजन! कहै दीवान उदारू रा २,	स्थिरता अबारू रा २॥ जश.
७३	हां रे सुगणजन! श्रावक तांम कहै सुणायौ रा २,	आचार बतायौ रा २॥ जश.
७४	हां रे सुगणजन! आधाकर्मी आदौ रा २,	तजिया विवादौ रा २॥ जश.
७५	हां रे सुगणजन! कृतगढ़ नै नितपिंडो रा २,	दोषण छंडोरा २॥ जश.
७६	हां रे सुगणजन! इत्यादिक आचारौ रा २,	आख्यौ उदारौ रा २॥ जश.
७७	हां रे सुगणजन! सांभळ सिंघी हरख्यौ रा २,	भीक्खु गुण परख्यौ रा २॥ जश.
७८	हां रे सुगणजन! ओहीज मुनि नो आचारौ रा २,	सुध मग सारो रा २॥ जश.
७९	हां रे सुगणजन! करै प्रसंस सवायो रा २,	मन हरखायो रा २॥ जश.
८०	हां रे सुगणजन! संत किताक सुमेरो? रा २,	श्रावक कहै तेरो रा २॥ जश.
८१	हां रे सुगणजन! किता श्रावक थे सारो? रा २,	अधिक उदारो रा २॥ जश.
८२	हां रे सुगणजन! म्हे भीखु ऋषि केरा रा २,	श्रावक तेरा रा २॥ जश.
८३	हां रे सुगणजन! सिंघी बोल्यौ तिवारी रा २,	जोग मिल्यौ ए भारी रा २॥ जश.
८४	हां रे सुगणजन! सेवग उभो ज्यांही रा २,	तुको जोड़्यौ त्यांही रा २॥ जश.

दूहा

साध साधरो गिलो करै, ते आप आपरो मंत।
सुणजो रे शहर रा लोकां, ए तेरापंथी तंत॥

(हां रा मेवासी नान्ही सी नणदोळी रा)

८५ हां रे सुगणजन! तैरै श्रावक तैरै संतो रा २, तेरापंथी तंतो रा २॥ जश.

- ८६ हं रे सुगणजन! जग विसतारियो तामो र २, तेरापंथी नामो रा २॥ जश.
 ८७ हं रे सुगणजन! ताम भिक्खू इम केहवै र २, समचित वेवै रा २॥ जश.
 ८८ हं रे सुगणजन! हे प्रभुजी म्है तेर र २, अवर अनेरा रा २॥ जश.
 ८९ हं रे सुगणजन! सुमत गुप्त अठ संचो र २, पाळै व्रत पंचो रा २॥ जश.
 ९० हं रे सुगणजन! ए तै पाळै चित संती र २, सो ही तेरापंथी^१ रा २॥ जश.
 ९१ हं रे सुगणजन! द्दळ तीजी ए धीर २, जय-जश कीधी रा २॥ जश.

भीक्खू कृत छप्पय

१. गुण विण भेष कूं मूल न मानत,
 पुन्य पाप कूं भिन-भिन जानत,
 आवता कर्मा नै संवर रोकत,
 बंध तो जीव कूं बंधिया राखत,
 इसी घट प्रकाश किया,
 निर्मळ ज्ञान उद्योत किया,
 जीव-अजीव का किया निवेरा।
 आसव कर्मा कूं लेत उरेरा।
 निर्जरा कर्मा कूं देत विखेरा।
 सासता सुख तौ मोख में डेरा।
 भव जीव का मेट्या मिथ्यात अंधेरा।
 ऐ तो है पंथ प्रभु तेरा ही तेरा।
२. तीन सौ तेसठ पाखंड जगत में,
 द्रव्यलिंगी केई साध कहावत,
 ताहि कूं दूर तजै ते संत,
 जिन आगम जोय प्रमाण किया
 व्रत अव्रत दान दया वतावत,
 श्री जिन आगन्या माहै धर्म बतावत,
 श्री जिन धर्म सूं सर्व अनेरा।
 त्यां पिण पकड़्या त्यांराइज केड़ा।
 विधि सूं उपदेश दिया रूड़ेरा।
 जब पाखंड पंथ मैं पड़िया बिखेरा।
 सावज्ज निरवद करत निवेरा।
 ऐ तो है पंथ प्रभु तेरा ही तेरा॥

दूहा

- १ भीक्खू भारीमालजी, आदि संत सुविचार।
नवो चरण लेवा भणी, ततखिण होय गया त्यार॥
- २ समत् अठार सतरोत्तरे, पंचांग लेखे पिछांग।
आषाढ़ सुदि पूनम दिने, वारु चरण कल्याण॥
- ३ अरिहंत नी लेई आगन्यां, शहर केलवा माया।
संजम धार्यौ स्वामजी, सिद्ध शाखे सुखदाय॥

ढाळ : ४

(सुण चिरताली थारा लीजै चरित संभाली)

- १ थिरपालजी फतैचन्दो, दोनूं बाप-बेटा सुखकंदो।
जैमलजी रा टोळा रा जाणी, भिक्षु साथ चरण गुणखाणी।
सुण सुखकारी, भिक्षु प्रतिबोध्या बहु नर-नारी।
सुण सुखकारी, भिक्षु थया ओजागर भारी॥
- २ आचार्य भिक्षु ऋषिरायो, वले टोकरजी सुखदायो।
हरनाथजी ज्ञान गंभीरा, हद भारीमाल गुण हीरा॥ सुण.
- ३ संत तेरा मैं ताह्यौ, रह्या दृढ़ चित छहुं मुनिरायो।
शेष सात नीसरिया, ते पिण बादल जिम बीखरीया॥ सुण.
- ४ भिक्खू दान-दया दीपावै, बहु नर-नारी समजावै।
व्रत-अव्रत लेखौ बतावै, हळुकर्मी सुण हरसावै॥ सुण.
- ५ मुरधर देश मझारो, स्वामी आछौ करै उपगारो।
आया देश मेवाड़ो, बहु प्रतिबोध्या नर-नारो॥ सुण.
- ६ सरधा नै आचारो, व्रत-अव्रत ऊपर विचारो।
वली अणुकंपा नी सुरंगी, स्वामी जोड़ करी अति चंगी॥ सुण.
- ७ धुर गुणठाणा नी करणी, निरवद आज्ञा मैं उचरणी।
जिन आज्ञा ऊपर जाणी, स्वामी जोड़ करी सुखदाणी॥ सुण.
- ८ च्यार निखेपा नी जाची, पोतियाबंध ऊपर आछी।
काळवादी ऊपर सीधी, सूत्र साख देइ जोड़ करी कीधी॥ सुण.

- ९ पर्यायवादी पिछाणौ, वले इन्द्रियवादी जाणौ।
 वले एकल नै ओळखायौ, बहु जोड़ों करी मुनिरायौ॥ सुण.
 १० वले टोकम डोसी कहिवाई, तिण री श्रद्धा नै ओळखाई।
 नव-तत्त्व नी जोड़ सुरंगी, चारु सूत्र साख दे चंगी॥ सुण.
 ११ वले विनीत नै अविनीतो, तिण ऊपर जोड़ पवित्तो।
 टाळोकर नै ओळखायौ, 'वृध रस' माहे बहु न्यायो॥ सुण.
 १२ वले जोड़्या सखर बखाणों, वारु वैराग-रस गुण-खाणों।
 आसरै अड़तीस हजारो, स्वामी ग्रंथ^१ जोड़्या सुखकारो॥ सुण.
 १३ सूत्रां नी हूंडी सीधी, वले पोत्याबंध ऊपर कीधी।
 अवर ही बोल अनेको, वले मेल्या न्याय विशेषो॥ सुण.
 १४ उत्पतिया बुध सूं उदारी, स्वामी दृष्टांत दीधा भारी।
 हळुकर्मी सुण हरषावै, चित चिमतकार अति पावै॥ सुण.
 १५ वले संत-सती बहु कीधा, घणा श्रावक-श्राविका सीधा।
 विचर्या मुरधर नै मेवाड़ो, वले हाडोती देश दूँढाड़ो॥ सुण.
 १६ चूरू ताई थली मैं आया, प्रयोजने ऋषिराया।
 बहु विचर्या मरुधर मेवाड़ो, दोय चोमासा देश दूँढाड़ो॥ सुण.
 १७ ओजागर भिक्षु आपो, स्थिर च्यार तीर्थ मैं स्थापो।
 पूर्वधारी जेहवा, ए तो स्वाम भीखणजी एहवा॥ सुण.
 १८ दशविध जती-धर्म-धारी, ज्यांरी करणी री बलिहारी।
 परभव चिंता पूरी, ज्यांरी कीर्ति जग मैं रूढ़ी॥ सुण.
 १९ क्षमावंत गुणखाणो, स्वामी अधिक अवसर ना जाणो।
 सिंह तणी पर सूर, झट मेलै न्यायज रूढ़ा॥ सुण.
 २० वलै वैराग रस माहै भीना, संवेग करी लहलीना।
 नाम सुणी पाखंडी धड़कै, जन हळुकर्मी सुण हरखै॥ सुण.
 २१ सील सिरोमणी साचा, जशधारी भिक्षु जाचा।
 दयावंत इन्द्रयां दमता, सत^३ दत्त^४ निकंचन^५ रमता॥ सुण.
 २२ एहवा भिक्षु ऋषिरायो, त्यांरा गुण पूरा कहा न जायो।
 संक्षेप मात्र बताया, गुण अनघ^६ अथग अधिकाया॥ सुण.

१. अवनीत रासा।

२. ग्रन्थाग्र।

३. सत्या।

४. अचौर्य।

५. अपरिग्रह।

६. निर्मला।

२३ वलि बांधी बहु मर्यादो, आतो आंणी अति अहलादो।
धुर बत्तीसे धारी, अंत गुणसठे लिखत उदारी।
जन सुखकारी, वर बांधी मर्यादा भारी॥

२४ गणपति नामे दिख्या, करणा शिष्य-शिष्यणी वर शिख्या।
दिख्या देनै सूपणा आणौ, लिखत गुणसठै भिक्खु नीं वाणौ॥ जन.
२५ शेखे काळ चौमासो, रहिवौ गणपति आण हुलासौ।
किण ही खेत्र रे माहि, गणि आणा विण रहिवौ नाहि॥ जन.
२६ आचार्य नीं इच्छा आवै, गुरुभाई चेला नै स्वभावै।
सूपै टोळा रौ भारौ, तिणरी आणा मै रहिवौ तिवारो॥ जन.
२७ सहु संत-संत्यां नै ताह्यौ, रहिणौ एकण री आणा माह्यौ।
एह रीत परंपर बांधी, मार्ग चालै जठा ताई सांधी॥ जन.
२८ कर्म-जोग इक बे त्रिण आदौ, गण सूं नीकळ करै विवादौ।
तिण नैं साधु सरधवौ नांहि, न गिणवौ च्यार तीर्थ रे माहि॥ जन.
२९ च्यार तीर्थ रौ तेही, निंदक जाणवौ जेही।
वांदे पूजै एहवा नै कोई, ते पिण जिण आज्ञा बारै होई॥ जन.
३० नीकळ नवी दिख्या ले कोई, तिणनें साधु न सरधणो सोई।
तिण री बात न मानणी लिगाये, आरै^१ कीधौ दीसै अनंत संसारो॥ जन.
३१ कर्म-जोगे नीकळीयां बारो, तिण नैं टोळा तणा तिण बारो।
हुंता-अणहुंता जाणौ, अवगुण बोलण रा पचखाणौ॥ जन.
३२ विटळ^२ होई भांगै सूंस कोई, तसुं हळुकर्मी न मानै सोई।
उण सरीखो विटळ मानै वायो, ते लेखा माहि न गिणायौ॥ जन.
३३ इम ही पचासे जाणौ, अवगुण बोलण रा पचखाणौ।
नीकळ नवी दिख्या ले कुमागो, तौ पिण अवगुण बोलण रा त्यागो॥ जन.
३४ म्है नवी दिख्या लीधी समभावौ, आगला सूंसां रौ नहीं अटकावौ।
यूं पिण बोलण रा पचखाणो, लिखत पचासै भिक्षु वाणो॥ जन.
३५ पत्र लिख्या जाच्या गण माही, तिके बाहिर ले जावणा नांही।
इक निशि उपरंत जाणो, खेत्रां मै रहिवा रा पचखाणो॥ जन.

१. स्वीकार।

२. पथ भ्रष्ट।

- ३६ लिखत पैताळीसे अमोलो, श्रद्धा-आचार-कल्प सूत्र बोलो।
गुरु तथा बुद्धिवंत संतो, कहे जिम करणो धर खंतो१॥ जन.
- ३७ पचासे गुणसठे जाणौ, वले सैंतीसे रास मैं वाणो।
दोष देखे तौ तुरत कहिणौ, घणा दिवस दाबै नहीं रहिणौ॥ जन.
- ३८ आचार्य री आज्ञा विण ताह्यौ, एक निशि उपरंत गाम माह्यौ।
मुनि-अज्जा नै भेळो न रैणौ, पचास लिखत माहि ए वेणौ॥ जन.
- ३९ आहार-पाणी बहिरीनै ल्यायौ, संभोगी नै बांटी देणौ ताह्यौ।
आप आप्यौ जाणी अधिक लेवै, अदत्त लागै प्रतीत न रैवै॥ जन.
- ४० दैणी दिख्या महाजन नै ताह्यौ, स्वामी छेहडै वचन फुरमायौ।
पिण पाना मैं लिखीयौ नाही, सुवनीत धर्यौ दिल माही॥ जन.
- ४१ इत्यादिक मर्यादौ, स्वामी बांधी घर अहलादौ।
बहु वर्षा लग तांमौ, स्वामी सासण चलावण कामौ॥ जन.
- ४२ चोथी ढाळ मझारौ, भिक्षु वर्णन अधिक उदारौ।
सुख पायौ तास पसायौ, गणि 'जय-जश' हरष सवायौ॥ जन.

दूहा

- १ सतरा सूं साठा लगै, अधिक कीयौ उपगारा।
जीव घणा समजावीया, सखरा तीरथ च्यार॥
- २ भीक्खू रा मुख आगलै, भारीमाल सुख स्नाज।
अष्टादश बत्तीस मै, थाप्यौ पद जुवराज॥
- ३ चित अनुकूल मुनि चालता, प्रकृति भद्र पुन्यवान।
गर्व-रहित गिरवा गुणी, विनयवान जशवान॥
- ४ घन-गर्जारव सा वचन, वारु तास बखाण।
वीर तणा मुख आगलै, गोतम जिम अगवाण॥
- ५ 'ग्रंथ हजारं तास मुख', अधिक चातुरी आप।
अतिसयधारी ओपता, स्थिरपद त्यांरी स्थाप॥
- ६ परम प्रीत भीक्खू थकी, अंत सीम अवधार।
सेव करी साचै मनै, भारीमाल धर प्यार॥
- ७ अड़तीसै दिख्या ग्रही, खेतसीजी धर खंत।
भक्तिवंत भारी घणा, क्षमावंत जसवंत॥
- ८ चरचावादी विमल चित, उपगारी अधिकाय।
चरण चमाळीसै चतुर, वैणीरांम मुनिराय॥
- ९ घर संवेग तणुं सही, ज्ञान-ध्यान सूं प्रेम।
उत्पतिया अति चरण चित, वृद्धि तैपने हेम॥
- १० सतावने संजम लीयौ, भिक्खू बुद्धि अमंद।
पट-लायक परख्यौ प्रगत, हस्तमुखी नृपचंद॥
- ११ अधिक गुणी ए आदि दे, अड़ताळी अणगार।
अज्जा छपन आसरै, स्वाम छतां व्रतसार॥
- १२ अष्टवीस मुनि आसरै, समणी गुणचाळीस।
गण माहैं गाढ़ा रह्या, शेष नीकळ्या दीस॥
- १३ बीस रह्या गण वारणै, रूपचंद त्यां माय।
स्वाम शाख संजम ग्रही, अणसण दीधो ठाय॥
- १४ पांचूं इन्द्रचां परवरी, थाणै थपीया नाहि।
चरम चौमासै आवीया, सैहर सरियारी माहि॥

१. हजारों पद्य कठस्थ।

२. हसितमुखी।

ढाळ : ५

(धन-धन भिक्खू स्वाम दीपाई दान दया)

- १ श्रावण मास मझार, दस्त कारण तन मैं।
दिशां जावै पुर बार, गिणत नहीं बहु मन मैं।
बहु मन मैं जी फुन बहु जन मैं, पुर माहि गोचरी प्रगटपणैं।
धिन-धिन भीक्खू स्वाम, भाव आराम घणैं॥
- २ श्रावण पूनम स्वाम, गोचरी आप गया।
भाद्रव मैं अभिराम, अधिक चित शांति भया।
चिंतशांति भया जी वर ध्यान लह्या, ऋषि लीन परम भावेज रह्या।
धिन-धिन भीक्खू स्वाम, मरण पंडित उमह्या।
- ३ त्रिहुं टक हुवै वखाण, पजूषण माहि भला।
चउथ चांदणी जाण, वयण भाखै विमला।
भाखै विमला जी अति ही अमला, वच संत खेतसी नै निमला।
धिन-धिन भीक्खू स्वाम, 'यमल गुण उभय झिला'१॥
- ४ थे सखरा शिष्य सुविनीत, चरण नो स्हाज दियौ।
टोकरजी वर रीत, भक्ति करि सुजश लियौ।
सुजश लियौ जी तनु-मन ठीयौ, भारीमाल परम भक्ता वरीयौ।
धिन-धिन भीक्खू स्वाम, ज्ञान-गुण नौ दरीयौ।
- ५ यां तीना रा स्हाज, थकी समभाव पणैं।
पाळ्यौ संजम पाज^२, हरख आनंद घणैं।
आनन्द घणैं जी त्रिहुं संत तणैं, अतहि इकधार रह्या सुमणैं।
धिन-धिन भीक्खू स्वाम, सुजश तसु जगत थुणै^३?
- ६ सुणतां तीरथ तीन, सीख आपै सखरी।
रहिज्यौ थे लहलीन, गणी सिर आण धरी।
आण धरी जी मुझ नौ जबरी, भारीमाल तणी तिम धार खरी।
धिन-धिन भीक्खू स्वाम, अमल वाणी उचरी॥

१. ज्ञान और चारित्र गुण के युगल (जोड़ा)
को धारण करने वाले।

२. प्रण।

३. करता है।

- ७ भारीमाल नी आण, अखंडत जेह धरे।
 ते सुविनीत पिछांण, संत सुगणांज सिरे।
 सुगणांज सिरै जी कुण होड़ करै, सेव करौ तन-मन सखरै।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, अमल सिख्या उचरै॥
- ८ एह नी लोपै आंण, दूर करिवूं जब ही।
 ते अपछंदा जाण, तीर्थ मैं तेह नहीं।
 तेह नहीं जी जिन-समय कही, निंदण जोगां ते छै अति ही।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, सीख आपै सुरही^१॥
 आणंद अभिग्रह कीध, वीर आणा बारै।
 वंदन नेमज लीध, प्रथम बोलण वारै।
 बोलण वारै जी इम मन धारै, चिंहु आहार दान तसु परिहारै।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, जिनंद ज्यूं इण आरै॥
- १० अज्जा-संत विसेख, राखजौ हेत अती।
 दिख्या दीजो देख-देख परभव अरथी।
 परभव-अरथी जी सम्यक् धुर थी, पिण जिण-तिण नैं मूंडोज मती।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, तास सिर अधिक रती^२।
- ११ आलोवण अधिकाय, करी अति स्वाम भली।
 लख चोरासी खमाय, करै आतम निसली^३।
 आतम निसली जी खामैज वली, गण थी टळनैज थया विकळी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, तास चित कुसम कळी॥
- १२ बड़ा शीष अवलोय, परम-भक्ता वारु।
 लैहर आई हुवै कोय, खमावै चित चारु।
 चित चारु जी निज हितकारु, मुनि-अज्जा अन्य वलि गुणधारु।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, निजातम निस्तारु॥
- १३ जे श्रावक-श्राविका तेह, खमावै तास भणी।
 वलि जती दूंदीया जेह, जूजूआ नाम गिणी।
 नाम गिणी चरचाज घणी, तसु लैहर आई हुवै द्वेष तणी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, निसल आतम अपणी॥

१. सुन्दर।

२. दीप्ति (तेज)।

३. निशल्या।

- १४ अतीचार आलोय, सुमति अरु गुप्ति मझै।
 दोष लागौ हुवै कोय, महाव्रत पंच रजै।
 पंच रजै जी अघ थीज लजै, इम निसल थई गुणथीज गजै।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, सखर-सिव पंथ सझै॥
- १५ आयु निकट पिछाण, निसल आतम कीधी।
 हिवै संलेखण आण, सुणौ भवियण सीधी।
 भवियण सीधी जी तप असि लीधी, उपवास पंचमी तप वृद्धी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, सुमती नी समऋद्धी॥
- १६ छट्ट पारणै धार, अल्प औषधि आहारं।
 वमन हुवौ तिणवार, साम भीक्खू सारं।
 भीक्खू सारं तिण दिन धारं, पचखांण करै त्रिणविध आहारं।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, हीयै अति हुसियारं॥
- १७ सातम आठम जाण, अल्प अन्न आचरीयौ।
 तुरत कीया पचखांण, कहै सतजुगि दरियौ।
 सतजुगि दरियौजी गुणरस भरियौ, इम तुरत त्याग किम उच्चरियौ?
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, जगत जश विस्तरियौ॥
- १८ नवमी त्याग करंत, खेतसी खांच^१ कही।
 अल्प आहार मुज हस्त, तणो लीजैज सही।
 लीजैज सही जी इम कहै उमही, तसु वचन मान अन्न अल्प लही।
 (सुविनीत तणौ मन राखण ही)
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, कीर्ति जग छाय रही॥
- १९ दशमी त्याग करंत, अरज बड़ शिष्य न्हाळी।
 दस मोठ आसरै हस्त, लीयै चावळ चाळी^२।
 चावळ चाळी जी अघ नै टाळी, उपरंत त्याग कीधा भाळी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, लगी सिव सूं 'ताळी^३'
- २० ग्यारस 'अमल^४ आगार', कियौ इम उपवासं।
 हिव मुज आहार म जाण, वयण इम परकासं।
 परकासं जी जन विश्वासं, अणसण थी अति चित हुल्लासं।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, अमल सिवपद आसं।

१. आग्रह पूर्वक

२. चालीस।

३. इकतारी।

४. अफीम।

- २१ बारस बेलौ कीध, स्वामजी समभावै।
 हाट स्हामली थकी, पकी हाटे आवै।
 हाटे आवै जी तनु नै तावै, वर पक्का मुनि-जन गुण गावै।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, पको अणसण ठावै॥
- २२ तांम लियो विश्राम, अरज ऋषिराय^१ करै।
 पुदगल पड़िया हीण, स्वाम सुण हरष धरै।
 हरष धरै जी इम वच उचरै, बौलावौ शिष्य भारीमाल सिरै।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, तास कुण होड करै॥
- २३ चट दे ऊभा आंण सुणी भारीमालं।
 वले खेतसी आदि, मुनि आया चालं।
 आया चालं जी ऋष गुणमालं, वच वदै स्वाम अति सुविसालं।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, 'पीत सिव-पटसालं'^२॥
- २४ करिवौ मुझ संथार, एम पभणै स्वामी।
 नमोथुणं गुण तांम, सिद्ध अरिहंत नामी।
 अरिहंत नामी जी सिवपद कामी, ऊंचै स्वर वच स्थिर चित धामी॥
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, परम संपति पामी॥
- २५ जावजीव लग मोय, त्याग त्रिहुं आहार तणां।
 श्रावक-श्राविका संत, सुणै जन-वृन्द घणां।
 जन-वृन्द घणां जी गुण करत जणा, अणसण धार्यौ भीक्खू सुगुणा॥
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, काज सारै अपणा॥

(यतनी)

- २६ शिष्य भारीमाल कहै सार, क्यूं नी राख्यौ अमल आगार।
 स्वामी कहै धार्यौ संथार, किसी करणी देही नीं सार॥

(धन धन भिक्खू स्वाम)

- २७ तेरस नै जनवृन्द, दर्श करिवा आवै।
 सूंस आंखड़ी^३ करै, स्वाम नां गुण गावै।
 गुण गावै जी अति हुलसावै, बाजार माहै जन नहिं मावै।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, विमल भावन भावै॥

१. मुनि रायचंदजी (ऋषिराय)।

३. त्याग।

२. मोक्ष रूप पृष्ठशाला से प्रीति।

- २८ सवा पौहर उनमान, दिवस चढ़ियां जाणी।
 निज कर सेती आप, स्वाम पीधौ पाणी।
 पीधौ पाणी जी अति गुण खाणी, आसरै मुहूर्त्त पाछै जाणी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, वदै इह विधि वाणी॥
- २९ आवै संत सुजाण, मुनि स्हांमा जायौ।
 वलि आवै छै अज्जा, वदै इह विधि वायौ।
 इह विधि वायौ जी जन सुण ताह्यौ, सुणतां वलि वर बहु मुनिरायौ।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, चरम वच फुरमायौ।
- ३० जन कहै स्वामी तणा, जोग मुनि मैं वसिया।
 एक मुहूर्त्त आसरै, साधु आया तिसिया।
 आया तिसिया जी बे^१ गुण रसिया वंदणा करनै मन हुलसीया।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, दुरित^२ दोहग^३ न्हसिया॥
- ३१ वैणीरामजी संत, बड़ा जग विख्यातं।
 वले कुसालजी साथ, वंदै सिर करि नाथं।
 करि नाथं जी अति रळियातं,^४ तसु स्वाम दियौ मस्तक हाथं।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, अमल जश अख्यातं॥
- ३२ दोय आंगुली थकी, सैन^५ करिनै जाणी।
 सुखसाता पूछंत, कची चखु पहिछाणी।
 पहिछांणी जी उचरंग आणी, सावचेत इसा मुनि गुणखाणी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, मही कीरति माणी॥
- ३३ साधू आया तेह, अधिक ही गुण गातं।
 दोय मुहूर्त्त आसरै, आयौ समणी साथं।
 समणी साथं वंदै नाथं, जन कहै अवधि उपनो ख्यातं।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, कही अचरज वातं॥

१. दो।

२. पाप।

३. दुःख।

४. प्रफुल्लित।

५. इशारा।

- ३४ अटकळ सूं आख्यात, तथा बुद्धि थी दाखी।
 तथा अवधि ऊपनौ, तिकौ सर्वज्ञ साखी।
 सर्वज्ञ साखीजी आगूंच आखी, प्रगट पिण छानें नहीं राखी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, बात अचरज भाखी॥
- ३५ स्वामी सूता भणी, हुई छै बहु वारं।
 पूछ्यौ बैठा करां, भय्यौ तब हूंकारं।
 हूंकारं ऋषि जी तिण वारं, बैठा कर मुनि बैठा लारं।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, शासण रा सिणगारं॥
- ३६ करै संत गुणग्राम, आप महा उपगारी।
 बड़ा-बडा पाखंड, हटाय़ा बहु वारी।
 बहु वारी वलि जन तारी, फुन दान-दया दिल मैं धारी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, आप मग नेतारी।
 परम कीरति प्यारी आप जग जशधारी।
 धिन धिन भीक्खू स्वाम, वदै इम अणगारी॥
- ३७ दरजी मांडी सींव, सूई पागे घाली।
 जन कहै स्वाम तिवार, गया चट दे चाली।
 चट दे चाली प्रत्यख भाली, वतका ए अति अचर्यवाली।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, पूर्ण कीरति पाली॥
- ३८ मांडी तेरे खंड, तणी कीधी त्यारी।
 महोत्सव कीधा अधिक, कार्य लौकिक धारी।
 लौकिक धारी जी आज्ञा बारी, आसरै पंच सय कहै लारी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, सप्त पौहर संधारी॥
- ३९ समत अठारै साठ, भाद्रव सुदि सारी।
 परभव पौहता पूज्य, तेरस मंगलवारी।
 मंगलवारी जी कांई सरीयारी, भारीमाल पाट बैठा भारी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, जाउं तस बलिहारी।
- ४० घर मैं वर्ष पचीस, आसरै अठ वासं।
 भेषधार्यां मैं रह्या, पछै सुध व्रत फासं।
 सुध व्रत फासं जी मुनि गुण रासं, वर्ष तयांळीस जाझो जासं।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, प्रगट जन विश्वासं॥

- ४१ आसरै सितंतर वर्ष, आयु पाळ्यौ स्वामी।
 परभव कियौ पयाण, धर्म मूरत धामी।
 मूरत धामी जी अति हित कामी, पदधार परम संपति पामी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, निमल जग मैं नामी।
- ४२ भीक्खू तणै प्रसाद, जीव बहुला तरिया।
 सांप्रत काळे तिरै, स्वाम वच सिर धरिया।
 सिर धरिया जी जन उद्धरीया, तिरस्यैज अनागति गुण-दरिया।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, तास उत्तम किरिया॥
- ४३ भीक्खू 'भवदधि पाज', भाव नावां तरणी।
 ज्ञान-क्रिया करि युक्त, कहा कहियै करणी।
 कहियै करणी जी वर उच्चरणी, संक्षेप मात्रविध मैं वरणी।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, मूर्ति तसु मनहरणी।
- ४४ उगणीसै तेवीस, माघ सुदि तिथ तीजं।
 गुरुवारे ए जोड़, करी भीक्खू बीजं^१।
 भीक्खू बीजं जी तसु जप कीजं, भारीमाल ऋष रमणीजं।
 धिन-धिन भीक्खू स्वाम, लहै 'जय-जश' रीझं॥

इति लघु भीक्खू जस रसायण॥

१. भव-समुद्र पार करने के लिए सेतु।

२. दूसरी वार।

३
भिक्षु - चरित
मुनि हेमराज

भिक्षु-चरित : डा.

२४३

दूहा

- १ अरिहंत-सिध-साधू नमूं, भाव-भगत उर^१ आंण।
गुर गिरवा गुणवंत नों, कहूं 'भीखू चरित' वखांण॥
- २ मोटा-मोटा मुनिवर हुआ, आगेइ चौथे आर।
वखाण्या मुख वीर जी, सूतर मैं सुध सार॥
- ३ त्यांनै नेणां नहीं निरखीया, वीर कह्यौ विसतार।
पिण धिन-धिन भीखू सांमजी, प्रगट्या पांचमें आर॥
- ४ गुण गावै गुणवंत गुर तिणा, भोळा नै मन नहीं भाया।
'ग्यांनी कह्यौ गिनाता मझै,' तीर्थकर गोत बंधाय^२॥
- ५ उतकष्टा परिणाम सूं, उत्कष्टी आवै रसांण।
संका म आंणौ सर्वथा, वीर मुंढां री वांण॥
- ६ तिण काळे नै तिण समै, दुषम आरा नी बात।
पूज भीखनजी प्रगट्या, सुखी साध साख्यात॥
- ७ सुखी कथा सुखी वारता, सुखी सरधा आचार।
सुखे-सुखे जाय मुगत मैं, आवागमण निवार॥
- ८ जनम किहां दिख्या किहां, परभव पोहता किण ठांम।
किया चोमासा किण विधे, तेहना पिण कहूं नांम॥
- ९ जस मेहमा घणी जगत मैं, कही कठा लग जाय।
पिण थोड़ी सी परगट करूं, सांभळज्यो चित ल्याय॥

ढाळ : १

(हरिया नै रंग भरिया जी.)

- १ जंबूदीप भरत खेतौ जी, कांइ देस मुरधर दीपतौ।
कांइ कांटे-कोर कहवाय।
नगर कंटाळ्यौ नीकौ जी, कांइ कमधज^३ राज करै तिहां।
बखतसिंघ सोभाय।

साध भीखू सुखदाया जी, मन भाया भवियण जीव रै॥

१. हृदय।

३. राठौड़ वंशी क्षत्रिय।

२. ज्ञाता श्रुतस्कंध १ अध्ययन ८ सूत्र १८।

- २ त्यां भीखनजी अवतरिया जी, कांइ धरिया जणणी^१ गर्भ मैं।
उत्तम जीव अपार। साध.
- ‘समत सतरेसै बेयासी^२’ जी, सुखवासी नंदण ऊपना।
सुपन लह्यौ श्रीकार॥ साध.
- ३ सीह सुपनें माता जी, कांइ सुखसाता सुत नै जनमीया।
हुवौ हरष उछाव। साध.
- दीपादे अंगजाता जी, कांइ पिता बलूजी सोभता।
कुळ ओसवाळ कहाव। साध.
- ४ बड़े साजन वले वीसाजी, संकलेचा जातज जाणजौ।
एक परण्यां था नार। साध.
- घणो नहीं कियौ ग्रहवासो जी, कांइ आछो सीलज आदर्यौ।
दिख्या री मन धार॥ साध.
- ५ वरस पचीस आसै वधिया जी, कांइ सधीया चेत खड़ा हुआ,
आयौ घट वेराग। साध.
- रुघनाथजी गुर धरीया जी, कांइ किरिया काची जांणनै,
पछै उपनौ सोच अथाग॥ साध.
- ६ सूतर नै सुध वाच्या जी, कांइ राच्या ग्यांन रसाळ सूं,
ऊंडो दीयो उपीयोग। साध.
- भगवंत मारग भूला जी, कांइ डूला छोड़ संसार नै,
नहीं दीसै संजम जोग॥ साध.
- ७ राजनगर मैं भणता जी, कांइ गुणतां ग्यांन भलौ लह्यौ,
वरस पनरे चउमास। साध.
- सूतर माहि साचो जी, कांइ काचौ म्हे पाळां जको,
हिवै तोड़ न्हाखूं मोह पास॥ साध.
- ८ आय कहै गुरां नै किरिया जी, वीसरिया वीर भाखी जका,
चूका समगत सार। साध.
- छोड़ो सुरत संभाळी जी, मन वाळी मारग मोकळो^३,
पिण उहां री उठ^४ न हुई लिगार॥ साध.

१. जिणणी क्वचिद्।

२. यह जैन संवत् श्रावणादि क्रम से है।

३. अमर्यादित

४. उत्थान क्रिया।

९ अबारूं पांचमों आरो जी, कांइ सारो संजम नहीं पळै,
इत्यादिक कहाा ढीला वचन अनेका साध.

पिण सूत्र न्याय संक्रे लीधा जी, कांइ कीधा कष्ट^४ रूड़ी परे,
वीर वचन बताय वसेख॥ साध.

१० सात चोमासा आगे जी, मन भांगे त्यां माहि रह्या,
कितलायक समजावण काज। साध.

संजम लेवा सूरा जी, कांइ पूरा असल आचार स्यूं,
साझण सिवपुर राज॥ साध.

११ भीखनजी आदि विचारी जी, कांइ त्यारी जणा तेरे हुवा,
करवा आतम कांम। साध.

तेरे श्रावक समाइ पोसा जी, कांइ सैहर जोधांणा मैं किया,
जठे तेरापंधी दीयौ नांम॥

१२ समत अठारो सतरो जी, कांइ सुथरो समो^५ आयो तिहां,
तिहां सबळो हुवो सुगाल^६। साध.

~~साधपणौ सुध-लीधौ~~ जी, ~~कांइ कीधौ~~ कारज केलवै,
परभव सांहमौ भाळ॥ साध.

१३ पांच देस प्रगटीया जी, गुण रटीया रांम-नाम ज्यूं,
कटीया कर्म करूर। साध.

~~पाखंड घौचा*~~ पोचा^४ जी, कांइ ग्यांन बले मोटे मुनी,
भांज किया भखभूर^६॥ साध.

१४ सांमी ग्यांन करी गुणसागर जी, बुध आगर अर्थ नै हेत रा,
ओजागर घणा अमोल। साध.

भांत-भांत गुण भरिया तरिया, तार रह्या भव जीव नै,
त्यांरो तीखौ बधीयो तोल॥ साध.

१. निरुत्तर।

२. श्रेष्ठ समय।

३. सुकाल।

४. पाखंड (शास्त्र विरुद्ध आचरण करने वाला) रूप तिनका।

५. कमजोर।

६. नष्ट।

१५ आप आग्या सुध आराधी जी, कांइ गादी वीर जिणंद री,
आप असल दीसौ अणगार।

च्यार तीर्थ सुध थाप्या आप्या, अणुव्रत महाव्रत मोटका,
वले आछौ ग्यांन अपार॥ साध.

१६ साध भला सिणगारी जी, गुण भारी भीखू सांम मै,
मारी ममत बलाय।

चतुर ववेकी पूरा जी, कांइ सूरा चरचा कारणे,
भवियण रे मन भाय॥ साध.

१७ सारां सिरे सिष भारी जी, 'सुहांली परकत'^१ जांण नै।
वले सरल घणो सभाव।

भारमलजी पाट थापी जी, कांइ आपी पदवी आचार्य तणी।
च्यार तीर्थ चित चाव॥

१. कोमल प्रकृति।

दूहा

- १ सांमी मारग साचो लियो, सारण आतम कांम।
पिण भारी कर्मा जीवड़ा, अळिया^१ बोलै आंम॥
- २ कुगुरां नां भरमावीयां, बोलै 'आळ-पंपाळ'^१।
थोड़ा सा प्रगट करूं, ते सुणजो सुरत संभाल॥

ढाळ : २

(धीज करे सीता सती रे लाल)

- १ औ गुर नै उथापी अळगा हूवा रे, वले दान-दया दीधी उथापरे। भविक जन।
कोइ जीव बचावे छै तेहनें रे लाल, ए कहै छै अठारे पाप रे। भ. ज.॥
सुणजो भीखूजी री वारता रे लाल॥
- २ कोइ संगत यांरी करजो मती रे, लाग जायला थारे लाळ रे। भ. ज. सुण॥
निन्हव छै ए नीकळ्या रे लाल, इम देवे अनेक विध आळ रे। भ. ज.॥
- ३ इम भरमाया अनेक जीवां भणी रे, घणां गामां-नगरां विख्यात रे। भ. ज.॥
जो तेरापंथ्यां रो मारग ओळख्यां रे लाल, हरगज^५ नावै म्हारे हाथा॥ भ. ज. सुण॥
- ४ आप आपरा पखियां भणी रे, वले अनेक टोळा सूं मिलीया जाय रे। भ. ज.॥
वले अनेक गृहस्थां नै सीखावियारे लाल, यांने 'टकवा म देज्यो'^६ ताय रे॥ भ. ज. सुण॥
- ५ बावीस टोळां रे 'माहोमा बेधो'^७ घणो रे, एक-एक नै सरधे असाध रे। भ. ज.॥
पिण भीखनजी सूं बेधो करे तरै रे लाल, कहै-म्है तो सगलाइ छां साध रे। भ. ज. सुण॥
- ६ इम अनेक विध कर रह्या रे, आहमी-साहमी घमडोल^३ रे। भ. ज.॥
पिण कहो नै किता दिन ठाहरे रे लाल, तांबा ऊपर झोळ रे?॥ भ. ज. सुण॥
- ७ कोई धूळ न्हाखें सूर्य मझे रे, आप उपर पाछी पड़ै आय रे। भ. ज.॥
ज्यू भीखनजी सूं भरकायां भांत-भांत सूं रे लाल, देखो 'गांठ रा श्रावक'^४ जाय रे॥ भ. ज. सुण॥
- ८ हिवे ज्यू-ज्यू भीखनजी विचरै जठै रे, उवां रा भरमाया आगूंच जोवे वाट रे। भ. ज.॥
घणो कह्यो थो, कने जाइजो मती रे लाल, आयां थोड़ा में भेलो हुवे थाट रे। भ. ज. सुण॥

१. अलीक/असत्य/खराब।

२. ऊटपटांग।

३. कभी भी।

४. जमने न देना।

५. परस्पर कलह।

६. उत्पात/ऊधम

७. अपने श्रावक (अनुयायी)।

- ९ केइ तो प्रश्न पूछवा रे, केइक देखण काज रे। भ. ज.॥
 केई कुगुरु ना भरमाविया रे लाल, उंधा बोलता नहीं आणै लाज रे॥ भ. ज. सुण॥
 १० उपसर्ग अनेक देता थकां रे, केइ बोलता वचन विकराल रे। भ. ज.॥
 केइ कहै- ए नन्हव अछे रे लाल, केइ कहै जमाली गोसाल रे॥ भ. ज. सुण॥
 ११ पिण पूजजी क्रोध करै नहीं रे, सुध बतावै सूत्र न्याय रे। भ. ज.॥
 वले व्रत-इव्रत मांड बतावतारे लाल, देवै भिन-भिन भेद दरसाय रे॥ भ. ज. सुण॥
 १२ केइ चतुर ते सुण-सुण चिंतवै रे, कूड़-कपट न दीसै यांमें कोय रे। भ. ज.॥
 यां तो साची वातां कही सही रे लाल, घणा इचर्य होय रह्या जोय रे॥ भ. ज. सुण॥

साचो धर्म भगवान रो रे लाल॥

- १३ भगू भड़काया था बेटां भणी रे, सुध साधां मैं चूक बताय रे। भ. ज.॥
 ज्यूं लोकां नै भड़काया भौखनजी थकी रे लाल, ओहीज मेलो न्याय रे॥ भ. ज. साचो॥
 १४ वारूंवार पूछी निरणो करी रे, कुगुरां नै दिया छटकाय रे। भ. ज.॥
 साची सरधा आदरी रे लाल, कहै-धिन-धिन भीखू रिषाय रे॥ भ. ज. साचो॥
 १५ केइका लियो साधुपणो रे, केइ हुआ श्रावक-श्रावका साख्यात रे। भ. ज.॥
 केइ प्रतीतधार पका हुवा रे लाल, छोडी कुगुरां तणी पखपात रे॥ भ. ज. साचो॥
 १६ इम अनेक गांमां-नगरां मझे रे, चरचा कर-कर लिया समजाय रे। भ. ज.॥
 जे हळुकर्मी था जीवड़ा रे लाल, ते कुगुरु छोड़ै नै आया ठाय रे॥ भ. ज. साचो॥
 १७ जे भारीकरमा जीवड़ा रे लाल, खोटा मत माहे 'रह्या खूत' रे। भ. ज.॥
 कुमत-कुबध माहि 'कळरह्या' रे लाल, ज्यूं माखी 'रही संघेण मै सूत' रे। भ. ज. साचो॥
 १८ रावण रूप किया था घणा रे, बहोरूपणी देवी बोलाय रे॥ भ. ज.॥
 पिण लछमण रा बाण सूं रे लाल, रूप गया विललाय रे। भ. ज. साचो॥
 १९ ज्यूं सुध-साधां सूं भड़काया लोकां भणी रे, यांरी संगत म करजौ कोय रे॥ भ. ज.॥
 पिण पूज सूत्र-न्याय ज्ञान-वांण सूं रे लाल, भर्म भाग्यो घणां रो जोय रे। भ. ज. साचो॥
 २० चक्रवर्त चढै देस साधवा रे, आंण फेरे छ खंड मैं आय रे। भ. ज.॥
 ज्यूं भीखनजी रिष विचर्या जठे रे लाल, अरिहंत आगन्या दीधी ओळखाय रे॥ भ. ज. साचो॥
 २१ निरजुगता न्याय मेल्या घणां रे, सुध सूत्र जोय-जोय सार रे। भ. ज.॥
 वले 'उतपातबुध' सूं आछौं कियो रे लाल, आसरे ग्रंथ अड़तीस हजार रे॥ भ. ज. साचो॥

१. बंधे हुए।

२. फंस रहे।

३. श्लेष्म में लिपटी हुई।

४. युक्ति सहित।

५. औत्पतिकी बुद्धि।

६. श्लोक संख्या।

दूहा

- १ आचार ऊपर हजारां कीया, समकत ऊपर हजारां सोया।
व्रत-इव्रत नै उपरै, ग्रन्थ हजारां जोय॥
- २ वले उपदेस अनेक विध, रचीया वचन रसाळ।
'तेरे दुवार' ताजा किया, सूत्र सांहमौ भाळ॥
- ३ उपगार आछौ कीयो, कुमीन राखी काय।
'सके तो' जाणू सांम जी, पदवी तीर्थकर पाय॥
- ४ ज्यां-ज्यां विचर्या पूज जी, मिथ्यात देवै मिटाय।
उतकष्टी रसांण उपजै तो, पदवी तीर्थकर पाय॥
- ५ ग्यांनी कहुँ ज्ञाता मझे, संका म धरजो सोय।
बीसमो बोल विचारजो, निरणौ कीजौ जोय॥
- ६ उतपात बुध अतही भली, च्यारुं बुध रे माय।
ते हुंती घट पूज नै, निरमळ मेळ्या न्याय॥

ढाळ : ३

(धिन धिन जीव जी)

- १ आठ संपदा सहीत आचार्य, 'कुल-मंडण'^१ कुल-दीवो^३।
पांचमे आरे प्रगट हुवां रे, भीखू रिष-वांदो^४ भवजीवो॥
धिन भीखू सांम जी॥
- २ पाखंड-पंथ नै परहस्यो रे, मोटा मुनि मतवंत।
सुमत गुप्त महाव्रत सही, ऐ तेरे पाळै ते तेरापंथ॥ तिथ.
- ३ दोष बयालीस टालता रे, बावन टाळे अणाचार॥
सूत्र-न्याय सुध-परूपणा रे, अरिहंत आगन्या धार॥ धिन.
- ४ सूत्र नै सुध वाचता रे, मेलता सुध सरूप।
मीठे वचनें मुनिसरू रे, वागरै^५ वांण अनूप॥ धिन.
- ५ केइ पाखंडी अडै आयनै रे, उण रा वचन सुणीनै सांम।
उणरा वचन सूं कष्ट^६ उणनै करै रे, आछी बात अमांम^६॥ धिन.

१. संभवतः।

२. कुल-भूषण।

३. कुल-दीप।

४. कहते हैं।

५. निरुत्तर।

६. श्रेष्ठ।

- ६ अनेक स्याळ आये अडै रे, को किम भागे सीह?
जे आचारे ऊजला रे, ते क्यांनै आणै बीह^१ धिन.
- ७ मेवाड़ मुरधर देस मैं रे, कछ देस हाडोती हूंढार।
साची सरधा प्रगट करी रे, घाली घट मैं सार॥ धिन.
- ८ जठे श्रावक-श्राविका किया घणारे, केइ हुवा साधवी-साधा
ते चरणे लागा सांमी तणै रे, आछी टाली असमाध॥ धिन.
- ९ केइ भेषधारां नैं छोड़ साधु हुआरे, चरचा करनै सोया।
मान-अहंकार मेळनै रे, कुमी न राखी कोय॥ धिन.
- १० कुगुर छोड़ी सतगुर किया रे, आ चोथा आरा री रीत।
घणा गावां नगरां मझे रे, पूज तणी धारी प्रतीत॥ धिन.
- ११ जस-करमी था जीवड़ा रे, आदेज^२ वचन 'आताप^३।'
भिक्षू विचरै ज्यां पाखंड भाजतो रे, धर्म आगे ज्यूं पाप॥ धिन.
- १२ दरसण भीखू रौ ज्यां देखीयौ रे, पेखीया वचन पिछांण।
सो जांणे स्वामी री सेवा करूं रं, उजम इधिकौ आंण॥
- १३ भज-भज रिष भीखू भणी रे, तज-तज पाखंड तास।
धज धरम धारो धुरा रे, करौ मुगत मैं वास॥
- १४ अनंत भव आगे कीया रे, संत न मिलिया सार।
कदा मिलीया तो ही सरध्या नहीं रे, आय उपनों पांचमें आर॥
- १५ हिबै भीखू मुनीसर भेटीया रे, गुणवंत ग्यांन भंडार॥
साचौ संजम लीधौ सही रे, पांमाला बेगा भव पार।

१. भय।

२. प्रियकारी।

३. तेज।

दूहा

- १ पूज भीखनजी मोटका, मोटा गुण भरपूर।
भव-जीवां भजौ तुम्हें, 'पोह उगंते सूर'॥
- २ वले गुण गांवू भीखू तणा, सांभळजो सहकोय।
मोटा गुण महाव्रत ना कहूं, सूतर स्हांमो जोय॥
- ३ भीखनजी भरत खेत्र मझे, कीधौ धर्म उद्योत।
जीवादिक ओळखावीया, घट-घट व्यापी जोत॥
- ४ भजन कियां भीखू तणां, भाजै भव-भव भूख।
कर्म कटै निरजरा हुवै, दूर जावे सब दूख॥
- ५ छाण^१ कीधी जिण धर्म री, भला निवेड्या न्याय।
इसड़ा बुधवंत जीवड़ा, नहीं दीसै भरत रे माय॥
- ६ तिहां भीखनजी रिष भेटीया, 'त्यारे माथे मोटा भाग^३'।
सुणजो गुण सांमी तणा, एकमना चित लाग॥

ढाळ : ४

(कीड़ी चाली सासरे रे)

- १ सांमी भीखू सारिखा रे, इण दुषम आरा माय।
हुवा नै होसी वली रे, आज न कोइ देखाय॥

भीखू गुण गायलो रे, सुधारया भव दोया भी।

जसवंत बुधवंत जोय, भी., भजन करौ सुह कोय भी॥

- २ मिथ्यात मेट मोटे मुनी रे, कीधौ ज्ञान उजास।
धर्म-अधर्म ओळखाविया रे, ज्यूं मुख दीसै काच॥ भीखू.
- ३ धर्म-धुरा धुरंधरू रे, महमा मेर^४ समान।
भरत-खेत्र मैं भळके रह्या रे, मरद्या क्रोध नै मांन॥ भीखू.
- ४ खिम्या खरी सांमी तणी रे, कर्म काटण तरवार।
तपसा पिण तुले आवै नहीं रे, प्रसिध लोक विचार॥ भीखू.
- ५ दयावंत मुनि दीपता रे, गिरवा ज्ञान भंडार।
एक जीभ कहणी आवै नहीं रे, पूज गुणां रो पार॥ भीखू.

१. प्रभात काल में।

२. छान-बीन।

३. वे भाग्यशाली हैं।

४. मेरु पर्वत।

- ६ सतवादी मुनि सूरमां रे, नहिं कूड़-कपट री बात।
साचौ धर्म ओळखावीयो रे, ज्युं भाख गया जगनाथ॥ भीखू.
- ७ अदत्त न ग्रही दत्त ग्रही रे, ब्रह्मचारी वखांण।
नव ही जात रो सर्वता रे, प्रग्रहा^१ रा पचखांण॥ भीखू.
- ८ नित-नित नमो भीखू मुनि रे, काटौ कर्म कठोर।
नरमाई नित-नित करौ रे, मडदो मान-मरोड़॥ भीखू.
- ९ साचा गुण सांमी तणा रे, संवरै छै दिन-रात।
जीवे ज्यां लग भूलै नहीं रे, चावा^२ गुण साख्यात॥ भीखू.
- १० च्यार तीर्थ गुण सेवरा रे, हुंता भीखनजी साधा।
कांम पड़ेला करली^३ चरचा तणौ रे, आवैला जद याद॥ भीखू.
- ११ भली हुई मुज 'चाकरी'^४ रे, लेखै लागी आज।
गुण गायी भीखू तणां रे, सारण वंछत काज॥ भीखू.
- १२ गुण प्रमाण गण-नायक रे, धिर कर थाप्या हो सांम।
भार चलावै टोळा तणो रे, भारीमालजी त्यांरौ नांम॥ भीखू.

१. परिग्रह (क)।

२. प्रख्यात।

३. कठिन।

४. उपासना।

दूहा

- १ बयाली वरसां जग पूजजी, बोहत कियो उपगार।
विचरत-विचरत आवीया, मुरधर देस मझार॥
- २ उपगार कीयौ दोय वरस मैं, मारवाड़ मैं आय॥
च्यार साध, सात साधवियां हुई, त्यां संजम लीयो सुखाय॥
- ३ वले श्रावक-श्राविका किया घणौ, विचरचा घणां गांमां-नगरां माय।
जणै पिण उपगार कीयौ घणां, कह्यौ कठा लग जाय?
- ४ हिवै चरम किल्याण सामी तणों, अण भव आश्री जांण।
किहां विचरचा किण सैहर मैं, प्रभव पोहता किहां आंण?
- ५ छेला-छेला गांम फरसता, छेहलाइ करता विहार।
विचरत-विचरत आवीया सोजत सैहर मझार॥

ढाळ : ५

(अभिनंदन वांटूं नित मनरली)

- १ विचरत-विचरत हो आया सोजत सैहर मझार,
आग्या लेईनै छत्री माहे उतरचाजी।
ते छत्री छै हो मुहता रायमल री विचार,
उण ठांमे आगेइ उपगार कियौ घणौ जी॥
- २ त्यां बहु आया हो साध-साधवी सुविनीत,
केइ दरसण करवा धर्म चरचा धारणै जी।
त्यां नै पूरी हो पूजजी री प्रतीत,
केइ आया चोमासा री आग्या कारणै जी॥
- ३ भीखू त्यां नै हो दिया चोमासा भळाय,
मुनि पिण चोमासा रो कीधौ हुवेला मतोजी।
एतले आयो हो हुकमचंद आछो चलाय,
धर्म दलाली माहि आछो दीपतो जी॥

- ४ ते करै दलाली हो बोलै बे कर जोड़ी ताहि,
धर्म आचार्य मोटा गुरु जाणनै जी,
सांमी चोमासो करो सैहर सरीयारी माहि,
आ वीणती मांनो करपा भाव आंणनै जी॥
- ५ चतुराइ सूं हो वीणती कीधी वारूंवार,
अबको चोमासो सरीयारी कीजिये जी।
सूझती छै हो पकी हाट विचार,
सांमी तिण ठांमें वासो लीजिये जी॥
- ६ केतलायक दिन रहैनै हो सांमीजी तो कीधौ विहार,
बगड़ी रहैनै कंटाळ्ये आया वही जी।
ठांम-ठांम हो वीणती करे नर-नार,
सांमी तो सरीयारी चलाय आया सही जी॥
- ७ सरियारी हो सोभे सैहर कांठा री कोर,
'दोलो-दोलो' मगरो^३ गढ़ कोट ज्यू दीसतो जी।
राज करै छै हो तिहां राज राठोर,
कुंपावत करड़ी छाप नों दीपतो जी॥
- ८ जाडी^३ वसती हो त्यां माजनां^४ री जाण,
जठैं महिमा घणी छै जिण धर्म तणी जी।
बहु नर-नारी हो सुणे साधां रा बखांण,
भली तपस्या करै कइ कर्म काटण भणी जी॥
- ९ तिहां मुनि आया हो सप्त ऋषि अणगार,
सुध संजम पाले इंद्रयां नै जीपता जी॥
सांमी सोभे हो साधां रा सिरदार,
गणनायक रिष भीखनजी दीपता जी॥
- १० आग्या ले नै हो उतर्या पकी हाट,
रखे दोष लागै तो रहे मुनि धड़कता जी।
बखांण-वाणी रा हो लागै छै तिहां थाट,
घणा नर-नारी सुण-सुणनै हीयै हरखता जी॥

१. चारों ओर।

२. पहाड़।

३. सघना।

४. महाजन।

- ११ वखाण-वाणी मै हो सांमी भारीमलजी वदीत,
साथे खेतसीजी^१ सतजुगी कहावता जी।
उदेरांमजी हो त्यांरे तपसा री नीत,
बाल ब्रह्मचारी 'रायचंद' मुनि 'जीवो' मन भावता जी॥
- १२ भगजी कीधी हो सांमीजी री सेवा-भगत,
तिण सूं सांधा^२ में सोभा हुई घणी जी।
वनीत होवे छै हो तिण नें सरावे जगत,
अवनीत माहे 'अवगति'^३ कही घणी जी॥
- १३ आसाढ़ उतरनै हो सावण सुध छेहले आय,
सांमजी रे कांयक असाता उठी सही जी।
तो ही 'दिसां'^३ बारे हो गोचरी उठे गांव माय,
लांबी तो गिणत सांमजी राखै नहीं जी॥

१. मुनिखेतसीजी (सतयुगी।)

२. शौचार्थ।

३. अवगति-बुरी गति।

दूहा

- १ अवसर^१ काळ आय लगो, सूत्र भणवा चाया
सुध कर-कर सांमजी, सिष नै अर्थ बताय॥
- २ जोर करै घणी जुगत सूं, ओर ही अर्थ अनेका
उदमी छै नहीं आलसू, सांमी सुध ववेका॥
- ३ फोरी^२ असाता फेरा^३ तणी, मिटावण मुनि सोया
ओषध लीया अणायनै, पिण कांम न आयौ कोय॥
- ४ वले पूनम रे दिन पूजजी, उठता^४ गोचरी आपा
ओषध आंण खाधी खरी, वेदन रही छै व्यापा॥
- ५ हिंवै आगा उपर आदरी, साचे मन सांमीनांथा
कार्य सुधारै किण विधे, सांभळजो साख्यात॥

ढाळ : ६

(कामणगारो छै कूकड़ो रे)

- १ साध भीखूजी तिण अवसरे रे, आउ नेरो आयौ जांण।
करे आलोवण किण विधे रे, साचा-साचा चुतर सुजांण।
सुणजो आलोवण सांमी तणीरे॥
- २ आज पहली इण जीवड़े रे, हिंस्या कीधी हुवै कोय।
मन वचन काया करी रे, 'मिछामी दुकडं'^५ छै मोय॥ सुणजो.
- ३ क्रोध मांन माया लोभ सूं रे, झूठ कह्यौ हुवै कोय।
जांणता नै अजांणतां रे, 'मिछामी दुकडं' छै मोय॥ सुणजो.
- ४ अदत्त पांच प्रकार नों रे, सेव्यो सेवायो हुवै सोय।
भलौ जाण्यौ हुवै सेवतां रे, 'मिछामी दुकडं' छै मोय॥ सुणजो.
- ५ ममता धरी हुवै महीधून सूं रे, सूतां जागता जोय।
मन वचन काया करी रे, 'मिछामी दुकडं' छै मोय॥ सुणजो.

१. काल/मृत्यु का अवसर निकट आने लगा।

उसके बाद संलेखणा की वृत्ति स्वीकार की।

२. थोड़ी

३. दस्त

४. उठ्या. क्र।

५. मिछामि दुकरो (भाषा-भेद)।

- ६ परिग्रहो^१ नवूँइ जात नो रे, त्यांरा न्यारा-न्यारा भेद होया
ममता करी हुवै किण ही ऊपरै रे, 'मिछामी दुकडं' छै मोया॥ सुणजो.
- ७ क्रोध कीधौ है किण ही ऊपरै रे, कड़ली सीख दीधी हुवै कोया।
'करला'^२ 'काठा'^३ वरुवा^४ वचन रौ रे, 'मिछामी दुकडं' छै मोया॥ सुणजो.
- ८ मांन माया लोभ किया हुवै रे, राग-धेष किया हुवे दोया।
इत्यादिक अठारेइ पाप नीं रे, 'मिछामी दुकडं' छै मोया॥ सुणजो.
- ९ रागी सूं राग कियौ हुवै रे, धेषी सूं धरियौ हुवै धेष।
मन साचे हिवै मांहेरे रे, 'मिछामी दुकडं' छै विशेष॥ सुणजो.
- १० प्रथवी अप तेउ वाउ छै रे, ज्यांरी सात-सात लाख जात।
हणी हुवै तीन करण-जोग सूं रे, वारूँवार खमाऊं विख्यात॥ सुणजो.
- ११ चवदै लाख साधारण वनसपती रे, दस लाख प्रतेक।
बे ते चोरिंद्री बे-बे लाख छै रे, वली-वली खमाऊं आंण ववेक॥ सुणजो.
- १२ नारकी देवता तिर्यंच नीं रे, जात च्यार-च्यार लाख।
चवदै लाख जात मिनख री रे, खमाऊं अरिहंत सिधांरी साख॥ सुणजो.
- १३ वले बड़ा सिष सुवनीत छै रे, अंतेवासी अमोल।
आगे लैहर जे आई हुवै रे, खमावूं छूं दिल खोल॥ सुणजो.
- १४ एहवी आलोवण कानें सुण्यां रे, आवै इधक वेराग।
करै त्यांरौ कहेवौ किसूं रे, त्यांरै माथे मोटो भाग॥ सुणजो.

१. प्रग्रहौ (भाषा-भेद)।

२. कटुका।

३. कठोर।

४. बुरा।

दूहा

- १ खांत^१ करी खमावता, सर्व जीवां नै सांम।
वारूंवार विशेष जी, आछी भांत अमांम॥
- २ बावीस टोळां माहि तेह सूं, कडली चरचा रो पड़ियो हुवै कांम।
अवर इ अनमती अनेक नै, खमावे ले ले नांम॥
- ३ वली आप तणां गछ माहिला, गछ बारे वरतै कोय।
त्यांनै पिण खमावता, हरषत मन में होय॥
- ४ हिवै सांवण तो सर्व निकलयौ, आयौ भाद्रवो मास।
साधां नैं तेड़ी सांमजी, बोलै वचन विलास॥

ढाळ : ७

(मीठो छै पुन संसार में)

- १ श्रावक-श्रावका सुणतां थकां, बोलै अमृत वाय।
छेहले अवसर सांमजी, सीख दियै सुखदाय॥
सुणजो सीख स्वामी तणी रे॥
- २ थे आगे जाणता मो भणी, ज्यूं जाणजो भारीमाल।
संका म आणजौ सर्वथा, असल साधु री छै चाल॥ सुण.
- ३ साध-साधवी ए सर्व छै, त्यांरा भारीमालजी नाथ।
भार सूंप्यो छै टोळा तिणों, कोइ म लोपज्यो यांरी बात॥ सुण.
- ४ अरिहंत आगन्या माहि रहै, जिण नै सरधजो साध साख्यात।
आगन्या लोपनै ऊंधौ पड़ै, त्यांरी म करजो पखपात॥ सुण.
- ५ इम ही आगन्या सतगुर तणीं, रहै भारमलजी माय।
सुध आचार पाळै सही, त्यांनै मत दीजो छटकाय॥ सुण.
- ६ अरिहंत सतगुर नी आगन्या, कर्म-जोगे लोपै कोय।
वंदणा-प्रतीत करजो मती, साध म सरधज्यौ तिण नैं सोय॥ सुण.
- ७ साची सीख तीर्थ-च्यार नै, विध सूं दीधी छै बताय।
इत्यादिक अनेक वचनां करी, कही कठा लग जाय॥ सुण.

- ८ हिवे सतजुगी सांम सूं, मुख सूं बोलै एहवी वाय।
म्हारै विरहो पड़तौ दीसै पूज रो, आप जाता दीसो झंड^१ माय।
हाथ जोड़ी नै इम कहै॥
- ९ वलता सांमी इम वागरै, म्हारै झंड तणी नहीं चाहि।
आगे अनंती वार जीवड़ौ, गयौ देवलोकां माहि॥ सुण.
- १० पुद्गल ना सुख कारिमा^२, विणसतां नहीं लागै वार।
ग्रधी हुवै ते जाये नरक मैं, आगे खाय अनंती मार॥ सुण.
- ११ म्हें आगे पुद्गल खाधा मोकळा, सार जाण-जाण सोय।
देखतां-देखतां विणसे गया, काम न आवै आज कोय॥ सुण.
- १२ तिण कारण हूं देवलोक नीं, करूं नहीं वाछां कोय।
पोचा^३ सुख पुद्गल तिणा, मुगत सुखा सूं मन मोय॥ सुण.
- १३ थे पिण वंछा पुद्गल तणी, मूल म करजो मन माहि।
अफासू नै अनएषणी, चित्त मैं धरजो मति चाहि॥ सुण.
- १४ वले लोलपणों करजो मति, माया-ममता नै मार।
दोष बयालीस टालनै, असल लीजौ सुध-आहार॥ सुण.
- १५ अरज्या^४ भाषा नै एषणा, इत्यादिक आठ प्रवचन^५।
मन वचन काया करी, कीज्यौ घणां जतन॥ सुण.
- १६ साधपणौ सुध पाळज्यौ, चिंता फिकर म करज्यौ तास।
म्हांसुइ मिलेला ग्यांनी मोटका, वले वेगो करोला मुगत मैं वास॥ सुण.
- १७ चेलां री ममता करजो मती, लीजो सुध जोय-जोय।
असल आचार पाळै तको, काचो^६ म घालजो गण मैं कोय॥ सुण.
- १८ असल आचार आछी तरें, पाळजो प्रभु-वचन पिछांण।
आग्यां म लोपज्यो अरिहंत नी, तो वेगा पांमसो निरवांण॥ सुण.
- १९ हूं तो जातो दीसू परभवे, सीख दीधी छै थानें जाम।
लोक बतावे कोइ आंगुळी, कदीय म कीजो एहवो कांम॥ सुण.

१. सुर-समूह (सुर-वृन्द)।

२. निस्सार।

३. तुच्छ।

४. ईर्या समिति।

५. प्रवचन माता।

६. कमजोर।

२० सुणजो सहू सांमी तणा, 'मूढा हंदा' रे बोल।
बोल सहू रे सुहांमणा, आछा वले अमोल॥ सुण.
२१ साची सीखामण सामी तणी, पाळसी चतुर सुजांण।
सूरा-वीरा नै धीरा तिके, उजम मन माहे आंण। सुण.

दूहा

- १ आलवणा^१ आछी करी, सीख दीधी वले सारा।
उज्जम मन माहि आणता, आज्ञा ऊपर धारा॥
- २ वले आयो पर्व पजूसणा, धर्म वधंतो जाया।
सांमी कार्य किणविधे, सुधारै छै ताया॥
- ३ हिवे पांचम रे दिन पूजजी, आप क्रिया उपवासा।
सुदि पख पांचम नै संवछरी, भाद्रवौ थो मासा॥
- ४ पूज कीयौ छठ पारणौ, उलटौ पड़ीयो आया।
किण विध करै संलेखणा, ते सुणजो चित ल्याया॥

ढाळ : ८

(धिन प्रभु रामजी)

- १ सातम आठम नम^२ मुनीसर, अलप सो लीधौ अहार बे।
दसम रे दिन चोखा^३ चालीस, आसरै दस मोठ विचार बे॥ धिन.
धिन-धिन भीखू सांमजी, धिन-धिन त्यांरो नांम जी।
त्यां कीधौ आछौ कांम जी, आछौ जस अमांम जी॥
- २ इग्यारस रे दिन अमल^४ आगारे, अँसो कियो उपवास बे।
भली भावना भावता भीखू, करता कर्मा रो नास बे॥ धिन.
- ३ बारस रे दिन बेलो कीयौ, पूज पचख दीया तीनू आहार बे।
चतुर विचखण चिंतव्यौ दीसै, हिवे वेगौ करणौ संथार बे॥ धिन.
- ४ माहोमा नर-नारी कहै मुख सूं, जौ सांमीजी करे संथार बे।
तो मन रा मनोरथ आपेइ पूरां, ओ आछो अवसर सार बे॥ धिन.
- ५ साधां माहोमा विचार करे नै, रायचंद ने मेल्या सीखाय बे।
पूज नै कहै-पुद्गल हटीया दीसै^५, सुण नै सीह जिम उठता मुनिराय बे॥
- ६ सांमली हाट सूं उठ मुनीसर, चलीया-चलीया आय बे।
पकोइ हाट नै पका मुनीसर, देवे पको संथारौ ठाय बे॥

१. आलोयणा (आलोचना)।

२. नवमी।

३. चावल।

४. अफीम।

५. शारीरिक शक्ति क्षीण होती हुई दिखाई दे रही है।

- करै नमोत्थुणं अरिहंत सिधां नै, तीखे वचनें तांम बे।
घणां नर-नारी देखतां-सुणतां, संथारौ पचख्यौ भीखू सांम बे॥
- ८ भादवा सुध बारस भली तिथ, वार सोम विचार बे।
त्यां वेराग आयौ नै संथारो ठायो, छेहलो दुघड़ियो श्रीकार बे॥
- ९ धिन-धिन कहै बहू नर-नारी, धिन-धिन केंहता ह्वेला देव बे।
सुध साध मुनीसर मोटा त्यांरी, इंद्रादिक करै सेव बे॥
- १० घणां नर-नारी आवै नै सीस नमावै, बोलै बे कर जोड़ बे।
धिन-धिन हो धिन थे मोटा मुनीसर, कीधी बड़ां-बड़ां री होड़ बे॥
- ११ केइ सनमुख आया नै प्रणमै पाया, विकसत हुवै विलास बे।
खांत करी खमावै नै अघ उड़ावै, हीये आण हुलास बे॥
- १२ केइकां अभिग्रहौ एहवौ कियौ थो, यां साचौ मत काढ़्यौ होसी सार बे।
तोसंथारौ करसी नै जीतब सुधरसी, पको उतरसी पार बे॥

दूहा

- १ इण विध कीधौ अभिग्रहौ, भोळा लोकां तांम।
बात सुणी कहै पचखीयौ, संथारौ भीखू स्वाम॥
- २ जे धेषी हुंता जिण धर्म नां, ते चित मैं पांम्या चिमतकार।
जाण्यौ दीसै ओ मारग खरौ, केइ वांदै वारूँवार॥
- ३ संथारौ चावो^१ हुवौ, घणां गांवा-नगरां माय।
केइ माहोमा इम कहै, आपें वांदो पूज रा पाय॥
- ४ गुण गावै मुख सूं घणा, भल-भल भीखू सांम।
इण दुषम आरा मझे, भलौ सुधार्यौ कांम॥
- ५ ठांणे^२ कठेइ थपीया नहीं, इंद्री नही पड़ी हीण।
व्याहार^३ करता विचरता चालता, पका रह्या परवीण॥

ढाळ : ९

(एक दिवस लंका पति)

- १ संथारौ चोखौ कीयौ, सरणौ अरिहंत नों लीयौ।
सरणौ लीयौ, कियौ कार्य आतम तणों ए॥
- २ मुनि आण्यौ मन संतोष ए, मेट्यौ राग नै रोस ए।
मेट्यो रोस नें, दोस कर्म नों टाळीयो ए॥
- ३ सुमता धारी सांम ए, भजै भगवंत रो नांम ए।
भजै नाम नें, कांम करै छै आतम तणों ए॥
- ४ हरष सहीत हुलास ए, तोड़ै छै करम पास ए।
तोड़ै पास नें, आस तों एक मुगत री ए॥
- ५ नर-नारी बहु आवता, गुण भीखू रा गावता ।
गुण गावता, वचन बोलै मन भावता ए॥
- ६ धेषी पिण केइ आवता, खांत करी खमावता ।
खमावता, गुण भीखू रा गावता ए॥

१. प्रसिद्ध।

२. स्थिरवास।

३. विहार

- ७ बहु गांवां-नगरां तणां, नर-नारी श्रावक-आया घणां।
आया घणा, दरसणं करवा गुरां तणां ए॥
- ८ आय पडै पूज रे पाय ए, वंदणा करै सीस नमाय ए।
वंदणा करै, सीस नमाय आतम नै सुध करै ए॥
- ९ ओर लोक अनेक ए, करे गुण-ग्राम वसेख ए।
करै विसेख, देख मुनि नै हरपत हुवै ए॥
- १० कहै-उत्तम था ए सांम ए, उत्तम ही कीधो कांम ए।
कीधो कांम, नांम जपीजै इण रिप तणां ए॥
- ११ नर-नारी सैकड़ा आवता, बाजार मैं अमावता^१।
अमावता, गुण सांमी नां गावता ए॥
- १२ भांत-भांत करै गुणग्राम ए, किसान-किसा कहूं नाम ए।
किसा कहूं- नांम, सांमी मैं गुण घणां ए॥
- १३ सांमी भारमलजी आदि साध ए, त्यां कीधी सेवा बाध^२ ए।
कीधी बाध ए, असमाध टाळण सांमी तणी॥

१. नहीं समा रहे।

२. अधिक।

दूहा

- १ तेरस नो दिन आवीयो, ध्यावता निरमल ध्यान।
 सके तो जाणूं सांम नै, उपनौ दीसै अवधि ग्यान॥
- २ साध बैठा सेवा करै, बोलता मीठी वांण।
 श्रावक-श्रावका हरस सूं, करै सांमी नां बखांण॥
- ३ दिन दोढ पोहर आसरै, चढ़ती बेळां सोय।
 वचन प्रकासै किण विधे, सांभळजो सहू कोय॥

ढाल : १०

(बीस विहरमाण सदा सासता)

- १ साधु आवै स्हांमा जावौ, मुनि प्रकासै वाणं।
 वले साधवियां आवै चारे, सांमी बोले वचन सुहाणं॥

भवियण! नमो गुर गिरवांण, नमो भीखू चतुर सुजाणं॥

- २ कै तो कह्यौ अटकळ उनमांन, के कह्यौ बुध प्रमाणं।
 कै कोइ अवधि ग्यान उपनौ, ते जाणै 'सर्व-नाण'॥ भवियण!
- ३ केइ नर मुख सूं इम भाखे, सामी रा जोग साधां मैं वसिया।
 एतले एक महूर्त आसरै, साध आया दोय तिसिया॥ भवियण!
- ४ वकसत-वकसत साधू वांदै, चरण लगावै सीसं।
 नर-नारी जाण्यो अवधि उपनौ, साचौ वसवावीसं॥ भवियण!
- ५ सांमी साधू आया जांणी, मसतक दीधौ हाथं।
 एतले एक महूर्त आसरै, आयौ साधवियां रो साथं॥ भवियण!
- ६ वेणीरांमजी साध वदीता, साथे कुसालजी आया।
 साधवियां वगतू झूमा डाही जी, प्रणमै भीखू रा पाया॥ भवियण!
- ७ परचा^२ ज्यूं-ज्यूं आय पूगै छै, नर-नारी हरपत थावै।
 धिन हो धिन थे मोटा मुनीसर, इम गुण भीखू नो गावै॥ भवियण!

१. सर्वज्ञ।

२. स्वामीजी के मुखारविन्द से निकले हुए
 अदृश्य वचन।

- ८ आया ते साधु गुण गावै, भांत-भांत परणाम चढ़ावै।
थे मोटा उपगारी मेहमा भारी, आप तुले और कुण आवै॥ भवियण!
- ९ थे पका, पका पाखंड हटाया, सूत्र-न्याय बताया।
दान-दया आछा दीपाया, बुधवंता मन भाया॥ भवियण!
- १० सावज-निरवद भला निवेस्त्रा, कीधा बुध प्रमाण।
सूत्र-न्याय सरधा सुध लीधी, धारी अरिहंत आणं॥ भवियण!
- ११ साधां जाण्यो सांमी सूतां नै, घणी हुई छै वारं।
आप कहौ तो बैठा करां, जब भरियौ कांय हुंकारं॥ भवियण!
- १२ बैठा कर साधु लारे बैठा, गुण सांमी नां गावै।
बहू नर-नारी दरसण देखी, मन मैं हरषत थावै॥ भवियण!
- १३ आयौ आउखो अण चिंतवीयो, बैठां-बैठां जाणं।
सुखे समाधे बारज दिसत, चट दे छोड्या प्राणं॥ भवियण!
- १४ अणसण आयौ सात भगत रो, तीन भगत संधारं।
सात पोहर पिण माहे वरतीया, पकौ उतार्यौ पारं॥ भवियण!
- १५ मांडी सींवी नै दरजी पूगा, कहै सूई पाग मैं घाली।
इचरज लोक पांमीया अधिको, चट सांमी गया चाली॥ भवियण!
- १६ संवत अठारै साठे वरस, भाद्र सुदि तेरस मंगलवारं।
पूज पोहता परलोक आसरै, गुण गावै नर-नारी॥ भवियण!
- १७ दिन पाछिलौ दोढ़ पोहर आसरै, इण वेळा आउखो आयौ।
दिवसे मरवौ राते जनमवौ, कहै विरला नै थायौ॥ भवियण!

दूहा

- १ साध देही नै छोड़ नै, अळगा बैठा जाय।
विरहौ पड़ीयो छै पूज नो, समभाव रह्यां सुख थाय॥
- २ अहो-अहो अथिर संसार ए, संजोग जठेई विजोग।
पूज सरीखा पुरष था, पोहता आज परलोग॥
- ३ सुख-दुख इण संसार में, हर कोइ कू होय।
ग्यांनी भुगते ग्यान सूं, मूरख भुगते रोय॥
- ४ तीर्थकर चक्रवर्त मोटका, काळ न छोडै कोय।
जेतौ आउखौ बांधीयौ, ते तो भुगते सोय॥
- ५ साधां जाण्यौ सांमजी, पोहता परलोक रे माय।
याद कीया सिध अरिहंत नै, काउसग दीधा ठाय॥

ढाळ : ११

(रघुपति जीत्यो रे)

- १ कळ गया जांणी भीखू भणी हो, मेल्या मांढी लग जाय।
जे मेहमा कीधी मांढी तणी हो, कही कठा लग जाय॥
सांमी नों सुजस घणो॥
- २ अनेक रूपीया लगावीया हो, अनेक उछाळ्या लार।
अनेक देइ सोभा करी हो, ते ग्रहस्थ नों ववहार॥ सांमी.
- ३ जो विसतार करै मांढी तिणों हो, तो सुणतांइ इचरज थाय।
पिण साधु रे मुंढै सोभै नहीं हो, तिण रो बुधवंत जाणसी न्याय॥ सांमी.
- ४ संसार किरतब सरावै नहीं हो, त्यरि सावज जोग पचखांण।
पिण बीती बात वरणवै हो, वागरै निरवद वांण॥ सांमी.
- ५ सइकड़ां नर-नारी आवीया हो, छोडी घरां ना कांम।
जांणे के मेळो मंडीयो हो, गावै भीखू नां गुणग्राम॥ सांमी.
- ६ वले 'सूंस' लेवै केइ चूप सूं हो, उजम मन माही आंण।
शील-व्रत केइ आदरै हो, केइ छोडै काचौ पांण॥ सांमी.

- ७ केइ छोड़ै नीलोतरी हो, केइ छोड़ै 'सूड निनाण'^१।
 बेला तेला आदरै हो, अनेक प्रकारे आण॥ सांमी।
- ८ वले च्यार तीरथ आय मिल्या हे, सांमी तणें संथार।
 काळ गया जब पूजजी हो, उहां पिण आहार पचख्या मन धार॥ सांमी।
- ९ जसकर्मि था जीवड़ा हो, त्यांरो जस गावै संसार।
 वले आगे पिण जस हुंतौ दीसै घणौ हो, वेगा पामता दीसै भव पार॥ सांमी।

१. खेत में उगने वाले कंटीले पौधे, घास, तृण
 आदि का काटना।

दूहा

- १ आदि काढी आदिनाथ ज्यूं, इण दुषम आरा माय।
असल धर्म ओळखावीयौ, धिन भीखू रिषराय॥
- २ आपी चीजां अमोलक, घाली घण घट माय।
थोड़ी सी परगट करूं, सांभळजो चित ल्याय॥

ढाळ : १२

(उस रघुपति के धर्म सुराजै सुखिया सगळा लोग)

- १ भगवंत भाखी सरधा राखी, असल लियौ आचार।
आइच^१ नी परे ग्यान उद्योतौ, मेट दिया मिथ्यात अंधार॥
रिष भीखूजी नां धर्म सूं राजी, सुख पावै श्रीकार॥
- २ चंद्रमा ज्यूं सोम निजर थी, दीठां दिल ठराय।
क्रोध करी कोइ 'कंटक'^२ आवै, सांमी देख सुख पाय॥
- ३ इत्यादि तीसों ही उपमा, भीखू नै सोभाय।
चतुर होसी ते समजे जासी, भोळा नै खबर न कांय॥
- ४ चरचा वाला नै चरचा आपी, ग्यान वाळा नै ग्यान।
प्रश्न वाला नै प्रश्न आप्यौ, ध्यान वाळा नै ध्यान॥
- ५ दिष्टंत वाळा नै दिष्टंत आप्यौ, हेत वाळा नै हेत।
क्रोध करी नहीं बोलै किरवा^३, भली सीखावण देत॥
- ६ संजम दे सिवपुर नां कीधा, वले आपी समकत सार।
समणोवासक किया देइ नै, श्रावक नां व्रत बार॥
- ७ खमता दमता सुमता आपी, वले गमता वचन वखांण।
दिढ़ता थिरता जमता जुरता, सूत्र-न्याय जोड़्या सुध जांण॥
- ८ रागी ते तो राजी होसी, धेखी करसी धेख।
रागी धेपी नीं खबर पडेसी, वखांण सुण्या विसेख॥
- ९ बड़ा सिष बुधवंत वदीता, सारां सिरे सोभाय।
आचार्य पदवी त्यांनै आपी, भारमलजी मन भाय॥

१. आदित्य।

२. दुर्जन।

३. कडुआ।

- १० और साध साधवियां नै सांमी, आपी सीख अमोल।
 अरिहंत आग्या माहे रहीज्यो, थांरो तीखौ वधै ज्युं तोल॥
- ११ साची बात बतावै सांमी, पोहता परभव माया।
 गुणां करे सांमी था गिरवा, म्हां सूं पूरा केम कहवाय॥
- १२ नित-नित नमो भीखू मुनीसर, हिवड़े आंण हुलास।
 मुगत रै हेते करणी करनै, तोड़ न्हाखौ मोह पास॥

दूहा

- १ घणां वरसां लग स्वाम जी, आछौ कीयौ उपगार।
घणां जीवां नै प्रतिबोधीया, आर्य देस मझार॥
- २ हिवे चोमासा सांम नां, सांभळजो सहु कोय।
'ववरो' कहुं छूं तेहनों, नांम प्रमाणे सोय॥
- ३ आठ चोमासा आगे किया, जद असल नहीं अणगार।
सतरा सूं साठां लगे, वरत्यौ सुध ववहार॥
- ४ साधपणौ सतरे लीयो, साठां सुधी सांम।
चोमासा चमाली किया, सुणौ तेहनां नांम॥

ढाळ : १३

(धिन धिन जंबू स्वामी नै)

- १ छ चोमासा केलवे किया, सतरे इकवीसे पचीसे पिछांण हो। मुणिंद!
अड़तीसे गुणचासे अठावने, हद कीधी करमां री हांण हो। मुणिंद!
धिन-धिन भीखू अणगार नै॥
- २ एक चोमासो वरलू कीयो, वरस अठारे विचार हो। मुणिंद!
बीसे राजनगर कीयो, उठे कीयो घणों उपगार हो॥ मु. धि.
- ३ किया दोय चोमासा कंटाळिये, चोबीसे अठावीसे आय हो। मुणिंद!
तीन चोमासा बगड़ी कीया, सतावीसे तीसे छतीसे सुहाय हो॥ मु. धि.
- ४ दोय चोमासा माधोपुर किया, इगतीसे अठचाळीसे आंण हो। मुणिंद!
चोतीसे नें पेंताळीसे मैं, पीपाड़ सैहर पिछांण हो॥ मु. धि.
- ५ एक चोमासो आंबेट मैं, वरस पैंतीसे विचार हो। मुणिंद!
सेंतीसे पादू कीयो, भलो कीयो उपगार हो॥ मु. धि.
- ६ एक चोमासो स्वामजी कीयो, सोजत सैहर मझार हो। मुणिंद!
संवत अठारे तेपनैं, आछो कीयो उपगार हो॥ मु. धि.
- ७ नाथदुवारा सैहर मैं, तीन किया चोमास हो। मुणिंद!
तयाळीसे, पचासे, छपनैं, तठे तोड़्या केतां रा कर्म-पास हो॥ मु. धि.

- ८ दोय चोमासा पुर सैहर मैं, सेतालीसे नै सतावनें होय हो। मुणिंद !
 एक सौ नै एक बीस पोसा एक दिन आसरे, वले जूवो छोड़ायो घणो सोय हो॥ मु. धि.
 ९ पांच चोमासा पूजजी, सैहर खेरवे उपगार कियो सरस हो। मुणिंद !
 छबीसे बत्तीसे इगतालीसे समे, छायालीसे चोपने वरस हो॥ मु. धि.
 १० सात चोमासा पाली सैहर मैं, तेवीसे तेतीसे चाळीसे चोमाळ हो। मुणिंद !
 बावने पचावने गुणसठे, सुखे-सुखे नेड़ो आयो काळ हो॥ मु. धि.
 ११ सात चोमासा सरियारी सैहर मैं, उगणीसे बावीसे गुणतीसे गिणाय हो। मुणिंद !
 गुणाळीसे बयाळीसे एकावने, साठे परभव पोहता मुनि आय हो॥ मु. धि.
 १२ सासण श्री वर्धमान रौ आछो, दीपायो भीखू स्वाम हो। मुणिंद !
 घणां जीवां नैं प्रतिबोधनै, आप पोहता सुध ठाम हो॥ मु. धि.
 १३ पचीस वरस आसरे घर मैं रह्या, आठ वरस आसरे भेष धार हो। मुणिंद !
 एक दिन अधिको सतरे संजम लियो, तिण मैं वरत्या चाली नैं वरस चार॥ मु. धि.
 १४ सरव आउ सितंतर वरस आसरै, पाळ्यौ भीखनजी स्वाम। मुणिंद !
 चमालीस वरसां मझे, सारत्या घणां रा कांम॥ मु. धि.
 १५ एक सौ नैं च्यार रे आसरै, दिख्या दीधी निज गण माय हो। मुणिंद !
 एकवीस साध सतावीस साधव्यां, मेले परभव पोहता मुनिराय हो॥ मु. धि.
 १६ हजारं श्रावक-श्रावका कीया, सुलभ बोधी हजारं थाय हो। मुणिंद !
 गुण-ग्रांम करता लाखां गमे, ऐसा हुवा भीखू ऋषराय हो॥ मु. धि.
 १७ मुनि मोसूं उपगार कीयो घणौ, संजम दियौ सुखदाय हो। मुणिंद !
 जो अनेक प्रकारे गुण अखूं, तो ही उरण नहीं थाय हो॥ मु. धि.
 १८ जनम-मरण री लाय सूं, आप काळ्यौ देइ नै साज हो। मुणिंद !
 वले मारग बतायौ मोख रो, धिन-धिन भीखू रिषराज हो॥ मु. धि.
 १९ चिरत कियौ भीखू तणों, सुणीयौ जिम अटकल अनुसार हो। मुणिंद !
 'सांसा' सहित नैं निश्चै कह्यौ हुवै, तो मिछामी दुकडं वारूंवार हो॥ मु. धि.
 २० जोड़ कीधी सरियारी सैहर मैं, पके हाट विचार हो। मुणिंद !
 समत अठारे साठे समे, माह सुदि नवमी सनिसर वार हो॥ मु. धि.
 २१ ए गुण गया भीखू तणां, कर्म काटण निरजरा करण हो। मुणिंद !
 हाथ जोड़ी ऋष हेमो कहै, भव-भव होजो भीखू रौ मोनें सरण हो॥ मु. धि.

इति श्री हेमराजजी स्वामी कृत भीखू-चरित समाप्तम्

४

भिक्षु-चरित

मुनि वैणीरांम

दूहा

- १ अरिहंत, सिध नै आयरिया, उवझाया, अणगार।
पांचूं पद परमेसरू, त्यांनै जपतां जै-जैकार॥
- २ सासण-नायक समरियै, महावीर मतवंत॥
मुगत गया मोटा मुनि, सकल सिरै सोभंत॥
- ३ पांचू पद प्रणमी करी, भाव-भगत भल आंण।
कर्म-काटण रै कारणै, कहूं 'भीखू-चिरत' वखांण॥
- ४ आग्या ले अरिहंत नी, वले सुगुरु आग्या श्रीकार।
गुण गाऊं गुणवंत रा, ते सांभळजो नर-नार॥
- ५ किहां उपना किहां जनमीया, परभव पोहता किण ठांम?
धुर सूं उतपत त्यांरी कहूं, ते सुणजो सुध परिणांम॥

ढाळ : १

(धीज करे सीता सती रे, लाल)

- १ तिण काळे नै तिण समैं रे, दुषम आरा रे माय रे। सोभागी॥
जंबूदीप भरतखेत में रे लाल, मुरधर देस सुखदाय रे। सोभागी॥
भाव सुणौ भीखू तणा रे लाल, हिरदै राखै धार रे। सोभागी॥
सतगुर नै समर्यां थकां रे लाल, वरतसी जै जैकार रे। सोभागी॥
- २ गांम कटाळ्यो सोभतो रे लाल, कांठे कोर कहाय रे। सोभागी॥
'कमधज' राज करै तिहां रे लाल, वगतसींघ सोभाय रे। सोभागी॥ भाव.
- ३ साह बलुजी सोभतो रे लाल, दीपादे तंस नार रे। सोभागी॥
तिहां भीखनजी आय अवतर्या रे लाल, सिंघ सुपनो देख्यो श्रीकार रे। सोभागी॥ भाव.
- ४ समत सतरे तर्यासे समे रे लाल, असाढ़ मास सुकल पख माय रे। सोभागी॥
वार मंगल तेरस तिथ मोटकी रे लाल, जनम किल्यांणज थाय रे। सोभागी॥ भाव.
- ५ अनुक्रमे मोटा हुआ रे लाल, एकज परण्या नार रे। सोभागी॥
पछे सील दोनुं आदर्यौ रे लाल, कहै चारित लेसां लार रे। सोभागी॥ भाव.
- ६ विजौग पडीयौ तिरिया तणो रे, सगपण मलता अनेक रे। सोभागी॥
छता भोग छिटकाविया रे लाल, आयौ वेराग वसेख रे। सोभागी॥ भाव.

१. राठोड़ वंशी क्षत्रिय

- ७ समत अठारे आठे वरस मैं रे लाल, लीधो द्रव्ये संजम भार रे। सोभागी।
 गुर कीधा रुघनाथजी रे लाल, पूरौ नहीं ओळख्यो आचार रे। सोभागी॥ भाव.
- ८ काळ कितोएक बीतां पछै रे लाल, वाच्या सुतर-सिधंत रे सोभागी।
 ठीक पड़्यां पिछताविया रे लाल, अै तो न दीसै संत रे। सोभागी॥ भाव.
- ९ यां 'थापीता'^१ थानक आदर्या रे लाल, वले आधाकरमी जाण रे । सोभागी।
 मोल रा लीधां माहे रहै रे लाल, यां भांगी भगवंत आंण रे। सोभागी॥ भाव.
- १० ववेक-विकल बालक भणी रे लाल, मूंडता नहीं संकै लिगार रे। सोभागी।
 मत बांधण रे कारणे रे लाल, यां लोपी जिणवर कार रे। सोभागी॥ भाव.
- ११ नितपिंड लागा बेहरवा रे लाल, पोथ्यां रा 'गंज'^२ ठाम-ठाम रे। सोभागी।
 पड़िलेहां विण पड़िया रहै रे लाल, यांरा किण विध सीझसी काम रे। सोभागी॥ भाव.
- १२ भंड-उपगरण नै पातरा रे लाल, वस्त्र-उपध अनेक रे। सोभागी।
 इधका राखै जाण नै रे लाल, ए 'बुडै'^३ बिनां ववेक रे। सोभागी॥ भाव.
- १३ किरिया मैं काचा घणा रे लाल, कह्यौ कठा लग जात रे। सोभागी।
 समकत-रतन जिण भाखियै रे लाल, ते पिण न आयौ हाथ रे। सोभागी॥ भाव.

१. साधु के लिए स्थापित।

२. ढेरा।

३. डूब रहे हैं।

दूहा

- १ विध सूं करी विचारणा, वारूंवार वसेख।
सुध-मारग लेणौ सही, परभव सांमो देख॥
- २ रखे^१ झूठ लागेला मो भणी, तो खप करणी वारूंवार।
सूतर सगला वाचणा, ज्यूं संक न रहै लिगार॥
- ३ राजनगर भणतां थकां, उघड़ी अभिंतर आंख।
हिवै चारित ले सुध पाळणौ, छोड़ आतम रौ वांक^२॥
- ४ म्है वैरागै घर छोडीया, न्यातीलां नै रोवाण।
इणं विध जनम पूरौ कियां, मूळ न होवै किल्याण॥
- ५ वीर-वचन विचारतां, ए निश्चै नहीं अणगार।
खप कर समझावां एह नैं, मिल पाळां सुध आचार॥

ढाळ : २

(आ अणुकंपा जिण आज्ञा में)

- १ एहवो विचार कियौ तिण ठामै, गाढ़ी बात हिया में धार।
टोकरजी हरनाथजी भारीमाल, समझे नै लागा पूजरी लार॥ ओ भीखू.
औ भीखू चिरत सुणौ भव जीवां ॥
- २ मुरधर देस मैं आया तिवारै, मिलीया सोझत सैहर मझार।
गुर नै कहै वीर वचन संभाळो, आपां मैं नहीं छै सुध आचार॥ ओ भीखू.
- ३ देव अरिहंत नैं गुर निग्रंथ, केवळी भाख्यो धर्म तंत सार।
तीनूंइ रतन अमोलख जाणौ, यांमे भेळ म सरधौ लिगार॥ ओ भीखू.
- ४ और वसत^३ मैं भेळ पड़्यां थी, चोखी वसत विगड़ै छै वसेख।
तो पुन मैं पाप रौ भेळ किहां थी? सांसौ हुवै तो सूतर ल्यो देख ॥ ओ भीखू.
- ५ आ सुध सरधा पिण हाथै न आई, सुध किरिया थी णि अळगा परीया।
आगम न्याय अजे^४ सुध चालौ, तो राखूं माथै गुर धरीया॥ ओ भीखू.
- ६ भेषधार्यां तो मूळ न मांनी, जब भीखू मन मैं विचार्यौ एम।
उतावळ कीधां तो समझै नांही, धीरे समझावसां धर पेम॥ ओ भीखू.

१. कदाचित्।

२. वक्रता।

३. वस्तु।

४. अब भी।

- ७ गुर नै कहै चोमासौ भेळौ करसां, चरचा करां दोनूं रूढ़ी रीत।
 सूतर वाचै नै निरणौ करसां, खोटी सरधा आपे छोड़सां विपरीत॥ ओ भीखू,
 ८ रुघनाथजी कहै-चोमासौ भेळौ कीधां, वले म्हारा चेलां नै लेवै समझाय।
 जब भीखू कहै-‘जड़बाजां नै’^१ राखौ, त्यांनै चरचा री समझ पड़ै नहीं काय॥ ओ भीखू,
 ९ इण विध उपाय घणाइ कीधा, पिण चरचा न कीधी चित्त लगाय।
 कर्म घणा नै ‘वोहल संसारी’^२, ते तो किण विध आवै ठाय?
 १० बीजी वार मिलीया बगड़ी में, कह्यौ थे तो वीर-वचन वीसरीया॥
 निरणो करंता निश्चै न देख्या, जब भीखू तड़कै तोड़ निसरीया॥ ओ भीखू,
 ११ बगड़ी सूं विहार कियौ तिण वेळां, बावल^३ वाजवा लागी तांम।
 ‘अजैणा’^४ जांणे छतरी में बैठा, रुघनाथ जी पिण आया तिण ठांम॥ ओ भीखू,
 १२ लोक घणा आया सैहर बारै, रुघनाथजी कहै वांरूवार।
 टोळौ छोड़े मती निकळौ बारै, धीरप राखौ बात विचार॥ ओ भीखू,
 १३ बात हमारी माने लेवौ, नहीं निभोला ए दुषम काळ।
 सुध आचार साधु रौ न चालै, भीखू किण विध बोलै रसाळ॥ ओ भीखू,

१. अनपढ़ों को।

३. तेज आंधी।

२. अधिक काल तक संसार में भ्रमण करने वाले।

दूहा

- १ भीखू वलता^१ भाखै भलौ, म्है किम मांनां थारी बात?
म्है निरणो कियौ, सूतर वाचनै, तिण मैं संक नहीं तिलमात॥
- २ छेला दिन लग चालसी, तीरथ धर्म अगाध।
म्है सुध साधपणौ पाळसां, अरिहंत वचन अराध॥
- ३ छतरी मैं बैठां थकां, मोह आंण्यौ साख्यात।
मन माहे चिंता करी, पिण गरज न सरी अंस मात॥
- ४ उदेभाण बोल्यो इसौ, आंसूपच^२ करो केम।
टोळा तणा धणी वाजनै, आछी न लागै एम॥
- ५ किण रो एक जाअै जरै, चिंता हुवै अपार।
म्हारा पांच जाअै परा, गण मैं पड़ै बगार^३॥

ढाळ : ३

(कामणगारो छै कूकड़ो रे)

- १ फेर बोल्या रुघनाथजी रे, थे जासो केतीएक दूर?
आगै थारो पाछै माहरो रे, हूं लोक लगावसूं पूरा।
चिरत सुणौ भीखू तणो रे॥
- २ भीखू वलता भाखै भलौ रे, जीवणौ कितोएक काळ।
परीसा खमसां खिम्या करी रे, नहीं लोपां जिणवर पाळ॥
- ३ विहार कियो वगडी थकी रे, हुआ रुघनाथजी लारा।
वले चरचा कीधी वडलू मझे रे, ते सांभळजो नर-नार॥
- ४ रुघनाथजी बात इसड़ी कही रे, दुषम काळ साख्यात।
चोखौ साधपणौ नहीं पळै रे, थे मांनलो मांहरी बात॥
- ५ भीखू कहै - जिण भाखीयौ रे, सूतर आचारांग^४ माय।
ढीला भागळ इम भाखसी रे, हिवडा^५ सुध न चलाय॥
- ६ 'बल-सिंघेण हीणा करी^६ रे, पूरौ न पळै आचार।
आगूंच जिणजी इम भाखीयौ रे, इम कहसी भेषधार॥

१. वापस।

२. अश्रुपात।

३. भेद/बड़ा छिद्र।

४. आयारो अ. ६ उ. ४।

५. इस समय

६. शारीरिक शक्ति व संहनन कमजोर होने से।

- ७ साची सूतर तणी वारता रे, मांनी नहीं रे लिगार।
समझाया समझै नहीं रे, जब कष्ट^१ हुआ तिणवार॥
- ८ भीखनजी आद देई तिहां रे, तैरे जणा हुआ त्यार।
फेर दिख्या लेवा भणी रे, करवा आतम नो उद्धार॥
- ९ श्रावक पिण तिण अवसरै रे, जोधाणा सैहर मै तांम।
तैरे भायां समाई पोसां कीया रे, तिण सूं तेरापंथी दीयौ नाम।
- १० पाखंड पंथ दूरौ कीयौ रे, देख रह्या अरिहंत।
अनेरो पंथ मांनै नहीं रे, जाणै तेरापंथ तंत॥
- ११ गया देस मेवाड़ मैं रे, केलवा सैहर मझार।
आग्या ले अरिहंत नी रे, पचख्या पाप अठार॥
- १२ समत अठारे सतरोतरे रे, असाढ़ सुद पूनम जांण।
संजम लीधौ सांमजी रे, कर जिन-वचन प्रमांण॥
- १३ हरनाथजी हाजर हुंता रे, टोकरजी तीखा सुवनीत।
परम भगता 'सिष पाटवी'^२ रे, यां राखी पूज री परतीत॥

दूहा

- १ चारित लीधौ चूँप^१ सूं, पाखंड पंथ निवार।
भवियण रै मन भावता, हुआ मोटा अणगार॥
- २ उदै-उदै पूजा कही, समण निग्रंथ नीं जाण।
तिण सूं पूज प्रगट थया, ए जिन-वचन प्रमाण॥
- ३ ओपम तो आछी कही, समण-निग्रंथ नै श्रीकार।
चोरासी अति दीपती, सूत्र अणुजोगदुवार^३ मझार॥
- ४ वले दसमां अंग^३ इधकार मैं, कही तीस ओपमा तंत।
समण भीखू नै सोभती, भाख गया भगवंत॥
- ५ वले षट दस दीधी ओपमा, बहुश्रुती नै श्रीकार।
'उतराधेन अधेन इग्यारमें, श्री वीर कह्यौ विसतार॥
- ६ इण अणुसारे ओळखौ, भीखू नै भली भंत।
ओपम गुण आछा घणा, तिण रौ पार न कोइ पामंत॥
- ७ गुणवंत गुर ना गुण गावतां, तीर्थकर नाम गोत बंधाय।
हिवे ओपम सहित गुण वरणवूं, ते सुणजो चित ल्याय॥

ढाळ : ४

(हरिया नै रंग भरियाजी)

- १ आदिनाथ आदेसर जी, जिणेसर जग तारण गुरु।
धर्म आद काढी अरिहंत।
इण दुषम आरे कर्म कटीया जी, परगटीया आद जिणंद ज्यूं।
ए इचरज इधक आवंत॥
सांम वरण अत सोवै जी, मन मोवै नेम जिणंद ज्यूं
त्यांरी वांणी अमीय समांण
भवियण रे मन भाया जी चित चाया तीरथ चार मैं।
मुनि गुण रतनां री खान॥

१. उत्साह।

२. अणुओगदाराई-सू. ७०८

३. पण्हावागराई, अ. १० सू. ११।

- २ काळवादी आदि जांणी जी, मत आणी मारग उथापवा।
 'कुबध्यां केलवीया कूर'^१॥
 अ 'पाखंड घोचा'^२ पोचा^३ जी, कांइ ग्यांन करै गिरवा मुनी।
 चरचा कर कीया चकचूर॥ सांम.
- ३ संख उजल श्रीकारी जी, पयधारी दोनूं दीपता।
 नहीं बिगडै दूध लिगार॥
 ज्यूं थे तप-जप किरिया कीधी जी, कर लीधी आतम ऊजली।
 पय 'दस जती धर्म'^४ धारा॥ सांम.
- ४ कंबोज देस नों घोड़ो जी, अति सोरौ करै सिरदार नै।
 नहीं आणै अहिल^५ लिगार॥
 भवियण नै थे तार्या जी, उतार्या पार संसार थी।
 सुखे जासी मोख मझार॥ सांम.
- ५ सूर सिरोमण साचौ जी, नहीं काचो लड़तां कटक^६ मैं।
 सुवनीत अश्व असवार॥
 ज्यूं थे कर्म कटक 'दल' दीधौ^७ जी, जस लीधौ जाझौ^८ जगत मैं।
 चढ़ सुतर अश्व श्रीकार॥ सांम.
- ६ हाथी हथण्यां परवारे जी, बल धारै दिन-दिन ही वधै।
 साठ वरस सुध मानं॥
 ज्यूं थे तयाली वरस लग जाझा जी, तप ताजा तेज तीखा रह्या॥
 प्राक्रम पिण परधानं॥ सांम.
- ७ वरषभ सींग खंध भारी जी, सिरदारी गायां गण मझे।
 ठेट भार वहै भली भंत॥
 ज्यूं थे गण भार ठेट निभाया जी, चलाया तीरथ चूंप सूं।
 सहु साधां मैं सोभंत॥ सांम.

१. कुबुद्धि वाले व्यक्तियों ने मिथ्या प्रचार किया।

२. पाखंड (शास्त्र-विरुद्ध आचरण करने वाले तिनके)

३. कमजोर।

४. क्षांति, मुक्ति आदि।

५. तकलीफ।

६. संग्राम।

७. पछाड़ दिया।

८. बहुत।

- ८ सिंघ मिरगादिक नें राजा जी, तप ताजा डाढ़ा तेज सूं।
जीवन जीपै जोय॥
ज्यूं आप केसर^१ नीं पै गूंज्या जी, सदा धूज्या पाखंड धाक सूं।
थां सूं गंज^२ सक्थौ नहीं कोय॥ सांम.
९ वासुदेव बळ जाण्यौ जी, बखाण्यौ वीर सिधंत मै।
संख चकर गदा धरणहार॥
ज्यूं थांरा ग्यान दरसन चरित तीखा जी, नहीं फीका त्यां कर तेज सूं।
पूज पाखंड दियौ निवार॥ सांम.
१० आखा भरत नों राजा जी, अति ताजा सेन्या सझ करी।
आंणै वेर्यां रो अंत॥
ज्यूं थे पाखंड सह ओळखाया जी, हटाय बुध उतपात सूं॥
तत्व बताया तंत॥ सांम.
११ 'सक-इन्द्र'^३ सिरदारी जी, वजरधारी सुर में सोभतो।
जखादिक जीपे जाण॥
ज्यूं सूतर वजर श्रीकारी जी, बळधारी बुध उतपात सूं।
पूज पाड़ी पाखंड री हांण॥ सांम.
१२ 'आइच' उगां आकासै जी, विणासै तिमर तेज सूं।
इधकौ करै उद्योत॥
ज्यूं थे अग्यान अंधार मिटायौ जी, बतायौ मारग मुगत रो।
घण-घट^४ घाली जोत॥ सांम.
१३ चंद सदा सुखकारी जी, परिवारी ग्रह ना गण मझे।
सोमकारी^५ सोभंत॥
ज्यूं च्यार तीरथ सुखदाया जी, मन भाया भवियण जीव रे।
भीखू भलाज संत॥ सांम.
१४ लोक घणा आधारी जी, अत भारी धांनां कर भर्यौ।
ते कोठागार कहाय॥
ज्यूं ग्यांनादिक गुण भरीया जी, परवरीया पूज परगट थया।
आधारभूत अथाय॥ सांम.

१. केशरी सिंह।

२. जीत।

३. शकेन्द्र-प्रथम स्वर्ग का इन्द्र।

४. सूर्य उदय होकर।

५. अनेक व्यक्तियों के हृदय में।

६. शांतिकारी।

- १५ सर्व वृक्षां मैं सोवै जी, मन मोवै दीसै दीपतौ।
जंबू सुदरसण जाण॥
ज्यू संतां मैं सिरदारी जी, मत भारी भीखू भरत मैं॥
उपना इचरजकारी आंण॥ सांम.
- १६ सीता नंदी सिरै जांणी जी, बखांणी वीर सिधंत मैं।
पंच सै जोजन प्रवाह॥
ज्यू तप-तेज अत तीखाजी, नहीं फीका, रह्या ज फाबता^१।
सदा काळ सुखदाय॥ सांम.
- १७ मेरू नी ओपम आछी जी, नहीं काची कही किरपाल जी।
ते ऊंचौ घणौ अतंत।
ओषद अनेक छाजै जी, विराजै गुण त्यामैं घणा॥
ज्यू ए बहुश्रुती बुधवंत॥ सांम.
- १८ 'सयंभूरमण समुद्र रूड़ौ जी, 'पूरौ पाव राज पिहुलो पड़्यौ^२।
प्रभूत^३ रतन भरपूर।
सागर जेम गंभीरा जी, सुरवीरा गुण कर गाजता।
सूतर चरचा मैं सूर॥ सांम.
- १९ ए षट दस ओपम आछी जी, कांई साची सूतर मैं कही।
बहुश्रुती नै श्रीकार।
इण अणुसारे जांणौ जी, पिछांणौ कर लो पारखा।
भीखू गुण-भंडार॥ सांम.
- २० ओपम अनेक गुण छाज्या जी, विराज्या गादी वीर नी।
पूज पाट लायक गुण पाय॥
समुद्र जेम अथागा जी, जलथागा जिण भाख्यौ नहीं।
ज्यू गुण पूरा केम कहिवाय? सांम.
- २१ पाटलायक सिष भाली जी, सूहाली परकत सुन्दरू।
भारमलजी गैहर गंभीर।
पदवी थिरकर थापी जी, आ आपी आचारज तणी।
जांणे सुवनीत सधीर॥ सांम.

१. शोभित होते हुए।

२. स्वयंभूरमण समुद्र पाव (एक रज्जू का

चौथा भाग) रज्जू चौड़ाई वाला है। असंख्य योजन, का एक रज्जू होता है।

३. विपुल।

दूहा

- १ भगोती^१ मैं भगवंत भाखीयौ, वीसमा सतक मझार।
छेला दिन लग चालसी, निरमळ तीरथ च्यार॥
- २ वले 'उतराधेन दसमा^२ अधेन' मैं, गोतम प्रतै कह्यौ भगवानं।
दुषम आरा तेह मैं, जिण-धर्म चलसी असमानं॥
- ३ धणी बिना ते जूझसी, लेसी आगम वचन अराधा।
तो हिवड़ा मुज बैठां थकां, समो एक म कर परमादा।
- ४ वले वंकचूलिया मैं वारता, तेपना पछै विचार।
इधक पूजा अरिहंत कही, समण निगरंथ नी श्रीकार॥
- ५ तिण सूं पूज पूजावीया, दिन-दिन इधक दयाल।
उपगार कीधा अति घणा, मेट्या मोह-जंजाळ॥
- ६ किहां किहां विचर्या सांम जी, किहां-किहां कीया उपगार?
थोड़ो सो परगट करूं, ते सुणजो इधकार॥

ढाळ : ५

(भरत नरिंद तिण वार)

- १ हाड़ोती दूंढार मझार, वले मुरधर देश मेवार।
आछेलाल! च्यारूं देसां में विचरीया जी॥
- २ पाखंड उठ्या अनेक, पूज मेट्या आंण ववेक।
आछेलाल! सूतर चरचा रा जोर सूं जी॥
- ३ कीधा साध-साधवियां रौ थाट, रह्या दिन-दिन इधका गैहघाट।
आछेलाल! श्रावक-श्रावक किया घणाजी॥
- ४ करता पर उपगार, आया मुरधर देस मझार।
आछेलाल! चरम उपगार हुवौ घणो जी॥
- ५ च्यार भाया नैं बायां सात, त्यां दिख्या लीधी जोड़े हाथ।
आछेलाल! वैरागे घर छोडीया जी॥
- ६ चांगोद आद दे जांण, पीपाड़ तांई पिछांण।
आछेलाल! छेला दरसन दीधा सांमजी॥

१. भगवई-श. २० सू. ७३।

२. उत्तरज्झयणाणि-अ. १० गा. ३१।

- ७ गांमां-नगरां करता उपगार, आया सोजत सैहर मझार।
आछेलाल! रायमलजी री छतरी मैं ऊतखा जी॥
- ८ हुकमचंद आछो आयौ तांम, पूज नै वांछा सीस नांम।
आछेलाल! विणती तो विध सूं करी जी॥
- ९ चोमासौ करौ सरीयारी माय, मारी पकी हाट विराजो आय।
आछेलाल! पूज मानै लीधी वीणतीजी॥
- १० बगड़ी कंटाळ्यै होय, वीणती कीधी घणां जोय।
आछेलाल! चोमासा री अरज मांनी नहीं जी॥
- ११ पूज आया सरीयारी चलाय, दियौ चोमासौ ठाय॥ आछेलाल।
आग्या ले पकी हाअ विराजीया जी॥
- १२ सरीयारी सोभै कांठा री कोर, 'जाडी'^१ माजन वसती जोर।
आछेलाल! 'दोला-दोला'^२ कोट ज्यू 'मगरा'^३ दीसता जी॥
- १३ भारमलजी खेतसी उदेरांम, रायचंद ब्रह्मचारी तांम।
आछेलाल! जीवोमुनि वैरागी भगजी भगत मैं जी॥
- १४ सप्त रिष सहित तिण वार, ग्यानांदिक गुण रा भंडार।
आछेलाल! संजम-तप सुध अराधता जी॥
- १५ रागी घणा सैहर मझार, तो वांदण आया नर-नार।
आछेलाल! भवियण रे मन भाविया जी॥
- १६ हिवे सांवण मास मझार, आवसग अर्थ विचार।
आछेलाल! लिख-लिख सिष नै बतावता जी॥
- १७ गोचरी पिण फिरिया ठांम-ठांम, दरसन देवा कांम।
आछेलाल! सांवण सुद पूनम लगे जी॥

१. अधिका।

२. चारों ओर।

३. पहाड़।

दूहा

- १ चरम किल्यांण चढ़तौ हूवौ, तिण रौ सुणौ सहू विसतार।
सरीयारी मैं सांम विराजीया, हिवे भाद्रवा मास मझार॥
- २ अलप असाता 'फेरा' तणी, कांयक जणांणी जांण।
और असाता इधक न ऊपनी, परबल पुन प्रमाण॥
- ३ पूरव पाप परबल हुवै, ते 'रिबे' घणा दिन-रात।
एहवी असात वेदनी यारै नहीं, ए पदवीधर पूज विख्यात॥
- ४ हिवे पजूसणां मैं परवरा^३, 'तीन टक'^४ हुवै वखांण।
नर-नारी आवै घणा, सुणवा सुन्दर वांण॥
- ५ सुकल पख सुहामणौ, मास भाद्रवै जांण।
चोधज आई चांदणी, आउ 'नेरो'^५ आयो पिछांण॥
- ६ सतजुगी नै सांमी कहै, थे आछा सिष सुविनीत।
साझ 'दीयौ' थे मो भणी, मैं संजम पाळ्यो रूढ़ी रीत॥
- ७ आगै टोकरजी तीखा हुंता, विनैवंत विचार।
भगत करी भारी घणी, सुवनीत हुंता श्रीकार॥
- ८ भारमलजी सूं भेळप^६ भली, रहीज रूढ़ी रीत।
जांणक पाछल भव तणीं, लगती हुंती पीत॥
- ९ यां तीना रां साझ सूं, पाल्यौ सुध संजम भार।
चित समाध रही घणी, थे रद्दाज एकणधार॥
- १० उतराधेन पैहला अधेन मै^७, भाख गया वीर जिणंद।
सिष सुवनीत हुवै सदा, तो गुर नै रहै आणंद॥

ढाळ : ६

(पंथीड़ा रे वात कहो नीं धुर छेह थी रे)

- १ देवै रे, देवै सीखावण सांम जी रे, सासण चलावण कांम रे।
साधज रे साध-श्रावक नैं श्रावकारे, घणां सुणतां था तिण ठांम रे॥
सुणजो रे सुणजो सीख सांमी तणी रे॥

१. दस्त।

२. तकलीफ पाते हैं।

३. श्रेष्ठ।

४. तीनों समय (सुबह, मध्याह्न और रात में)

५. निकट।

६. एकता।

७. उत्तरज्झणाणि-अ. १ गा. १३।

- २ मोनै रे मोने जाणता जिण विधे रे, राखता मुज परतीत रे।
तिम हिज रे तिमहिज परतीत राखजो रे, भारीमालजी री आहीज रीत रे॥
- ३ आग्या रे आग्या लोपै एहनी रे, दोष लागां काढ़ै गण बार रे।
तिण नै रे तिणनै साधू मत सरधजो रे, मत गणजो तीरथ मझार रे॥
- ४ आग्या रे आग्या अराधे एहनी रे, सदा रहै सुवनीत रे।
सेवा रे सेवा भगत कीजौ तेहनी रे, आ जिण मारग री रीत रे॥
- ५ पदवी रे पदवी दीधी छै एहनै रे, भार लायक जांणी भारीमाल रे।
संका रे संका मूल म आणजो रे, यां मै असल साधां री चाल रे॥
- ६ कोई दोष रे दोष लगावै गण मझे रे, वले कर्म-जोगे लगावै कूर^१ रे।
तो काण^२ रे काण म राखजो तेहनी रे, प्राछित न लै तो करजो दूर रे॥
- ७ सुध रे सुध साधु नै सेवजो रे, अनाचारी सूं रहिजो दूर रे।
आ छेली रे छेली सीखावण धारजो रे, ज्यूं कर्म हुवै चकचूर रे॥
- ८ उसना रे उसना ने पासथा रे, कुसीलिया परमादी पिछांण रे।
अपछंदा रे अपछंदा छांदै रहै रे, त्यां भागी है भगवंत आंण रे॥
- ९ ए पांचा नै रे पांचा नै प्रभु नखेधीया रे, गिनाता नसीत विसाल^३ रे।
त्यां संग परचो करणौ नहीं रे, आ बांधी भगवंत पाळ रे॥
- १० आणंद रे आणंद श्रावक अभिग्रह लीया रे, जिण मत थी न्यारा जांण रे।
त्यांरी सेवा रे सेवा भगत करूं नहीं रे, पेंहली बोलण रा पिण पचखांण रे॥
- ११ वीर रे वीर जिणंद वखांणीयो रे, ओ आणंद अभिग्र^४ श्रीकार रे।
आ हीज रे आहीज रीत अराधजो रे, ज्यूं पांमो भवजल पार रे।
- १२ सगला रे सगला साधू नै साधवी रे, राखजो हेत वसेख रे।
जिण तिण ने रे जिण तिण ने मत मूंडजो रे, दिख्या दीजो देख-देख रे॥
- १३ आ दीधी रे दीधी सीखावण सांम जी रे, एकंत तारण तांम रे।
ओर रे ओर कारण त्यारे को नहीं रे, तिण सूं सीझै आतम कांम रे॥

१. झूठ।

२. लिहाज।

३. देखें भिक्षु जस रसायण ढा. ५५ गा. ८,

९ के टिप्पण।

४. अभिग्रह।

दूहा

- १ परम वचन श्री पूज रा, चरम वचन चिमतकार।
उपदेश तो आछौ दियौ, सांभळता सुखकार॥
- २ सुध गति जाणौ जेह नै, जिसा इज रहै परणाम।
गंगा नीर ज्युं निरमळौ, चित रहै एकण ठाम॥
- ३ परम भगता सिख आद दे, ठेट सुधी पूछ्यौ वारूँवार।
कांइ असाता आपरै, सांम कहै-नहीं रे लिगार॥
- ४ श्री वीर मुगत विराजतां, सोहलै पोहर कियौ बखांण।
इण दुषम ओ पांच मै, तिम हीज भीक्खू जांण॥
- ५ वले उपदेश दीधौ किण विधे, किण विध बोल्या वांण।
भव जीवां तुमे सांभळो, चित नैं आंण ठिकांण॥

ढाळ : ७

(चतुर नर बात विचारो एह)

- १ भारमलजी आद साधां भणी रे, श्री पूज कहै छै बोलाय।
चरम सीखावण माहरी रे, सांभळजो सुखदाय॥
भविक रे, भीक्खू दिया उपदेश॥
- २ म्है तो जाता दीसां परभवे रे, संका न दीसै कांय।
मरण रो भय म्हारे नहीं रे, हिवड़े हरष अथाय॥ भविक.
- ३ म्है चरित दीयो घणां जीव भणी रे, समकत पमाई रूड़ी रीत।
श्रावक-श्रावका किया घणां रे, एकंत तारण नी नीत॥ भविक.
- ४ म्है जोड़ां कीधी जुगत सूं रे, समझाया नर-नार।
'उणारत' रहैं नहीं रे, म्हारा मन मझार। भविक.
- ५ थे पिण रहिजो निरमळा रे, मोह म कीज्यो मन माय।
अरिहंत वचन आराधजो रे, ज्युं मोसूँ वेगा मिलोला आय॥ भविक.
- ६ रायचंद ब्रह्मचारी नै इम कहै रे, तू छै बालक बुधवांन।
मोह म आंणै माहरो रे, राखजै रूड़ो ध्यान॥ भविक.

- ७ ब्रह्मचारी कहै-श्री पूज नै रे, आप जावौ सुध गीत माया।
पिंडत मरण करौ भलौ रे, हूं मोह आणूं किण न्याय? भविक.
- ८ वले पूज वाणी इण विध वदै रे, थे आराधजो आचार।
इरिया भाषा नै एषणा रे, लोपज्यो मती लिगार॥ भविक.
- ९ भंड उपगरण लेतां-मेलतां रे, परठतां-पूजतां तांम।
जैणा कीज्यो जुगत सू रे, ज्यूं सीझै आतम कांम॥ भविक.
- १० सिष-सिषणी उपगरण ऊपरे रे, ममता म कीज्यौ कोय।
ममता-मोह कियां थकां रे, कर्म तणो बंध होय॥ भविक.
- ११ पुद्गल ममता कोई मत करो रे, इण ममता थी दुख थाय।
सुमता सदाई राखजो रे, ज्यूं वेगा जाओ मुगत गढ़ माय॥ भविक.
- १२ भगतवंत भारमलजी रे, बोलै एहवी वाय।
विरहो पड़ै दरसन तणो रे, हिवै पूज बोलै सुखदाय॥ भविक.
- १३ थे संजम अराध्यां सुर हौवसो रे, मुज थकी मोटा अणगार।
महाविदेह खेतर मझे रे, त्यांग देखजो दरसन दीदार॥ भविक.

दूहा

- १ सतजुगी कहै श्री सांम नै- आप जासो 'झंड'^१ रे मांहि।
सांम कहै-सुण साधजी! म्हारै नहीं झंड री चाहि॥
- २ पुदगलीक सुख छै 'पांवलो'^२, म्है भोगव्या अनंती वार।
त्यांरी बंछा मूळ करूं नहीं, म्हारै जांगौ मुगत मझार॥
- ३ हिवे सकाम मरण करै सांमजी, पिंडत मरण पिछांण।
'आलवणा'^३ आछी करी, होय गया सुध सुजांण॥
- ४ सदा निरमल था सांमजी, पिण मरण अंत वसेख।
नरमाई करै घणी, परभव सांहमौ देख॥
- ५ आलवणा किण विध करै, तिण विध रा हुंता जांण।
वचन अमोलख वागरै, ते सुणजो चतुर सुजांण॥

ढाळ : ८

(मारग वहै रे उतावलौ)

- १ अरिहंत सिध री साख सूं, बड़ा सिष सरीकार।
वले सतजुगी री साख सूं, वचन काढ्या मुख बार॥
सुणज्यो आलवणा सांमी तणी॥
- २ चोरासी लख जीवा जोण नै, खमाऊं कर 'खंत'^४।
राग-धेष नहीं माहरै, ते देख रह्या भगवंत॥ सुणज्यो.
- ३ साध सुवनीत हुआ घणां, केई कुसिष अवनीत।
कठण वचन कह्या तेहनै, खमाऊं रूड़ी रीत॥ सुणज्यो.
- ४ साधवीयां सतीयां मझे, केएक करली^५ विचार।
कठण सीख दीधी हुवै, तो खमाऊं वारूंवार॥ सुणज्यो.
- ५ श्रावक नै वले श्रावका, केकां नै करला देख।
कठण वचन कह्या हुवै, तो खमाऊं छूं वसेख॥ सुणज्यो.

१. समूह (सुर-वर्ग)। झिंड (क)।

२. पाम रोग के समान निकृष्ट।

३. आलोचना।

४. गौर।

५. कठोर प्रकृति वाली।

- ६ च्यार तीरथ नै सुध चलायवा, सीख दीधी सुखदाय।
करलौ काठौ लागौ हुवै, तो त्यानै दीज्यौ खमाय॥ सुणज्यो.
- ७ म्हाै चरचा कीधी चूँप सूँ, घणा सूँ ठांम-ठांम।
करलौ वचन लागौ जांणीयो, त्यानै खमाया ले-ले नांम॥ सुणज्यो.
- ८ जिण मारग रा धेषी छै घणा, 'छिद्रपेही' अथाय।
'खेद' आई हुवै किण ऊपरै, तो देऊँ सकल नै खमाय॥
- ९ तस थावर आद जीव री, हिंसा लागी हुवै कोय।
मन वचन काया करी, तो 'मिच्छामी दुकडं' छै मोय॥ सुणज्यो.
- १० क्रोध मांन माया करी, लोभ भय वस होय।
जे कोइ झूठ लागौ हुवै, 'मिच्छामी दुकडं' छै मोय॥ सुणज्यो.
- ११ कोई अदत मोनै लागौ हुवै, सूतां जागतां जोय।
ममता धरी हुवै मइथून सूँ, तो आलवण खाते होय॥
- १२ सिष-सिषणी वसतर पातर ऊपरै, मुरछा वंछा कीधी देख।
मन वचन काया करी, 'मिच्छामी दुकडं' विसेख॥ सुणज्यो.
- १३ एहवी आलोवणा सुणे, आणै मन वेराग।
ते पिण कर्म खपावे आपरा, पामै सुख अथाग॥ सुणज्यो.

दूहा

- १ पांचूइ आश्रव माहिलौ, लागौ जाण्यो किण वार।
व्रत संभाळ्या सांमजी, आलोव्या अतीचार॥
- २ बड़ा सिष सुवनीत री, जुगती मिलीज जोड़।
'लैहर' काई राखी नहीं, काट्या कर्म कठोर॥
- ३ 'फोरी' असाता 'फेरा' तणी, और असाता नहीं तिणवार।
षट सिष सेवा साचवै, एहवा पुन संच्या सार॥
- ४ आज्ञा उपर आदरी, भीक्खू भलेज भाव।
जनम सुधार्यौ जुगत सूं, जाण तिरण रो डाव॥
- ५ सखरी करी संलेखणा, अणसण नों इधकार।
भाव धरी भवीयण सुणो, आळस सर्व निवार॥

ढाळ : ९

(आबीयो रावण लोक डरावण)

- १ भाद्रवा सुकल पख पंचमी परगटी, चोथ भगत चोविहार ठावै।
असाता इधक तिरखा तणी उपनी, सूर कायरपणो नाय ल्यावै॥
कर हो जीव !तूं भजन भीखू तणो॥
- २ पारणौ कीधौ छठ परभात रो, ओषद अलप सो आहार लीयो।
ते पिण आहार 'समौ नही परगम्यौ', तिण दिन तीनू आहार नो त्याग कीयौ॥ कर.
- ३ सातम-आठम आहार ले अलप सो, तितखण त्याग तो कर लेवै।
पुदगल सरूप तो पूज पिछांण नै, आसा वंछा सहू मेट देवै॥ कर.
- ४ खरे मते कहै खेतसी 'खांच' कर, 'तरके' त्याग नहीं कहिणो।
पूज कहै-देही पातळी पारणी, तेरस दिन तो अणसण लेणौ॥ कर.
- ५ विरधो सेठ तो श्रावक सनमुखे, विवध प्रकार सूंखड़ी आपै।
पूज कहै-वंछा नहीं मांहरै, थिर कर मोख सूं पीत थापै॥ कर.

-
१. उच्चावच भाव।
 २. थोड़ी।
 ३. दस्त।
 ४. दांव/अवसर।

५. सम्यग् रूप में परिणत नहीं हुआ।
६. आग्रह।
७. तत्काल।

- ६ भाद्रवा सुकल नवमी तणे दिन, पूज कहै - आहार नों त्याग लेऊं
सतजुगी कहै-मुज हाथ नो चाखियै, चरम आहार थोड़ै आण देऊं। कर.
- ७ अलप सो आहार आण्यो सांमी खेतसी, चाख के ततखण त्याग कीधौ।
एतो मन राखीयौ सुवनीत सिष तणो, पिण इच्छां सूं आहार त्यां नाह लीधौ॥ कर.
- ८ दसमी तणे दिन परम भगता सिष, पूजजी सूं वली एम भाखै।
चाळीस चावळ दस मोठरे आसरे, वीणती मान कै तेह चाखै॥ कर.
- ९ इग्यारस तो पूज आहार त्यागे दीयौ, अमल पांणी रो आगार राख्यौ।
हिवै मुज नै आहार लेतौ मत जाणज्यौ, वचन अमोलख एक भाख्यौ॥ कर.
- १० सनमुख पधारीया तावड़ौ आवीयां, बारस बेलो थिर कर ठायो।
सकत इसड़ी रही आहार कीयां बिना, एह इचरज इधक आयो॥ कर.
- ११ जीवण आछै अरज कीधी हाट री, तो ही पूज पकी हाट आय बैठा।
'सेन'^१ सिषां कियौ विसरांम त्यां लियौ, सांम तो मन माहै इधक सैठा॥ कर.
- १२ सुखे सूता देख पूज परम गुर, रिष रायचंद आय एम बोलै।
किरपा तो कीजियै दरसण दीजीयै, तांम तो पूजजी नैण खोलै॥ कर.
- १३ पूंज सूं वीनवै^२ 'प्राकम हीणा पड़्या'^३, ब्रह्मचारी^३ विनय सूं ए बोलै।
केसरी नी परे वेण हिवड़ै धरै, तांम ते आपरो 'तेज'^४ तोलै॥

१. शयन (बिछौना)।

२. शारीरिक शक्ति क्षीण हो रही है।

३. मुनि रायचंदजी।

४. पराक्रम।

दूहा

- १ बुलावौ भारमलजी भणी, वले सतजुगी सुजांण।
याद करंता आवीया, 'चटके' उभा आंण॥
- २ अरिहंत सिध प्रणमी करी, पोतैइ कीया पचखांण।
तीनु आहार रा त्याग त्याग जावजीव छै, 'ऊंचै सुर'^१ बोल्या इम वांण॥
- ३ कहै परम भगता सिष पाटवी, क्यूं न राख्यौ अमल अगार?
सांम कहै-आगार किसौ राखणौ, किसी करणी देही री सार॥
- ४ वारस दिन बेला मझे, आसरै दोय घड़ी दिन जांण।
कियौ संधारौ सांमजी, मन मैं उज्जम आंण॥
- ५ खबर हुआं अणसण तणी, घणा आवै दरसण काज।
वेराग वधीयो अति घणौ, कहै धिन-धिन ए मुनिराज॥

ढाळ : १०

(सहेल्यां ए वांदो रूड़ा साध०)

- १ केइ कहै संधारौ सीझै सांम रो, त्यां लग म्हारे हो काचा पाणी रा पचखांण।
केइ कहै कुसील रा त्यांग छे, घणां छोड्यौ हो सिनांन सुमता आंण॥
भवजीवां! तुमे वांदो भीखू भाव सू॥
- २ केइ अगन आरंभ नहीं आदरै, केइ करै हो छ ही काय हणवा त्याग।
केइकां रे नीलोती खांणी नहीं, इत्यादिक हो हुआ घणो वैराग॥ भव.
- ३ 'वेइकां धीज थापी थी धेखियां', ते पिण इचरज हो पाम्यां तिणवार।
अनामी घणा आये नम्या, त्यां पिण जांण्यौ हो ओ मारग तंत सार।
ओ तो पूजजी संधारो कीयो सोभतो॥
- ४ पडिकमणो कीयां पछै पूजजी, सिष नै कहै हो विध सूं करौ वखांण।
सिष कहैं वखांण रो कारण किसौ, पूज बोल्या हो पाछा इमरत वांण॥ ओ.
- ५ आरज्यां क्हांइ अणसण लियौ हुवै, तिण ठामे हो जाय करां छां वखांण।
मुज अणसण मैं उचरंग सूं, उपदेस हो देवौ मोटे मंडाण॥ ओ.

१. शीघ्र।

२. ऊंचे स्वर से।

३. कई विपक्षी लोगों ने यह शर्त की थी कि भीखणजी द्वारा चलाया गया मार्ग सही है तो उन्हें अंत में अनशन आयेगा।

- ६ वखांण कीयौ विसतार सूं, सुखे सूता हो पाछली रात माय।
जैतोजी आया समाइ करवा भणी, तिण प्रणम्या हो श्री पूज पाय॥ ओ.
- ७ गुण-ग्राम किया त्यां अति घणां, धिन-धिन कहै हो आप मोटा अणगार।
पूज कहै परिणाम चोखा माहय, तिण री संका मत आणजो लिगार॥ ओ.
- ८ 'आपेई',^१ पाणी पीधौ पूजजी, पोहर दिन हो जाझेरौ आयौ जांण।
चरम सबद च्यारूं कह्या, इचरजकारी हो बोल्या इमरत वांण॥ ओ.
- ९ साध-श्रावक सुणतां कह्यौ सांमजी, सूंस वरत हो केराऔ सैहर माय।
वले कह्यौ-साध आवै अछै, आरजियां होआवै छै चलाय॥ ओ.
- १० चोथो सबद इसड़ौ कह्यौ, धीरा बोल्या हो तिण री 'विगत'^२ न काय।
गुलोजी लूण्यो कहै-सांमीजी तणो, मन गयो साधां आरजियां रे माय॥ ओ.
- ११ भारमलजी सांमी इम वीनवै, थानै होज्यो हो सांमी सरणा च्यार।
किण ही माहे मन मत राखजो, आप कीधौ हो घणां जीवां रो उधार॥ ओ.
- १२ अवध ग्यांन उपनौ नहीं जांणीयो, तिण सूं पाछौ हो नहीं पूछ्यौ लिगार।
यां जांण्यौ मन साधां मै गयौ, नहीं कीधौ इण बात रौ विचार॥ ओ.
- १३ घणां गांवां रा श्रावक-श्रावका, दरसण करवा हो आया बहू थाटा।
चरम उछव करै चूंप सूं, इसरा हुआ हो सरीयारी मै गैहधाटा॥ ओ.

१. स्वयंमेव/अपने हाथ से।

२. खबर।

दूहा

- १ पाली रा चालीया पाधरा^१, दोय साध आया तिणवार।
रिख वैणीदास खुसाल जी, देख इचरज पाम्या नर नार॥
- २ पग प्रणम्या श्री पूज रा, दीधौ माथे हाथा।
साता पूछ्यां सांनी करी, पिण मुख सूं न कीधी वात॥
- ३ दुषम आरा तेह मैं, अवधि बागरियौ नहीं जात^२।
संजम आराध्यो सांमजी, तिण सूं कही अलप सी वात॥
- ४ हुवै विमाणीक देवता, तिण नैं अवध ऊपजै आया।
इण बात मैं सका नहीं, भाख गया जिणराय॥
- ५ इण लेखे पूजजी तणैं, अवधि ग्यान उपनौ आया।
निश्चै तो जाणै केवळी, पिण संक न दीसै काय॥

ढाळ : ११

(कीड़ी चाली सासरे रे)

- १ दोनूंइ साध आया तिके रे, बोलै बे कर जोड़।
दरसण दीठौ दयाल रो रे, पूगा मन रा कोड़॥
भीखू भजो भाव सूं रे।

त्यां सुधास्यां भव दोय, बुधवंत जसवंत होय।

यां सम अवर न कोय, इण आखा भरत मैं जोय, भीखू॥

- २ रिख वैणीदास इम/वीनवै रे, थानै होज्यौ सरणा च्यार।
तुम सरणौ मुज भव-भवे रे, होज्यौ वारूं-वार॥ भीखू.
- ३ जिसोइ मारग जिण तणो रे, जिसोइज पायौ आप।
दिन-दिन इधका दीपीया रे, टाळ्या घणां रा संताप॥ भीखू.
- ४ स्तुति अरिहंत सिध तणी रे, संभळाई श्रीकार।
जाण्यो भगत किहां थी भीखू तणी रे, इण अवसर मझार॥ भीखू.
- ५ इतलै आई तीन आरज्यां रे, वगतूजी झूमां डाहीजी जांण।
इचरज इधकौ ऊपनो रे, पूज कही ते वात मिली आंण॥ भीखू.

१. सीधा/उसी दिन।

२. निश्चित नहीं का जा सकता।

- ६ च्यार-तीरथ भल भाव सूं रे, देखै दरसण दीदार।
भगत^१ करै भीखू तणी रे, जाणै अवसर सार॥ भीखू.
- ७ बैठा हुआ तिण अवसरे रे, ध्यांन आसण श्रीकार।
जाणै क जिणजी विराजिया रे, न जांणी असाता लिगार॥ भीखू.
- ८ तेरे खंडी त्यांरी हुई रे, जाणक देव विमाण।
तंतो तंत इसड़ौ मिल्यौ रे, पूज बैठांइ छोड़्या प्रांण॥ भीखू.
- ९ सुकल पख सुहामणौ रे, मास भाद्रवा माय।
तेरस तिथ दिन पाछलौ रे, आसरे डोढ़ पोहर गिणाय॥ भीखू.
- १० प्रथम पद परमेसरू रे, त्यांरा किल्यांण पांच प्रकार।
इण विध किल्यांण यांण हुवा रे, इण दुषम काळ मझार॥ भीखू.
- ११ सरीयारी नै सांम जी रे, 'चावी'^२ कीधी ठांम-ठांम।
जनम सुधास्यौ जुगत सुं रे, त्यांरा लीजै नित प्रत नांम॥ भीखू.
- १२ साध तो भीखू सारीखा रे, आखा भरत रे माय।
हुआ नै होसी वले रे, पिण आज न कोइ दिखाय॥ भीखू.
- १३ हिवे सोध्यां तो पावै नहीं रे, भीखू सरीखा साध।
कल्लो काम पड़सी चरचा तणो रे, तिण वेला आवेला याद॥

८१

दूहा

- १ तियाळीस वरसां लगे, कांयक जाझेरो जांण।
संजम पाल्यौ सांमजी, समता रस घट आंण॥
- २ दिन-दिन इधका दीपीया, तेज प्रताप पिछांण।
जिण मारग जमायौ जुगत सूं, अखंड वरताई आंण॥
- ३ आंख्यां आद इंद्र्यां तणो, रद्दोज रूडौ तेज।
सरीर निरोगौ निरमळौ, तिण दीठां उपजै हेज॥
- ४ किया चोमासा चूंप सूं, चतुर नै चाळीस।
इधक आउखौ आछौ हुओ, ज्यूं दीप्या जगदीस॥
- ५ किहां-किहां चोमासा किया, किहां-किहां किया उपगार।
नांम लेइ निरणौ कहूं, ते सुणजो विसतार॥

ढाळ : १२

(जीवा! मोह अनुकंपा न आणीयै)

- १ छ चोमासा किया केलवै, सतरे इकवीसे जांण जी।
पचीसे अड़तीसे गुणचास में, लीज्यो अठावनो पिछांण जी॥
सुणज्यो चोमासा सांमी तणा॥
- २ तिण ठांमे उपगार हुआ घणौ, मोखमसींगजी ठाकुर जांण जी।
दरसन करता दयाल रा, वले सुणता आय वखांण जी॥ सुण.
- ३ सात चोमासा सरियारी कीया, उगणी बावीसे गुणतीसे जोय जी।
गुणताळे वयाळे एकावने, साठे चरम किल्याणज होय जी॥ सुण.
- ४ सात किया पाली में पूज जी, तेइसे तेतीसे जांण जी।
चाळीसे चमाळीसे बावने, पचावने गुणसठे बखांण जी॥ सुण.
- ५ पांच चोमासा किया खैरवे, छाइसे बतीसे विचार जी।
इकताळीसे छियाळीसे चोपने, तठे कीयौ घणौ उपगार जी॥ सुण.
- ६ बगड़ी में पूज विध सूं किया, तीन चोमासा सरीकार जी।
सतावीसे नै तीसे समे, तीजो बतीसे लीजो विचार जी॥ सुण.
- ७ नाथदुवारा में नीका किया, तीन चोमासा तहतीक जी।
तयाळीसे पचासे छपनै, त्यांरी रूडौ राखज्यो ठीक॥ सुण.

- ८ कंटाळिया मैं किरपा करी, पूज किया चोमास दोय।
चौवीसे अठावीसे वरस मैं, जिहां जनम किल्यांज जोय॥ सुण.
- ९ पीपार मैं पाखंड हुंता घणा, दोय चोमासा दिया ठाय।
चोतीसे अठावीसे वरस मैं, घणौ दीयौ मिथ्यात मिटाय॥
- १० गढ़ रणतभंवर किलो तिहां, तळेटी माधोपुर मझार^१।
इगतीसे अड़ताले दोनूं किया, तिहां इधक हुआ उपगार॥ सुण.
- ११ दोय चोमासा किया पुर सैहर मैं, तिहां उपगार 'जाझौ'^२ जांण।
सैताळीसैं नै सतावनै, ते गिण लीज्यौ चतुर सुजांण॥ सुण.
- १२ अठारा रै वरस वडलू कियौ, वीसे राजनगर विचार।
पैतीसे आंबेट पादु सैंतीस मैं, तेपनें सोजत सैहर मझार॥ सुण.
- १३ पनरै गांमां मैं कीधा पूज जी, चमाळीस चौमासा सार।
ए परम भगता सिष पाटवी, घणा रह्या पूज री लार॥ सुण.

१. देखें. भिक्षु जश रसायण, ढाढ़ ३ गा. ५
की टिप्पण।

२. अधिक।

दूहा

- १ आद हुआ आदेसरू, आदनाथ अरिहंत।
तीजा आरा तेह मैं, मुगत गया मतिवंत॥
- २ त्यां आद काढ़ी जिण धर्म री, 'जुगलवारो' मिटाया।
संसार री ने धर्म री, दीधी रीत बताया॥
- ३ आदि काढ़ी अरिहंत ज्यूं, भीखू भलाज साधा।
आरा दुःसम तेहमैं, लीधा अरिहंत वचन अराध॥
- ४ भवि जीवां रा भाग सूं, कीधौ अत्यंत उद्योत।
श्रुत बले मोटा मुनि, घणां घट घाली जोत॥
- ५ उपगार कीधौ अति घणौ, पूरौ केम कहिवाय।
थोड़ौ सो परगट करूं, ते सुणज्यो चित ल्याय॥

ढाळ : १३

(पूजजी पधारो हो नगरी सेविया)

- १ साध-साधवी श्रावक-श्रावका, ए थाप्या तीरथ च्यार हो महामुनी !
जिण मारग जमायौ जुगत सूं, घणौ पाखंड दियौ निवार हो महामुनी !
थे भला अवतरिया भीखू भरत खेत मैं॥
- २ लोकालोक नवोंइ 'ततव' तणा, वले दया-दांन दीपाय हो महामुनी !
ज्यारा भेद जथातथ भिन-भिन भाखिया, जिणवर ज्यूं दिया जमाय हो महामुनी ! थे.
- ३ चारित लियौ एक सो च्यार आसरै, पूज री परतीत मन धार हो महामुनी !
कंइकां नै पाखंड मां सूं खांच नै, आप दीधा पार उतार हो महामुनी ! थे.
- ४ जोड़ों कीधी मुनिवर जुगत सूं, सैस अड़तीसरे आसरै गिणाय हो महामुनी !
निरणा-न्याय वताया निरमळा, जाणै भाख गया जिण राय हो महामुनी ! थे.
- ५ समकत सुध सरूप वतावीयौ, निज गुण-परगुण न्याय हो महामुनी !
सावज्ज-निरवद न्याश छांणिया, नहीं दीसै किण ही मत माय हो महामुनी ! थे.
- ६ ढूंढाड़ हाडोती वले कछ देश मैं, मुरधर देस मेवाड़ हो महामुनी !
घणा रात-दिवस रटै रांम नाम ज्यूं, आप इसरा किया उपगार हो महामुनी ! थे.

- ७ प्रवचन री करै प्रभावना, सुध मारग देवै दिखाय हो महामुनी !
 'गिनाता अंग' मैं अरिहंत आखीयौ, तीर्थकर नांम-गोत बंधाय हो महामुनी ! थे.
- ८ इण लेखे आपरै अति ओपतौ, बंध्यौ तीर्थकर नांम-गोत हो महामुनी !
 धर्म आदि काढ़ी अरिहंत आदिनाथ ज्युं, ज्युं कीधौ अत्यंत उद्योत हो महामुनी ! थे.
- ९ आप इण भव माहे पिण उत्तम हुंता, परभव मैं पिण सोभाय हो महामुनी !
 उतकष्टी अनोपम मोख छै, आप पोहचसौ तिण गति माय हो महामुनी ! थे.
- १० जनम किल्याण कंटाळे जाणज्यो, दिख्या मोहछव वगड़ी मझार हो महामुनी !
 चरम किल्याण सरीयारी सोभतौ, ए 'तीनूंइ जोड़े' विचार हो महामुनी ! थे.
- ११ वीर जिणंद री गादी विराजीया, सुविनीत सुधरमा सांम हो महामुनी !
 इण विध पूज रे पाट परगट थया, भारमलजी सांमी त्यारो नांम हो महामुनी ! थे.
- १२ ए चिरत कह्यौ छै भीखू अणगार नो, वगड़ी सैहर मझार हो महामुनी !
 संवत अठारै साठा वरस मैं, फागुण विद तेरस गुरवार हो महामुनी !
- १३ आखर आगौ-पाछौ आयौ हुवै, इधकौ ओछौ कह्यौ हुवै कोय हो महामुनी !
 'रिख वैणीदास कहै कर जोड़ नै', 'मिच्छामिदुकडं' छै मोय हो महामुनी ! थे.

इति मुनिश्री वैणीरांमजी कृत भिक्खु-चरित सम्पूर्णम्॥

१. णायाधम्म कहाओ- ८ सू. १८।

२. निकट/तीन-तीन कोस की दूरी पर।

३. 'कोई झूठ लागो हुवै बिना जाणियो'
 (क्वचित्)

परिशिष्ट

- १ नामानुक्रम
- २ पारिभाषिक शब्द
- ३ सूक्तियां/लोकोक्तियां
- ४ प्रयुक्त धुनें (देसियां)

परिशिष्ट-१

नामानुक्रम व्यक्ति

अ

अखूजी (साध्वी) १७५, १८३
अखैराम १५६, १७५, १८१
अजबू (तेरापंथ की तीसरी साध्वी) ३३, १७४, १७५, १८३

अजबू (जयाचार्य की बुआ) १७७, १८३

अणंदोजी (मुनि) १८२
अमरसिंग (स्था. सम्प्रदाय के एक टोले के आचार्य) ५१, १४२
अभय कुमार ४४
अमरां (साध्वी) १७६, १८३
अमरो (मुनि) १५६, १८२

आ

आद्र (आर्द्र मुनि) ३७
आदिनाथ/आदेसर (भगवान ऋषभ का एक नाम) १०७, १४८, २७१, २८३, ३०३, ३०४
आनन्द (भ. महावीर के प्रमुख दस श्रावकों में एक) ३७, १९१, २३७, २९०

उ

उदां (साध्वी) १७९, १८३
उदेभाण (मुनि) १६, २८१
उदैराम (मुनि) १६७, १८१, १८७, २५७, २८८

ओ

ओटो (मुनि) ४९, ५०, १६७, १८२

ऋ

ऋपराय (तेरापंथ के तृतीय आचार्य) १६८, १६९, १७१, १७८, १७९, १८१, १८७, १९३, २०१, २१२, २२०, २३९, २५७, २६३, २८८, २९१, २९६

क

कसूंबा (साध्वी) १७५, १८२
कस्तूरां (साध्वी) १८०, १८३
कालोदाई ४१
किश्रोजी (आचार्य भारमलजी के पिता) १८, १९, २०
कुमारधर्म (आचार्य) २१८
कुशलां (तेरापंथ की प्रथम साध्वी) ३३, १७४, १८२

कुशालां (आचार्य) १६८, १८०, १८३
रायचंदजी की माता, साध्वी) ४४
कृष्ण ४४
केलीजी (साध्वी) १७६, १८३
केसी (मुनि) ४६, ६९

ख

खुसाल/कुसाल (मुनि) १६७, १८२, २०५, २४०, २६७, २९९
खुसालां (साध्वी) १७९, १८३,
खेतसी (मुनि) १५९ से १६१, १७६, १८१, १८७, २००, २०१, २३५, २३८, २३९, २५७, २८८, २९५, २९६
खेमां (साध्वी) १७८, १८३
खेमासाह ११९, १४५

ग		जशोदा (साध्वी)	१८०, १८३
गंगा (नदी)	२८२	जसु (साध्वी)	१७८, १८३
गज (गजसुकुमाल मुनि)	४५	जसोभद्र (आचार्य)	२१७
गुमाना (साध्वी)	१७५, १७८ १८२, १८३	जिणरिख	४४
गुलाब (मुनि)	२५, २६	जीऊजी (साध्वी)	१७५, १८३
गुलोजी लूणियां	२९०	जीत (जयाचार्य)	१२५, १७७, १८०, २१३
गोतम/गोयम (गणधर)	३४, ३७, ४१, १८५, १९५, २२७, २३५, २८७	जीवण आछा	२९५
गोसाला (निन्हव)	३७, ४४, २५०	जीवो/जीवराज (मुनि)	१७०, १८२, १८७, २५७, २८८
घ		जेतसींग	१५, २२४
घेरूलाल व्यास	१८५	जैतो (श्रावक)	२९८
च		जैमल (स्था. संप्रदाय के एक टोले के आचार्य)	१८, २०, २५, २२८, २३१
चंदू (साध्वी)	१७५, १८३	जोगीदास (मुनि)	१७०, १८२
चंद्रभाण (मुनि)	१५८, १५९, १७१, १८२, १९८	जोतां (साध्वी)	१८०, १८३
चेनां (साध्वी)	१७६, १८३	जोधो (मुनि)	१७१, १८२
चोखी (साध्वी)	१७८, १८३	झ	
चौथजी (श्रावक)	१०५	झूमां (साध्वी)	१७९, १८३, २०५, २६७, २९९
ज		ट	
जगू गांधी	५०	टीकम डोसी	१४१, १८५, २३२
जम्बू (अंतिम केवली)	३, १६८, १८५, २१७	टोकर (मुनि)	७, १०, २५, २६, ३४, १५६, १८८, १८९, २२२, २३१, २३६, २७९, २८२, २८९
जम्बू (वृक्ष)	१५०, २८६	ड	
जमाली (भ. महावीर १९१, २५० के जामाता)		डाही (साध्वी)	१८०, १८३, २०५, २६७, २९९
जय-जस	११३, ११९, १४०, १४५, १५४, १५७, १६१, १६३, १६६, १६९, १७३, १८४, १८६, १८७, १९२, १९४, १९६, १९९, २०१, २०३, २०८, २१३, २१९, २२४, २३०, २३४, २४२	डूंगरसी (मुनि)	१७०, १८१
		त	
		ताराचन्द (मुनि)	१७०, १८१
		तिलोकचंद (मुनि)	१५८, १८२, १९८

तेजू (साध्वी)	१७७, १८३
थ	
थिरपाल (मुनि)	२५, २६, ३१, १५२, १८१, २३१
द	
दीपां/दीपांदे (आ.	४, २४६, २७७
भिक्षु की माता)	
दूसगणी (आचार्य)	२१७, २१८
देऊजी (साध्वी)	१७५, १८२
देवकी (श्रीकृष्ण	४३
की माता)	
देवडूरी (आचार्य)	२१८
दोलतराम	१६४
दोलतसिंग राठोड	१८६
(सिरियारी के ठाकुर)	
ध	
धनु (साध्वी)	१७६, १८३
धारणी	४४
न	
नंदीवर्धन	२१९
नंदूजी (साध्वी)	१७६, १८३
नगजी (मुनि)	१५९, १८१
नगी/नगां (साध्वी)	१७७, १८३
नमि (राजर्षि)	४३
नांनजी (मुनि)	१६२
नाथां (साध्वी)	१८०, १८३
नाथू	५१, १४२
नाथोजी (मुनि)	१६७, १८२
नेऊजी/नेतूजी	१७५, १८३
(साध्वी)	
नेम (२२वें तीर्थकर)	४४, ४५, १४८ २८२
नेमजी (मुनि)	१६२, १८१
नोजां (साध्वी)	१८०, १८३
नोरां (साध्वी)	१८०

प	
पनजी (मुनि)	१५९, १८२
पनांजी (साध्वी)	१७८, १८३
पाथू	५१
पेमजी (मुनि)	२५
पेमासाह	११९
पेमो	५१
प्रभव (आचार्य)	१७, २१७, २२७
फ	
फतेचन्द (जोधपुर	२१, २५, २६, ३१,
के दीवान)	१५२, १८१, २२९
फतेचन्द (मुनि)	२३१
फतूजी (साध्वी)	१७५, १८३
फुलांजी (साध्वी)	१७६, १८३
ब	
बखतराम	२५, २६, १०८, २४५
बल्लू (आ. भिक्षु	४, २४५, २७७
के पिता	
बहुल (आचार्य)	२१७
भ	
भगजी (मुनि)	१७१, १८२, १८७, २५७, २८८
भगु (पुरोहित)	२७, ३७, २५०
भद्रबाहु (आचार्य)	२१७
भवानजी (मुनि)	१७२
भागचन्द (मुनि)	१७१, १८२
भारमल छोटा (मुनि)	२५
भारीमाल (तेरापंथ	७, १०, १८, १९,
के दूसरे आचार्य)	२०, २१, २५, २६, ३२, ३३, ३४, ८२, १५१, १५५, १५६, १६१, १६६, १६७, १६८, १७०, १७१, १७२, १७७, १८०, १८१, १८६, १८९,

भीखु/भीखण
(तेरापंथ के प्रथम
आचार्य)

१९०, १९३, १९५,	भीम (मुनि जयभ्राता) १७७, १८०
२००, २०१, २०२,	भोप (मुनि) १७२, १८२
२१२, २२०, २२२,	भोपासाह १५९, १६०
२३१, २३५, २३६,	म
२३७, २३९, २४१,	मट्टू (तेरापंथ की
२४२, २४८, २५४,	दूसरी साध्वी)
२५७, २६०, २६६,	मयाराम (मुनि) १६५, १८२
२७१, २७९, २८६,	महागिरि (आचार्य) २१७
२८९ से २९७, ३०४	महावीर (चौवीसवें
३ से ३१, ३३ से ३६,	तीर्थकर)
३८ से ४२, ४५, ४७	मृघालोढौ ३७
से ५३, ५५, ५६, ५८,	मेघ (मेघकुमार) ४४
५९, ६०, ६३, ६४,	मेघो (भाट) १०८
६६ से ९७, १०१ से	मेणांजी (साध्वी) १७६, १८३
११४, ११६, ११८,	मेरू (पर्वत) १५१, २८६
१२० से १२३, १२५	मोजीराम (मुनि) १५८, १८२
से १३० १३१, १३७,	मोहकमसींग ६९, ७२, ३०१
१४०, १४१, १४५ से	(केलवा के ठाकुर)
१४८, १५०, १५१,	र
१५२, १५४ से १५६,	रंगू (साध्वी) १६०, १७६, १७७,
१५८ से १६६ १६८	१८३
से १७२, १७४ से	रतूजी (साध्वी) १७६, १७७, १८३
१७७, १७९ से १८३,	राम (मुनि) १५९, १६१, १६२,
१८५, १८६, १८७,	१८१, २११
१८९, १९०, १९१,	राम (भगवान रामचन्द्र) ३०३
१९५, १९७ से २१३,	रायचन्द देखें ऋपराय/ऋपिराय
२१९ से २२१, २२४	रायमल मुहता २५५, २८८
से २२९, २३१, २३२,	रावण २५०
२३३, २३५ से २४२,	रुघनाथ (स्था. एक
२४५ से २५६, २५८,	टोले के आचार्य) ५, ६, १०, १३, १५
२६३, २६५, २६७,	से १८, २५, २२१,
२६९, २७१ से २७४,	२२२, २२६, २४६,
२७७, २७९ से २८३,	२७८, २८०, २८१,
२८६, २९१, २९५,	३०२
२९९, ३००, ३०१	रूपचंद (मुनि) २५, १६४, १७४,
३०३, ३०४	१८२, २३५

रूपचन्द - लघु (मुनि)	१६४, १८१, १८२
रूपांजी (साध्वी)	१७८, १७९, १८३
रेणादेवी	४४
रोड़ीदास	१२७

ल

लालांजी (साध्वी)	१७८, १८३
लिखमीचंद (मुनि)	२५, १५६, १८२
लिछमण	२५०
लुंको (श्रावक)	२१८, २२०
व	
वखतो	देखें बखतराम
वगतसीघ (कंटालिया २७७ के ठाकुर)	
वगतू (साध्वी)	१७७, १८३, २०५, २६७, २९९
वज्र स्वाम (आचार्य)	२१८
वर्धमान (मुनि)	१६४, १८१, २१०, २७४
वनां (साध्वी)	१७७, १७९, १८३
वरजू/ब्रजू (साध्वी)	१७९, १८०, १८३
विगतोजी (मुनि)	१६५, १८२
विजां (साध्वी)	१७९, १८०, १८३
विरधो सेठ	२९५
वीर (भगवान महावीर का एक नाम)	३४, १९०, १९१, २१२, २१७, २३५, २३७, २४५, २४८, २७९, २८०, २८६, २८९, २९१, ३०४,
वीरभाण (मुनि)	७, १०, ११, २५, २६, २७, १५६, १८२, २२२
वीर विक्रम	२२९
वीरां (साध्वी)	१७९, १८३

वेणीराम/वेणीदास (मुनि)	९५, १६३, १६४, १७७, १८१, २०५, २१२, २३५, २४०, २६७, २९९
श	
शोभाचंद	१२७ से १२९

स

संघजी (मुनि)	१६०, १८२
संतोकचन्द (मुनि)	१५९, १८२
संप्रति (राजा)	२१७
संभू (मुनि)	१६२, १८२
संभूत विजय	२१७
सकडाल (महावीर के दस श्रावकों में से एक)	३७
सदांजी (साध्वी)	१७६
समुद्रपाल	४३, ४५
सरूप (जयभ्राता, मुनि)	१७७, १८०
सरूपा (साध्वी)	१७९, १८३
सवाइराम	१३०
सांमजी (मुनि)	१६, १५९, १६२, १८१
सांमदास (स्था. संप्रदाय के एक टोले के आचार्य)	९२
सिज्जंभव	१७, २१७, २२७
सिवजी (मुनि)	१५८, १५९, १८१, १८२
सीता (नदी)	१५०, २८६
सुखजी (मुनि)	१६५
सुखराम (मुनि)	१५६, १६५, १८१
सुजाणा (साध्वी)	१७५, १८२
सुदरसन (वृक्ष)	१५०

सुधर्म	३, १८५, २१२, २१७, २२७, ३०४	कंबोज	१४८, २८४
सुप्रतिबुद्ध (आचार्य)	२१७	कच्छ	१४१, १८५, २५२, ३०३
सुबाहु	४१	कमोल	१७७
सुरतो (मुनि)	१६४, १८२	करेड़ा	१७१
सुलसा	४३	कांकरोली	१०५, १७८
सुस्थित (आचार्य)	२१७	कांठा	४, १८६, २४५, २७७, २८८
सुहस्त (आचार्य)	२१७	काफरला	९१
सोभाचंद	१४५	कुंड्यां	१५९
स्वयंभूरमण (समुद्र)	१५१, २८६	केलवा	२६, १५९, १६७, १७०, २०९, २३१, २७३, २८२, ३०२
स्थिरगुप्त (क्षमाश्रमण)	२१८	कोचला	१७१
स्थूलभद्र	२१७	कोटा	१६४,
ह		कोठारयो	१६०
हरणगमेपी (एक प्रकार के देव)	४३	कोसीथळ	१७२
हरनाथ (मुनि)	७, १०, २५, २६, ३४, १५६, १८१, २२२, २३१, २७१, २७४	ख	
हरिकेसी	४४	खेरवा	४९, १२७, १७१, १७८, १८०, २१०, २७४, ३०१
हस्तु (साध्वी)	१७९, १८०, १८३	ग	
हीरा (साध्वी)	१७७, १८३	गुंदोच	१७४
हुकमचंद	१०६, २५५, २८०	गुजरात	१६२
हेम (मुनि)	९१, १०५, १४५, १६५, १८१, २१०, २१२, २२९, २७४	गोगुंदा	१७०
क्षेत्र		च	
आंवेट/आमेट	१७९, २१०, २७३, ३०२	चंडावल	१७६
इन्द्रगढ़	१६२, १६४	चाणोद	१८५, २८७
क		चासटू	१६३
कंटालिया	४, १७६, १८६, २०९, २१०, २२१, २४५, २५६, २७३, २७७, २८८, ३०२, ३०४	चूरू	२३२
		चेलावास	१५८, १६७
		ज	
		जम्बू द्वीप	३, २४५, २७७
		जोधणा (जोधपुर)	२१, २२९, २८२,

ट		बड़लू/वड़लू	२०९, २२६, २२८,
टुंगच	१६५		२८१, ३०२
ढ		बीदासर	२१२
ढूंढाड़	१८५, २११, २३२,	बून्दी	१३०, १५९, , १७८
	२५२, २८७, ३०३	बोरावड़	१६५
ढोल	१७७	भ	
त		भरतक्षेत्र/भरत	९०, १८६, २०८,
तासोल	१७०, १७८		२४५, २५३, २७७,
द			२८५, ३००
देवगढ	१६२, १६५	मरुधर/मुरधर	४, ९, २६, ३१, ३२,
ध			१८५, २११, २२३,
धूम प्रभा (५वीं	६१		२३१, २३२, २४५,
नरक भूमि)			२५२, २५५, २७७,
न			२७९, २८२, २८७,
नाडोलाई	१२७		३०३
नाथद्वारा	देखें श्रीजीदुवारा	महाविदेह	१९५, २९२
नेणवो	१६३	मांढा	१७६
प		माधोपुर	१६४, १७९, १८०,
पादू	९१, १२६, २१०,		२०९, २७३, ३०२
	२७३, ३०२	मारवाड़	२५५,
पाली	६४, १६२, १६६,	मालव	१६३
	१७३, १७७, २१०,	मिथला नगरी	४३
	२७४, २९९, ३०१	मेवाड़	देखें मरुधर/मुरधर
पीपार/पीपाड़	८३, १७५, १८५,		
	२०९, २७३, २८७,		
	३०२	र	
पीसांगण	१७०	राजनगर/राजसमन्द	६ से ९, १७८, २०९,
पुर	१७६, २१०, २७४,		२२२, २२३, २४६,
	३०२		२७३, २७९
ब		रावळिया	१६०, १६८
बगड़ी/वगड़ी	५, १४, १५, १६	रीयां	१७५
	१६३, १७७, १८६,	रोयट	१६२
	२०९, २११, २२१,	ल	
	२२३, २२४, २५६,	लाटोती	१७६
	२७३, २८०, २८८,	लाहवा (लावा	१८०
	३०१, ३०४,	सरदारगढ़)	

व		ठाणांग (आगम)	३७, ४०, ४३, १२४,
विठोरो	१५९		२११
श		तेरे द्वार	२५१
श्रीजी दुवारा	१५९, १७६, १७९, २१०, २७३, ३०१	दशवैकालिक	३६, ४१, ४३, १३७
स		नन्दी (मूलसूत्र)	६९, ८७, २१७, २१८
सिरियारी	९४, १६२, १६५, १६६, १७६, १७८, १८०, १८६, २०५, २१०, २११, २३५, २४१, २५६, २७४, २८८, २८९ ३००, ३०१	नसीत (छेद सूत्र)	३६, ८०, १२४, १७२
		नसीतचूर्णी	२१९
सोजत	१०, १८६, २१०, २२३, २५५, २७३, २७९, २८८, ३०२	पणवणा (आगम)	४४
ह		प्रश्नोत्तर रत्नमालिका	२१७
हाडोती	१८५, २११, २३२, २५२, २८७, ३०३	भगवती/भगोती (आगम)	३६, ४०, ४१, ४४, ५४, ८०, १२३, १२४, २२३, २८७
ग्रन्थ		भिक्षु विलास	३, १७
अन्तगड (आगम)	४३, ४४	भिक्षु जश रसायण	२१२
अनुजोगदुवार (आगम)	१४७, २८३	भीकखु दृष्टांत	२१२
आचारांग (आगम)	१७, ३७, ३८, ४३, ८०, ९६, २२६, २८१	भीकखु चरित	२१२, २४५, २७७
आवसग (आवश्यक सूत्र)	३८, १८८, २८८	रास (अविनीत रास)	१५९, २३४
उत्तराधेन (आगम)	३०, ३४, ३७, ४०, ४३, ४४, १११, १३४, १३७, २८३, २८७, २८९	वंकचूलिया	१६६, २२९, २८७
उपासगदशा	३७	ववहार (छेद सूत्र)	१७२
उवाइ	३६, १०७	विनीत अविनीत	१४५
कल्पसूत्र	२१७, २१८	री चौपी	
गिनाता	देखें ज्ञाता	विपाक (आगम)	३७, ४१
		वृध रास	२३२
		सतजुगी चिरत	१६०
		सूयगडाअंग (आगम)	३६, ३७, ४३, ५५
		हेम नवरसो	१६५, १६६
		ज्ञाता (आगम)	४४, १२४, १९१, २४५, २५१ २९०, ३०४
		धर्म/सम्प्रदाय	
		इन्द्रियवादी	६९, १४१, २०८, २३२,
		काळवादी	२६, ६९, १०८, १४१, १४८, १६५, २३१, २८३

गच्छवासी	४, ७९	प्रज्यायवादी	१४१, २०८
तेरापथ	२२, २३, २४, २२९, २५१, २८२	मथेण/मथेरण	२३२ ७९, १४३
दिगम्बर	११०	रामसनेही	८०
पोत्याबंध	४, ५, १४१, १५६, २३१, २३२	श्वेताम्बर	११०

परिशिष्ट-२

पारिभाषिक शब्द

अजिन जिनोपम	आचार्य, जो जिन नहीं हैं पर उनकी उपमा धारण करने वाले।
अज्जा	(आर्या) साध्वी
अट्टम भक्त	तीन दिन का उपवास
अणगार	मुनि (गृह त्यागी)
अणसण	अल्पकालिक अथवा यावज्जीवन भोजन का परिहार।
अणुव्रत	गृहस्थ द्वारा स्वीकृत छोटे-छोटे संकल्प। स्थूल रूप से हिंसादिक का परित्याग
अतिसय	विशेषता
अधिकरण	शस्त्र, साधन।
अध्यवसाय	चेतना का सूक्ष्मतम स्तर।
अन्यतीर्थी	दूसरे सम्प्रदाय के साधु।
अभिग्रह	किसी विशेष उद्देश्य से विशेष संकल्प करना।
अरिहंत	चार घनघाती कर्मों (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय, अन्तराय) का क्षय करने वाला।
अवधिज्ञान	इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना केवल आत्मा के द्वारा होने वाला मूर्त द्रव्यों का सावधिक ज्ञान।
अष्ट संपदा	आचार्य की आठ सम्पदाएं १ आचार संपदा २ श्रुत संपदा ३ शरीर संपदा ४ वचन संपदा ५ वाचना संपदा ६ मति संपदा ७ प्रयोग संपदा ८ संग्रह परिज्ञा
असाता वेदनी	दुःख के रूप में उदय आने वाला वेदनीय कर्म।
आंबल (आयम्बिल)	नमक, मिर्च, घी, तेल आदि से रहित कोई एक अन्न, एक ही बार खाकर किया जाने वाला तप।

आंबल वृद्धमान
(आयम्बिल वर्धमान)

प्रारम्भ में एक आयम्बिल। फिर क्रमशः बढ़ते हुए दो तीन सौ तक। चढा जाता है। अन्य तपस्या में तप के बाद पारणा किया जाता है परन्तु इस तप में तप के बाद उपवास किया जाता है। इसमें कुल ५०-५० आयम्बिल और १०० उपवास किए जाते हैं। इस तप को पूरा करने में १४ वर्ष ३ मास २० दिन का समय लगता है।

आचार्य के ३६ गुण

१ आर्य देश २ प्रशस्त कुल ३ प्रशस्त जाति ४ प्रशस्त रूप ५ दृढ संहनन ६ धैर्य ७ अनाशंसी ८ श्लाघा-निरपेक्षता ९ ऋजुता १० स्थिर बुद्धि ११ आदेय वाक्य १२ जित परिषद १३ जितनिद्रा १४ मध्यस्थ १५ देश काल भावज्ञ १६ प्रत्युत्पन्नमति १७ अनेक देशभाषाविद् १८ ज्ञान आचार १९ दर्शन आचार २० चारित्र आचार २१ तप आचार २२ वीर्य आचार २३ सूत्र विधिज्ञ २४ अर्थ विधिज्ञ २५ तदुभय-विधिज्ञ २६ आहरण (उदाहरण) निपुण २७ हेतु निपुण २८ उपनय निपुण २९ नय निपुण ३० शीघ्र ग्राही ३१ स्व समयज्ञ ३२ पर-समयज्ञ ३३ गंभीर ३४ अनभिभवनीय ३५ कल्याणकारी ३६ शान्त दृष्टि।

आधाकर्मी
आर्त्त ध्यान

मुनि के निमित्त बनाया हुआ।
प्रिय के संयोग और अप्रिय के वियोग के लिए एकाग्र होना।

आसव, आश्व (आश्रव)

कर्म पुद्गलों को आकृष्ट करने वाले आत्म-परिणाम।

इन्द्रियवादी

इन्द्रियों को कर्म-बंधन का हेतु मानने वाला।

उत्तरगुण

महाव्रतों को पुष्ट करने वाले गुण।

उत्पत्तिया बुद्धि

जिसे कभी देखा-सुना नहीं, उस विषय का तत्काल ज्ञान।

उदय

कर्मोदय में परिणत आत्म-स्वभाव।

एकान्तर	एक दिन के अंतर से किया जाने वाला तप।
ओघो (रजोहरण)	प्रमार्जन के काम आने वाला मुनि का एक उपकरण।
करण	करण का अर्थ है-साधन। मन, वचन और काया-ये तीन करण प्रवृत्ति के साधन हैं।
कालवादी	अक्रियावादी/नास्तिकों का ही परिवार है। इनकी मान्यता है कि जो गुण सिद्धों नहीं मिलते वे सब अजीव हैं। ये काल को ही सब कुछ मानते हैं। जितने भी अशाश्वत द्रव्य हैं वे सब काल हैं। विशेष जानकारी के लिए पढ़ें-आचार्यश्री भिक्षु कृत-'काळवादी की चौपाई'।
केवल ज्ञान	सम्पूर्ण, निरावरण ज्ञान सर्वज्ञता
गच्छवासी	श्वेताम्बर जैनों का एक सम्प्रदाय।
गुणठाणा	आत्म-विकास की क्रमिक भूमिका।
गुप्ति	मन, वचन और काया की प्रवृत्ति का निरोध।
चतुर्थकाल	जैन काल-गणना के अनुसार अवसरिणी का चौथा (दुषम-सुषमा) विभाग।
चारित	संयम, चरित्र। महाव्रत आदि धर्मों का आचरण।
चोथ भगत	उपवास।
चौबीसथो	चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति।
चोलपटो (चुल्लपट्ट)	जैन मुनियों का अधो वस्त्र।
छट्ट भक्त	दो दिन का उपवास।
छद्मस्थ	जो केवल ज्ञान को उपलब्ध नहीं है।
जिन	राग ओर द्वेष को जीतने वाला।
जिल्लाबन्धी	दलबन्दी।
जोग	मन, वचन और काया की प्रवृत्ति।
टाळोकर	धर्मसंघ से बहिष्कृत या बहिर्भूत साधु-साध्वी, जो अपने उसी वेश में रहते हैं।
तत्त्व	पारमार्थिक वस्तु।
तीरथ	धर्मसंघ-साधु, साध्वी, श्रावक और श्राविका।

तीर्थंकर	धर्मचक्र का प्रवर्तक। (साधु, साध्वी, श्रावक एवं श्राविका - इन चार तीर्थों की स्थापना करने वाला)
तेजोलेश्या	विशिष्ट तपस्या से प्राप्त लब्धि-विशेष। इससे सम्पन्न व्यक्ति अग्नि-प्रयोग से किसी का हित-अहित कर सकता है।
थानक थापिता	साधुओं के निमित्त बनाया जाने वाला धर्म स्थान मुनि के निमित्त स्थापित, मुनिचर्या से संबंधित एक दोष।
दया दर्शनमोह	अपनी या पराई आत्मा को पाप से बचाना। सत्य श्रद्धा की आस्था को विकृत करने वाला कर्म। सम्यग् दर्शन का धात करने वाला कर्म।
दान दीक्षा	अपने या पराये उपकार के लिए वस्तु का वितरण। व्रतों का स्वीकरण।
देशव्रत	आंशिक रूप में व्रत की आराधना करने वाला।
द्रव्य क्रिया	अनुपयोग अवस्था में की जाने वाली क्रिया।
द्रव्य चरित्र	औपचारिक संयम।
द्रव्य निक्षेप	भूत और भावी अवस्था के कारण तथा अनुपयोग।
द्रव्य लिंगी	औपचारिक साधु वेशधारी।
धारणा	निर्णायक ज्ञान को स्मृति के आधार पर स्थिर रखना।
नंदीवर्धन संवत्	भगवान महावीर के भाई के नाम पर चलने वाला संवत्।
नित्यपिंड	प्रतिदिन एक घर में एक स्थान से लिया जाने वाला आहार। आमंत्रित भोजन।
निन्हव	अर्हद् वाणी का अपलाप कर एकान्त आग्रह से अपना मत स्थापन करने वाले जैन मुनि।
निर्जरा	तप के द्वारा कर्म विलय से होने वाली आत्मा की उज्ज्वलता।
निरवद्य	पाप रहित।

पंचमकाल	जैन काल गणना के अनुसार ६ आरे -कालखंड माने जाते हैं। उनके अनुसार २१००० वर्षों का पंचम काल (दुषमा) कहलाता है।
पंडित मरण	संयमी अवस्था में समाधि मरण।
पड़िकमण	दोनों संध्याओं (प्रातः सायं) में किया जाने वाला जैनों का प्रायश्चित्त सूत्र।
पड़िमा	द्रव्य, क्षेत्र, काल या भाव के द्वारा जिस साधना के प्रकार का प्रतिमान (माप) किया जाता है, उसे प्रतिमा (पड़िमा) कहते हैं।
पड़िलेहण	वस्त्र-पात्र आदि का यथासमय निरीक्षण करना।
परिग्रह	पदार्थ संग्रह और उसके प्रति होने वाली मूर्च्छा।
परिषह	साधु-चर्या में सहज रूप से आने वाले कष्ट।
परीत्त संसार	अनन्त भव-भ्रमण का परिसीमन करना।
पाखंड	मिथ्या मत।
पारणा	तप की परिसमाप्ति।
पासत्था	शिथिलाचारी साधु।
पुण्य	उदीयमान शुभ कर्म-पुद्गल।
पुद्गल	स्पर्श, रस, गंध और वर्ण युक्त द्रव्य।
पुलाक	संयम को कुछ असार करने वाला।
पूर्वधर	विपुल ज्ञान राशि का एक परिमाण-पूर्व। वे चौदह बताए गए हैं। आगम साहित्य के अन्तर्गत बारहवें अंग-दृष्टिवाद में इनका समावेश माना जाता है। पूर्व का ज्ञान धारण करने वाला मुनि पूर्वधर कहलाता है।
पोतियाबन्ध	एक सम्प्रदाय विशेष। इनकी मान्यता है कि अभी इस काल में कोई साधु नहीं हो सकता। सिद्धों से पहले अरहंतों को वंदना करने से आशातना लगती है। आवश्यक, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि की कोई अपेक्षा नहीं है। अपने आपको श्रावक कहते हैं। विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें - पोतियाबंध री चौपई।

पौषध	श्रावक के बारह व्रतों में से ग्यारहवां व्रत, जिसमें व्यक्ति एक दिन-रात के लिए उपवास सहित सावद्य प्रवृत्ति का त्याग कर विशेष धर्मारधना करता है।
प्रज्यायवादी	पर्याय को ही प्रमुखता देने वाले।
फासू पाणी	जीव रहित, अचित्त जल।
बंध	कर्म पुद्गलों का ग्रहण।
बाल तपसी	मिथ्यात्व अवस्था में तप करने वाला।
बुक्कस	चारित्र में अतिचार के धब्बे लगाने वाला।
बोधि	सम्यक् दर्शन।
भाव चरित्र	वास्तविक संयम।
भाव शास्त्र	वैचारिक हिंसा।
मति ज्ञान	इन्द्रिय और मन की सहायता से होने वाला ज्ञान।
मन पज्जव	मनोद्रव्य के पर्यायों का साक्षात् करने वाला अतीन्द्रिय ज्ञान।
महाव्रत	हिंसा आदि पापों से सर्वथा विरति।
मिथ्यात	विपरीत तत्त्व श्रद्धा।
मिथ्याती	विपरीत तत्त्व श्रद्धा रखने वाला।
मिश्र धर्म	मिलावट - कुछ पुण्य कुछ पाप।
मूल गुण	अहिंसा आदि पांच महाव्रत।
मोख (मोक्ष)	जीव की कर्म-मुक्त अवस्था।
व्रत-अव्रत	त्याग-अत्याग।
वैक्रिय लब्धि	एक लब्धि-विशेष, जिससे व्यक्ति विक्रिया-रूप परिवर्तन कर सकता है।
वोसिराना	विसर्जन करना।
व्यावच (वैयावृत्य)	सेवा।
श्रावक	हिंसा, असत्य आदि सावद्य प्रवृत्तियों का आंशिक त्याग करने वाला सम्यग्-दृष्टि गृहस्थ।
संघेण	हड्डियों का संहनन-जोड़।
संजम	हिंसा आदि से विरति।

संधारा	अनशन-आहार-पानी आदि का आजीवन त्याग।
संलेखणा	अनशन से पूर्व विविध प्रकार की तपस्याओं के द्वारा शरीर को कृश करना।
संवर	पापकारी प्रवृत्ति का निरोध।
सज्झाय	अध्यात्म शास्त्र का अध्ययन। इसके पांच प्रकार हैं।
समकत (समकित)	यथार्थ तत्त्व श्रद्धा-जीव आदि तत्त्वों में सम्यक् श्रद्धा।
समिति	सम्यक् प्रवृत्ति। ईर्या, भाषा, एषणा आदि।
सरधा	सम्यग् दृष्टि।
सामायिक	श्रावक के बारह व्रतों में से नवां व्रत, जिसमें एक मुहूर्त (४८ मिनट) के लिए सावद्य प्रवृत्ति का त्याग कर विशेष धार्मिक अनुष्ठान के द्वारा समता की साधना की जाती है।
सावद्य	पाप सहित।
सिद्ध	अष्ट कर्म का क्षय करने वाली आत्मा।

परिशिष्ट-३

सूक्तियां/लोकोक्तियां

- १ अधम पुरुष दुख ऊपनां, करै हाय तराय।
समचित वेदन नां सहै, पापे पिंड भराय॥
डा. २ गाथा १५
- २ जो साचा नै झूठा कहूं, तो परभव रै मांय।
जीभ पांमणी दोहिली, विविधपणैं दुख पाय॥
डा. ३, दूहा ३
- ३ द्वेष स्यूं तुरत नर ना डिगै रे, राग दै तुरत चलाय॥
डा. ५ गाथा ११
- ४ औषध जीभ आंख्यां तणौ, आंहमौ सांहमौ हो घाल्या दोनूं विलाय।
ज्यूं अव्रत में धर्म सरधीयां, पाप वरत में हो सरध्यां दुरगति जाय॥
डा. १९ गाथा ११
- ५ सोरीगर रा घर में सोर वासदी, न्यारा राख्यां हो घर विणसै नाय।
ज्यूं व्रत अव्रत फळ जूजुआ, जन जांण्या हो, समगत न जळाय॥
डा. १९ गाथा १२
- ६ प्रगट पसारी रै पारखा, न्यारा राखै मिश्री सोमल न्हाळ।
ज्यूं धर्म अधर्म खातौ जूजूऔ, सैंठी समगत सुद्ध सरध्यां संभाळ॥
डा. १९ गाथा १३
- ७ जिण मारग मैं देखलौ, गुण लारै पूजाह।
निगुणां नै पूजै तिके, ते मार्ग दूजाह॥
डा. २५ दूहा ७
- ८ गुण गोळी सीरै भरी, पुरस्यां पांत धपाय।
गुण विण ठाली ठीकरौ, देख्यां भूख न जाय॥
डा. २५ दूहा ८
- ९ करड़ो रोग उठ्यौ गंभीर केरौ, मृदु फुंजाळ्यां केम मिटायौ॥
डा. २७ गाथा ९
- १० हलवांणी रा डांम लागां हुवै हळको, गंभीर रोग गिणायौ॥
डा. २७ गाथा १०

- ११ पिण गोहां री दाळ हुवै नहीं प्रत्यख, ज्यूं भारीकर्मा न समजै जांणी।
हळुकर्मी बुद्धिवान हुवै ते, पक्ष छांडै जिणधर्म पिछांणी॥
ढा. २७ गाथा १२
- १२ पाखंड्यांरो मग गायांरी पगडांडी, दूर थोड़ी तौ मारग दीसै।
आगै उजाड़ मोटी अटवी मै, दुष्ट कांटा विषम दुधरीसै॥
ढा. २७ गाथा १७
- १३ ज्यूं दान सीलादिक अल्प दिखाई, पाखंडी पछै हिंस्या पमावै।
आगै चलै नहीं ए उनमारग, जाब माहै घणां अटक जावै॥
ढा. २७ गाथा १८
- १४ गांठ कसूंबां री गाढी बांधै, पोतै गळीयां विण रंग न पमावै।
ज्यूं वैराग हीण तणी वांणी सूं, अति वैराग किण विध आवै॥
ढा. २८ गाथा २
- १५ ग्यांनी पुरुष मरण-जीवण सम गिणै, उलट सोग नहिं आंणै।
मूढ मिथ्याती मोह राग नै, जीवणां नैं दया जांणै॥
ढा. २९ गाथा ९
- १६ वायरै वंग घरटी मांडी बाई, पीसती जावै ज्यूं उड्यौ जाई॥
ढा. ३४ गाथा १३
- १७ आखीरात्रि पीसी ढाकणी मै उसाख्यौ, एहवौ दृष्टंत भीखू उताख्यौ॥
ढा. ३४ गाथा १४
- १८ खोड़ ऊंट री ऊंट नै होय॥
ढा. ३९ गाथा ४९
- १९ बांध्यो काळ्यारी पारवती गोरीयौ, वर्ण नावै तौ पिण लखण आय।
ज्यूं अविनीत री संगत करै, तौ ऊ अविनय कुबुद्धि सीखाय॥
ढा. ४१ गाथा २३
- २० सोर ठंडो हुवै मुख मै घालीयां, तातौ अग्नि मै घाल्यां हुवै ताय।
ज्यूं वस्त्रादिक दीयां अविनीत राजी रहै, स्वार्थ अणपूगां अवगुण गाय॥
ढा. ४१ गाथा २६
- २१ सौ वार पांणी सूं कांदा धोविया, विरुइ न मिटै वास।
घणौ उपदेश दै गुर अविनीत नै, पिण मूळ न लागै पास॥
ढा. ४१ गाथा ४९

२२ सुविनीत रा समजावीया, साल दाळ भेळा होय जाय।
अविनीत रा समजावीया, कोकला ज्यूं कानी थाय॥

ढा. ४१ गाथा ६२

२३ समझाया सुविनीत अविनीत रा, फेर कितोयक होय।
ज्यूं तावडौ न छांहडी, इतरौ अंतर जोय॥

ढा. ४१ गाथा ६३

२४ अविनीत नै अविनीत मिलै, ते पामै घणौ मन हरख।
ज्यूं डाकण राजी हुवै, चढवा नै मिलियां जरख॥

ढा. ४१ गाथा ६४

२५ हाल देखी हंसली तणी, बुगली पिण काढी चाल।
पिण बुगली सूं चाल आवै नहीं, ए दृष्टंत लीजौ संभाळ॥

ढा. ४१ गाथा १०१

२६ कोयल रा टहुका सुणी करी, क्रां क्रां शब्द करै काग।
सोभाग सुण सतीयां तणां, कुडै कुसतीयां अथाग॥

ढा. ४१ गाथा १०३

२७ गयवर नी गति देखनै, भुसै स्वान ऊंचा कर कान॥

ढा. ४१ गाथा १०५

२८ पोपां बाइ रा राज मैं, नव तूंबा तेरे नेगदार॥

ढा. ४१ गाथा १०८

२९ आंधां नै मूळ सूझै नहीं, तांबा ऊपर झोळ॥

ढा. ४१ गाथा १११

३० ज्यांरै सूत्र तणी नहीं धारणा, प्रकृति अतिघणी अजोग।
ते थोड़ा मैं रंग-विरंग हुवै, मोटौ दर्शन मोह रोग॥

ढा. ४१ गाथा १२१

३१ अनेक स्याळ आये अडै, को किम भागै सीह।
जे आचारे ऊजळा, ते क्यांनै आपै बीह॥

भीक्खु चरित (मुनि हेमराज कृत) ढा. ३ गाथा ६

३२ और वसत में भेळ पड़्यां थी, चोखी वसत विगडै छै वसेख।
तो पुन मैं पापरौ भेळ किहां थी?, सांसौ हुवै तो सूतर ल्यो देख॥

भीक्खु चरित (मुनि वेणीराम कृत) ढा. २ गाथा ४

परिशिष्ट-४

प्रस्तुत ग्रंथ में प्रयुक्त धुनें (देसियां)

धुन	पृष्ठ
१ अभिनन्दन वादूं नित मनरळी (सल्हा मारू को गीत)	१८६
२ आ अणुकम्पा जिन आज्ञा मैं	२७९
३ आज आनन्दा रे	२०६
४ आवियो रावण लोक डरावण (कड़खा) (रीस रढ राण सुण वाण इंदा तणो)	२९५
५ एक दिवस लंकापति (कृष्ण करै उपवासजी) (चवदै थानक रा जीव ए)	२६५
६ कर्म भुगत्यांइज छूटीये	१०२
७ कहै छै रूपश्री नार सुणजो	७४
८ कामणगारो छै कूकड़ो	७७, २५८, २८१
९ किरपण दीन अनाथ ए (जाणै छै राव तूं बात ए) (भजिये नित स्वामी सुपास ए)	१२१
१० कीड़ी चाली सासरे रे (हनुमंत गायलो रे)	२२१, २५३, २९९
११ कै तैं पूंजी गोरज्यां कै तैं ईसर देवो ए	१८८
१२ खिमावंत जोय भगवंत रौ रे ज्ञान	१७४
१३ चतुर नर बात विचारो एह	२९१
१४ चेत चतुर नर कहै तनै सतगुरु	१७०
१५ जम्बू कह्यो मानलै रे जाया! (चोरासी में चाक ज्यूं रे)	४७
१६ जाणपणौ जग दोहिलौ रे लाल	१२६

१७ जीवा ! मोह अनुकम्पा न आणीयै (म्हानै प्यारो लागै बिछीयो) (आ तो राम रसे राची घणी)	११४
१८ जै जै जै गणपति नै नमूं रे नमूं	१६८
१९ ज्यांरा इन्द्र नरेन्द्र रुखवाळा	१७८
२० डाभ मुंजादिक नीं डोरी	६७, १४१, २२५
२१ दया धर्म श्री जिनजी नी वांणी	४२
२२ दलाली लालन की (करकसा नार मिली)	१५९
२३ देवै मुनिवर देशना	९४
२४ धन धन भिक्खु स्वाम दीपाई दान दया	२३६
२५ धन धन जम्बू स्वाम नै (श्री सीमंधर मेरा)	१९५
२६ धिन धिन जीवजी	२५१
२७ धिन प्रभु रामजी (हो मेरे पूज्य जी)	२६३
२८ धीज करै सीता सती रे लाल (पाखंडिया री संगत बुरी रे लाल)	१३०, २४९
२९ नगर सोरीपुर राजवी रे	५९
३० नहीं इसो दूसरो महावीर (कपि रे प्रिया संदेसौ)	७९
३१ नाटक भरतादिक तणा	३
३२ पंथीड़ा रे बात कहो नीं धुर छेह थी रे (धोबीड़ा रे धोजे मैला लूगड़ा रे)	२८९
३३ पर नारी रो संग न कीजे (घोड़ी री)	४९, ६४
३४ परम गुरु पूजजी मुज प्यारा रे	१६२
३५ पांडव बोलै बोल	१५५
३६ पुन्य नीपजै सुभ जोग सूं रे लाल	४०
३७ पूजजी पधारो हो नगरी सेविया	३१, ३०३

३८ पूज नै नमै रे सोभो गुण करै	३७
३९ पूज मोटा भांगै टोटा	२२७
४० प्रभवो मन में चिंतवै (सीता सती सुत जनमीया)	७, ५१, २१८
४१ बाजोट पर नहीं बेसणो मुनि पग ऊपर पग मेल	१६५
४२ भगवंत भाख्या रे श्रावक एहवा	९१
४३ भरत नरिंद तिणवार	२८७
४४ भवियण! नमो अरिहंताणं	२०४
४५ भावै भावना	६९, १९०
४६ मारग वहै रे उतावळौ	२९३
४७ मीठो छै पुन संसार में	२६०
४८ राजनगर भणतां थकां रे (जोगीड़ो कपट करै छै रे)	१११
४९ राजा दशरथ दीपतो रे (इस सतगुरु जीवां नै समझावै)	१०९
५० राजा राघव राया रो राय कहायो (हो राजन! श्रेणिक वन संचरियो)	२००
५१ राणी भाखै सुण रे सूड़ा!	९
५२ राणी भाखै हे दासी! सांभळ बात	१५२
५३ राम को सुजस घणो (यदुपति जीत्यो रे)	२०२
५४ राम पूछै सुग्रीव नै रे (कांसी जळ नहीं भेदे)	१५, १९७
५५ रिठनेम स्वामी तू जगन्नाथ अन्तर्यामी (ब्रजवासी लाला कांन तै मेरी गागर कांयमारी)	२८
५६ जीवा? मोह अनुकम्पा न आणीये	३०१
५७ वीर सुणो मोरी विनती	५६
५८ समता रस विरला	९७

५९ सळ कोई मत राखजयो (रावण दिग् जय चालियो) (खिम्या धरम पहलो करो)	११८
६० सहेल्यां ए वांदो रुड़ा साध (एक चोर चोरे धन पारको)	२९७
६१ सायर लैहर ज्यूं जाणे जी	१९३
६२ सिंहल नृप कहै चन्द नै	२५
६३ सीता आवै रे धर राग	२०९
६४ सीता दीयै रे ओळंभड़ा (विनवै राणी रुक्मणी)	५३
६५ सीता विभीषण नै कहै निशंक स्यूं (आज सैहर में बाई गोपीचंद दीठो) (ए संसार हटवाड़ा नो मेलो) (सूरां वीरां रो ओ शुद्ध मारग)	८५
६६ सुण चिरताली थारा लीजे चरित संभाळी (सुणजो नरनाथ जो)	१०५, २३१
६७ सुण सुण रे सीख सयाणा	१८
६८ सुमित्रनन्दन श्री मुनिसुव्रत (भरतजीभूप भया छो वैरागी)	८८
६९ सुविधि भजिये शिरनामी हो (सोही तेरापंथ पावै हो)	२१
७० स्वामी रायचंद राजा	३३
७१ हरिया नै रंग भरिया जी (विदेह क्षेत्र विहरंताजी जयवंता)	१४८, २४५, २८३
७२ हां रा मेवासी नान्ही सी नणदोली रा	२२५
७३ हिवै राणी नै हो समझावै पंडिता धाय	१२
७४ हो म्हारा राजा रा	८२

